(गीताञ्जली धारा - 13)

आधुनिक-गीताञ्जली

(आधुनिकता का स्वरूप तथा संस्कृति एवं विकृति)

रचनाकार:- आचार्य श्री कनकनन्दीजी गुरुदेव

(गद्य-पद्य मय)

''पुण्य स्मरण''

आचार्य श्री कनकनन्दी जी गुरुदेव के शिष्य डॉ. कच्छारा द्वारा अमेरिका के ''फ्लोरिडा इन्टरनेशनल यूनिवर्सिटी'' में ऑनलाइन पाठ्यक्रम का शुभारम्भ। डॉ. अजय जैन की प्रेरणा से मध्य भारत के महानगर नागपुर (महा.) के श्री पार्श्वनाथ दि. जैन खण्डेलवाल ट्रस्ट, जूनी शुक्रवारी नागपुर के स्वाध्याय भवन में आ. श्री कनकनन्दी साहित्य कक्ष की समारोह पूर्वक स्थापना। भूगर्भ वैज्ञानिक डॉ.एन.के.जैन चौधरी व मनोवैज्ञानिक डॉ. विद्युत्प्रभा जी चौधरी की आचार्य श्री से पञ्च दिवसीय चर्चा-वार्ता-कार्यशाला आदि।

ग्रंथाङ्क - 211 संस्करण - 2012

प्रतियाँ - 1000 मूल्य - 101/-

''द्रव्यदाता''

(1) धर्म-दर्शन-विज्ञान शोध संस्थान, बड़ौत (उ.प्र.)

(2) धर्म-दर्शन सेवा संस्थान, उदयपुर (राज.)

-: प्राप्ति स्थान :-

धर्म दर्शन सेवा संस्थान, द्वारा - श्री छोटूलाल जी चित्तौड़ा, चन्द्रप्रभ दि. जैन मन्दिर आयड़, आयड़ बस स्टॉप के पास, उदयपुर (राज.) - 313001 मो. 9783216418

-: सम्पर्क सूत्र :-

डॉ. नारायणलाल कछारा, सचिव- धर्म-दर्शन सेवा संस्थान

55, रवीन्द्र नगर, उदयपुर (राज.) - 313001

मो. 9214460622

E-mail : nlkachhara@yahoo.com

आचार्यश्री कनकनन्दी जी गुरुदेव के शिष्य डॉ. कच्छारा द्वारा

अमेरिका के यूनिवर्सिटी में ऑनलाइन पाठ्यक्रम का शुभारम्भ !

दि= 19/3/2012

परम पूज्य गरुदेव, नमोऽस्तु !

''फ्लोरिडा इन्टरनेशनल यूनिवर्सिटी'' अमेरिका में ''जैनीज्म इन मॉडर्न वर्ल्ड'' विषय पर एक ऑनलाइन ''जैनीज्म और साइन्स'' एक विषय है। इस विषय के अध्यापन हेतु मैंने लेक्चर तैयार किये हैं।

ये लेक्चर तथा इसकी पाठ्य सामग्री (सी.डी.) पर दी गई है। इसे कम्प्यूटर पर देखा जा सकता है।

यह सी.डी. अमेरिका में विश्वविद्यालय को भेज दी गई है। इसकी कॉपी सभी पढ़ने वाले विद्यार्थियों को दी जायेगी।

संघस्थ सभी मुनिवृन्द को नमोस्तु !

माताजी को वन्दना !

आपका शिष्य

डॉ. नारायण लाल कच्छारा

इस कृति के सहयोगी व संघस्थ साधु-साध्वी आदि

1. मुनिश्री सुविज्ञसागर जी
2. मुनिश्री आध्यात्मनन्दी जी
3. आर्यिका श्री सुवत्सलमती माताजी
4. आर्यिका श्री सुनिधिमती माताजी
5. आर्यिका श्री सुनीतिमती माताजी
6. आर्यिका श्री सुविधेयमती माताजी
7. क्षुल्लिका श्री सुवीक्षमती माताजी
8. ब्र. श्री सोहनलाल जी देवड़ा
9. ब्र. श्रेणिक भैया

मॉडर्न एण्ड स्पीरिच्युल बनने के फार्मूले
हिंगलिश-पोयम

(रागः- 1. बहुरागीय... वन्दे मातरम्)

/(इफ यू सी ओन सोल)
यू ऑर सीनियर... सी युअर सेल्फ ओर/(इफ यू सी सेल्फ ओर)
यू ऑर जूनियर... जब देखो अन्य ओर.../ (इफ यू सी अनादर)
यू पे/(प्रेजेन्ट) प्रेयर... ओन सेल्फ प्युर सोल
वर्क इज वर्शिप... इफ युअर प्युर सेल्फ
यू ऑर रिलिजियस... व्हेन यू सर्विस/(परोपकार/सेवा)
यू ऑर स्पिरिच्युल... व्हेन यू प्युर सोल
यू ऑर अप टू डेट... इफ यू हैव ब्रॉड थॉट
यू ऑर ब्यूटीफुल... इफ यू ऑर ट्रुथफुल
यू ऑर फॉरवर्ड... इफ यूअर एइम ब्रॉड
'कनकनन्दी' ब्लेस ऑल... ऑल बिकेम प्युर सोल

झाड़ोल (फ.), दि= 11/4/2012, सायं 7.38

-: विविध राग :-

1. नन्हा मुन्ना राही...
2. तुम पास आये...
3. मेरा जूता है जापानी...
4. हम होंगे कामयाब...
5. हम को मन की शक्ति देना...
6. जू.जू.जू.जू.जू...
7. आये हो मेरी जिन्दगी में...
8. मधुवन के मन्दिरों में...
9. ऐ मेरे दिले नादान...
10. तुम्हीं मेरे मन्दिर...
11. आधा है चन्द्रमा...
13. गुरु हमारा संग मा (गुजराती)...
14. दिल तो पागल है...
15. दिल है छोटा सा...
16. दिल के अरमा आँसुओं में...
17. बहुत प्यार करते हैं...
18. सावन का महीना...
19. चले जाना जरा कह दो...
20. बहारों फूल बरसाओ...
21. ऐ मालिक तेरे बन्दे...
22. ऐ वतन... ऐ वतन...
23. ऐ मेरे वतन के लोगों...

24. सारे जहाँ से अच्छा...
25. चुपके चुपके (गजल)...
26. तुम दिल की धड़कन में...
27. उड़ चला पंछी रे...
28. यमुना किनारे श्याम...
29. छोटी छोटी गैया...
30. तुम्हीं हो माता...
31. हम लाए हैं तूफान से कश्ती...
32. तेरा मेरा प्यार अमर-फिर क्यूँ मुझको...

"Formulae of Become Modern and Spiritual"

-Aacharya Kanaknandi

1.	You are Senior...	See your self -ओर If you see own soul If you see self -ओर
	You are Junior...	If you see another
2.	You pay prayer...	Ownself pure soul
	Work is worship...	If your pure self
3.	You are Religious...	When you service
	You are spiritual...	When you pure soul
4.	You are Up to date...	If you have broad thought
	You are beautiful...	If you are truthful
5.	You are Forward...	If your aim broad
	'Kanaknandi' bless all...	All become pure soul

Helper :- Aryika Shree Suvidheymati Mataji

"विनाश उन्मुखी सफलता एवं सर्वोदयी सफलता"

(रागः- मनहरण छन्द)

बहिरंग विकास को (ही) सफलता मान लिया।
पढ़ाई बड़ाई दमड़ी चमड़ी (को) सफलता मान लिया।। ध्रु.।।

पुरुषार्थ चारों और आश्रमों को भूल गया।
पढ़ाई बड़ाई दमड़ी चमड़ी में मस्त हुआ।।
इसलिये मानव का अन्तरंग शून्य हुआ/(रहा)
आत्मज्ञान सदाचार आनन्द से दूर हुआ।
पढ़ाई आज तोतारटन्त डिग्री आधारित हुई।।
संवेदना संस्कार व सदाचार रिक्त हुआ।
सेवा दान दया क्षमा धैर्य शान्ति से दूर हुआ।।
बड़ाई हेतु पढ़ाई (करे)चमड़ी दमड़ी चमकाये।
इसीलिये सदाचार आनन्द से दूर हुआ।। (1)

बड़ाई के लिये करे धर्म कर्म खाना पीना।
फैशन व व्यसन या वेश-भूषा लेना-देना।।
दमड़ी हेतु पढ़ाई (से) चमड़ी तक बेच रहा।
इसी हेतु धर्मशील सदाचार (भी) बेच रहा।।
भ्रष्टाचार मिलावट (व) मादक द्रव्य बेच रहा।
नकली वस्तु (शील) सौन्दर्य राष्ट्र हित बेच रहा।।
बुचडखाना (व) मद्य मांस तम्बाकू बेच रहा।
हत्या चोरी बेईमानी कालाधन चल रहा।। (2)

चमड़ी सजाने वाला चर्मकार बन गया।
चर्बी खून हड्डी से चमड़ी को सजा रहा।।
चमड़ी महाव्यापार सर्वत्र ही फैल रहा।
अंग प्रदर्शन द्वारा शील (कौमार्य) बेच रहा।।

विद्यालय कार्यालय (व) बाजार औ सिनेमा में।
टी.वी. क्लब कार्यक्रम सौन्दर्य स्पर्द्धा में।।
इससे मानव का पतनमय विकास हुआ।
सफलता (मृग) मरिचिका उसे भ्रमित जो किया।। (3)

तनाव फोबिया चिन्ता तन मन रोगी हुआ।
सुख शान्ति संतुष्टि से रहित हो जी रहा।।
आत्महत्या से जीवन को समाप्त भी कर रहा।
सफलता का भस्मासुर स्वयं को (ही) जला रहा।
अभी तो मानव चेतो साक्षरी व सभ्य बनो।
संस्कारी व सदाचारी आध्यात्मिकमय बनो।।
तब मिले सफलता सर्वोदयी बनोगे।
कनकनन्दी भावना है' सुख-शान्ति पाओगे।। (4)

झाडोल (फ.), दि=6/5/2012, रात्रि 2.32

आध्यात्मिकता ज्योति की जागृति के पहले स्वकृत कुभाव-व्यवहार-वचन आदि को जान पाता है, मान पाता है, त्याग कर पाता है जो कि अन्य किसी भी उपाय से पूर्णतः सम्भव नहीं हो पाता है। ऐसे व्यक्ति अन्य के कुकृत्य को दूर करने के लिए यथायोग्य पुरुषार्थ करता है परन्तु उन्हें कष्ट देने का कुभाव-व्यवहार-वचन नहीं करता है। जो धर्म के नाम पर दूसरे धर्मावलम्बियों से कुभाव-व्यवहार करता है वह यथार्थ से अधर्मी है।

प्रस्तावना

"मेरी कविताओं के इतिहास-कारण-परिणाम"

(रागः- 1. माईन माईन मुण्डेर... 2. नरेन्द्र छन्द)

आत्म इतिहास मेरी कविताओं/(गीतों) का लिखा रहा हूँ मैं यहाँ।
कारण तथा परिणाम का भी वर्णन करुँ मैं यहाँ ।।ध्रु.।।

बाल्यकाल से ही सुन रहा हूँ, कविता देश-विदेशों की।
पढ़ना गुणना तथा समीक्षा भी, कर रहा हूँ सभी की।।

सत्य-तथ्य पूर्ण आध्यात्मिकमय' कविता मुझे अच्छी/(प्रिय) लगे।
शिक्षा नैतिकता/(राष्ट्रीयता) प्रकृति प्रेमी भी, कविता भी श्रेय लगे।। (1)

प्राच्य पाश्चात्य प्राचीन आधुनिक, कविता भी अच्छी लगे।
किन्तु असत्य तुच्छ अश्लीलता, कविता बुरी ही लगे।।

तुच्छ कवि द्वारा लिखित कविता, प्रचलित सिनेमा की।
उसी से प्रेरित तुच्छ जो कविता, कवि सम्मेलनों की।। (2)

तथाहि टी.वी. शादी समारोह, समाजिक कार्यों की।
शिक्षा संस्थानों की कार्यक्रम वाली, धार्मिक समारोहों की।।

उच्च भाव/(पद) रहित कविता, शिक्षा व नैतिक हीन/(शून्य)।
सुन पढ़कर अति पीड़ा होती, जो आध्यात्मिकता हीन/(शून्य)।। (3)

इसी पीड़ा से मैं प्रेरित होकर, स्व-पर कल्याण हेतु।
राग/(छन्द) व पाण्डित्य रहित होते भी, रचना/(कविता) शिक्षा हेतु।।

छन्द राग मात्रा परम्परा से, रहित मेरी रचना/(कविता)।
अन्य को भी प्रिय होती जा रही, भाव से हुई रचना।। (4)

मैं भाव पुजारी सत्य उपासक, स्व-पर हित के कांक्षी।
अबोध बालक समान ही काम, रचा मैं हो गुणाकांक्षी।।

राग-अनुप्रास संशोधन होता, सुविज्ञसागर द्वारा।
अन्य साधु-साध्वी सहायक होते, अपनी क्षमता द्वारा।। (5)

इसलिये मैं उपकृत होता/(सदा), उपकारी जनों से।
संशोधन व लेखन आदि में, सहयोगी होने से।।

इन्हीं कविता से प्रेरित होकर, अनेक ज्ञान के दानी।
गीताञ्जली के प्रकाशन हेतु, बनते स्वेच्छा से दानी।। (6)

प्रकाशन हेतु अर्थ सहयोगी, होते जो ज्ञानानुमोदी/(प्रेमी)
पढ़ना गुणना कविता गाना, करते जो ज्ञानप्रेमी।।

सभी को मेरा है यथायोग्य, प्रतिवन्दना आशीर्वाद।
स्व-पर विश्वकल्याण के हेतु, कविता द्वारा संवाद।। (7)

झाडोल (फ.) 29.4.2012 रात्रि - 11.08

"मेरे जीवन की समयसारिणी"

(मेरा लक्ष्य एवं साधना पद्धति)

(रागः- 1. नरेन्द्र छन्द... 2. छहढाला...)

मेरी कार्यपद्धति समयसारणी मैं, लिख रहा स्व-हित हेतु।
अन्य भी इसे जानकर नहीं बने, मेरे बाधक हेतु।। ध्रु.।।
स्वयं के लिये यदि सही लगे तो, प्रयोग करे निज हेतु।
साधक न बने तो बाधक न बने, लिख/(रच) रहा हूँ इसी हेतु।। (1)

बाल्यकाल से ही स्व-अनुशासी, समयानुबद्ध रहा सदा।
समय शक्ति बुद्धि का मैं सदुपयोग, कर रहा हूँ सदा।। (2)

किसी को न मैं बाधा देता, न बाधक हेतु करूँ स्वागत।
अल्पशक्ति आयु बुद्धि प्राप्त कर, न करूँ व्यर्थ खपत।। (3)

इसलिये मैं छह वर्ष आयु से, अधिक करता वास-एकान्त।
मौन ध्यान अध्ययन-अध्यापन, चिन्तन लेखन में दत्तचित्त।। (4)

आनुमानिक अनुपात से मेरे जीवन का, मैं कर रहा हूँ गणित।
घंटा पाँच शयन, पंद्रह ज्ञानध्यान, चार घंटा में नित्य-वृत्त।। (5)

तीन घंटा कथन शेष मौन कथन, मेरा सदा तात्त्विक ज्ञान।

दिन से लेकर महिनों तक कर रहा हूँ मैं मौन साधन।। (6)
निन्दा चुगली गप्प ईर्ष्या, द्वेषमय न करुँ कथन।
ऐसे कार्य मैं नवकोटी से, न करुँ कभी सम्मान।। (7)
किसी भी अनावश्यक कार्य का, मैं न करता हूँ सम्मान।
रुढ़िवादी फिजुलखर्ची धार्मिक कार्यों में न करुँ योगदान।। (8)
जिसमें सत्य समता मिले, आत्मिक शान्ति मिले अपार।
ये सब कार्य नवकोटी स्वेच्छा से, करता हूँ बारम्बार।। (9)
ख्याति पूजा लाभ प्रसिद्धि हेतु, नहीं करुँ मैं कार्य अशेष।
स्वयं प्राप्ति यदि होवे यह सब, अनासक्ति रहूँ विशेष।। (10)
सामाजिक काम लन्द-फन्द, चन्दा-चिट्ठा व तोड़-फोड़।
लड़ाई झगड़ा वाद विवाद, लूट-फूट व कूट-कपट।। (11)
तेरा-मेरा पंथवाद संतवाद, अथवा ग्रन्थवाद।
संकीर्ण भाषा जातिवाद, राष्ट्रवाद से परे संवाद।। (12)
आध्यात्मिक वैज्ञानिकवाद, स्याद्वाद अनेकान्त प्रिय।
भोला-भाला सरल भाव, व्यवहार मुझे अति प्रिय।। (13)
ऐसा ही साधु-साध्वी श्रावक, साधारण जन भी प्रिय।
बच्चा से लेकर धनी-गरीब, साक्षर-निरक्षर प्रिय।। (14)
स्वच्छ शान्त एकान्त स्थान में, आहार-विहार-निहार।
ध्यान-अध्ययन शयन विश्राम, ऐसा स्थान मुझे ग्राह्य।। (15)
सात्विक सरस मधुर सुपक्व, सब्जी फलाहार ग्राह्य।
शुद्ध ताजा दूध घी दुग्धाहार, मुझे अनुकूल ग्राह्य।। (16)
जिससे आत्मिक साधना बढ़े, निस्पृह व शान्ति अपार।
ऐसा ही भाव द्रव्य-क्षेत्र-काल का, करता हूँ समादर।। (17)
स्व-पर-विश्व कल्याण भावना, भाता हूँ अहर्निश।
तदनुकूल मेरी समयसारिणी, पालता हूँ निशिदिन।। (18)

झाडोल (फ.) 30.4.2012 मध्याह्न - 4.31

आधुनिक बनने के उपाय
(बोल्ड, स्मार्ट, ब्यूटीफुल, पर्सनॉलिटी अपटुडेट, बनने के फार्मुले)

प्रत्येक द्रव्य की नैचर चैंजेबल होने के कारण मनुष्य को भी मॉडर्न टाइम में मॉडर्न होना स्वाभाविक है। जो युगानुकूल प्रगति नहीं करेगा वह ''आउट ऑफ डेट'' हो जाएगा। परन्तु मॉडर्न की यथार्थता से अधिकांश निरक्षर से लेकर साक्षर तथा ग्राम से लेकर महानगर के लोग अनभिज्ञ हैं। मैंने जो देश-विदेश के उच्चस्तरीय व्यक्तियों से लेकर निम्नस्तरीय लाखों व्यक्तियों का सर्वे किया, रिसर्च किया, स्टडी किया, उसके आधार पर उपयुक्त रिजल्ट पर पहुँचा हूँ। मोस्टली लोगों की थिंकिंग हैं कि सैक्सी ड्रेस पहनना, लिपिस्टिक, नेलपॉलिश युज करना, रंग-बिरंगी गॉगल्स लगाना, नेरोकट जीन्स या मिनी स्कर्ट या मिडी प्रयोग में लाना, जिससे गुप्तअंगो का सैक्सी लुक हो, टांग तोड हिन्दी इंगलिश मिली हुई खिचडी भाषा बोलना, बॉय फ्रेंड्स या गर्ल फ्रेंड्स के साथ कुत्तों के जैसे अश्लील बिहेवियर करते हुए आवारा घूमना, सिनेमा, टी.वी. खेल के चारित्रहीन भ्रष्ट, अश्लील, मारकाट, धोखाधड़ी करने वाले, राष्ट्र-समाज द्रोही, हीरो-हीरोइन (जीरो-जीरोइन) के प्रोग्राम देखना, उनकी नकल करना, स्वकर्त्तव्य नहीं करना, गुरुजन गुणीजनों की आज्ञापालन नहीं करना, उनकी सेवा नहीं करना धार्मिक-सांस्कृतिक, राष्ट्रीय, सामाजिक आदर्शों का पालन नहीं करना आदि को बोल्डनेस आदि मानते हैं। कुछ तथा कथित धार्मिक मॉडर्न जेंटल मैन होते हैं जो कि धार्मिक-वैज्ञानिक, नैतिक-पारिवारिक-सामाजिक, सत्य-तथ्यपूर्ण सिद्धांतों को जाने बिना ही उसे दकियानूसी, ब्लाइंड बिलीफ, रुढ़िगत परम्परा मानकर रिफ्यूज करते हैं, मखौल उड़ाते हैं शालीनता, नम्रता मर्यादा को त्यागकर आध्यात्मिकवादी बनकर मनमानी उद्दण्ड, उत्श्रृंखल, सुपीरियर कॉम्पलेक्स का बिहेवियर करते हैं। उपर्युक्त दोनों प्रकार के मॉडर्न व्यक्ति स्व-पर-परिवार, समाज, राष्ट्र विश्व के लिए घातक होते हैं। क्योंकि यह संक्रामक परजीवी अतितीव्रता से स्प्रैड होकर नीति, सदाचार, संस्कृति शान्ति को पेसेन्ट, डेड कर देते हैं। रियल

बोल्ड एण्ड डुप्लिकेट बोल्ड के बारे में कुछ दिग्दर्शन यहाँ कर रहा हूँ जिससे व्यक्ति ओरिजनल बोल्ड आदि बनें।

(1) सादा जीवन उच्च विचार (Simple living and high thinking)

देश-विदेश के जितने भी धर्म से लेकर राजनीति, विज्ञान आदि के टॉप व्यक्ति हैं वे सब हाई थिंकिंग, हाई एइम, टॉप वर्क करने वाले हैं। वे अपने हाई क्वालिटी के एइम, नॉलेज से रियलाइज करके समस्त बाह्य फिजुल अनावश्यक फैशन-व्यसन, आडम्बर, स्टेट्स सिम्बलों एण्ड बिहेवियरों को त्याग कर देते हैं जिससे, समय, शक्ति, धन, ज्ञान, उपलब्धियों का बैडयूज, वेस्टेज होता हैं तथा गौरवमय व्यक्तित्व चारित्र, ज्ञान, सुख-शान्ति का ह्रास होता हैं। जैन तीर्थंकर जो विश्वसुन्दर के साथ-साथ पृथ्वी के श्रेष्ठतम सत्ता-सम्पत्ति के मालिक होते हैं वे भी मोस्ट सुपीरियर बनने के लिए समस्त सत्ता-सम्पत्ति, वैभव, अलंकार, प्रसाधन सामग्रियों के साथ-साथ समस्त ड्रेस तक त्याग करके सुप्रीम सांइटिस्ट एण्ड एक्सट्रा ह्युमन बनते हैं। इसी प्रकार महात्मा बुद्ध, ईसा मसीह, सुकरात, आइन्स्टीन, हेनेरी फोर्ड, मदर टेरेसा, विवेकानन्द, महात्मा गाँधी, विनोबाभावे, महर्षि अरविन्द, जैन-साधु भी सादा जीवन उच्च विचार वाले हैं। मनोवैज्ञानिक/आध्यात्मिक फैक्ट है कि जो उद्देश्य, भावना, ज्ञान व्यवहार में खोटे-छोटे लाइट होते हैं वे अपनी वीक पॉइंट को कवर करने के लिए अनावश्यक आडम्बर पूर्ण ढोंग क्रियेट करते हैं। ''रिक्त चना बाजे घना'', ''अध भरी घघरी छलकत जाये भरी घघरी चुपकत जाये'' आदि सूक्तियों की उत्पत्ति भी इससे ही हुई हैं। कहा भी है

घटं भित्वा पटं छित्वा कृत्वा गर्दभ रोहणं।
येन केन प्रकारेण पुरूषो प्रसिद्ध भवेत् (1)
उष्ट्रस्य विवाहेन च गीतं गायन्ति गर्दभाः।
परस्पर प्रशंसन्ति अहोरूप अहो ध्वनि (2)

अर्थात् व्यक्ति स्व प्रसिद्धि, पहचान, आईडेण्टिफाई के लिए तथा स्वयं के दूसरों से सुपीरियर सिद्ध करने के लिए अयोग्य, अनैतिक, अभद्र, बैड मैनर, फैशन-व्यसन आदि का सेवन करता है। अन्य उस स्तरीय या निम्नस्तरीय व्यक्ति

भले इस प्रकार के व्यवहार को अच्छा माने परन्तु उच्च स्तरीय व्यक्ति इन सब व्यवहारों को रिजेक्ट/रिफ्युज/नेग्लेक्ट करते हैं और इसे पिछड़ापन, हुल्लडपन, तुच्छता मानते हैं। मोस्ट इण्डियन्स केवल विदेशियों के ''यू एण्ड थ्रो'' वस्तु, रीति-रिवाज, ड्रेस, भाषा, फैशन एण्ड व्यसन को यूज करके स्वयं को ''बोल्ड एण्ड गोल्ड'' मानते हुए शेमलेस् इडियटफुल बिहेवियर करते है।

(2) हट/करंट साइंस एण्ड बिहेवियर

मननशील, प्रज्ञाधनी, विकासशील, व्यवहार कुशलता से युक्त मनुष्य मॉडर्न/अप टू डेट होता है न कि वर्तमान में रहने वाला या मॉडर्न युग के बाह्य संसाधन, ड्रेस, फैशन-व्यसन को यूज करने वाला। यदि ऐसा होता तो वर्तमान युग में रहने वाले पशु-पक्षी, कीट-पतंग या बर्बर असभ्य, कुत्सित व्यक्ति भी मॉडर्न हो जायेंगे। आधुनिक ज्ञान-विज्ञान, विश्वमैत्री, विश्वप्रेम, ब्रॉडमाइंड, शाकाहार, पर्यावरण, सुरक्षा, योगा, हर्बल प्रसाधन प्रयोग, अहिंसा, सापेक्ष सिद्धांत, उदार उदात्त विचार-व्यवहार, सज्जनता, शालीनता, कर्त्तव्यनिष्ठा, डिसिप्लीन, पंक्च्यूलिटी, क्लीननेस् से लैस व्यक्ति ही यथार्थ से मॉडर्न है। फॉर एक्जामपल न्यूटन, आइन्स्टीन, विवेकानन्द, डॉ. कलाम (राष्ट्रपति), एडिसन, अब्राहिम लिंकन, मेडम क्यूरी, मेनका गाँधी, अरविन्द, स्वामी रामतीर्थ, दार्शनिक कृष्णमूर्ति आदि।

मैं ऐसे अनेक मॉडर्नों को जानता हूँ जिन्हें किसी भी भाषा का शुद्ध ज्ञान नहीं है, किस समय क्या खाना, क्या पीना, क्या बोलना, क्या करना, कैसे बैठना, कैसे उठना, कैसे चलना आदि का प्राथमिक जनरल नॉलेज भी नहीं हैं। कुछ तो गोबर गणेश होते हैं, तो कुछ नशीली वस्तु यथा शराब, तम्बाखू, गुटखा, माँस, अण्डा, मछली, नेलपॉलिस, लिपिस्टिक, जैसे अवैज्ञानिक, अस्वास्थ्यकर, घृणित, हिंसक, पर्यावरण प्रदूषक वस्तुओं का प्रयोग करते हैं। कुछ को तो आधुनिक वैज्ञानिक थ्योरी की बात तो बहुत दूर रहे, बट अल्सो वैज्ञानिकों के नाम, देश-विदेश की घटनायें, रिसर्च रेव्युलेशन, डिस्कवरी, क्रान्तिकारी पुरुषों के कार्य एण्ड आल्सो उनके नाम तक नहीं जानते हैं। ऐसे व्यक्ति तो ''हंस मध्ये बको यथा'', ''गौमुख व्याघ्र'' जैसे शोभा को प्राप्त होते

हैं। लाइक दिस मॉडर्न आध्यात्मिकवादी में भी भाव की पवित्रता सरल-सहजता, कोमलता, व्यवहार की मधुरता नहीं हैं, अनुभवात्मक, गहन-गम्भीर, सर्वोतमुखी, सार्वभौम ज्ञान नहीं हैं। ऐसे व्यक्ति तो अतो भ्रष्ट, ततो भ्रष्ट, सर्वत्र भ्रष्ट हैं।

(3) सुसंस्कृत

जो अंतरग, बहिरंग, स्वच्छता/पवित्रता से संस्कारवान् है वे कल्चर्ड हैं। ओनली शरीर, ड्रेस, घर की सफाई से कल्चर्ड क्योंकि अंतरंग शुद्धता के बिना वह स्वयं न सुख-शान्ति-प्रसन्नता का फिलिंग कर सकता है न औरों को इसका शेयर कर सकता है। कुछ व्यक्ति तो ड्रेस टिप-टाप पहनेंगे परन्तु शरीर, हाथ, नाखुन या घर आदि गंदा रखेंगे। कुछ अपने घर को क्लीन करके उस गन्दगी को सार्वजनिक रास्तों आदि फेंक देंगे। स्वयं के लिए दूसरों से गुड मैनर चाहेंगे परन्तु दूसरों से बेड बिहेवियर करेंगे। कुछ स्व-धर्म-स्व संस्कृति को महान् सिद्ध करने के लिए दूसरों से निन्दनीय व्यवहार करेंगे परन्तु स्वयं सुसंस्कृत नहीं बनेंगे। जैसा कि हिटलर आतंकवादी, संकीर्ण धार्मिक कट्टरवादी आदि। यह सब व्यवहार तो बर्बर जंगली, असभ्य कबीलाई लुटेरों का है न कि मॉडर्न थिंकिंग वालों का है। वर्तमान के तथा कथित सूट, बूट, टाई, नेलपॉलिस, लिपिस्टिक, हाइहिल चप्पल, गॉगल्स प्रयोग करने वाले साक्षरी राक्षसों के समान लूट-पाट, धोखाधडी, स्मगलिंग, बलात्कार, आतंकवाद में लिप्त रहते हैं, वे स्वयं को बोल्ड स्मार्ट मानते हैं और दूसरे भी उन्हें ऐसा ही मानते हैं। जो भोले-भाले, सहज-सरल, परोपकारी, सादा जीवन उच्च विचार रखते हैं उन्हें 'आउट ऑफ डेट' गँवार, अनाड़ी मानकर उनसे दुर्व्यवहार करते हैं।

(4) स्वावलम्बन एवं कर्त्तव्यनिष्ठा

शारीरिक, मानसिक, बोल्डनेस, स्मार्टनेस के लिए आस-पास के सामान्य नॉलेज के साथ-साथ स्वकर्त्तव्य उत्तरदायित्वों का समयानुसार परिपालन करना चाहिए। इससे अनुभव, स्किननेश, सेल्फ-कॉन्फिडेंस, एक्टिवनेस, मेंटल एण्ड फिजिकल फिटनेश आदि इन्क्रीज होते हैं। परावलम्बन, टाइम वेस्टेज,

मोटापा, लेजिनेस आदि का शिकार नहीं होना पड़ता है। बॉडी एण्ड फेस में चार्मिंग आती है, शरीर छरहरा रहता है। प्रायः प्रत्येक ग्रेट मेन स्वावलम्बी एवं कर्त्तव्यनिष्ठ होते हैं। स्व-दैनिक कार्यों के साथ-साथ दूसरों की सेवा-सहायता आदि भी करते हैं। परन्तु अधिकांश साक्षरी, शहरी, धनी, मॉडर्न व्यक्ति दूसरों की सेवा-सहायता के बदले परोपजीवी, परावलम्बी, आलसी, निकम्मे होते हैं। शारीरिक श्रम को गंवारों-गरीबों का काम मानेंगे।। परन्तु हजारों रूपये खर्च करके जीम, विभिन्न प्रकार के क्लब में जाकर एक्सरसाइज करेंगे, अनुत्पादक खेल खेलेंगे। विदेश में बड़े बड़े पोस्ट में सर्विस करने वाले या धनी लोग भी गृहकार्य के लिए सरवेन्ट नहीं रखते हैं। परन्तु स्व-होम वर्क स्वयं करते हैं। क्योंकि एक तो विदेश में वे स्वयं कर्त्तव्यनिष्ठ होते हैं, सेकेण्डली नौकरों को भी हाई पेमेन्ट देना पड़ता है। भारत में तो सामान्य व निम्न मध्यम वर्ग के लोग भी दूसरों के मजबूरी का फायदा उठाकर बाल मजदूर आदि रखेंगे और उसके परिवार के भरण पोषण योग्य पेमेन्ट भी नहीं देंगे। इससे वे आलसी परोपजीवी, परावलम्बी, अस्वस्थ्य बनते हैं। इधर वे स्वयं को बाबु, आधुनिक, साहुकार, धार्मिक, पुण्यवान् सिद्ध करेंगे। कॉलेज में जो स्टुडेन्ट, लेक्चरर टाइम टेबलानुसार स्टडी करते हैं और लेक्चर देते हैं वे तो गंवार हैं और जो नहीं करते हैं वो तो अपटुडेट हैं। ऐसा ही सार्वजनिक कार्यक्रम में जो समय पर जाकर कार्य करते हैं वे तो फालतु हैं और जो नहीं जायेंगे या लेट जायेंगे वे वी.आई.पी. हैं। जैन तीर्थंकर जो गृहस्थावस्था में स्वयं राजा, महाराजा, चक्रवर्ती, विश्वसुन्दर होते हैं वे भी मुनि अवस्था में स्वावलम्बन आदि के लिए पैदल चलते हैं, स्वयं ही स्वयं के लिए शरीर के केश उखाडते हैं, हाथ से खड़े-खड़े भोजन करते हैं। अभी भी जैन साधु यह सब करते हैं।

भोग विलासमय लक्जिरियस् मॉडर्न जीवन प्रणाली से भारत के महानगरों के 18% छात्र, 16% छात्राएं असमान्य मोटापा एवं वजन की है, अमेरिका में ऐसे किशोरों की संख्या 15% से कम और ब्रिटेन में मात्र 7.3% ही है। एक राष्ट्रीय सर्वे के अनुसार हर तीसरे किशोर को दृष्टिदोष है। 30% दन्तरोगी, 1/3 किशोरियों के जननांग में संक्रमण की आशंका है, 20% अवसाद से

ग्रसित हैं, 40% विद्यार्थी चिन्ता संबंधी रोग से ग्रस्त हैं, 25% शहरी किशोर धूम्रपान करते हैं, उनमे से 68.8% परस्पर मारपीट करते हैं, 6.39% किशोर संभोगसुख भोगने वाले हैं। सैक्स रोगी 24%, 40% एड्स रोगी है, मधुमेह, रक्तचाप, कैंसर से भी अनेक पीड़ित हैं।

(5) आन्तरिक नाइसनेस

शारीरिक रोग से जिस प्रकार कितना भी सुन्दर शरीर बुझा हुआ/निस्तेज लगता है उसी प्रकार आन्तरिक सुन्दरता के बिना बाह्य शारीरिक फैशन की सुन्दरता भी शव की सुन्दरता के समान लगती है। स्व-दोष दूर करके सुगुणों से अंतरंग को अलंकृत करने से शरीर एवं मुख मण्डल से आभा/सुन्दरता/शालीनता/मधुरता/शीतलता का विकिरण होता है। इससे आकर्षण, प्रभाव, गौरव क्रियेट होता है। इससे व्यक्ति स्मॉर्ट, बोल्ड, मॉडर्न आदि बनता हैं। इसके कारण ही तीर्थंकर, बुद्ध, संत, समाज सुधारक, समाज सेवक, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस, महात्मा गाँधी, डॉ. हेडगेवार, लोकनायक जयप्रकाश नारायण, श्रीराम शर्मा आचार्य, मदर टेरेसा, विवेकानन्द आदि से इतने व्यक्ति प्रभावित, प्रकाशित, अभिभूत हैं। इनकी सुन्दरता के समक्ष विश्व सुन्दरी की सुन्दरता प्रभाहीन है, निरर्थक है। जैसा कि ममतामयी माता के समक्ष वेश्या की सुन्दरता। ऐसी आन्तरिक प्रसाधन सामग्री है दया, दान, सेवा, परोपकार, नम्रता, मधुरता, सरल-सहजता, शालीनता आदि। वह बाह्य ब्युटीफुल के लिए जो उपर्युक्त सौन्दर्य साधन की मर्डर/इन्जूरी करके नेलपॉलिस, शॅम्पु, चर्म निर्मित आइटम प्रयोग कर मॉडर्न, मॉडल, स्मार्ट बनते हैं, जैसा की सुर्पणखा, वेश्या, कुलटा, नट, बहुरूपीया।

बर्टन्स एण्ड डोरोथी प्रर्किन्स की ओर से कराये गये एक सर्वेक्षण में नियर्ली 80% पुरूषों ने कहा कि वे ऐसी महिला मित्र के साथ डेट पर जाना पसन्द नहीं करेंगे जिसके अधोवस्त्र का कोई हिस्सा दिखाई दे रहा है। वह एक और चौंकाने वाली बात यह है कि अधिकांश महिलायें अपने पुरुष मित्रों के दिखते अधोवस्त्रों को पसन्द करती हैं। नीयरली 3/4 महिलाओं ने कहा वे अपने पुरुष साथियों की लटकती पतलुन के ऊपर बॉक्सर शाट्स की झलक

देखना पसन्द करती हैं, पुरुषों को अधिकतम आकर्षण के लिए सूट पहनने चाहिए। इस सर्वे से और अनुभव से भी क्लीयर पिक्चर दिखाई देता है कि सैक्सी लुक/फैशन/कामुकता का प्रदर्शन लडकियाँ, महिलाऐं अधिक करती हैं। पहले तो पुरुषों के लड़कों के नाभि से ऊपर भाग खुले रहते थे। बट मॉडर्न पुरुषों के, लड़को के तो प्रायः पूर्ण शरीर ढके रहते हैं। परन्तु लड़कियों के महिलाओं के गुप्त अंगों का सैक्सी ढंग से उभार होता हैं। सिनेमा, टी.वी., विज्ञापन, पोस्टर आदि में अश्लील कार्यक्रम में पुरुषों से अधिक महिलाओं की भागीदारी बढ़-चढ़कर हैं। इतना ही नहीं, मादक वस्तुओं के प्रयोग, विज्ञापन, स्मगलिंग से लेकर आतंकवाद तथा आतंकवादियों से लव करना, शादी करना उन्हें सहयोग देने में भी ऐसी ही मॉडर्न लड़कियाँ एवं महिलाऐं करती हैं परन्तु खेदूपर्ण आश्चर्य यह है कि ऐसे भ्रष्ट, अश्लील, कामुक, असभ्य, नीति-नियम, सदाचार विहीन, राष्ट्रीय, संस्कृति, सभ्यता, शालीनता को नष्ट-भ्रष्ट करने वाले हीरो, हीरोइन को भारत के लोग अपना आदर्श ग्रेट इण्डियन, अनुकरणीय मानकर उनका गुणगान करते हैं, उनकी नकल करते हुए स्वयं की तुच्छता/खोखलेपन को प्रकट करते हैं तथा कथित भारत के हीरो, हीरोइन, उनके अन्धभक्त, निर्देशक, निर्माता यहाँ तक की सेंसर बोर्ड और भारत सरकार तक में यदि इतनी योग्यता, क्षमता, बुद्धिमत्ता, कला, सम्पत्ति, वैज्ञानिकता, आधुनिकता है तो वे डिस्कवरी (Discovery), नेशनल जॉग्राफि (National Geo.) एनिमल प्लॅनेट (Animal Planet) के जैसे प्रोग्राम रिले करके दुनिया में अपनी फेम बढ़ायें। अथवा वे यदि वस्त्र ही छोटा करना चाहते हैं या त्याग करना चाहते हैं तो जिस प्रकार सच्चे वैराग्य सम्पन्न आध्यात्मिक साधु-संत धन-सम्पत्ति, भोग-विलास, मोह-माया त्याग करके ब्रह्मचर्य व्रत धारण करके कम वस्त्र धारण से लेकर पूर्ण वस्त्र तक त्याग करके नग्न रहते हैं; वैसा भी करके अपनी पवित्रता, सहज-सरलता, अंतरंग, सुन्दरता को इन्क्रिज करते हुए सेल्फ-कान्फिडेंस, बोल्डनेस आदि को उजागर करें, न कि ऐसे जंगली असभ्य या पागलों के समान बहुमूल्य वस्त्रों से गुप्त अंगों का सैक्सी प्रदर्शन करते हुए अमर्यादित, असामाजिक, अनैतिक, आध्यात्मिक, घृणित, तुच्छ,

निर्लज्ज प्रदर्शन करें, जो व्यवहार सामान्य पशु-पक्षी भी नहीं करते हैं। जो ऐसा व्यवहार करते हैं उनका सर्व प्रकार से घोर विरोध करना प्रत्येक नैतिकवान् आदर्श व्यक्तियों का प्राकृतिक कर्त्तव्य/अधिकार हैं। हे भारत देश को महान् कहने वालों! तथा पाश्चात्य संस्कृति की निन्दा करने वालों! क्या आप रीयल भारतीय एवं पाश्चात्य संस्कृति को जानते हो, मानते हो और उनकी अच्छाइयों को फॉलो करते हो। हे! काले चमड़े वाले गुलाम अंग्रेजों! तुम पहले हर संस्कृति की ओल्ड एवं मॉडर्न अच्छाइयों को फॉलो करो, समस्त बुराइयों का त्याग करो तब जाकर तुम ''सत्यंशिवंसुन्दरम्'' बनोगे। अभी साइंटिफिक अप टू डेट युग में ऐसी सुन्दरता को ब्युटिफुल माना जाता है न कि असभ्य जंगली के जैसे व्यवहारों को। वह जमाना लद गया है ''आउट ऑफ डेट'' हो गया है- विज्ञान के नये प्रकाश में। अभी सावधान हो जाओ! अपने अज्ञानमय अंधकार के व्यवहारों से जब रीयल नाइसनेस् जेन्टिलमैन तुम्हें बुश मैन (अफ्रिका की जंगली जाति) करार नहीं देते हैं; उसके पहले सभ्य-सुसंस्कृत आधुनिक बनो, इसमें तुम्हारी भलाई है।

(5) कॉन्फिडेंट, पॉजिटिव थिंकिंग एण्ड अप टू डेट

किसी भी प्रकार के इम्पोर्टेंट कार्य करने के लिए सेल्फ कॉन्फिडेंट, सकारात्मक विचार के साथ-साथ प्रगतिशीलता भी अनिवार्य फैक्टर/रीजन है। आत्मविश्वास से भाव में दृढ़ता आती है, सकारात्मक विचारों का विकास होता है। इससे व्यक्ति प्रगति करता है। अदरवाइज जिस व्यक्ति में स्वयं के प्रति ही विश्वास नहीं है वह दूसरों के प्रति कैसे और कहाँ से विश्वास कर सकता है। विश्वास के बिना सकारात्मक थिंकिंग कैसे क्रिएट कर सकता है। इसके बिना वह सही कार्य कैसे कर सकता है और इसके बिना वह कैसे प्रगति कर सकता हैं। जितने महान् कार्य होते हैं या महापुरुष होते हैं उनमें भी यह गुण अवश्य होते हैं भले वे सब धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक, साहित्यक, सेवा, सुरक्षा, सम्वृद्धि, वैज्ञानिक, शोध-बोध-खोज आदि के क्षेत्रों के क्यों न हों। धर्म के क्षेत्र में तीर्थंकर, बुद्ध, ईसा मसीह आदि हैं तो सामाजिक क्षेत्र में राजाराम मोहनराय, महात्मा फुले आदि हैं तो राजनैतिक क्षेत्र में शिवाजी, राणा प्रताप,

लाल-बाल-पाल, गाँधी, नेताजी सुभाष, अब्राहिम लिंकन आदि हैं तो साहित्यिक क्षेत्र में वेद व्यास, वाल्मीकी, आचार्य धरसेण, आचार्य भूतबली, आचार्य पुष्पदन्त, आचार्य उमास्वामी, आचार्य वीरसेन स्वामी, कबीरदास, सेक्सपियर, टालस्टॉय, आचार्य श्रीराम शर्मा आदि हैं, तो सेवा क्षेत्र में नाइटेंगल, मदर टेरेसा, बाबा आप्टे आदि हैं, तो वैज्ञानिक क्षेत्र में पाइथागोरस, न्यूटन, एडिसन, क्यूरी दम्पति, आइन्स्टीन आदि सेल्फ कॉन्फिडेंट एवं प्रगतिशीलता के उदाहरण हैं। ऑल मोस्ट इण्डियन मॉडर्न लोगों में उपर्युक्त गुणों की विकृतियाँ पायी जाती है। एजलाइक ओव्हर कॉन्फिडेंट या विकृत कॉन्फिडेंट आदि के कारण गुरुजन-गुणीजनों का अनादर करते हैं, अनुशासनविहीन कार्य करते हैं, फैशन-व्यसनों में प्रोग्रेस करते हैं हीरो-हीरोइन के अन्धभक्त होते हैं, अकल के बिना विदेशियों की अयोग्य नकल करते हैं। यदि रीयल में सेल्फ कॉन्फिडेंस आदि होते तो भारतीय दीर्घकाल तक असभ्य बर्बर, विधर्मी, लुटेरों के गुलाम नहीं रहते और आजाद होने के 65 वर्षों तक भी विकसित देशों की क्लास में खड़े होने के अयोग्य नहीं होते। अति प्राचीन काल से भारत ज्ञान-विज्ञान, आध्यात्म-संस्कृति-टेक्नॉलोजी-उद्योग आदि में समृद्ध होने पर भी तथा प्राचीन ग्रन्थों में इन सब का वर्णन होने पर भी विदेश में वैज्ञानिक दृष्टि से जो निडल से लेकर कम्प्यूटर तक तो राजनैतिक दृष्टि से डेमोक्रेशी से लेकर समाजवाद, साम्यवाद तो सेवा क्षेत्र में रेडक्रोस रोटरी क्लब, लॉयन्स क्लब से लेकर एन.सी.सी. स्काउट, तो चिकित्सा क्षेत्र में वेसलिन से लेकर बाइपास सर्जरी, क्लोनिक का शोध-बोध प्रचार-प्रसार हो पाया, परन्तु भारत में नहीं। यद्यपि क्षेत्रफल, जनसंख्या, बुद्धि-लब्धि, आई.क्यू., प्राकृतिक ऋतु, संसाधन सामग्री भारत में प्रायः अन्य देश से अधिक अवेलेबल हैं। इन सब वार्मिंग एक्जाम्पलों से सिद्ध होता है कि ऑलमोस्ट इण्डियनों में इन्‌फ सेल्फ कॉन्फिडेंस आदि की कमी है। इन सब कारणों से ही तो भारतीय लोग स्व-महान् संस्कृति, भाषा, ड्रेस, भोजन, डांस, म्युजिक, आर्ट, ध्यान, आयुर्वेद, प्रसाधन, सामग्री आदि को अपनाने में संकोच करते हैं, शर्माते हैं, हीनभाव से ग्रसित होते हैं। जहाँ की भी हो जिसकी भी हो अच्छाइयों को ग्रहण करना श्रेष्ठ है, परन्तु

विदेश की ऋतु, संस्कृति, परम्परा, रीति-रिवाज, आनुवांशिकता भारत से भिन्न होने के कारण जो कुछ उनके लिए फिट है वह सब कुछ भारतीयों के लिए फिट ही हो इसकी कोई गारंटी नहीं है। यह सब वर्णन करने मैंने भारतीयों को हीन ग्रंथी में ग्रसित करने का या अपमानित करने का प्रयास नहीं किया है परन्तु हीन ग्रंथी से मुक्त करके स्वाभिमान जगाना चाहता हूँ। महान संस्कृति के वंशधरों! हीनभावना, अन्धानुकरण, परावलम्बन, निष्क्रियता, जड़ता, रुढ़िवादिता को तोडके फेंक कर सत्यग्राही, कर्मठ, साहसी, धीर, वीर, गंभीर, बनकर ''सत्यं शिवं सुन्दरम्'' ''सच्चिदानन्दम्'' बनो, यही इस लेख का इन्टर मिनिंग और मेरा ग्रेट एइम है। (मैंने इस लेख को तथा कथित मॉडर्न व्यक्तियों की भाषा हिंगलिस (इंग्लिश + हिन्दी) मे लिखा है।)

परफेक्ट रीयल मॉडर्न बनने की संक्षिप्त थ्योरी

(1) मॉडर्न एइज के ज्ञान-विज्ञान, भाषा, गति-विधियाँ महापुरुष इन्स्ट्रुमेंट का रीयल नॉलेज हो।

(2) शालीनता, नम्रता, पंक्च्युलिटी एण्ड डीसीप्लीन, गुड पॉजिटिव थिंकिंग, गुड बिहेवियर आदि मॉडर्न होने के लिए अनिवार्य फैक्टर हैं।

(3) केवल पाश्चात्य व्यक्तियों का हीरो-हीरोइनों का अकल बिना नकल करने पर कोई मॉडर्न नहीं बनता है परन्तु इससे स्वयं के क्षुद्रता, पिछड़ापन, अन्धानुकरण आदि का अधिक प्रकटीकरण होता है।

(4) मॉडर्न बनने के लिए अपनी महान् संस्कृति, भाषा, ज्ञान-विज्ञान, खान-पान, परम्परा का त्याग करना अनुचित है तथा विदेशी अयोग्य वेश-भूषा, खान-पान, रहन-सहन को स्वीकार करना भी अयोग्य है।

(5) केवल कौआ को सफेद रंग पोतने पर वह हंस नहीं बन जाता है; गधे शेर की खाल पहनने पर कोई शेर नहीं बन जाते हैं, इसी प्रकार केवल दूसरों के बाह्य आचार-विचार खान-पान, रहन-सहन का अन्धानुकरण करने से कोई महान नहीं बन जाता हैं।

कौन होते हैं आधुनिक ?

(आधुनिकता की सूक्ष्म एवं व्यापक परिभाषा)

(दार्शनिक एवं आगमोक्त परिप्रेक्ष्य में)

(तर्जः- 1. मराठी राग-देहाची तिजोरी... 2. आधा है चन्द्रमा... 3. नरेन्द्र छन्द... 4. आत्मशक्ति से ओतप्रोत... 5. बहुत प्यार करते... 6. मेरे नैना सावन भादो...)

विश्व है अनादि-अनन्त, सतत-परिणमनवन्त।
उत्पाद व्यय ध्रौव्य युक्त, तथापि विश्व है शाश्वत ।।1।।
परिणमन है काल सापेक्ष, काल निश्चय व्यवहार रूप।
व्यवहार काल त्रय रूप, भूत वर्तमान भावी रूप ।।2।।
भूतकाल हो गया अनन्त, भावीकाल भूत से अनन्त।
वर्तमान है एक समय रूप, भाव है वर्तमान पर्याय रूप ।।3।।
भाव रूप जो पर्याय/(अवस्था) होती, वह ही वर्तमान में होती।
भूत भावी अवस्था न होती, दोनों ही अभाव रूप में होती ।।4।।
वर्तमान में जो होता परिणमन, वह होता है आधुनिकतम।
उस समय में जो होते जीव, वे होते हैं आधुनिक जीव ।।5।।
यथा भोगभूमिया के हैं जीव, उस काल के हैं आधुनिक जीव।
तथा कर्मभूमिया के हैं जीव, उस काल के हैं आधुनिक जीव ।।6।।
आदिनाथ काल के जो जीव, उस काल में वे आधुनिक जीव।
भोगभूमिया के जो जीव थे, प्राचीन जीव वे कहलाये ।।7।।
महावीर काल के जो हैं जीव, वे हुए भावी के हैं जीव।
यह है सब सापेक्ष कथन, यह है काल सापेक्ष प्रमाण ।।8।।
शताब्दी एक्कीस के जो जीव, वे इसी काल के आधुनिक जीव।
शताब्दी बाईस जो होंगे जीव, वे उसी काल के (होंगे) आधुनिक जीव ।।9।।
हर पीढ़ी होती आधुनिक जीव, पहले की अपेक्षा नवीन जीव।
आगे की पीढ़ी ऐसा ही जानो/(प्ररूपण), हर पीढ़ी होती नवीन-प्राचीन ।।10।।

अतः अभी नहीं एकान्त आधुनिक, भविष्य में होगा यह ही प्राचीन/(विगत आधुनिक)
प्रवर्तमान के ज्ञान विज्ञान युत, वह ही होता आधुनिक युत ।।11।।

प्रवचन में मेरी रुचि न होने के कारण

(प्रवचन मनोरञ्जन होता जा रहा!)

(प्रवचन के विकृत स्वरूप-कारण-परिणाम-निवारणोपाय)

(रागः- 1. छोटी छोटी गैया... 2. यमुना किनारे...)

''प्रवचन'' ''पर-वचन'' होता जा रहा,
''श्रोता'' आज ''सोने वाला'' होता जा रहा।
''वक्ता'' आज ''बकता'' होता जा रहा,
''मनजय''/(मनमञ्जन) से ''मनोरञ्जन'' होता जा रहा।। टेक।।

''धर्म'' आज ''धन'' रूप होता जा रहा... 'स्व-दर्शन' से 'प्रदर्शन' होता जा रहा।
'संस्कृत' अपसंस्कृत होता जा रहा... भीड़ जुटाने का काम होता जा रहा।। (1)

मनोरञ्जन के हेतु होता प्रवचन... हँसी-मजा चुटकुला होता प्रयोजन।
सास बहु कथा वार्ता होता नियोजन... जीवन उपयोगी बिना जीविका अर्जन।। (2)

पन्थ मत राग द्वेष मान अपमान... निन्दा प्रतिनिन्दा का होता सम्बोधन।
आकर्षण-विकर्षण होता विविध बाजा... नृत्य गाना संगीत व लाइट का मजा।। (3)

विज्ञापन पाण्डाल होर्डिंग सज्जा... निमंत्रण पत्रिका कार्ड सुसज्जा।
मञ्च-माइक व सम्मान-माला... नेता-अभिनेता का लगता मेला।। (4)

खाना-पीना मजा मस्ती मिलना जुलना... सर्कस/(प्रदर्शन) के समान भीड़ देखना।
ताली बजाकर जय-जयकार भी करना... आकर्षक वेश-भूषा बन-ठन जाना।। (5)

सूक्ष्म विषय रहित प्रवचन होता... धर्म-दर्शन विज्ञान तर्क/(आत्मा) न सुहाता।
शुद्ध प्रौढ़ भाषा को समझते कम... हल्की भाषा सुनने को चाहते जन।। (6)

आत्मज्ञान (तो) खातमा होता जा रहा... अनुभव रहित पाठ होता जा रहा।
भोग-विलास रूढ़ि का विषय हो रहा... धन जन मान हेतु भाषण हो रहा।। (7)

सिद्धान्त शास्त्र कथन लोप हो रहा... नसीरूद्दीन का पाठ रटा जा रहा।
अभिनेता के समान अभिनय हो रहा... यश भीड़ जुटाने का काम हो रहा।। (8)

कान पवित्र की कथा खूब हो रही... आत्म पवित्र की गाथा शून्य हो रही।
चार्वाक मत प्रयोग सच्चा हो रहा... बाह्य दिखावा में धर्म अच्छा हो रहा।। (9)

शर्म आवे, पीड़ा होवे, चिन्तन चले... क्या हो गया आज जन गण में।
विश्वगुरु भारत को क्या हो गया... वैज्ञानिक युग में पीछे हो गया।। (10)

साक्षर बने किन्तु शिक्षित नहीं... फैशन करें किन्तु संस्कार नहीं।
आधुनिक बने किन्तु विज्ञानी नहीं... धार्मिक बने किन्तु सुज्ञानी नहीं।। (11)

हिंग्लीस् भाषा बोले हिन्दी न आती... कुतर्क करें किन्तु विवेक नहीं।
व्यस्त रहे किन्तु अस्त व्यस्त जीवन... लक्ष्य बिन अन्धी दौड़ करे गमन।। (12)

परोपदेश होता नहीं आत्म निर्माण... परोपदेश पाण्डित्य अधिक जन।
टॉर्च सम दूसरों को प्रकाश देते... स्वयं तो अन्धकार में डूबे रहते।। (13)

लोभी गुरु लालची चेला की भक्ति... पत्थर नौका की समान यात्री।
इसीलिये मोहमाया नहीं घटती... आध्यात्मिक शान्ति नहीं मिलती।।(14)

प्रवचन से प्रायः लाभ न लेते... सुनना गुनना चर्या नहीं करते।
निष्पृह सन्त का आदर नहीं करते... आहार सेवा व्यवस्था नहीं करते।।(15)

इसलिए प्रवचन हेतु मन न करे... करना कराना या सुनना हुए।
द्रव्य क्षेत्र काल भाव का दुरुपयोग भी होता... स्व-पर-विश्व केलिए लाभ न होता।। (16)

ज्ञानानन्द प्राप्ति हेतु हो प्रयास... स्व-पर-विश्व का होवे विकास।
इसी हेतु प्रवचन होना विधेय... 'कनकनन्दी' का यह है ध्येय।। (17)

(मेरी समीक्षा मेरे द्वारा)

मेरे गुण-दोषों की समीक्षा एवं मुझे प्राप्त हानि-लाभ-शिक्षा

दोहा :- मैं ही मेरे परिणाम का, कर रहा हूँ चित्रण।
जिससे मेरे परिणाम का, मैं करूँ सही मान।।

(तर्ज :- 1. छोटी छोटी गैया... 2. चौपाई...)

1. मेरे कम बोलने के लाभ :-

अधिक बोलना मुझे नहीं सुहाता, जिससे समय का उपयोग होता।
शक्ति का सञ्चय तथाहि होता, कलह विसंवाद से बच जाता।
गला न सूखता मुँह न दुखता, मन भी शान्त सक्रिय रहता।
मनन चिन्तन स्वाध्याय होता, लेखन अध्यापन अधिक होता।
धैर्य शालीनता प्रगट होती, तुच्छता चंचलता विनष्ट होती।
गम्भीरता प्रौढ़ता प्रज्ञा बढ़ती, निर्णय क्षमता में वृद्धि होती।

2. कम बोलने से मेरी हानियाँ/पीडा :-

व्यक्तिगत सूचना मैं नहीं दे पाता, बार-बार देने से मैं व्यथित होता।
शब्द स्फुरण मेरा न हो पाता, दीनता हीनता भाव मुझे घेरता।
व्यर्थ वचन मुझे नहीं सुहाता, बिना सन्दर्भ अति न भाता।
अप्रिय कटुक मिथ्या न भाता, ईर्ष्या द्वेषमय सत्य न भाता।

3. मेरी कार्यपद्धति से लाभ-हानि :-

अनुशासन से काम मैं करता, समयानुसार क्रमबद्ध करता।
एकाग्र मन से व्यवस्थित करता, गणित विज्ञान से युक्त करता।
संकीर्ण स्वार्थ से रहित करता, स्व-पर काम में भेद न करता।
दिखावा आलस्य व्यर्थ न करता, अन्धानुकरण नकल न करता।
इसी से हर कार्य अच्छा होता, क्लान्त श्रान्त मैं कम होता।
आनन्द उत्साह मेरा बढ़ता, कार्य से कार्यान्तर को सीखता।

अनुभवपूर्ण विवेक बढ़ता, आगे का कार्य अतिशीघ्र होता।
उपरोक्तगुणों से रहित होने से, काम न होता सुचारु रूप से।
क्लान्त श्रान्त मैं शीघ्र हो जाता, आनन्द उत्साह से विपरीत होता।
अन्य कामों में भी मन न लगता, समय साधन विनष्ट होता।

4. मेरे लिए अयोग्य :-

ख्याति पूजा ढोंग भीड़ प्रदर्शन, शब्द वायु व मृदा प्रदूषण।
जल प्रदूषण व भाव प्रदूषण, मुझे न भाता अन्धानुकरण।
दम्भी-धनी-धार्मिक ज्ञानी से, कुटिल-धूर्तक्रूर जनों से।
क्रोधी मानी फैशनी व्यसनी से, दूर ही रहता हूँ कठोर जनों से।
इन्हीं कारणों से मौन रहता, सामाजिक झगड़ा/झंझट में कभी न पड़ता।

5. मेरे लिए योग्य :-

एकान्त शान्त स्वच्छता भाता, सरल सहज व्यक्तित्व भाता।
प्रकृति मुझे अच्छी लगती, आध्यात्मिक संस्कृति मुझे भाती।
बच्चे भी मुझे लगते प्रिय, भोला भाला मानव तथाहि प्रिय।
सत्य ही मुझे सबसे प्रिय, समता शान्ति मेरा ध्येय/श्रेय।
संकीर्ण पंथमत मुझे न भाता, उदार सहिष्णु भाव सुहाता।
मेरे लक्ष्य साधन भाव अनुसार, कार्य करता हूँ अचल होकर।
विवश दबाव प्रलोभनों से, काम न करता क्षुद्र भाव से।

6. इससे मुझे प्राप्त लाभ :-

अत एव भीड़ से मैं बच जाता, प्रसिद्धि जादू से मोहित न होता।
दौड धूप संक्लेश न करता, श्रेयमार्ग में शान्ति से चलता।
मेरे गुण दोषों से लाभ अनल्प, हानि भी होती सापेक्ष अल्प।
अधिक लाभ होने से ग्राह्य, 'कनकनन्दी' को आध्यात्म प्रिय।

मेरी ही बात करूँ मेरे ही साथ, बखान करूँ मैं मेरे हितार्थ।
शिक्षा ले कोई सही अपने हित, अनर्थ न करे मेरे साथ।।

मेरी भावना एवं व्यवहार

(राग :- सायोनारा...)

जय जय हो जय जय हो, सत्य भाव की जय जय हो।
पावन अन्तर भावों से, सब मिलकर के जय बोलो।। जय जय...

सदा सर्वदा मैं भावना भाऊँ, भावानुसार भी काम मैं करूँ।
सर्वोदय ही मैं सदा करूँ, अन्य को कभी न बाधा भी डालूँ।।
सर्वोदय के भावों से, सब मिलकर के जय बोलो... जय जय हो...(1)

विजय प्राप्त मैं सदा ही करूँ, अन्य को पराजित कभी न करूँ।
सत्यमार्ग पर सदा मैं चलूँ, असत्य मार्गी से घृणा न करूँ।।
सत्य के भावों से, सब मिलकर के जय बोलो... जय जय हो...(2)

विश्वास कभी न किसी का करूँ, विश्वासघात भी कभी न करूँ।
सत्य परिज्ञान जब ही होता/(करूँ), विश्वास तत्क्षण तब ही करूँ।।
श्रद्धा/(प्रतीती) के भावों से, सब मिलकर के जय बोलो... जय जय हो...(3)

मैं कभी किसी की ठगी न करूँ, किसी के द्वारा भी ठगा न जाऊँ।
ठगने का ही भाव न धरूँ, इसके बिना मैं ठगा क्यों जाऊँ।।
आर्जव/(सरलता) के भावों से, सब मिलकर के जय बोलो...जय जय हो...(4)

सफलता सदा मैं प्राप्त करूँ, अन्य का शोषण कभी न करूँ।
सत्य साम्य शान्ति को वरूँ/(पाऊँ), मिथ्या विषमता अशान्ति हरूँ/(त्यागूँ)।।
समता के भावों से, सब मिलकर के जय बोलो... जय जय हो...(5)

किसी की कभी न नकल करूँ, आदर्श को सदा ग्रहण करूँ।
दोषी से भी सदा शिक्षा ग्रहूँ, दोष न करने की प्रतिज्ञा लहूँ।।
आदर्श के भावों से, सब मिलकर के जय बोलो... जय जय हो...(6)

प्रगति पथ पर आगे ही रहूँ, प्रतिस्पर्द्धा मैं कभी न करूँ।
विनम्र भाव सदा मैं धरूँ, दीनताभाव कभी न करूँ/(धरूँ)।।

विनय के भावों से, सब मिलकर के जय बोलो... जय जय हो...(7)

अनन्त जीव हैं अनन्त कर्म, तदनुकूल भाव व धर्म।
सब जीवों का मंगल चाहूँ, कर्त्ता-धर्त्ता मैं मेरा ही रहूँ।।
मंगल कामनाओं से, सब मिलकर के जय बोलो... जय जय हो...(8)

ज्ञाता-दृष्टा की भावना भाऊँ, राग-द्वेष से परे ही रहूँ।
यथायोग्य कर्त्तव्य भी करूँ, निर्लिप्त भाव से मंगल करूँ।।
निस्पृहता के भावों से, सब मिलकर के जय बोलो... जय जय हो...(9)

सरल-सहज पावन बनूँ, अज्ञानी-प्रमादी-ढोंगी न बनूँ।
मूढ़-मोही को श्रेष्ठ न मानूँ, श्रेष्ठ बनाने का कर्त्तव्य करूँ।।
सहजता के भावों से, सब मिलकर के जय बोलो... जय जय हो...(10)

भौतिक श्रेष्ठता से परे मैं बनूँ, आसक्ति बिना भी प्रयोग करूँ।
भौतिकवादी को श्रेष्ठ/(श्रेय) न मानूँ, पावन/(आध्यात्मिक) बने चेष्टा मैं करूँ।।
आत्मिकता के भावों से, सब मिलकर के जय बोलो... जय जय हो...(11)

शुद्धमय अमूर्तिक सर्व द्रव्य, स्वयं रूप परिणमन करते सर्व।
मैं तो चेतन महान् द्रव्य, क्यों न शुद्ध रूप करूँ स्वभाव।।
विशुद्धता के भावों से, सब मिलकर के जय बोलो... जय जय हो...(12)

उदार पवित्र भावना धरूँ, स्व-पर-विश्व हित ही चाहूँ।
भावना मेरी सम्पूर्ण करूँ, ''कनकनन्दी'' सदा मैं ध्याऊँ।।
''कनकनन्दी'' मैं शुद्धता धरूँ।।
''कनकनन्दी'' मोक्ष को वरूँ।।

उदारता के भावों से, सब मिलकर के जय बोलो... जय जय हो...(13)

7-9 जनवरी प्रवासी भारतीय दिवस पर विशेष

मेरे (आ. कनकनन्दी के) विद्यार्थी एवं श्रोता बनने के लिए अयोग्य व्यक्ति

(अध्यापन-प्रवचन आदि मैं क्यों कम करता जा रहा हूँ?)

स्व-पर-विश्व में ज्ञान प्रचार हेतु अन्तः प्रयास

(रागः- रघुपति राघव... यमुना किनारे...)

पठन-पाठन मुझे अच्छा लगता...
शोध-बोध-खोज मुझे प्रिय लगता।
बाल्यकाल से यह चला आ रहा...
उत्तरोत्तर यह गुण बढ़ ही रहा।
तथापि परिवर्तन कुछ होता जा रहा...
जनता के कारण से यह हो रहा (है)।। (1)...

धीरे-धीरे अनुभव होता जा रहा... जनता में ज्ञानगुण कम हो रहा।
सामान्य ज्ञान आदि विशेष ज्ञान... खाना पीना सोना व उठना का ज्ञान।
चलना बैठना तथा रखना ज्ञान... लिखना पढ़ना व बोलना ज्ञान।। (2)...

शब्दज्ञान अर्थज्ञान भाषा का ज्ञान... नय प्रमाण व तार्किक ज्ञान।
गणित व विज्ञान या समीक्षा ज्ञान... नहीं होता है समन्वय का ज्ञान।
अलौकिक गणित व अनेकान्त ज्ञान... अति दुर्लभ होता आत्मिक ज्ञान।। (3)...

आत्म-कल्याण भाव दुर्लभ अति... कृतज्ञता प्रवृत्ति कम मिलती।
सत्य जिज्ञासु नहीं गुण ग्रहण वृत्ति... नीर-क्षीर विवेक की नहीं प्रवृत्ति।
संकीर्ण रूढ़िवादिता अहं प्रवृत्ति... चले भेड़चाल व भेड़िया वृत्ति।। (4)...

समय अनुसार काम नहीं करते... अनुशासन पालन नहीं जानते।
संकीर्ण स्वार्थ से सर्व काम करते... कर्त्तव्यनिष्ठा का भाव नहीं धरते।
आलस्य लापरवाही सदा वरते... फैशन-व्यसन में मस्त रहते।। (5)...

सुयोग्य पात्र मुझे नहीं मिलता... अतः ज्ञानदान मेरा नहीं हो पाता।
प्रवासी भारतीय व विदेशी लोग... भारत में निवेश न करे अधिक।
निवेश योग्य न माने भारत देश... भ्रष्टाचार गन्दगी यहाँ विशेष।। (6)...

अप्रमाणिकता व लचर नीति... सुस्त प्रशासन व कुराजनीति।
मूलभूत सुविधा का होता अभाव... सरकार में नहीं सहयोग-भाव।
नैतिक आध्यात्मिक कम दिखता... लूट व सुरक्षाहीन भाव दिखता।। (7)...

तथाहि उत्साह मेरा कम हो रहा... भावना अनुकूल काम नहीं हो रहा।
इसी हेतु साधु तथा वैज्ञानिकों को... प्रोफेसर जज आदि शिष्य वर्ग को।
शिक्षा देकर भेजता हूँ देश-विदेश... ज्ञान/(धर्म) प्रचार इससे होता विशेष।। (8)...

विदेशों में ज्ञान का होता आदर... उनसे धरती में होता प्रचार/(प्रभाव)।
जिससे भारतीय स्वीकार करें... परोक्ष में मेरा भाव सफल करें।
अतएव पाश्चात्य करें विकास... भारत बनें फिर उनका शिष्य/(दास)।। (9)...

भावना भा रहा हूँ मैं सतत/(विशेष)... शीघ्र हो भारत में गुण विकास।
जिससे भारत का सही विकास होगा... विश्वगुरु बनकर ज्ञान बाँटेगा।
'कनक' इसीलिये अन्तः प्रयास... बाह्य आड़म्बरों में नहीं विश्वास।। (10)...

मेरा (आ. कनकनन्दी) स्व-उपदेश को अधिक महत्व एवं परोपदेश को कम महत्व देने का कारण

(रागः- अच्छा सिला दिया...)

उपदेश देना मेरा भाव भी नहीं... आत्मकल्याण का भाव ही सही।
स्वकल्याण से हो विश्वकल्याण... प्रकाश फैले यथा सूर्य समान।। स्थायी।।
तीर्थंकर बुद्ध ऋषि ऐसे ही किये... आत्मकल्याण को पहले किये।
योग्य शिष्यों को ही प्रबोध दिया... भव्य कमलों को विकास किया।। (1)

छ्यासठ दिन महावीर न बोले... योग्य शिष्य बिना क्यों वे बोले?

अयोग्य को बोलना दोषप्रद होता है... कुपात्रदान भयंकर होता है।। (2)

सभी माने स्वयं को महाज्ञानी... सच्चा अच्छा व स्वाभिमानी।।

आदर्श निर्दोष ज्ञानी ध्यानी... निर्मल धर्मात्मा गुणखानी।। (3)

दूसरों को देते हैं सीख सदा.... स्वयं न मानते सीख कदा।

दूसरे बने सब सच्चा अच्छा... हम तो हरदम सही व अच्छा।। (4)

स्वयं का दोष अन्य पर मढ़ते... स्वयं को निर्दोष सिद्ध करते।

अन्य सुधरे सब सही होगा... मेरे अनुकूल सब काम होगा।। (5)

सांसारिक काम में व्यस्त रहते... व्यवस्था रहित कार्य करते।

समय अभाव का ढोंग करते/(रोना रोते)... निस्पृही सन्तों को हेय मानते।। (6)

गहन आध्यात्मिक कथा व भाती... चुटकुला सास-बहू कथा में रुचि/(कथा ही भाती)।

मनोरञ्जन में होती अधिक रुचि... मनमञ्जन में न होती है रुचि।। (7)

बाह्य/(भीड़) प्रदर्शन अश्लील भाये... धन जन मान तुच्छता भाये।

प्रतिस्पर्द्धा रूढ़िवाद अहंता चले... धन बल बाहुबल सर्वत्र चले/(बोले)।। (8)

सत्य समता/(शान्ति) का नहीं सम्मान... उदार सहिष्णुता का नहीं है भान।

भेद-भाव पूर्ण तेरा मेरा कुज्ञान... होती राजनिति कुटिल जान।। (9)

सत्य को भी असत्यपूर्ण मानते... होती न यदि है मनानुकूल बातें।

मनमाना सदा चलता रहता... सत्यग्राहीपना अति विरल होता।। (10)

सुनना गुनना तथा अनुकरण... दुर्लभ होते उत्तर उत्तर जन।

नहीं जानते तथा नहीं मानते... तनातनी सदा सर्वत्र करते।। (11)

कृतज्ञता भाव भी जनों में नहीं... स्वार्थ सिद्धि के बाद पूछते नहीं।

भौतिक स्वार्थ सिद्धि संकीर्ण दृष्टि/(प्रीति) अज्ञान मोह से आच्छान्न दृष्टि।। (12)

सत्य-तथ्य कहीं भी दिखता नहीं... आत्म-परमात्मा का भान ही नहीं।

अतएव उपदेश व्यर्थ ही जाता... मेरा समय तो व्यर्थ ही जाता।। (13)

दुर्लभ मानव तन व वैराग्य पाया... आत्मिक ज्ञान का आनन्द पाया।

ज्ञानानन्द ही मेरा लक्ष्य परम... 'कनकनन्दी' का धर्म/(कर्म) परम।। (14)

मेरी निस्पृहता का अन्तरंग-बहिरंग कारण!

(सीख ताको दीजिए जाको सीख सुहाय)

सबका मैं मंगल चाहूँ... चाहता हूँ उपकार...
तथापि मैं अलिप्त रहूँ... करने आत्म उद्धार... प्रभुजी करने आत्म उद्धार...
        ''आदहिदं कादव्वं श्रेय''... कुन्दकुन्द ने कहा
        इसी से युक्त परहित है... अनन्तर भी कहा...
''आददीपो भव'' सूत्र यह... बुद्धदेव ने कहा
''परदीपो भव'' वाक्य को... अनन्तर है कहा...
        जो तरे सो तार सके... अन्य को सही
        जो डूबे हैं पानी में... वह तारेगा नहीं...
नाना जीव नाना कर्म... भाव भी है नाना
समता से इसीलिए... करूँ मैं साधना...
        मानव तो आज महा... स्वार्थी हो गया
        धन मान नाम हेतु... अन्धा हो गया...
अन्धा व्यक्ति जड़ वस्तु... देखता है नहीं
स्वार्थ अन्ध कोई सत्य... जानता है नहीं...
        सत्य शान्ति साम्य भाव... है मेरी साधना
        मानव की चाह है आज... जड़ की साधना...
अनुभव शून्य ज्ञान है... अनुदार भावना
आत्मिक भावना बिना... स्वार्थ की भावना...
        कृतज्ञता शून्य मानव... कृतघ्न है बना
        पशु से भी है अधिक... पतित है बना...
स्वयं को ही मानता है... महान् ज्ञानी
निर्दोष व प्रभावक... व्यस्त व गुणी...
        उपदेशक भी बना हुआ... देता है निर्देश
        इसीलिए भी निस्पृहता... मेरा है सर्वस्व...

सुपात्र को दान देना... सही है विधान
कुपात्र को दान देना... नही है विधान...
स्वयं को स्वयं सुधारे... तब गुरु निमित्त
जो स्वयं को न सुधारे... गुरु क्या करे हित...
समवशरण से मारीचि... जब हुआ बाहर
आदिनाथ भी न कर पाये... उसका उद्धार...
योग्य द्रव्य क्षेत्र काल भाव... जब होते एकत्र
तब ही सुकार्य होते हैं... नान्यथा नहीं है सूत्र...
इसीलिए सत्य साम्य युत... शान्ति की साधना
कनकनन्दी की है नहीं... कोई अन्य भावना...

निष्पृहता, सन्तोष, स्थितप्रज्ञता, समता, इच्छा निरोध तपः, अपरिग्रह, आकिञ्चन्य धर्म, वीतरागता, मुमुक्षुपना तथा महात्मा बुद्ध के 4 आर्यसत्य अष्टांग मार्ग, महर्षि पतञ्जलि के अष्टांग योग, जैन धर्म के द्रव्यानुयोग, वैदिक धर्म के उपनिषद्, अष्टावक्र गीता आदि के प्रतिपाद्य विषय आध्यात्मिक ज्ञानानन्द सम्बन्धी हैं।

आध्यात्मिकता को अधिकांश जीव न जानते हैं, न ही मानते हैं, न ही अपनाते हैं इसलिए आध्यात्मिक मूल्यहीन-हेय-नहीं है अपितु अमूल्य-सबसे अधिक उपादेय है जैसा कोहिनूर हीरा सबको प्राप्त नहीं होने पर भी मूल्यहीन नहीं अपितु दुर्लभ, बहुमूल्य होने से प्राप्त करना दुर्लभ है।

विषयानुक्रमणिका

अ.क्र.	विषय व गीत क्रमांक	पृ.क्र.
1.	आचार्य श्री कनकनन्दी जी गुरुदेव के शिष्य डॉ. कच्छारा द्वारा अमेरिका के यूनिवर्सिटी में ऑनलाइन पाठ्यक्रम का शुभारम्भ	2
2.	मॉडर्न एण्ड स्पीरिच्युल बनने के फार्मूले (हिंगलिश-पोयम)	3
3.	Formule of become Modern and Spiritual	4
4.	विनाश उन्मुखी सफलता एवं सर्वोदयी सफलता	5
5.	मेरी कविताओं के इतिहास-कारण-परिणाम (पद्य प्रस्तावना)	7
6.	मेरे जीवन की समयसारिणी (मेरा लक्ष्य एवं साधना पद्धति)	8
7.	आधुनिक बनने के उपाय (बोल्ड, स्मार्ट, ब्युटीफुल, पर्सनॅलिटी, अप टू डेट बनने के फार्मूले)	10
8.	कौन होते हैं आधुनिक ?	20
9.	प्रवचन मनोरञ्जन होता जा रहा!	21
10.	मेरे गुण दोषों की समीक्षा एवं मुझे प्राप्त हानि-लाभ-शिक्षा	23
11.	मेरी भावना एवं व्यवहार	25
12.	अध्यापन-प्रवचन आदि मैं क्यों कम करता जा रहा हूँ?!	27
13.	मेरा (आ. कनकनन्दी) स्व-उपदेश को अधिक महत्व एवं परोपदेश को कम महत्व देने के कारण	28
14.	मेरी निस्पृहता का अन्तरंग-बहिरंग कारण!	30

परिच्छेद- 1

1.	भगवान् महावीर की वन्दना	38
2.	आदिनाथ स्वामी (प्रार्थना-वन्दना-स्तवन-आरती)	39

3. आधुनिकता का सार मेरी दृष्टि में 40
4. हे मानव! सत्य-तथ्य-हित को अपनाओं! 41
5. हे मानव! परम प्रगति पथ पर चलो! 42
6. प्राचीन हो या आधुनिक जो सच्चा-अच्छा वही ग्राह्य! 43
7. हम आधुनिक प्रगति पथ के पथिक 44
8. स्व-सत्य की प्राप्ति ही मुक्ति 45
9. विश्वज्ञ-विश्वउद्धारक-विश्ववन्द्य की स्तुति 46
10. हे विश्व मानव! स्व-पर-विश्व कल्याणार्थे जागो! 46
11. बच्चों तुम निर्माता हो! 47
12. वैश्विक सच्चा अच्छा भाव एवं काम 48
13. दुःख के विश्वरूप एवं सुख प्राप्ति के उपाय 49
14. सम्पूर्ण सफलता के मूल सूत्र 51
15. आध्यात्मिकता से तन-मन-आत्मा स्वस्थ्य 52
16. विविध विकासवाद 54
17. भारत को पुनः विश्वगुरु बनाने का संकल्प 55
18. प्राचन गौरव-आधुनिक बोध से हे भारतीय! पुनः विश्वगुरु बनो! 56
19. मानव पशु-पक्षी के कृतज्ञ बने न कि कृतघ्न 57
20. वैश्विक स्वास्थ्य हेतु भावना 59
21. स्टीव जॉब्स से प्राप्त शिक्षाएँ 62
22. मानव चाहो यदि सदा सुखी रहना 63
23. प्राकृतिक जीवनचर्या से विश्वमानव सुखी बनें! 64
24. प्राकृतिक संगीत एवं नृत्य 66
25. विश्व शान्ति पाठ पढ़ाते हैं भारतीय सूत्र 68
26. हे भारतीय! पुनः जागो-स्व गौरव प्राप्त करो! 69
27. ग्रामीण प्रकृति एवं संस्कृति 70

28. भो इण्डियन! इडियट को त्यागकर विश्वगुरु बनो! 71
29. अपनी महत्ता हे मानव! तुम तो मानो! 72
30. भारतीय बने सु-भावधारी! 74
31. विज्ञान एवं गणित का सच्चा तथा व्यापक स्वरूप 76
32. विश्व का सही विकास धर्म और विज्ञान के सहयोग से! 77
33. विज्ञान की उज्जवल गाथा (विज्ञान का वरदान) 78
34. वैश्विक स्वास्थ्य हेतु भावना 80
35. दीपावली पर्व दीवालिया पर्व न बनें! 83
36. अच्छी कथा स्वीकारो - ओछी कथा नहीं! 84
37. पोषक प्रकृति का शोषण न करो 85
38. अभी भारत को क्या हो गया ? 86
39. हे विश्वगुरु भारतीय पिछड़ापन त्यागो! 87
40. भारतीयों की आत्महत्या संख्या बढ़ने के कारण एवं निवारण 88
41. कलिकाल की अच्छाइयाँ एवं बुराइयाँ 89
42. मानव पशु-पक्षी के कृतज्ञ बनें न कि कृतघ्न 90
43. माता का दूध एवं मातृ-भाषा का महत्व 92
44. प्राचीन ग्राम्य-जीवन की एक सांस्कृतिक छटा 94
45. अभी लोगों की भीड़ बढ़ी, सामाजिकता घटी 96
46. व्यक्ति-राष्ट्र एवं विश्व के उत्थान-पतन के कारक 98
47. विश्व कल्याण के लिए भौतिकता से श्रेष्ठ आध्यात्मिकता 100

परिच्छेद- 2

1. सिद्ध भगवान् की स्तुति 102
2. विपरीत ज्ञान से विपरीत मान्यता 103

3. मानव विकृति को छोड़कर संस्कृति अपनाओ! 104
4. धर्म एवं अनुशासनहीनता से भारत की धन-जन-
स्वास्थ्य हानि-परावलम्बन की समस्याएँ 105
5. घट रहा है सामान्य ज्ञान एवं नैतिकाचार 108
6. विज्ञान के अन्धकार पक्ष (विज्ञान के दुरुपयोग से विनाश) 110
7. प्रगति अभी भी अति दूर 111
8. मानव क्यों करो अभिमान ?! 112
9. त्यजनीय सर्व मानवकृत विकृतियाँ एवं कुरीतियाँ! 114
10. धार्मिक बनो किन्तु कट्टर नहीं! 116
11. नैतिक-धार्मिक-आध्यात्मिक पुरुषों के भाव एवं व्यवहार 117
12. हे मानव! वनगिरि का कृतघ्न न बन! 119
13. मातृशक्ति उद्धारक शक्ति बने न कि संहारक! 120
14. बड़े आदमी की अजीब कहानी! 122
15. जनसंख्या वृद्धि से उत्पन्न समस्याएँ एवं समाधान! 123
16. आत्मिक दृष्टि से रहित सर्वजीव निम्नश्रेणीय जीव हैं! 124
17. मानव अनावश्यक पापकार्य अधिक करता! 126
18. पतनकारी विरोधाभास त्यागो! 128
19. मैं हूँ अकाजकारी गृहिणी 129
20. पावन व पतिता नारी! 131
21. अपने आत्मा की हत्या किया न करो! 132
22. भारतीय पर्वों के उद्देश्य-शिक्षा 134
23. मोही-अज्ञानी जीव करता है विपरीत
प्रवृत्तियाँ स्व-स्वभाव मानकर! 136
24. केवल भौतिक विकास बनता है विनाश का कारण 137
25. समस्या रोग के कारण अन्ध-आधुनिकता
निवारक है सरल-जीवन आध्यात्मिकता। 139

26.	अब्रह्मचर्य की प्रतिक्रिया है-प्रदूषण से लेकर महाप्रलय!	149
27.	महापुरुषों से मानव जाति महान् अन्यथा दानव!	154
28.	अनावश्यकता से जीव पाप करे अधिक!	155
29.	सब न होते महान् या दुर्जन!	156
30.	दूर से सुन्दर लगे (दूर के ढोल सुहावने)	157
31.	दुनियाँ की विचित्रता!	158
32.	भ्रष्टाचार की महिमा!	159
33.	पाप के विभिन्न रूप समझा करो!	160
34.	भ. महावीर यदि भारत में होते अभी, समस्याएँ होती भारी!	161
35.	बड़ी तृष्णाओं का अन्तिम फल असफलता!	162
36.	मानव की विचित्र वधशालाएँ बन्द हों!	163
37.	परम्पराओं की संस्कृति तथा विकृति!	164
38.	विज्ञान से महान् धर्म की उपयोगिता क्यों कम हो रही है?	168
39.	रोग एवं हिंसाकारक है - टूथपेस्ट प्रयोग	169
40.	विज्ञान के असत्य मत तथा उससे हानियाँ!	170
41.	भारतीयों में सत्य को मानने का सत्यसाहस नहीं!	172
42.	क्षीण होता जा रहा है भारत ज्ञान-त्याग-शील से!	174
43.	महान् हिंसक, रोगकारक, ज्वालामुखी कारक रसोई गैस!	176
44.	डॉक्टर (वैद्य) की आत्मकथा	178
45.	सत्य-समता-शान्ति के बिना शिक्षा, धर्म आदि अहितकर!	179
46.	अनुशासन की आत्मकथा	181
47.	अर्थ (धन) की आत्मकथा	182
48.	तम्बाकु की आत्मकथा	184
49.	स्व-माता-पिता से बच्चों की करुण प्रार्थना!	185
50.	नेता की आत्मकथा	187
51.	शिक्षक की आत्मकथा	189

52. भारतीयों की स्टेटस् सिम्बल-अप टू डेट की विकृत मानसिकता! 191
53. भारतीयों की कमी सम्बन्धी व्यंगात्मक चित्रण 193
54. क्यों करो है ढोंगाचार? 194
55. इण्डियनों के पिछड़ापन के कारण एवं निवारण! 195
56. आधुनिक इण्डियन की एक ही भाषा! 197
57. भारतीय नारी की गरिमावस्था एवं पतितावस्था! 199
58. आधुनिक पढ़ी-लिखी रानी! 201
59. सुखी एवं दुःखी होने के कारण! 202
60. विश्वगुरु भारत बन गया बेईमानों का देश! 207
61. पापी पेट से अधिक पाप मन से मानव करता पापाचार! 209
62. क्या मानव यथार्थ से सर्वोदयी बना है ?! 210
63. हे कृतघ्नी मानव! कृतज्ञी बन! 214
64. कन्य भ्रूण हत्या की आत्मकथा! 216
65. गो माता की व्यथा गाथा (आत्मकथा) 220
66. शिक्षा की गाथा-व्यथा-वृथा-आत्मा 222
67. तन मन के स्वास्थ्य कारक पैदल भ्रमण 224
68. सर्वोदय भजनीय-परतन्त्रता त्यजनीय 225
69. करणीय भाव (मोटीवेशन, सम्बोधन, आत्मचिन्तन, प्रेरणात्मक कविता) 226
70. अनेकान्त-स्याद्वाद के स्वरूप 228
71. आत्म उद्धार से जग-उद्धार (मेरा ज्ञान-अनुभव एवं काम) 230
72. मेरी भावना (जो कुछ पूर्ण हुई, हो रही है और होने वाली) 233
73. वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनन्दी जी गुरुदेव साहित्य-कक्ष-स्थापना 235

भगवान् महावीर की वन्दना

(भगवान महावीर का आदर्श जीवन एवं दिव्य देशना)

(राग :- आधा है चन्द्रमा...)

करता हूँ वन्दना... वीर स्वामी...2, अन्तिम तीर्थंकर मोक्षगामी ऽऽऽ ।।(स्थायी)

आप हो सिद्धार्थ राजकुमार, ज्ञान वैराग्य से भरपूर।
वीर अतिवीर वर्द्धमान, आप हो सन्मति महावीर।
भरे यौवन में दीक्षा धारी, बाल ब्रह्मचारी आत्मध्यानी ।।1।। करता हूँ वन्दना...

सती चन्दना से हुई पारणा, दास प्रथा का किया निवारणा।
बहु विध उपसर्ग सहना, धीर वीर गम्भीर महामना।
आत्मध्यान से चार घाती नाशा, ज्ञान ज्योति से विश्व प्रकाशा ।।2।।करता हूँ वन्दना...

अणु से ब्रह्माण्ड तक जाना, सत्य सनातनमय जाना।
षट् द्रव्यमय विश्व जाना, उत्पाद व्यय ध्रौव्य माना।
रत्नत्रयमय मोक्षमार्ग जाना, आत्म उपलब्धि को मोक्ष है माना।।3।।करता हूँ वन्दना...

सर्व भाषामयी दिव्यगीरा, विश्व विज्ञानमयी धारा।
अनेकान्त सापेक्षमय धारा, विश्व कल्याणी अमृत गीरा।
द्रव्य गुण पर्याय को बखाना, मोक्षमार्ग प्ररूपणा कीना ।।4।। करता हूँ वन्दना...

परस्पर उपग्रह जीव बताया, पारिस्थिति का मर्म बताया।
जीओ और जीने देना कहा, पर्यावरण रक्षा मार्ग कहा।
सत्य अहिंसामय जीवन कहा, विश्वशान्ति का सूत्र बताया/(कहा)।।5।।करता हूँवन्दना...

आदर्श जीवन आप जिया, सम्पूर्ण विश्व का ज्ञान किया।
सर्वोदयमय सूत्र कहा, अन्त में मोक्ष को प्राप्त किया।

अतएव आप सदा स्मरणीय, 'कनकनन्दी' से सतत वन्दनीय।।6।।करता हूँ वन्दना...

ओगणा दि= 14/3/2012, मध्याह्न 12.54

(प्रार्थना/वन्दना/स्तवन/आरती)

आदिनाथ स्वामी

(रागः- 1. जय जय जय हे वीणावादिनी... 2. करता हूँ वन्दना/ (आधा है चन्द्रमा)... 3. बहुत प्यार करते हैं... 4. मेरे नैना सावन-भादो... 5. यह विधि मंगल... 6. भातकुली च्या खेठा मधली... (मराठी) 7. चौपाई...)

जय जय आरती/(वन्दना) आदि स्वामी/(जिनन्दा)
युगादि पुरुष विश्वनाथ/ज्ञानी
नाभिराय नन्दन मरुदेवी सुत (की)
आदि ब्रह्मा आदि तीर्थनाथ (की)... (1)
प्रजापालक राजा पुरुदेव की
षट्कर्म शिक्षक आदि गुरु की
लिपि प्रवर्तक गणित कला भी
संगीत नाटक राजनीति भी... (2)
न्या प्रवर्तक युद्ध नीति भी
वाङ्मय अर्थशास्त्र नीतिशासत्र भी
मोक्षमार्ग यात्री आदि ऋषि की
केवलज्ञानी व तीर्थस्वामी की... (3)
लौकिक आध्यात्मिक आदि गुरु की
सच्चिदानन्दमय परमब्रह्म की
आपकी वन्दना/(आरती) अघहरण की
'कनक' वन्दित/(सेवित) शुद्धआत्मा/(चिन्मयानन्द) की... (4)

ओगणा दि= 7/3/2012, रात्रि10.35

आधुनिकता का सार : मेरी दृष्टि में

(तर्जः- 1. चौपाई... 2. तुम दिल की धड़कन में...)

आधुनिकता के गुण पहचानो, आधुनिक युत हो ज्ञान-विज्ञान।
(हो) व्यापक दृष्टिकोण सहिष्णु उदार, संकीर्ण जाति पंथ राष्ट्र की सीमा पार।।

लोकतंत्रात्मक भाव व व्यवहार, मानव अधिकार (व) सर्वजीव उपकार।
वैश्विक शान्ति व सह अस्तित्व पर, विश्व मैत्री व सर्वजीव अधिकार।।

विश्व पर्यावरण रक्षा के भावधर/(पक्षधर), तदनुकूल हो भाव व व्यवहार।
वन व वनवासी पशु पक्षी नर, उनके कल्याण के लिए हो भावधर।।

जलचर जीवों के करे न संहार, हिंसा युद्ध के जो न हो पक्षधर।
मनवचकाय से रहता अतिदूर, कृतकारित अनुमत से भी हो दूर।।

वैश्विक नागरिक भाव हो व्यवहार, काला गोरा का न हो मिथ्याचार।
लैंगिक पक्षपात न हो दूराचार, दास प्रथा मुक्त हो बाल मजदूर।।

शिक्षा संस्कार हो संस्कृति भरपूर, अनुशासन युत शालीन सदाचार।
शोषक-शोषित मालिक-मजदूर, भेदभाव हीन हो सर्व समाचार।।

बाल विवाह व बेमेल विवाह, न हो बलात्कार न हो सती दाह।
अश्लील उद्दण्ड रहित नम्राचार, हित मित प्रिय वचन सत्यकर।।

सादा जीवन सह उच्च विचार, सात्विक पौष्टिक हो शाकाहार।
फैशन-व्यसनों से रहित व्यवहार, नशीली वस्तु सेवन रहित हितकार।।

सरल-सहज हो जीवन सुखकर, तनाव दुश्चिन्ता रहित स्वास्थ्यकर।
स्व-पर हित सहित हो विचार, आध्यात्मिक युत धर्म विचार।।

अन्धविश्वास व रहित आडम्बर, कार्य कारण युत तार्किक विचार।
सनम्र सत्यग्राही सापेक्ष विचार, कुंठा व मद से रहित व्यवहार।।

प्रगतिशील क्रान्तिकारी विचार, सत्य व शान्ति हेतु प्रयत्नशील।
प्राचीन सत्य को करें न नकार, आधुनिकता का करें न ढोंगाचार।।

शिक्षा व कानून राजनीति विचार, विज्ञान में उपरोक्त विचार।
सम्यक् समन्वय सापेक्ष विचार, संकीर्ण स्वार्थ का हो सदा बहिष्कार।।

सर्वांगीण विकास के जो सब विचार, वे सब ग्राह्य जो सर्व हितकर।
'कनकनन्दी' भी इसी के पक्षधर, विश्वकल्याण हेतु पालो हे सदाचार।।

ओगणा, रात्रि प्रारम्भ 1.05 से 2.39 तक समाप्त

हे मानव! सत्य-तथ्य-हित को अपनाओ

(तर्जः- कभी प्यासे को पानी...)

मूल में जल को कभी सींचा नहीं... पत्ती-पत्ती सींचने से क्या फायदा।
भाव को पावन बनाया नहीं... धर्म ज्ञान धन से क्या फायदा ।।1।।

धर्म तो किया मान को बढ़ाया... उदार सरल भाव न भाया।
आत्मज्ञान न किया भेदभाव किया... सहिष्णु क्षमावान् पावन न बना ।।2।।

धन कमाने का साधन धर्म बना... पद प्रतिष्ठा का जो लक्ष्य है बना।
आत्म कल्याण व विश्व हित बिना... सस्ता सुन्दर व्यापार धर्म बना ।।3।।

ज्ञान अर्जन लौकिक धर्म किया... स्व-पर हितकर नहीं है बना।
ज्ञान मद बढ़ा स्वार्थपूर्ति किया... ईर्ष्या द्वेष घृणा को बल है मिला ।।4।।

आत्मज्ञानी से भी बहु पाप किया... पाप करके भी उसे नहीं है माना।
तोता रटन्त समान ज्ञान रहा... पर उपदेश में ही चलता रहा ।।5।।

धन कमाने के लिए बहु पाप किया... शोषण भ्रष्टाचार चौर्यादि भी किया।
मिलावट धोखाधड़ी लूट किया... झूठ कूट कपट से गला काटा ।।6।।

धन प्राप्त कर अहंकार किया... फैशन व्यसन आड़म्बर में खर्च किया।
चोरी कृत माल मोरी में चला गया... दान परोपकार में नहीं लगा ।।7।।

ऐसा ही हर कार्य तूने है किया... परिणाम परिणाम सम रहा।
यथा बीज बोया यदि बबुल का... फल बबुल आयेगा वृक्ष आम कहाँ ।।8।।

अभी चेतो तो मानव मूर्च्छा छोड़ो/(त्यागो)... सत्य-तथ्य परिणाम हित भजो।
इसी हेतु चेताता 'कनक' तुम्हें... स्वार्थ संकीर्णता त्यागो अभी तुम ।।9।।
ओगणा दि= 9/3/2012, रात्रि 10.34

हे मानव! परम-प्रगति पथ पर चलो

(रागः- आओ झूले मेरे चेतन-आत्म भुवन में...)

बढ़ो धीरे-धीरे मानव प्रगति/(उन्नति) पथ पर... प्रगति पथ पर-2
सत्य को जानो समता धरो शान्ति के लिए आगे ही बढ़ो ।।1।।

सत्य ही सदा शाश्वतिक है, अकृत्रिम व सर्वव्यापी है।
चेतन अचेतन सर्व सत्य है, अनादि से अविनाशी है ।।2।।

तुम तो चेतन अविनाशी हो, ''सच्चिदानन्दमय'' रूपी हो।
देह वाणी मन से तुम परे हो, ''चिन्मयानन्दमय'' रूपी हो ।।3।।

सत्ता सम्पत्ति प्रसिद्धि से परे, रागद्वेष व मोह से भी परे।
जन्ममरण व जरा से परे, तुम तो ज्ञानानन्द सम/(शान्ति) पूरे ।।4।।

काहे को सत्तादि में मोह करता, उसके लिए नाना पाप करता।
हिंसाशोषण व चोरी करता, अन्याय अत्याचार ठगी करता ।।5।।

स्वयं की प्राप्ति हेतु प्रयत्न करो, सत्य समता के मार्ग पे चलो।
सादा सरल जीवन जीओ, शान्ति की प्राप्ति करते चलो ।।6।।

भौतिक विकास न तेरा स्वरूप, इसी हेतु न बनो आसक्त।
इसी के परे भी करो प्रयत्न, जिससे मिलेगी शान्ति विशेष ।।7।।

यह है तीर्थंकर बुद्ध की वाणी, अष्टावक्रऋषि गीता की वाणी।
'कनकनन्दी' भी वही बखाणी, यह है आध्यात्मिक अमर वाणी ।।8।।
ओगणा दि= 10/3/2012, रात्रि 6.44

प्राचीन हो या आधुनिक
जो सच्चा-अच्छा वही ग्राह्य

(रागः- ना कजरे की धार...)

न प्राचीन ही अच्छा... न आधुनिक ओछा।...2
जो सच्चा और अच्छा... वही ग्राह्य होता है।...2
भले ओल्ड (प्राचीन) होता हो... भले न्यू (अभी) होता हो
जो कभी भी होता हो। हो... हो... (स्थायी)
जो अन्धश्रद्धा भाव... मिथ्या स्वार्थ/(भ्रम) युत...2
जो होता भाव काम... वह अग्राह्य होता है।। (1) न प्राचीन...
जो स्व-पर हितावह... जो सत्य समता सह...2
जो विश्व शान्तिकर... वह ग्राह्य होता है।। (2) न प्राचीन...
हिंसा झूठ चोरी कुशील.... जुआ युद्ध ठगी काम...2
मद्यपान बेईमानी... सदा अग्राह्य होता है।। (3) न प्राचीन...
बलि/(प्रथा) दास प्रथा... बहु विवाह सती प्रथा...2
तानाशाही राजतंत्र... ओल्ड ग्राह्य नहीं होता।। (4) न प्राचीन...
मांस मछली अण्डा... कृत्रिम पेय थंडा...2
रोगकर पण्य पिज्जा... अग्राह्य होता है।। (5) न प्राचीन...
अश्लील टी.वी. सिनेमा... नृत्य गान और बजाना...2
वेशभूषा चाल चलन... ग्रहणीय नहीं होता/अग्राह्य होता है।। (6) न प्राचीन
प्रदूषणकारी काम... सदाचार/(नैतिक) हीन काम...2
मिलावट भ्रष्ट काम... त्यजनीय होता है।। (7) न प्राचीन...
जो सर्वजीव हितकर... जो आत्म उत्थान कर...2
जो सर्व मुक्तिकर... सदा श्रेय/(ग्राह्य) होता है।। (8) न प्राचीन...
सर्व पक्षपात विहीन... हठग्राह्य से शून्य...2
जो सत्य शान्ति पूर्ण... 'कनक' श्रेष्ठ होता है।। (9) न प्राचीन...

ओगणा दि= 13/3/2012, प्रातः 6.48

(मेरी (आ.कनकनन्दी) दृष्टि से मानव की उच्चतम सही प्रगति)

हम आधुनिक प्रगति पथ के पथिक

(मेरी (आ.कनकनन्दी) दृष्टि में भविष्य के मानव)

(रागः- 1. ऐ वतन ऐ वतन... 2. मन है छोटा सा... 3. देहाची तिजोरी (मराठी)...)

प्रगति पथ पर... हम बढ़ते चलें... विजय की श्रीगाथा गाते भी चलें।
ये युग है हमारा, जीने का युग... इसका निर्माण हम करते चलें। (स्थायी)
प्राचीन अच्छा को पालते चलें... प्राचीन ओछा/(खोटा) को पाटते/(मिटाते) चलें।
नवीन अच्छा भी करते चलें...नवीन कमी को मिटाते चलें...2 ये युग..(1)
भूत की कमी से शिक्षा ले छोड़ें... नीवन कमी भी किया न करें।
दैव योग से होती कमी है कभी... उसे भी मिटाकर आगे ही चलें..2 ये युग..(2)
बीज से अंकुर तथा होता है वृक्ष... वृक्ष से फूल फल होता है विशेष।
प्राचीन अच्छा को विस्तार करें... प्राचीन होने से त्याग न करें...2 ये युग..(3)
प्राचीन (भी) रोग ग्राह्य न होते... नवीन भी स्वास्थ्य ग्राह्य ही होते।
''ओल्ड इज गोल्ड'' सभी न होते... ''न्यू इज नान यूज'' सभी न होते..2 ये युग..(4)
बलिप्रथा सतीदाह ग्राह्य (ही) नहीं... दास प्रथा अन्धश्रद्धा उचित नहीं।
राजतन्त्र तानाशाही त्याज्य ही सही... काला गोरा ऊँच नीच भेद न सही..2..(5)
आधुनिक लोकतन्त्र आजाद सही... साम्यवाद जीवरक्षा वैश्विक सही।
निरस्त्रीकरण विश्वशान्ति ही श्रेय... पर्यावरण की रक्षा न्यू ही प्रिय...2..(6)
प्रदूषण जीवहत्या वृक्ष काटना... अश्लीलता युक्त टी.वी. सिनेमा।
टेन्शन युक्त आपाधापी जीवन... आधुनिक युग के कार्य न मान्य...2..(7)
बाजारू खाना पीना (तथा) समलैंगिक... लिव इन रिलेशनशिप तथा तलाक।
कन्या भ्रूण हत्या व दहेज हत्या... अयोग्य पढ़ाई हेतु (जो) आत्महत्या...2..(8)
फैशन-व्यसन (व) अनुशासनहीन... आध्यात्मिक विहीन भौतिक जीवन।
नेता अभिनेता खलनेता खिलाड़ी... भ्रष्टाचारी आतंकवादी जो नर-नारी...2..(9)

उनकेवर्चस्व व अनुकरण अग्राह्य... आधुनिक नाम से जो अन्धानुग्राह्य/(अन्धानुकरण)
हम प्रगति (के) पथिक को नहीं है श्रेय... 'कनक' को मान्य है आध्यात्म श्रेय..2.(10)
अभी भी अनेक मार्ग हैं अवशेष... सर्व जीव अधिकार समान विशेष।
पुश-पक्षी जीवों की हत्या न श्रेय... बलि रूप से या कानून रूप अग्राह्य..2.(11)
समतापूर्ण सह अस्तित्व ग्राह्य... शोषक-शोषित भेद-भाव से बाह्य।
पाप ताप सन्ताप से सर्वथा शून्य... सच्चिदानन्दमय जीवन होना है पूर्ण..2.(12)
ओगणा दि= 14/3/2012, रात्रि 2.33

स्व-सत्य की प्राप्ति ही मुक्ति
(दार्शनिक एवं आगमोक्त कविता)
(दार्शनिक, आगमोक्त एवं आध्यात्मिक दृष्टि से सत्य की परिभाषा)

(रागः- 1. न कजरे की धार... 2. छूकर मेरे मन को)

जो नूतन हो पुरातन... सो आदि मध्य अवसान।
जो अकृत्रिम अनिधन... वही सत्य होता है ।।1।।
सत्य होता है अविनाशी... स्वयं भू व स्व-निवासी।
सदा सर्वत्र ही निवासी... विश्व प्रति विश्ववासी ।।2।।
वर्तमान आधुनिक होता... वर्तमान दशा भाव होता।
आधुनिक भाव ही वर्तता... सदा आधुनिक होता ।।3।।
जीव अजीव दो स्वरूप... चेतनाचेतन रूप।
द्रव्य गुण (व) पर्याय... भिन्नाभिन्न (व) तन्मय ।।4।।
धर्म अधर्म आकाश काल... षट् द्रव्य है जीव पुद्गल।
जीव पुद्गलमय संसार... दोनों के बन्ध विकार ।।5।।
जीव के दो भेद जानो... संसारी व मुक्त मानो।
अशुद्ध है जीव संसारी... मुक्त जीव असंयमी ।।6।।
परतन्त्र जीव संसारी... परावलम्बन से दुःखारी।
कर्मबन्ध से है विकारी... कर्म मुक्त से अविकारी/(सुखारी) ।।7।।

दुःख नाशक है अविकार... शुद्ध भाव ही है अविकार
सत्य सनातन शिवकार... 'कनक' सेवित आत्मसार ।।8।।
ओगणा दि= 15/3/2012, रात्रि 2.11

विश्वज्ञ-विश्व उद्धारक-विश्व वन्द्य की स्तुति

(तर्जः- 1. वन्द्य चरण जिनके... 2. ज्योति कलश छलके...)

वन्द्य चरण जिनके...2
जिनके चरणे नतमस्तक है, इन्द्र लोक के ऽऽऽ
वन्द्य चरण जिनके...2 (टेक)
आत्मध्यान से सर्वज्ञ हुए, विश्व विद्या के ज्ञानी जो हुए।
अन्तर्यामी सभी के...2 (1) वन्द्य चरण...
सत्य अहिंसा का पाठ पढ़ाया, विश्व शान्ति का संदेश दिया
पवित्र भाव से...2 (2) वन्द्य चरण...
आत्म विकास को सर्वोच्च कहा, भौतिक विकास अनुगामी कहा।
अनेकान्तमय से...2 (3) वन्द्य चरण...
समता सार्वभौम है कहा, व्यवहार व भाव में कहा।
वैश्विक दृष्टि से...2 (4) वन्द्य चरण...
आत्मा में परमात्मा निहित कहा, शुद्धात्मा ही परमात्मा है।
यथा वृक्ष बीज से...2 (5) वन्द्य चरण...
उन्होंने कहा करो आत्मकल्याण, जिससे होगा विश्व कल्याण।
'कनक' भाये भाव से...2 (6) वन्द्य चरण...

रवीन्द्र राग

अखिल जीव जगत् के लिए आह्वान

(हे विश्वमानव! स्व-पर-विश्वकल्याणार्थे जागो!)

आओ हे वीर! आओ जवान! आओ हे देशवासी!

आओ हे आओ आर्य सन्तान! आओ हे मानव जाति! ऽऽ (टेक)
सत्य को जानो, आत्मा को मानो, करो है विश्वशान्ति
भौतिक ज्ञाने, कुअभिमाने, कभी न मिले शान्ति...2 ।।टेक।।
विवेकहीन स्वार्थभाव में (न) गंवाओ न अहर्निशी....2
कीट पतंग सम जीवन (न) बिताओ न अहर्निशी...2...आओ हे वीर...(1)
अनन्त भव क्षुद्र भवों में...जन्म-मरण तू किया...2
देव-मानव-पशु-पक्षी में...अनन्त जीवन जिया...2...आओ हे वीर...(2)
तथापि तू न सत्य को जाना...न जाना निज स्वरूप...2
जड़ को जाना जड़ को माना...जड़वत् हुआ रूप...2...आओ हे वीर...(3)
इसी निमित्ते भोगों को भोगा...उसमें ही माना सुख...2
इसी के हेतु जो कार्य किया...सो कार्यआत्म विमुख...2...आओ हे वीर...(4)
तेरे ही कुभाव कर्म से जात...भेद कुभेद विभिन्न...2
इसी हेतु से महासंघर्ष....चलता है निशिदिन...2...आओ हे वीर...(5)
स्वभाव जानो सुभाव करो...करो है शुद्धआचार...2
नान्यथा है पथ एक सुपथ...विश्व के कल्याण कर...2
भौतिक ज्ञान शिक्षा संचार...कानून लौकिकाचार...2
आध्यात्मयुत होता निमित्त...अन्यथा विनाश द्वार...2...आओ हे वीर...(6)
यह विज्ञान आध्यात्मज्ञान...लौकिक ज्ञान से परे...2
अमृत तत्त्व प्राप्ति के ज्ञान...वैश्विक शान्ति करें...2...आओ हे वीर...(7)

बच्चों तुम निर्माता हो

(तर्ज- हम को मन की शक्ति देना...)

बच्चों तुम निर्माता हो, भावी भाग्य के
स्वयं के विकास के, राष्ट्र निर्माण के... बच्चों तुम... (टेक)
तीर्थेश माता पिता भी, जो न कर पाए
तीर्थेश जो कर पाये वैसा ही तुम करो
आज जो भ्रष्टाचार है, कल उसे मिटा सको

आज जो न हो पाया, कल तुम कर पाओगे...स्वयं के...(1)
तुम वह स्वस्थ बीज हो, विशाल वृक्ष के
जाति पंथ नाम पर, कोई फूट ना डाले
स्वार्थ से भी ऊँचे हैं, मूल्य शान्ति के...स्वयं के...(2)
संकीर्ण स्वार्थ के लिए, घुटने न टेकना
दिल दिमाग जीभ को, पक्का सदा रखना
सत्य समता शान्ति को, त्याग न करें...स्वयं के...(3)
'कनकनन्दी' भावना, विकास तुम करो
विकास न रुके कभी, मैत्री भाव हो
जीवन सुखमय बने, प्रकाश विस्तारे...स्वयं के...(4)

वैश्विक सच्चा-अच्छा भाव एवं काम

(रागः- 1. न कजरे की धार...)

न विवशता का भाव... हो श्रद्धापूर्वक काम
हो अनुभव से काम... सही निर्णय होता है... हो हो... (टेक)...
  संकीर्ण न हो भाव... उद्दण्ड न हो काम...2
  आत्मविश्वास भाव... सद् विकास होता है... (1)
अहंकार का न भाव... हो आत्मगौरव काम...2
स्वावलम्बन से काम... सच्चा सुख मिलता है... (2)
  भाव न हो भेद-भाव... हो वैश्विक उदार भाव...2
  स्वार्थ न हो भाव... सुप्रभाव पड़ता है... (3)
न हठग्राहिता भाव... हो विवेकग्राह्य काम...2
हो सत्यनिष्ठ काम... सद्ज्ञान बढ़ता है... (4)
  न पक्षपात का भाव... न तोड़-फोड़ का काम...2
  सबमें हो सद्भाव... तब संगठन होता है... (5)
संक्लेश का न भाव... हो सत्य-समता काम...2

हो विमल सहज भाव... सद्धर्म होता है... (6)
हो संस्कार सदाचार... बौद्धिक न विकार...2
हो सर्वोदय का ज्ञान... सही शिक्षण होता है... (7)
न ख्याति पूजा का भाव... हो आत्म-उद्धार काम...2
हो आत्म-प्राप्ति काम... सत् साधक होता है... (8)
हो विनम्र आज्ञाधार... जो गुणग्राही उदार...2
जो ज्ञान-सेवा तत्पर... सच्चा शिष्य होता है... (9)
है 'कनकनन्दी' का भाव... हो विश्व का उद्धार...2
हो सत्य-शान्ति प्रसार... विश्व कल्याण होता है... (10)

दुःख के विश्वरूप एवं सुख प्राप्ति के उपाय

तर्ज- (दुःख से घबराओ.... श्रीपाल चरित्र, दुःखिया सब संसार)

दुःख के बहुविध स्वरूप है जानो,
संख्य असंख्य अनन्त प्रमाण।

यथा विध कर्म तथा विध दुःख,
संकल्प-विकल्प प्रमाण भी दुःख।।(2)।। (टेक)

यथा विध पाप तथा विध दुःख, विषय कषाय प्रमाण भी दुःख-2
यथा विध व्यसन तथा विध दुःख, बहु विध भय प्रमाण भी दुःख-2 दुःख.......

यथा विध अहंकार तथा विध दुःख, बहु विध ममत्व प्रमाण भी दुःख-2
यथा विध अज्ञान तथा विध दुःख, नाना विध कुज्ञान प्रमाण भी दुःख।। दुःख......

यथा विध चिन्ता तथा विध दुःख, नाना विध शंका प्रमाण भी दुःख-2
विभिन्न भ्रष्टाचार सम दुःख जानो, संकीर्णता सम दुःखों को मानो।। दुःख......

शारीरिक रोग प्रमाण भी दुःख, मानसिक रोग समान भी दुःख-2

असत्य कटु वचन प्रमाण भी दुःख, विविध समस्या समान भी दुःख।। दुःख........

यथा विध तृष्णा तथा विध दुःख, नाना विध कमी प्रमाण भी दुःख-2

प्रतिशोध भाव प्रमाण भी दुःख, आकर्षण-विकर्षण समान दुःख।। दुःख..........

व्यक्तिगत दुःखी

नया तर्ज- (मेरा जूता है जापानी........)

कोई धन से दुःखी तो कोई मन से दुःखी,
कोई वचने दुःखी तो कोई जन से दुःखी।
कोई तन से दुःखी तो कोई रोग से दुःखी,
कोई क्रोध से दुःखी तो कोई मान से दुःखी।।
कोई माया से दुःखी तो कोई लोभ से दुःखी,
कोई मोह से दुःखी तो कोई काम से दुःखी।
कोई फैशने दुःखी तो कोई व्यसने दुःखी,
कोई भय से दुःखी तो कोई मद से दुःखी।।
कोई अज्ञाने दुःखी तो कोई कुज्ञाने दुःखी,
कोई चिन्ता से दुःखी तो कोई शंका से दुःखी।
कोई कुधर्मे दुःखी तो कोई अधर्मे दुःखी,
कोई जन्म से दुःखी तो कोई मरणे दुःखी।।
कोई वैभवे दुःखी तो कोई अभावे दुःखी,
कोई संयोगे दुःखी तो कोई वियोगे दुःखी।।

सुख-स्वरूप एवं सुख-प्राप्ति के उपाय

नया तर्ज- (जय हनुमान ज्ञान.....)

सुख के स्वरूप अभी तुम जानो, सुख प्राप्ति के उपाय मानो।

निज शुद्ध आत्म तो सच्चिदानन्द, अव्यय अविकारी ज्ञानानंद।।
समता शुचिता संतोष भाव, क्षमा सरलता सहज भाव।
अहिंसा नम्रता आकिंचन्य भाव, धैर्य एकाग्रता संयम भाव।। (1)
संकल्प-विकल्प रहित है भाव, भय चिंता से मुक्त स्वभाव।
विषय कषाय विवर्जित भाव, फैशन व्यसन से मुक्त स्वभाव।। (2)
ध्यान अध्ययन सहिष्णु भाव, दोष विरहित है निर्मल भाव।
विवेक गुणग्राही उदार भाव, कर्मबंध से रहित स्वभाव।। (3)
स्वभाव सुख तो विभाव ही दुःख, मोक्ष ही सुख तो बंधन दुःख।
विषमता दुःख तो समता सुख, शुद्ध ही सुख है तो अशुद्ध दुःख।। (4)
इन सब भावों में होता है सुख, पराधीन रहित आत्मिक सुख।
''कनकनन्दी'' तो भावना भाये, स्व-पर-विश्व में सुख हो जाये।। (5)

सम्पूर्ण सफलता के मूलसूत्र

सुविचार ही संस्कार-सदाचार-संस्कृति के जनक

(सुविचार से संस्कार, संस्कार से सदाचार, सदाचार से संस्कृति- आध्यात्मिकता)

(ओडिसी बंगला राग...)

बीज से अंकुर उत्पन्न होता... जिससे विशाल वृक्ष बनता।
वृक्ष में फूल-फल बहु आते... जिससे मानव क्षुधा मिटाते।। स्थायी/मूल।।
(सु) विचार से संस्कार उपजता... संस्कार से सदाचार बनता।
जिससे संस्कृति उत्पन्न होती... जिससे मानव श्रेष्ठ बनता।। (1)
(सु) विचार सबका मूल कारण... जिससे बने व्यक्ति महान्।
जिससे सभ्यता संस्कृति बनती... आध्यात्मिकता उत्पन्न होती।। (2)
आध्यात्मिकता है आत्मिक भाव... जिसमें समाहित सुख-स्वभाव।
ज्ञान दर्शन व समता शान्ति... सत्य अहिंसा पावन क्षान्ती।। (3)
इसलिए सुविचार आद्य कर्त्तव्य... हर कार्य में सर्वप्रथम।

इसी में होती है पॉजिटिव शक्ति... हर कार्य को मिलती है शक्ति।। (4)
पॉजिटिव थिंकिंग में करणीय भाव... सनम्र सत्यग्राही भाव।
सरल-सहज उत्साह भाव... आदर प्रेम व उदार भाव।। (5)
फैशन-व्यसन से रहित भाव... श्रद्धा सहित निर्मल भाव।
क्रोध मान माया लोभ रहित... कुण्ठा भय व स्वार्थ रहित।। (6)
इसी से आत्मिक शक्ति बढ़ती... वैश्विक ऊर्जा की प्राप्ति होती।
अन्तरंग-बहिरंग बाधा घटती... सर्वोदय में प्रगति होती।। (7)
आधि-व्याधि-उपाधि घटती... तन-मन-आत्मा को शक्ति मिलती।
वैर-विरोध तनाव रहित... जीवन बनता आदर्श युक्त।। (8)
सर्व धर्म में यह सब कहा... आधुनिक विज्ञान भी यह सब पाया।
'कनकनन्दी' भी अनुभव किया... स्व-पर हित हेतु यह सब गाया।। (9)

आध्यात्मिकता से तन-मन-आत्मा स्वस्थ्य
(आध्यात्मिकता से शारीरिक-मानसिक-आध्यात्मिक स्वास्थ्य लाभ)

(रागः- 1. यमुना किनारे... 2. गहरी गहरी नदिया...)

आध्यात्मिकता को न मानो छोटा सा काम,
आध्यात्मिकता को न मानो खोटा सा काम
इसी से लाभ होते हैं बहुविध,
तन-मन-आत्मा भी होते शुद्ध
कर्म के आस्रव-बन्ध नहीं होते,
आत्मिक गुण भी पुष्ट होते... (स्थायी/टेक)...

आध्यात्मिक नहीं है क्रिया-काण्ड, आध्यात्मिक नहीं है ढोंग-पाखण्ड
आध्यात्मिक होती है आत्मा की शुद्धि, आध्यात्मिक होती है भाव विशुद्धि
क्रोध मान माया लोभ मोह काम भाव, संक्लेश निन्दादि त्याग आत्मभाव...(1)

इसी से तनाव आदि नहीं होते, विविध पाप कर्म भी नहीं बन्धते
विषाक्त स्राव ग्रन्थियों से नहीं झरता, शरीर में टॉक्सिन नहीं बनता
जिससे तन मन आत्मा स्वस्थ्य रहते, जीवन में सुख के फूल खिलते...(2)..

विज्ञान शोध से अभी ज्ञात भी हुआ, आध्यात्मिकता से विविध लाभ ही पाया
शारीरिक लाभ व मानसिक संतुष्टि, आध्यात्मिकता से है मिलती अति
नकारात्मक भाव का होता विनाश, क्रोनिक रोगों का होता है नाश...(3)..

कैंसर ब्रेन इन्ज्युरी अथवा स्ट्रोक, स्पाइनल कॉर्ड इंज्युरी हृदय स्ट्रोक
अनिद्रा चिन्ता व उदास भाव, नहीं होते हैं छोटे खोटे विभाव
शिर व शरीर में भी दर्द न होता, तन मन में हल्कापन भी होता...(4)..

सुख-शान्ति का विस्तार भी होता, स्वच्छ शक्तिशाली ओरा बनता
रोग प्रतिरोधक बल भी बढ़ता, वातावरण पावनमय बनता
कलह-झगड़ा, भेद-भाव न होता, वात्सल्य संगठन सहयोग बढ़ता...(5)..

इसी से प्रतिरक्षा का तन्त्र होता सक्षम, जिससे स्वास्थ्य को मिले अधिक दम
तनाव जनक हार्मोन होता है कम, शीघ्र मृत्यु की सम्भावना होती है कम
विज्ञान का नया शोध यह बताता, भारतीय मत को ही पुष्ट करता...(6)..

आध्यात्मिकता में गर्भित आत्मविश्वास, आत्म विज्ञान तथा आत्म साहस
आत्मानुभव सह सदाचरण, पवित्र समता भाव आत्म रमण
शान्ति समता व पवित्र भाव, क्षमा सरल-सहजता आत्मिक भाव...(7)..

इसलिए मनुआ आध्यात्मिक बनो, कट्टर संकीर्ण धर्मी न बनो
कट्टरता आदि से यह लाभ न होते, इन लाभों से विपरीत ही होते
शुद्ध जल से यथा प्यास बुझती, अशुद्ध जल से रोग मृत्यु भी होती...(8)..

धर्म ज्ञान विज्ञान में जो मैं पढ़ा है, अनुभव द्वारा जो भी पाया है
विश्व हित हेतु यह रचना हुई, आध्यात्मिकता मुझे सदा ही भायी
'कनकनन्दी' इसकी साधना करे, वैश्विक कल्याण की भावना धरे...(9)..

विविध विकासवाद

(विविध विकासवाद की धार्मिक एवं वैज्ञानिक समीक्षा)

(वैज्ञानिक विकासवाद आंशिक सत्य अधिक असत्य)

सुनो सुनो हे! दुनियाँ वालो... विकासवाद की सच्ची कहानी।
भौतिकता से जैविक तक की... तन-मन-आत्मा की अच्छी कहानी।।
''सत् द्रव्य लक्षणम्'' होने के कारण... हर द्रव्य अनादि-अनन्त होता।
उत्पाद व्यय ध्रौव्य युक्त से... परिणमनशील हो स्थित रहता।।
इसी हेतु है अणु से ब्रह्माण्ड... जीव-अजीव सब अस्तित्ववान्।
नवीन रूप से न उत्पन्न होते... विनाश न होते निश्चित प्रमाण।।
तो भी विकास व परिणमन होता... स्व-स्वभाव व गुण-पर्याये।
जीव न होता अजीव स्वरूप... अजीव न होता जीव रूप में।।
जीव पुद्गल धर्म अधर्म... आकाश काल ये षट् द्रव्य जानो।
जीव पुद्गल होते शुद्ध-अशुद्ध... अन्य द्रव्य होते सदा ही शुद्ध।।
शुद्ध में शुद्ध विकास होता... अगुरुलघुगुण कारण होता।
षड्गुणहानि वृद्धि स्वरूप... संख्य असंख्य अनन्त रूप।।
अशुद्ध जीव पुद्गल दोनों... विकास करते भिन्न-अभिन्न।
पुद्गल-पुद्गल बन्ध रूप में... जीव-पुद्गल भी बन्ध रूप में।।
द्विअणुक से अनन्त तक... पुद्गल बन्धते एक-अनेक।
जिससे ब्रह्माण्ड की रचना हुई... वायु से सूर्य तक रचना हुई।।
जीव पुद्गल की मिश्रणावस्था... जिसे कहते हैं संसारावस्था।
सूक्ष्म निगोदिया से मानव तक... क्रम विकास संसारावस्था।।
अनादिकाल से जीव निबद्ध... आठों कर्म से निविड़बद्ध।
जिससे संसार भ्रमण होता... जन्म-मरण व दुःख सहता।।
द्रव्य-भाव-नोकर्म सहित... उत्थान-पतन होता सतत।
निगोद से त्रस पर्याय पाता... द्वीन्द्रिय से पञ्चेन्द्रिय (भी) होता।।
नर नारकी व तिर्यञ्च देव... पञ्चेन्द्रिय में होता है जीव।

इसी में मानव होता है श्रेष्ठ... संसारी जीवों में सर्व उत्कृष्ट।।
श्रेष्ठ भाव जब करे मानव... मानव से बने महामानव।
आध्यात्म विकास जब करता... मोक्ष प्राप्त कर शुद्धात्मा होता।।
यदि कुकर्म है करे मानव... मरकर बने निम्न के जीव।
निगोद तिर्यञ्च नारकी होता... उत्थान के बाद पतन होता।।
ऐसा ही उत्थान-पतन होता... मोक्ष प्राप्ति पूर्व होता रहता।
मोक्ष के बाद न होता पतन... परम विकास मोक्ष ही जान।।
अतएव आत्मविकास करो... मानव जन्म को सार्थक करो।
भौतिक विकास परे भी सोच... 'कनकनन्दी' का यह प्रयास।।

भारतीयों के लिए आह्वान

भारत को पुनः विश्वगुरु बनाने का संकल्प

(रागः- ओडिसी-संस्कृतनिष्ठ... राष्ट्रीय गान नृत्य सहित)

प्राची गगन तीरे... नील समुद्र कूले।
तुंग शिखर मूले... सुभारत भुवने।। प्राची गगन तीरे।। SSS (स्थायी/धत्ता)

भारत में जन्म लेते... महा पुरुष...
तीर्थंकर बुद्ध देव... श्रीराम कृष्ण...
जिनसे जन्म लेते... ज्ञान-विज्ञान...
सभ्यता संस्कृति तथा... आत्मिक ज्ञान...।। प्राची गगन तीरे SSS ।।(1)...

यहाँ से जन्म लेते हैं... आयुर्वेद विज्ञान...
गणित अर्थशास्त्र व... वैश्विक ज्ञान...
जिससे हमारा देश... विश्वगुरु भी रहा...
आध्यात्मिक शासन से... शासन किया...।। तुंग शिखर मूले।। (2)...

अभी तो भ्रष्टाचार में... लिप्त हो रहा...
सर्वोच्च विकास से... भ्रष्ट हो रहा/(नष्ट कर रहा)...

पुनः भारत को अभी... जगना होगा...
आत्म गौरव के साथ... बढ़ना होगा... ।। नील समुद्र कूले।। (3)...

धर्म व विज्ञान को... जोड़ना होगा...
रूढ़िवादी नकल को... छोड़ना होगा...
सत्य व समता पर... चलना होगा...
विश्वगुरुत्व पद को... पाना ही होगा...।। सुभारत भुवने।। (4)...

'कनकनन्दी' इसीलिए... प्रयास रत...
भारतीयों को आह्वान... करे सतत...
भ्रष्टाचार त्याग कर... श्रेष्ठाचार कर...
मोह माया त्याग कर... अमृत वर...।। तुंग शिखर मूले।। (5)...

नृत्य-परेड-बोधमय गीत

प्राचीन गौरव- आधुनिक बोध से हे भारतीय! पुनः विश्वगुरु बनो!
(राष्ट्रीय उद्बोधन कविता)

भारत ओहो भारत...3
कितना सुन्दर देश हमारा... कितनी गरिमा गाथा... (स्थायी)...

हमारे यहाँ जन्म लिया है... अध्यात्म जैसी शिक्षा...2
गणित विज्ञान आयुर्वेद भी... यहाँ की महान् शिक्षा...2 ... (1)
हमारे यहाँ जन्म लिया है... तीर्थंकर महाज्ञानी...2
सदय हृदय महात्मा बुद्ध... पतञ्जली जैसा ध्यानी...2 ... (2)
उमास्वामी यथा सूत्रकार हुए... वीरसेन महाज्ञानी...2
चरक सुश्रुत आयुर्वेदाचार्य... अक्षपाद अणुज्ञानी...2 ... (3)
तर्कधुरन्धर अकलंक सूरी... समन्तभद्र भी तथा...2
यतिवृषभ है महागणितज्ञ... ब्रह्माण्ड की रची गाथा...2 ... (4)

वराहमिहिर भास्कराचार्य भी... महावैज्ञानिक हुए...2
जिनसेनस्वामी रविषेणाचार्य... महाकाव्यकार हुए...2 ... (5)
वाल्मिकी व वेदव्यास भी तथा... कालिदास कवि हुए...2
जयदेव तथा बैजू बावरा... वैश्विक कविता गायें...2 ... (6)
इत्यादि कारण भारत भी कभी... बना था विश्व का गुरु...2
अभी तो भारत स्वतन्त्र हुए भी... नहीं बना विश्वगुरु...2 ... (7)
भ्रष्टाचार प्रदूषण रोगों का... बन रहा शिरमौर...2
अभी तो स्व उद्धार करो है... यह है युग पुकार...2 ... (8)
प्राचीन गौरव आधुनिक बोध... करके हे! समन्वय...2 ???
पुरुषार्थ द्वारा विश्वगुरु बनो...'कनक' करे आह्वान/(ललकार/पुकार)...(9)

ECO-FRIENDLY SONG
पर्यावरण-परिस्थितिकी गीत

मानव पशु-पक्षी के कृतज्ञ बने न कि कृतघ्न

वनस्पति से लेकर पशु-पक्षी भी वैज्ञानिक एवं उपकारी

(वृक्ष से लेकर पशु-पक्षी से भी उपकृत है मानव)

(रागः- शायद मेरी...)

पशु-पक्षी नहीं अज्ञानी-जड़... नहीं होते अपकारी
वे भी होते हैं ज्ञानी-विज्ञानी... होते बहु उपकारी... स्थायी...

मानव पूर्व भी अस्तित्व उनका... विज्ञान ऐसा है माना
मानव समान उनका अस्तित्व... अनादि से धर्म माना
पशु-पक्षी भी पञ्चेन्द्रिय होते... होते भी हैं मन सह
सम्यक्त्व सहित तीनों ज्ञान युक्त... होते अणुव्रत युक्त (1)

वनस्पति से कीट व पतंग... स्व-योग्य इन्द्रिय युक्त
मतिज्ञान व श्रुतज्ञान युक्त... भले न होता सम्यक्त्व

वनस्पति से प्राण वायु मिले... अनाज फूल व फल
औषधि लकड़ी छाया शीतलता... प्रदूषण दोष हर (2)

मधुमक्खी आदि कीट पतंग से... परागण आदि हुए
जिससे अनाज फल प्राप्त हुए... गीत-नृत्ये मन मोहे
गाय बकरी व ऊँटनी भेड़ से... दूध मिले गुणकारी
विहंगम हमें संगीत सुनाये... बहुविध नृत्य करी (3)

विविध आसन संगीत के स्वर... पशु-पक्षी से ही बने
वैज्ञानिक शोध-बोध के निमित्त... इनसे भी शिक्षा मिले
वैज्ञानिक शोध-बोध के पहले... करोड़ों वर्षों के पूर्व
इन्हीं जीवों ने आविष्कार किये... विज्ञान जन्म के पूर्व (4)

कागज का आविष्कार (तो) हुआ है... दो हजार वर्ष पूर्व
ततैया इसका निर्माण करता... करोड़ों वर्षों के पूर्व
सोनार यन्त्र का प्रयोग करती... डॉलफिन है विशेष
मानव निर्मित सोनार से पूर्व... हुआ है लाखों वर्ष (5)

न्यूटन का प्रति-क्रिया सिद्धान्त... स्कूइट करे विशेष/(निष्णात)
करोड़ों वर्षों से प्रयोग करता... जेट विमान सिद्धान्त
गन्ध से आग को जानने का यन्त्र/(अंग)... बिटल/(झिंगुर) करे प्रयोग
इसे तो मानव अब जान पाया... कृत्रिम यन्त्र से संग (6)

सुरक्षा के हेतु एयर बैग का... केनेड पक्षी जो करे
उसका निर्माण विज्ञान ने किया... कुछ ही दशक पहले
शब्द रहित उल्लू तो उड़ते... लाखों वर्ष पहले
निशब्द विमान निर्माण हुआ... अभी तो वर्षों पहले (7)

तैराकी पोषाक मानव बनाया... कुछ ही वर्षों पहले
मिको शार्क तो करोड़ों वर्षों से... करती आयी पहले/(शान से)
केको/(छिपकली) चढ़ती है काँच की दीवार... वैक्यूम सिद्धान्त द्वारा

अभी तो मानव सीख रहा है... केको की पद्धति द्वारा (8)

फ्रिजम के द्वारा बुलफ्रक/(मेंढक) तो... स्वयं की सुरक्षा करता
यह काम अभी विज्ञानी द्वारा भी... सरल में नहीं होता
लंगफिश तो चार साल तक... सूखे में जिन्दा रहती
महाप्रलय व बमविस्फोट से... कंकरोच नहीं मरती (9)

जन्म के बाद भी बच्चादानी में... कंगारू भ्रूण पालती
ध्रुवीय भालू की शीत निद्रा तो... महीनों जारी रहती
इत्यादि अनेक पशु-पक्षी में भी... होती है विचित्र क्षमता
दूरश्रवण व दूरदर्शन या... दूर घ्राण की क्षमता (10)

इसीलिए तो इनके द्वारा भी... होता भविष्य ज्ञान
भूकम्प वर्षा सुनामी आदि का... विज्ञानी से ज्यादा/(श्रेष्ठ) ज्ञान
वनस्पति स्वयं भोजन बनाता... प्राण वायु हमें देता/(की है देन)
इत्यादि का अभी वैज्ञानिक द्वारा... नहीं हो पाया है ज्ञान/(काम) (11)

अतः हे मानव! घमण्ड न करो... न करो उन्हें संहार
तुम्हें जीना है तो उन्हें जीने दो... 'कनकनन्दी' का विचार (12)

वैश्विक स्वास्थ्य हेतु भावना

व्यर्थ - (विनाशकारी भावनाओं को त्यागो मानव)

(मानव व्यर्थ में ही अधिक पाप एवं रोगों को निमंत्रण देता है)

(तर्जः- आत्मशक्ति से ओत प्रोत...)

व्यर्थ के विनाशकारी भावों को, त्याग करो हे मानव-2
इनसे बचने से बच जायेगा, रोग पाप व तनाव-2 (टेक)

इनसे बचने के उपाय सत्य, संयम साम्य भाव
क्षमा दया व सहज सरलता, शौच धैर्य व आत्मिक भाव
क्रोध मान माया लोभ असंयम, ईर्ष्या, घृणा भोग-राग-2

निन्दा असत्य व वाचालता तथा, फैशन-व्यसन मन के रोग-²... (1)

इनसे होता समय शक्ति, साधन धन का दुरुपयोग
पाप बन्ध व मानसिक रोग, होते विभिन्न रोग,
''क्रोध'' से लीवर गॉलब्लेडर में, होते हैं नाना रोग-²
प्रेम नाश तनाव झगड़ा विवेक, नाश व पाप संयोग-²... (2)

''तनाव'' ''चिन्ता'' से पैनक्रियाज में, होते हैं नाना रोग,
बुद्धि विनाश शरीरे दर्द, रक्चाप व हृदय रोग,
''अधीरता'' व ''आवेश'' से, दुर्बल दिल व आंत-²
सही न होते काम जगत् में, होता है दुःखद अन्त-²... (3)

''भय'' से होती हैं गुर्दे व, मुत्राशय में भी हानि,
मन में होता है अस्थिर भाव, चिन्तन काम में हानि
''दुःख'' से फेफड़े बड़ी आँत की, कार्य क्षमता है घटती-²
शरीर इन्द्रियाँ मन आत्मा में, अनेक कमियाँ घेरती-²... (4)

''विचारों से परेशान'' व्यक्ति, दान उपकार नहीं करते,
सुचारू रूप से काम न होते, अनेक संक्लेश आ घेरते,
''लोभ'' से मलत्याग सही न होता, न स्वेद विसर्जन होता-²
फेफड़े ठीक से श्वास न छोड़े, जब मानव लोभ न त्यागे-²... (5)

''लोभ'' से चर्बी संचय होती, जिससे मोटापा बढ़ता,
डायबिटीज जोड़ो में दर्द, आदि दुःखों को सहता,
तन मन जब उद्दण्ड होते, असंयम काम होते-²
फैशन व्यसन मर्यादा हीन, लड़ाई-झगड़ा भी होते-²... (6)

''असत्य'' से तेज होता है नष्ट, जीवन शक्ति विनष्ट,
दिल-दिमाग को लगती चोट, लकवा से शरीर नष्ट,
पागलपन व पथरी होता, संक्लेश तनाव भय होता-²
व्यग्रता ग्लानि व दुःख भी होता, दिमाग में भारीपना-²... (7)

''अहं'' से होता विनय नाश, ज्ञान न होता विकास,
सरल सहज भाव न होता, अहंग्रन्थी का होता विकास,
दंभ से होती कफ की वृद्धि, देह में होती स्थूलता-[2]
गैस समस्या उत्पन्न होती, इन्द्रियें शक्ति भी क्षीण-[2]... (8)

ईर्ष्या से पित्त की वृद्धि जो, इन्द्रियाँ-शक्ति भी क्षीण,
लीवर खराबी जलन होती, हृदय दुर्बल बुद्धि,
अन्य की प्रगति नहीं सुहाती, प्रशंसा सुन दाह होती-[2]
दूसरों के पतन की कामना होती, सच्चे से न प्रीत होती-[2]... (9)

''माया'' से मानव होता चिन्तित, अप्रगट हेतु प्रयत्न,
भोजन सही न पाचन होता, कब्जियत से भी रोग अन्य,
मल-मूत्र त्याग देरी से होता, दुर्गन्धी से मुँह भरा रहता-[2]
माया प्रगट तो होता अवश्य, पाप व दण्ड भी मिलता-[2]... (10)

क्रोधादि भाव से ''हिंसा'' होती, जिससे उक्त समस्या होती,
क्रिया की प्रतिक्रिया अवश्य होती, दृष्टि से सृष्टि उत्पन्न होती,
''दुःखमेव वा'' वीर ने कहा, समस्त पापों को दुःख कहा-[2]
''तृष्णा से दुःख'' बुद्ध ने कहा, चतुः आर्य सत्य में कहा-[2]... (11)

ईसा ने क्षमा सेवा अपनाया, सत्य अहिंसा गाँधी अपनाया,
''प्रज्ञा-अपराध'' त्याग बताया, आयुर्वेद में यह समझाया,
मनोविज्ञान अभी अपनाया, प्राचीन मत को सत्य ही पाया-[2]
होमियोपैथी में सोरा (टैक्सिन) कहा, मनरोग से उत्पन्न कहा-[2]... (12)

व्यायाम से शरीर बल बढ़ता, सात्विक आहार युक्त,
चिन्तन से मानसिक बल बढ़ता, शान्ति से आत्मिक सत्त्व,
स्व-पर-विश्व हेतु गुँथा, कविता रूप में गाथा-[2]
''कनकनन्दी'' की भावना सदा, सर्व जीव पाये सुख सदा-[2]... (13)

(भारतीय अन्तर्ज्ञान से स्टीव जाब्स बना महान् आविष्कारक)

स्टीव जाब्स से प्राप्त शिक्षाएँ

(पाश्चात्य संस्कृति से भारतीय संस्कृति महान् तो भी भारत पिछड़ा क्यों?)

(रागः- जब जीरो दिया मेरे भारत ने...)

क्या हो गया उस भारत को... जो विश्वगुरु पूर्व में रहा
अभी भ्रष्टाचार गन्दगी रोगों में... उच्च स्थान को प्राप्त हो रहा... (स्थायी)...

भौतिकता से आध्यात्म तक में... जो विश्व में शिरमौर/(अग्र) रहा।
धर्म अर्थ और काम मोक्ष में... आत्मशुद्धि का भाव रहा।।... (1)

विश्व को दिया जिसने ज्ञान... आज क्यों वह है पीछे रहा।
बिल गेट्स आज दान देने हेतु... भारतीयों को उपदेश दे रहा।।... (2)

स्टीव जाब्स जब भारत आये... भारत के ग्राम कस्बा में गये।
साधु-सन्त के जीवन/(चारित्र) जाना... अन्तर्ज्ञान का महत्व माना/(जाना)।।...(3)

पाश्चात्य संस्कृति तर्क प्रधान... बुद्धि का महत्व अधिक जान।
कारण प्रभाव करे वर्णन... इसी से परे है अन्तर्विज्ञान।।... (4)

अन्तर्ज्ञान से अन्तः प्रकाश होता... जिससे बाह्य भी प्रकाश होता।
इसी से स्टीव ने किया निर्माण... आईपॉड सहित व आईफोन।।... (5)

जिससे अरबों डॉलर पाया... दूरसञ्चार को सुगम किया।
ज्ञान सहित भी यश कमाया... सबके दिल में राज भी किया।।... (6)

भारत से बना यशस्वी महान्... सात महीना में सीखा जो ज्ञान।
भारतवासी को नहीं है भान... अन्तर्ज्ञान की शक्ति है महान्।।... (7)

इसी से भारत पिछड़ा रहा... अन्तर्ज्ञान बिना क्षमता कहाँ।
प्राण बिना यथा शरीर होता... अन्तर्ज्ञान बिना तथा क्षमता।।... (8)

भारत से सीखे पश्चिम ज्ञान... जिससे बनाये ज्ञान-विज्ञान।
अन्धानुकरण करे भारत जन... अन्तर्ज्ञान बिन न बढ़े ज्ञान।।... (9)

स्टीव से शिक्षा लो भारत जन... आत्मज्ञान/(अन्तर्ज्ञान) का करो सन्मान।
'कनकनन्दी' का सुनो आह्वान... आत्मशक्ति का करो है ध्यान।।... (10)

23 सितम्बर, विश्व हृदय दिवस के अवसर पर

मानव चाहो यदि सदा सुखी रहना

(तर्जः- 1. बच्चों तुम निर्माता हो... 2. परदेसियों से न अखियाँ मिलाना... 3. जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा...)

दिल/(हृदय) दिमाग/(बुद्धि) देह/(शरीर) को सदा स्वस्थ्य रखना
मानव चाहो यदि, सदा सुखी रहना... (स्थायी)...

इसके लिए करो... सदा ही प्रयत्न
पथ्य हो आहार... विहार चिन्तन
शरीर श्रम व सुध्यान प्राणायाम... मानव... (1)

व्यायाम योगासन... पैदल विहार/(भ्रमण)
सात्विक आहार... दुग्ध फलाहार
हरी सब्जी भी खाओ-ताजा व हितकर... मानव... (2)

प्रदूषणों से रहित... स्थान हो तेरा सदा
आहार विहार... शयन ध्यान तथा
व्यायाम प्राणायाम... स्वाध्याय श्रम तथा... मानव... (3)

सादा हो जीवन... प्रकृति अनुसार
फैशन-व्यसनों से... रहो सदा दूर
क्रोध मान माया लोभ... मोह करो दूर... मानव... (4)

दिमाग रहे शान्त... तनाव विवर्जित
जिससे रहेगा... दिल/(हृदय) तन्दुरुस्त
जिससे रहोगे तुम भी... स्वस्थ्य मस्त... मानव... (5)

हरति ददाति जो... रक्त को यमयति
हृदय तेरा रहेगा... सदा/(सदैव) स्फूर्ति/(चुस्ति)
जीवन में रहेगी... तेरी सदा मस्ती... मानव... (6)
प्रतीक हृदय तुम्हारा... दयार्द्र का
करुणा प्रेम वात्सल्य... कोमल का
परोपकार सेवा व... दानादि का... मानव... (7)
इनके/(इसके) बिना तेरा... हृदय जड़ाकार
शक्ति स्फूर्ति बिना... मांस कलेवर
जिससे होता है... हृदय विकार... मानव... (8)
'कनकनन्दी' कहे/(अतएव मानव) बनो... तुम सदाचारी
शरीर श्रम युक्त... दयालु शाकाहारी
करो हे! पुरुषार्थ... सर्व दुःखहारी/(सर्व सुखकारी)... मानव...(9)

आॅल मिक्स साँग

प्राकृतिक जीवनचर्या से विश्वमानव सुखी बने!

(सर्व जागरण प्रभाती गीत)

(विभिन्न राग-भाव-भाषा-विषयों से युक्त कविता)

(रागः- 1. रुम झुम करे... 2. उडिया राग... 3. वन्द्य चरण... 4. जय दुर्गे छप्पर...)

दिवस के पूर्व काळे/(काले), कुक्कुट आह्वान करे/(केले)
लालिमा/(अरुण) प्रगट झाले/(होले), सूर्याभिनन्दे/(सूर्याभिवन्दे)।।...2

मन्द वयार सञ्चरे, पुष्प सुगन्ध विस्तारे।
मन्दिर के घण्टी बजे, विहंग गाये।।...2
माताएँ भी निद्रा त्यागे, सन्तानों को भी जगाये।
जागो जागो प्राण प्रिये!, प्रभात होले/(झाले)।।...2

शीघ्र तुम निद्रा त्यागो, प्रभु स्मरण भी करो।
हाथ-पैर मुँह धोओ, ध्यानादि करो।।...2
शौच दन्त धौत करो, प्रातः भ्रमण भी करो।
प्रकृति संगति करो, योगादि करो।।...2
प्रकृति को तू निहारो, सहजता बोध करो।
वैश्विक भावना धरो, शुद्धात्मा ध्याओ।।...2
स्नान मञ्जन नन्तर, शुद्ध वस्त्र को तू धारो।
देवालय को तू जाओ, पूजादि/(प्रेयर)/(अर्चनादि) करो।।...2
ध्यान-अध्ययन करो, मनन-चिन्तन करो।
गुरु उपदेश सुनो, सुज्ञान वरो।।...2
गुरु को आहार आलो, अतिथि सत्कार करो।
शुद्ध भोजन तू करो, स्कूल को जाओ।।...2
प्रार्थना/(प्रेयर) वन्दना करो, अध्ययन शोध करो।
क्रीडा व्यायाम भी करो, मित्रता करो/(वरो)।।...2
राष्ट्रप्रेम विश्वमैत्री, सेवा स्वार्थत्याग प्रीति/(प्रति/नीति)।
सर्वोदय शिक्षा नीति, हृदय धरो।।...2
धर्म अर्थ काम मोक्ष, पुरुषार्थ/(इफेट भी) करो श्रेष्ठ।
फैशन-व्यसन त्यागो, आदर्श बनो।।...2
सूर्य अस्त पूर्व में/(पहले/बिफोर), भोजन के अनन्तर
अरुणिमा के समये/(किरणें), भ्रमण करो।।...2
सन्ध्या क्रिया ध्यान करो, अध्ययन ज्ञान करो।
प्रभु स्मरण सहित, निद्रा को वरो।।...2
एकान्त शान्त निवासे/(निलये), पवित्र व सुवासिते।
गाढ़ निद्रा अनन्तर, जागो हे धीरे।।...2
ओल्ड गोल्ड को भी मानो, अप टू डेटेड भी बनो।
फॉरवर्ड काम करो, मॉडल बनो।।...2
आध्यात्मिक भाव धरो, वैज्ञानिक काम करो।

मोरलिस्ट वर्क करो, मॉडल बनो।।...2
प्रकृति के साथ चलो, आध्यात्मिक भाव धरो।
सहज पवित्र बनो, मोक्ष/(मुक्ति) को वरो।।...2
'कनकनन्दी' भी चले, विश्वमानव भी चले।
सत्य साम्य सुखवरे/(सुखी बने), अमृत पीवे।।...2

प्राकृतिक संगीत एवं नृत्य

बंगला राग : झूम झूम करे (विभिन्न भाषायुक्त प्रकृति गान)

प्रकृति संगीत गाये/(गाती)... प्राकृतिक गीत गाये/(गाती)
क्रय-विक्रय के बिना... मधुर/(गाती) स्वरे

प्रातःजागरण गीत... कुक्कुट गाये संगीत
उठो उठो कर्मवीर!... प्रभात हुआ/(होले/झाले)

मन्द बयार भी गाती/(गाते)... रोमांचित तनु होती/(हुए)
प्रगति पाठ पढ़ाती/(पढ़ाये)... कोमल/(मृदु) स्वरे

कळकंठे गीत गाये... झरना झर्झर स्वरे
विघ्न बाधा पार करो... शिक्षा भी आले

कोयल गाये विताने... आम्रतरु उपवने
श्याम अंगे गुप्तस्थाने... निष्पृह भावे

नृत्य सहित संगीत... सप्तरंग विभूषित
मुकुट मण्डित शिरे... मयूर गाये/(नाचे)

भ्रमर गुञ्जन करे... गुनगुन नाद करे
मकरन्द पान करे... मधुप नाचे

गिलहरी नृत्य करे... हरिण कुलांच भरे
वानर छलांग मारे... मयूर नाचे

तितली राजकुमारी... बहुरंगे मनोहारी
पुष्प कानन विहारी... कोमल अंगी

बादल बाजा बजाये... सरिता वीणा बजाये
सिन्धु/(सागर) दुन्दुभी बजाये... विविध ताने

वृषभ शंख बजाये... समीर/(पवन) वंशी बजाये
धरती रंगमंच में... संगीत गूंजे/(बजे)

चिड़िया चहचहाती... बुलबुल गाना गाती
कबूतर नृत्य करे... शेर/(सिंह/बाघ) दहाड़े

मेंढक टरटराये... कौआ/(कागा) काऊँ काऊँ करे
हाथी दादा भी चिंघाडे... बिल्ली (माजर) म्याऊँ म्याऊँ करे

घोटक/(घोड़ा/अश्व) हिनहिनाये... गाय माता रंभाये
गधा ढेंचू ढेंचू करे... कुत्ता/(श्वान) भौं भौं बोले/(पुकारे)

चूहा/(मूषक) चीं चीं करे... गिलहरी चिक चिक करे
झींगुर झंकार करे... उच्च/(सतत) निनादे

बिजली प्रकाश करे... कुसुम सुगन्ध भरे
तरु लता शोभा करे... विविध रंगे/(वर्णे)

पराग रंग/(वर्ण) विखेरे... सर सर पत्र करे
वर्षा रिमझिम करे... समीर/(पवन) चले

मानव आनन्द पाये... तथापि कृतघ्न होय
उनका संहार करे... निर्दय भावे/(मानसे)

'कनकनन्दी' ये भाये... प्रकृति भी सुखी रहे
उपकृत सब होवे... आनन्द पाये

विश्व शान्ति पाठ पढ़ाते हैं भारतीय सूत्र

(वैश्विक ज्ञान-विज्ञान है भारतीय ज्ञान)

(तर्ज – क्या मिलिये ऐसे लोगों से... (2) आत्म ज्ञान की ज्योति जलाले....)

भारतीय महानता के सूत्र अपनाओ, वैश्विक समस्या का समाधान पाओ।
'अहिंसा' सिखाती विश्वशान्ति पाठ, उदारता सिखाती विश्वमैत्री पाठ ।।1।। (टेक)
'परस्पर उपग्रह' सिखाता हमें, पर्यावरण की रक्षा करना,
वैश्विक कानून 'पंचव्रत' सिखाते, 'सत्य समता' संविधान गाते।। (1)
'जीओ और जीने दो' लोकतंत्र बताता, 'अपरिग्रहवाद' समाजवाद सिखाता।
'सर्व जीव समान' जीवाधिकार को बताता, 'क्षमाधर्म' निरस्त्रीकरण बताता। (2)
'सर्वं सत्ये प्रतिष्ठितं' सह अस्तित्व बताता, 'आध्यात्मवाद' वैश्विक बनाता,
'अनेकान्त सिद्धान्त' व्यापक बनाता, 'स्याद्वाद' सहचर्या जो सिखाता।। (3)
'शाकाहार' से त्रस जीवों की रक्षा, 'निर्व्यसनी' से स्वास्थ्य सुरक्षा.
'सादा जीवन उच्च विचार', 'विनम्रता' गुणग्राही व्यवहार।। (4)
'पंच अजीव' से विज्ञानी बनते, 'पुद्गल' से भौतिकवादी बनते।
'लोकालोक' से विश्वविज्ञानी बनते, 'अगुरुलघु' से एम-थ्योरी जानते।।(5)
'नयप्रमाण' से तर्क के ज्ञाता, 'लेश्याज्ञान' से मनोज्ञाता,
'गुणस्थान' आत्मविकास सिखाता, 'ध्यान' आत्मबल को जगाता।।(6)
'स्वावलम्बन' सिखाये श्रमशील होना, 'श्रमण' से समताचारी बनना,
'चारों आश्रम' जीवन प्रबन्ध सिखाते, 'चारों पुरुषार्थ' उद्यमी बनाते।। (7)
'महान्पुरुष' हमारे आदर्श होते, 'धार्मिक ग्रंथ' विश्वकोष होते,
'संस्कृति' हमारी आत्मिक होती, 'परम्परा' हमारी शिक्षाप्रद होती।। (8)

इसलिये भारत 'विश्वगुरु' कहलाया, विज्ञान-गणित 'आद्यगुरु' कहाया,
अब हमें स्वयं को जगाना पड़ेगा, तब विश्व में अग्रस्थान बनेगा।। (9)
'कनकनन्दी' सनम्र प्रयासरत है, जगकर जगाने का प्रयास सतत है,
अमृत पुत्र हम अमृत पीयेंगे, 'विश्व हित' हेतु अमृत बाटेंगे।। (10)

हे भारतीय ! पुनः जागो, स्वगौरव प्राप्त करो

(राष्ट्रीय आह्वान गीत, प्रबोधन गीत)

(तर्ज- 1. करो कल्याण आतम का... 2. हे वीर तुम्हारे... 3. आओ बच्चो... 4. दुःख से घबराओ... श्रीपाल चरित्र।)

हे भारतीय ! तेरे नाम पर, एक शुभ संदेशा लाया हूँ।
तेरे पूर्वज तेरे कर्त्तव्य क्या, ये तुझे बताने आया हूँ।।(टेक)

तुम्हारे पूर्वज न थे बन्दर, वे तो थे आर्य ऋषिवर।
अरबों खरबों वर्ष पूर्व से ये, यहाँ के आर्य कुलकर (1)।। हे...

तेरे पूर्वज न थे अनार्य, न ही विदेश से आने वाले।
अनादिकाल से भारत भूमि, रहा आर्यों का निवास स्थल (2)।। हे...

तुम्हारे पूर्वज हुये तीर्थंकर, चक्रवर्ती नारायण हलधर।
ऋषि मुनि वैज्ञानिक लेखक, आयुर्वेद गणितज्ञ कलाधर।। (3)।। हे...

इसलिये तो भारत देश रहा, विश्व का श्रेष्ठ गुरुवर।
विश्व का किया भरण पोषण, ताकर हुआ भारतवर्षवर।।4।। हे...

दिया विश्व को ज्ञान विज्ञान, गणित कला आयुर्वेद ज्ञान।
युद्धकला राजनीति ज्ञान, न्याय तर्क दर्शन सुज्ञान।।5।। हे...

सबसे महाविज्ञान दिया, जिसका नाम है आध्यात्मज्ञान।
जिस ज्ञान को लेने आते हैं, विदेशों से ज्ञानी महान्।।6।। हे...

भारत से ही गणित फैला, सर्वोच्चज्ञान व आत्मविज्ञान।
जिस कारण से अन्य देश भी, बनते गये सुसभ्य सुजान।।7।। हे...

अन्तर्कलह फूट के कारण, भारत का हुआ दीर्घ पतन।
राजनैतिक पराधीनता से, सभ्यता संस्कृति का हुआ पतन।।8।। हे...

अभी स्वतंत्रता के बाद भी, देश में नहीं हुआ पूर्ण उत्थान।
भ्रष्टाचार फैशन व्यसन से, देश का हो रहा पुनः पतन।।9।। हे...

जागो उठो हे आर्यवीरवर !, करो देश का पुनः उत्थान।
तुम्हारे आत्मिक उत्थान से ही, राष्ट्र का होगा पुनः उत्थान।।10।। हे...

''कनकनन्दी'' तो जगा रहे हैं, ज्ञान-विज्ञान आह्वान द्वारा।
आर्यवीर देर न करो, राष्ट्रहित हेतु करो उत्थान।। 11।। हे...

ग्रामीण प्रकृति एवं संस्कृति

(तर्ज- पूछ मेरा क्या नाम रे, नदी किनारे गाँव रे...)

छोटा मेरा गाँव रे, प्रकृति की छाँव रे
भूगोल पोथी इतिहास में, नाहीं तेरा नाम रे...।। टेक/स्थायी

नींव समान तुम पत्थर, देखा सुना न जाए रे
भोजन रस दूध से, खिलाना पिलाना काम रे... छोटा मेरा... (1)

भोला भाला भद्र मानव, रहते तेरे गेह में
नंग-धडंगे बाल गोपाल, खेले तेरे नेह में... छोटा मेरा... (2)

बाग-बगीचे भूषण तेरा, शस्य व खेती वसन तेरा
संस्कृति तेरी पावन धारा, शीतल प्रेम बहाती सारा... छोटा मेरा... (3)

तू ही पोषक पशु-पक्षी के, तू ही पोषक धनी-मानी के
तू ही रक्षक पेड़-पौध के, तू ही सेवक साधु-सन्त के... छोटा मेरा... (4)

तू ही अभी उपेक्षित है, शिक्षित शहरी जन से रे

गँवार पिछड़ा तुम को माने, कृतघ्न शोषणकारी रे... छोटा मेरा... (5)

उपेक्षित से उपेक्षित है, आर्यों की शान-मान रे
जड़ के बिन वृक्ष सम है, फल न फूल न जान रे... छोटा मेरा... (6)

तेरे बिन न बचे नगर, न बचे सरकार भी
समाज संस्कार सरोकार है, बचे न प्रेम विचार भी... छोटा मेरा... (7)

भौतिकता की चकाचौंध के, त्यागो बन्धन सारे
प्रेम शान्ति प्राप्ति के हेतु, गाँव में आओ प्यारे... छोटा मेरा... (8)

भो इंडियन! इडियट को त्यागकर विश्वगुरु बनो!

(तर्ज- 1. सुनो-सुनो ऐ दुनियाँ... 2. रात कली इक... 3. जीवन में कुछ करना... 4. नगरी-नगरी...)

सुनो इंडियन सुनो हिंग्लिस्थानी, तुम्हारे ढोल की पोल कहानी।
जिसे सुनने की इच्छा न करते, स्वर्ग के देव क्या तिर्यंच प्राणी।।(टेक)

शिक्षा के नाम पे रटन्त तोता, संस्कार संस्कृति चारित्र बिना।
नम्बर आधारित प्रयोग शून्य, जड़-फल रहित वृक्ष है यथा।। सुनो...

सादा जीवन उच्च-विचार, आध्यात्मभाव विश्वबन्धुत्व।
इससे रहित आडम्बरपूर्ण, फैशन-व्यसन भ्रष्ट चारित्र।। सुनो...

परोपकार व नीति रहित, शोषण मिलावट युक्त व्यापार।
भ्रष्टाचार ही तेरा आचार, धर्म नियम सबसे हैं दूर।। सुनो...

महान् भारतीय भाषा भोजन, वेश-भूषा रहित तेरा फैशन।
इसी काम में विश्व चैम्पियन, नीली लोमड़ी न तेरे समान।। सुनो...

अकल बिना नकल में तुझसे, बन्दर तोता गिरगिट हारे।
मौलिक श्रेष्ठ उपकारक शोध, बोध खोज आदि में कोरे।। सुनो...

गप्पे लड़ाने डिंग हांकने, आलस्य प्रमाद मल फैलाने।
इसके लिये विश्वगुरुत्व, नोबेल प्राप्त योग्यता माने।। सुनो...

आधुनिकता का नशा तुम्हारा, सब नशा में सबसे प्यारा।
इसके लिये सभी वर्जनीय, धन, मान, स्वास्थ्य धर्म भी सारा।। सुनो...

जिस संस्कृति को पाश्चात्य ज्ञानी, श्रेष्ठ मानकर ग्रहण करे।
उस संस्कृति को त्याग करके, अपसंस्कृति पालो क्यों प्यारे।। सुनो...

धर्म अर्थ काम मोक्ष मध्य में, अर्थ काम ही तुमको प्यारे।
गिद्ध पक्षी सम तुम्हारी दृष्टि, भौतिक भोग को सदा निहारे।। सुनो...

धर्म भी करो उत्सव पालो, पवित्र उदार भावना बिना।
धन मान जन प्रसिद्धि हेतु, धर्म क्यों ओढ़ो भावना बिना।। सुनो...

गुरु कुंभार कुंभ शिष्य सम, गढ़ गढ़ काढूँ मैं तेरा खोट।
सुन्दर सुडौल पात्रता हेतु, पवित्र भाव से मारुँ मैं चोट।। सुनो...

तुम आर्यपुत्र अमृत हेतु, करो पुरुषार्थ सत्य निष्ठा से।
''कनकनन्दी'' की भावना सदा, विश्वगुरुत्व को पाओ शीघ्र से।। सुनो...

अपनी महत्ता हे मानव! तुम तो मानो

(तर्ज- 1. दे दी हमें आज़ादी बिना... 2. ओ दीनबन्धु श्रीपती... 3. जय जय श्री अरहन्त देव...)

अपनी महत्ता हे मानव! तुम तो जानो,
अपनी उपलब्धि का उपयोग करना भी जानो
अनन्त जन्म बाद मिले मानव जन्म है,
मोक्ष के साधनभूत यह उत्तम/(श्रेष्ठ) जन्म है... (टेक)

यदि आत्म विकास न किया इस जन्म में
अधोपतन निश्चय जानो इस जन्म में

अनन्त भव भ्रमण होगा नीच गति/(योनि) में,
नरक निगोद पशु तिर्यञ्च नीच गति/(योनि) में... (1)

मानव के आयु गति शरीर ज्ञान को जानो,
अत्यन्त विशिष्ट है संसार में जानो
इसके सदुपयोग से परम विकास है,
यदि किया दुरुपयोग तो पतन अवश्य है... (2)

आयु का सदुपयोग जन्म नाश निमित्ते,
गति का सदुपयोग पञ्चम गति/(निर्वाण) निमित्ते
देह/(शरीर) का उपयोग विदेही होने के हेतु,
ज्ञान का उपयोग सर्वज्ञ होने के हेतु... (3)

तेरा शिर है महान् उन्नति का है निशान,
आत्म गौरव की ऊँचाई का प्रतीक है महान्
देव शास्त्र गुरु गुण गुणी प्रति यदि न झुका है,
अहंकार का प्रतीक निश्चय से मान है... (4)

विशाल मस्तिष्क तेरी ज्ञानवृद्धि निमित्ते,
हिताहित विवेक की प्राप्ति के निमित्ते
सीधा मेरुदण्ड तेरा सीधा विकास हेतु है
उन्नत हाथ तेरा महान् कर्त्तव्य/(कार्य) हेतु है... (5)

कर्ण का सदुपयोग तत्त्व श्रवण द्वारा रे,
चक्षु का सदुपयोग प्रभु दर्शन द्वारा रे
जिह्वा का सदुपयोग तत्त्वचर्चा होने से,
कण्ठ का सदुपयोग प्रभु गुणगान से... (6)

पैर का सदुपयोग तीर्थयात्रा के द्वारा,
पेट का सदुपयोग सात्त्विक अन्न के द्वारा

अन्न का सदुपयोग सच्चा कार्य होने से,
जीने का सदुपयोग दिव्यज्ञान प्राप्ति से... (7)

धन का सदुपयोग चतुर्विध दान के द्वारा,
समय का सदुपयोग परोपकार के द्वारा

साधनों का सदुपयोग चतुर्विध दान के द्वारा,
उपलब्धि का उपयोग सदुपयोग के द्वारा... (8)

'कनकनन्दी' तुम सदा सदुपयोग ही करो,
दुरुपयोग कभी भूलकर किसी का न करो

तेरा उपयोग है तेरा भाग्य निर्माता,
कर्त्ता धर्त्ता हर्त्ता भोक्ता अथवा ज्ञाता... (9)

अपनी महत्ता हे मानव! तुम तो जानो,
अपनी उपलब्धि का उपयोग करना भी जानो

अनन्त जन्म बाद मिले मानव जन्म है,
मोक्ष के साधनभूत यह श्रेष्ठ/महान् जन्म है।

"भारतीय बने सु-भावधारी"

तर्ज :- (हे परम कृपालु...)

(भारतीयों की 28 कमियों को दूर करने के उपाय)

त्यागो भारतीय रुढ़िवादिता, सत्य-तथ्य को स्वीकार करो ।
संकीर्णता का भाव त्यागकर, उदारता का भाव धरो ।। (टेक)

अन्धानुकरण की वृत्ति त्यागकर, परीक्षा प्रधानी तुम बनो ।
अकल बिना नकल को छोड़ो, गुण ग्राहकता भाव धरो ।। (1)

ढोंग-पाखण्ड़ की वृत्ति छोड़कर, सरल-सहज ही चर्या करो ।
फैशन-व्यसनों से दूर-रहकर, सादा जीवन उच्च भाव धरो ।। (2)

रटन्त पढ़ाई की डिग्री छोड़कर, शोध-बोधात्मक कार्य करो ।
अन्धा विदेशी कानून त्यागकर, सत्य-समता का न्याय करो ।। (3)

गुलामी भाषा का मोह छोड़कर, मातृभाषा का भी ज्ञान करो ।
पाश्चात्य की अपसंस्कृति त्यागकर, भारतीय संस्कृति हिये धरो ।। (4)

अश्लील अस्वास्थ्यकर वेश त्यागकर, शालीन स्वास्थ्यप्रद वेश धरो ।
हिंसाकारक रोग जनक खाद्य छोड़कर, स्वास्थ्यप्रद शाकाहार करो।। (5)

परावलम्बी प्रमाद दूरकर, अप्रमादी स्वावलम्बी बनो ।
निन्दा चुगली गप्पे छोड़कर, हितमित प्रिय वचन बोलो ।। (6)

अश्लील हुल्लड़ गाना छोड़कर, शिक्षाप्रद (अच्छा) गाना गाओ ।
वित्तरागता का भाव छोड़कर, वीतरागता भाव धरो ।। (7)

कट्टरता का पंथ छोड़कर, साम्य भाव का पथ धरो ।
एकान्त का आग्रह छोड़कर, अनेकान्त का भाव धरो।। (8)

बाह्यतप का ढोंग छोड़कर, इच्छा व ईर्ष्या का भाव तजो ।
तन से धर्म का पालन छोड़कर, नव कोटी से धर्म करो ।। (9)

प्रदर्शन का भाव त्यागकर, आत्मदर्शन का भाव धरो ।
माला फेरना क्रिया त्यागकर, मन परिवर्तन (मनमंजन) की क्रिया करो ।। (10)

गन्दगी फैलाना वृत्ति छोड़कर, सर्वत्र स्वच्छता का कार्य करो ।
राष्ट्रीय सम्पत्ति को नष्ट न करो, अनुशासन से कार्य करो ।। (11)

भेद-भाव का भाव त्यागकर, प्रेम एकता भाव धरो ।
कार्य संस्कृति पालन करके, भ्रष्टाचार का त्याग करो ।। (12)

आगम-अनुभव दोनों मिलाकर, यह भाव कविता रची गई ।
'कनकनन्दी' तो भाव पुजारी, भारतीय बने सुभावधारी ।। (13)

विज्ञान एवं गणित का सच्चा तथा व्यापक स्वरूप

(धर्म रहित विज्ञान अन्धा, अवैज्ञानिक धर्म पंगु!)

(तर्ज- 1. यमुना किनारे श्याम.... 2. अच्छा सिला दिया....)

वैज्ञानिक प्रयोग तो किया भी करो, ब्रह्माण्ड के रहस्यों को खोजा भी करो
खोज बोध शोध को बढ़ाया करो, सत्यज्ञान प्राप्ति हेतु आगे ही बढो
प्राप्त ज्ञान से विश्व कल्याण करो, विज्ञान की सीमा को बढाते चलो... (स्थायी)

सापेक्ष सिद्धान्त तथा अणु सिद्धान्त, पर्यावरण रक्षा तथा जीव सुरक्षा;
शाकाहार करना तथा स्वास्थ्य विज्ञान, ब्रह्माण्डीय ज्ञान तथा मनोविज्ञान;
भौतिक ज्ञान तथा रसायन ज्ञान, जीव विज्ञान तथा जिनोम ज्ञान... (1)

यान वाहन व कम्प्यूटर ज्ञान, टी.वी. मोबाइल आदि सञ्चार ज्ञान;
इत्यादि शोध बोध आविष्कार से, विज्ञान का उपकार मानव जाति के;
पर्यावरण रक्षादि से प्राणी मात्र के, कार्यकारण सूत्र से सूक्ष्म दृष्टि के... (2)

बहुविध उपकार जीव मात्र के, संकीर्णता नाशक बहुदृष्टि से;
विज्ञान ने सिखाया वैश्विक दृष्टि, कट्टरता के नाशक है विज्ञान दृष्टि;
इसलिए विज्ञान विकास कर रहा, सर्वमान्य विषय वो बन रहा... (3)

तथापि अनेक दोष विज्ञाने स्थित है, सार्वभौम सत्य से दूर ही स्थित है
अमूर्तिक अभौतिक का ज्ञान नहीं है, चैतन्य आत्मा का तो भान नहीं है
अनन्त अनादि का तो पता नहीं है, आत्मकल्याण का ठिकाना नहीं है...(4)

पुनः जन्म सिद्धान्त व कर्म सिद्धान्त, पुण्य पाप बन्ध मोक्ष आत्म सिद्धान्त,
इत्यादि महाज्ञान का नहीं है भान, इसलिए विज्ञान है अपूर्ण ज्ञान;
अनिर्णीत अपूर्ण व भौतिक ज्ञान दुरुपयोग से अहित है ज्ञान/(जान)... (5)

विज्ञान से जायमान प्रदूषण से, ग्लोबल वार्मिंग व दिनचर्या से
यान वाहन से मरे अनेक जान हैं, अस्त्र शस्त्र से मारे असंख्य/(अनेक) जान हैं
अनेक रोगों का विकास इससे हुआ, वरदान व अभिशाप विज्ञान हुआ... (6)

अध्यात्म व विज्ञान के दोनों मेल से, विश्व का कल्याण होगा सच्चा दिल से
परस्पर मिलने से होंगे वरदान, विरोधी होने से नाशक निदान
धर्म के बिना विज्ञान अन्धा समान, विज्ञान के बिना धर्म पंगु समान... (7)

अवैज्ञानिक धर्म तो रूढ़ि समान, लकीर के फकीर अन्धश्रद्धा अज्ञान
संकीर्ण कट्टरता आतंकवाद' हिंसा बलि प्रथा भेद-भाव कुज्ञान
प्रतिशोध भाव युक्त युद्ध पिपासु, आक्रमण प्रेरक रक्त पिपासु ... (8)

वैज्ञानिक धर्म इससे विपरीत जान, अहिंसा सत् अचौर्य विवेकवान्
क्षमा शुचिता उदार सहिष्णु जान, स्व-पर-विश्वकल्याणक करुणावान्
सतत प्रगतिशील समतावान् ,पर्यावरण रक्षक आध्यात्म ज्ञान/(जान)... (9)

वैज्ञानिक धर्म हेतु करो प्रयास, दोनों के मिलन से विश्वविकास
विज्ञान भी भौतिक सीमा को त्यागे, धर्म भी कट्टरता भाव को त्यागे
दोनों ही परस्पर गुणों को जाने, 'कनकनन्दी' का आह्वान दोनों ही माने... (10)

विश्व का सही विकास धर्म और विज्ञान के सहयोग से

तर्ज : (आओ बच्चों तुम्हें... हर बाला देवी की प्रतिमा, बच्चा-2 राम है...)

सत्य रूप प्रगटेगा उस दिन, विश्व के सही विकास का
जिस दिन होगा सहयोग विश्व में धर्म और विज्ञान का
वन्दे आत्म ज्ञानम्... जय हो विज्ञानम्।। टेक।।

भौतिक तत्त्व के परे विज्ञान भी, आत्मा को सत् मानेगा
मूर्तिक तत्त्व के साथ भी जब, अमूर्तिक तत्त्व को मानेगा
अनादि अनन्त सत्य होता है, जब ऐसा वह मानेगा
तब विज्ञान भी आगे बढ़ के, धर्म सहयोगी बनेगा... जिस दिन होगा... (1)

रूढ़िवाद को त्याग धर्म जब, उदारता को मानेगा
संकीर्णता की सीमा लाँघकर, मिथ्या मत को त्यागेगा
भेद-भाव और अपना-पराया, छोड़ सत्यग्राही होगा
वैज्ञानिक दृष्टि अपनाकर, त्यागी सहिष्णु बनेगा... जिस दिन होगा... (2)

मिलकर दोनों जब अहिंसा शान्ति से काम लेंगे
आडम्बर व मिथ्यादंभ को, स्वप्रेरणा से त्यागेंगे
शाकाहार व सदाचार से, जीवन जब सादा होगा
आध्यात्मिक शक्ति जागरण से, विश्व विकासशील होगा... जिस दिन होगा... (3)

शिक्षा कानून व राजनीति में, जब इनका प्रयोग होगा
व्यक्ति परिवार समाज राष्ट्र, विश्व को सहज मान्य होगा
सहअस्तित्व से जीवन जीने, विकास हेतु अवसर होगा
सत्ता सम्पत्ति बुद्धि शक्ति का, दुरुपयोग कभी न होगा... जिस दिन होगा... (4)

कर्त्तव्य अधिकार के बल पर, परस्पर उपग्रहो होगा
सर्वात्मा में समभाव रखकर, भाव विश्वमैत्री होगा
पवित्र कर्त्तव्य को पूजा मानकर, निष्काम भाव जागेगा
'कनकनन्दी' की भावना है ये, विश्व में सर्वोदय होगा... जिस दिन होगा... (5)

विज्ञान की उज्जवल गाथा

(विज्ञान का वरदान)

सुनो सुनो हे! दुनियाँ वालों, विज्ञान की उज्जवल गाथा
जिसे सुनकर तुम्हें ज्ञात होगी विज्ञान की पवित्र आत्मा/(वरद गाथा)... (टेक)

संकीर्णता व रूढ़िवादिता को दूर करती है विज्ञान-यात्रा
सत्य-तथ्य पूर्ण क्रमबद्धता ही विज्ञान की पवित्र-आत्मा... (1)

पन्थ, परम्परा, जाति, राष्ट्र की सीमा से परे है विज्ञान दृष्टि
सर्व जीवों की हितसाधना में प्रगतिशील है विज्ञान सृष्टि... (2)

अणु से लेकर ब्रह्माण्ड तक की खोज में रत है विज्ञान-रुचि
जीव जगत् व ब्रह्माण्ड-रहस्य के शोध-बोध में सदा प्रवृत्ति... (3)

रोग निवारण दीर्घ जीवन व सुख साधन रत विज्ञान वृत्ति
दूरसञ्चार व एकीकरण में विज्ञान की होती तीव्र प्रवृत्ति... (4)

अतिवृष्टि अनावृष्टि महामारी समस्या का करे निवारण
भुखमरी भूकम्प बाढ़ आदि समस्या का करे निस्तारण... (5)

यान-वाहन व कल कारखाना यंत्र आदि का दक्ष निर्माता
सुई से लेकर कम्प्यूटर तथा रॉकेट तक के आप विधाता/(निर्माता)... (6)

मानव मन से उत्पन्न विज्ञान मानव शक्ति का करे विस्तार
जिससे मानव प्रकृति ऊपर कर रहा है राज्य विस्तार... (7)

जल थल नभ राज्यों के राज का कर रहा है सूक्ष्म विचार
उससे प्राप्त राज के बल पर कर रहा है विश्व सञ्चार... (8)

पर्यावरण की सुरक्षा निमित्त विज्ञान का हो रहा विकास
जिससे प्रत्येक जीव हितार्थे नवीन ज्ञान का हुआ प्रकाश... (9)

भौतिक शक्ति के शोध-बोध से तन-मन का भी बढ़ा है ज्ञान
विचार शक्ति के परिज्ञान हेतु विज्ञान भी देता अद्भुत ज्ञान... (10)

इत्यादि बहु उपलब्धियों का प्रदाता बना है आज विज्ञान
जिससे मानव बना है उदार प्रगतिशील व उच्च विचार... (11)

जिससे जन्मे है वैश्विक एकता शान्ति मैत्री विचार
कार्य कारण व समन्वय दृष्टि स्व-पर-वैश्विक हित विचार... (12)

वैश्विक संस्थान, विश्व धर्म संसद, राष्ट्रों में होता है बन्धुत्व भाव
वैश्विक सम्बन्ध-सहयोग आदि वैज्ञानिकता से उत्पन्न भाव... (13)

इससे भी परे आत्मिक विकास, संस्कृति के लिए हो रहा प्रयास
भौतिकता परे आत्मा की कल्पना विज्ञान के लिए नया प्रयास... (14)

धर्म के बिना विज्ञान अन्धा, पंगु धर्म है विज्ञान बिना
इसी से दोनों का विकास होता, जिससे मानव सुखी भी होता... (15)

'कनकनन्दी' तो प्रयासरत आध्यात्म विज्ञान का हो विकास
वैश्विक ज्ञान का हो विकास, विश्वशान्ति में करे निवास... (16)

वैश्विक स्वास्थ्य हेतु भावना

(विनाशकारी भावनाओं को त्यागो मानव)

(मानव व्यर्थ में ही अधिक पाप एवं रोगों को निमंत्रण देता है)

(तर्ज़ः- आत्मशक्ति से ओत प्रोत...)

व्यर्थ के विनाशकारी भावों को, त्याग करो हे मानव-[2]
इनसे बचने से बच जायेगा, रोग पाप व तनाव-[2] (टेक)

इनसे बचने के उपाय सत्य, संयम साम्य भाव
क्षमा दया व सहज सरलता, शौच धैर्य व आत्मिक भाव
क्रोध मान माया लोभ असंयम, घृणा भोग-राग-[2]
निन्दा असत्य व वाचलता तथा, फैशन-व्यसन मन के रोग-[2]... (1)

इनसे होता समय शक्ति, साधन धन का दुरुपयोग
पाप बन्ध व मानसिक रोग, होते विभिन्न रोग,

''क्रोध'' से लीवर गॉलब्लेडर में, होते हैं नाना रोग–[2]

प्रेम नाश तनाव झगड़ा विवेकवव, नाश व पाप संयोग–[2]... (2)

''तनाव'' ''चिन्ता'' से पैनक्रियाज में, होते हैं नाना रोग,

बुद्धि विनाश शरीरे दर्द, रक्चाप व हृदय रोग,

''अधीरता'' व ''आवेश'' से, दुर्बल दिल व आंत–[2]

सही न होते काम जगत में, होता है दुःखद अन्त–[2]... (3)

''भय'' से होती हैं गुर्दे व, मूत्राशय में भी हानि,

मन में होता है अस्थिर भाव, चिन्तन काम में हानि

''दुःख'' से फेफड़े बड़ी आँत की, कार्य क्षमता है घटती–[2]

शरीर इन्द्रियाँ मन आत्मा में, अनेक कमियाँ घेरती–[2]... (4)

''विचारों से परेशान'' व्यक्ति, दान उपकार नहीं करते,

सुचारु रूप से काम न होते, अनेक संक्लेश आ घेरते,

''लोभ'' से मलत्याग सही न होता, न स्वेद विसर्जन होता–[2]

फेफड़े ठीक से श्वास न छोड़े, जब मानव लोभ न त्यागे–[2]... (5)

''लोभ'' से चर्बी संचय होती, जिससे मोटापा बढ़ता,

डायबिटीज जोड़ो में दर्द, आदि दुःखों को सहता,

तन मन जब उद्दण्ड होते, असंयम काम होते–[2]

फैशन व्यसन मर्यादा हीन, लड़ाई-झगड़ा भी होते–[2]... (6)

''असत्य'' से तेज होता है नष्ट, जीवन शक्ति विनष्ट,

दिल-दिमाग को लगती चोट, लकवा से शरीर नष्ट,

पागलपन व पथरी होता, संक्लेश तनाव भय होता–[2]

व्यग्रता ग्लानि व दुःख भी होता, दिमाग में भारी पना–[2]... (7)

''अहं'' से होता विनय नाश, ज्ञान न होता विकास,

सरल सहज भाव न होता, अहंग्रन्थी का होता विकास,
दंभ से होती कफ की वृद्धि, देह में होती स्थूलता–[2]
गैस समस्या उत्पन्न होती, इन्द्रियें शक्ति भी क्षीण–[2]... (8)
ईर्ष्या से पित्त की वृद्धि जो, इन्द्रियाँ–शक्ति भी क्षीण,
लीवर खराबी जलन होती, हृदय दुर्बल बुद्धि,
अन्य की प्रगति नहीं सुहाती, प्रशंसा सुन दाह होती–[2]
दूसरों के पतन की कामना होती, सच्चे से न प्रीत होती–[2]... (9)
''माया'' से मानव होता चिन्तित, अप्रगट हेतु प्रयत्न,
भोजन सही न पाचन होता, कब्जियत से भी रोग अन्य,
मल–मूत्र त्याग देरी से होता, दुर्गन्धी से मुँह भरा रहता–[2]
माया प्रगट तो होता अवश्य, पाप व दण्ड भी मिलता–[2]... (10)
क्रोधादि भाव से ''हिंसा'' होती, जिससे उक्त समस्या होती,
क्रिया की प्रतिक्रिया अवश्य होती, दृष्टि से सृष्टि उत्पन्न होती,
''दुःखमेव वा'' वीर ने कहा, समस्त पापों को दुःख कहा–[2]
''तृष्णा से दुःख'' बुद्ध ने कहा, चतुः आर्य सत्य में कहा–[2]... (11)
ईशा ने क्षमा सेवा अपनाया, सत्य अहिंसा गाँधी अपनाया,
''प्रज्ञा-अपराध'' त्याग बताया, आयुर्वेद में यह समझाया,
मनोविज्ञान अभी अपनाया, प्राचीन मत को सत्य ही पाया–[2]
होमियो पैथी में सोरा (टैक्सिन) कहा, मनरोग से उत्पन्न कहा–[2]... (12)
व्यायाम से शरीर बल बढ़ता, सात्विक आहार युक्त,
चिन्तन से मानसिक बल बढ़ता, शान्ति से आत्मिक सत्त्व,
स्व–पर–विश्व हेतु गुन्था, कविता रूप में गाथा–[2]
''कनकनन्दी'' की भावना सदा, सर्व जीव पाये सुख सदा–[2]... (13)

दीपावली पर्व दीवालीया पर्व न बने
(पावन दीपावली तथा पतित दीवाली)

दीपावली है प्रकाश पर्व, आत्मिक ज्योति जलाने का।
बाह्य दीप न दूर करता, आत्मिक मोह-अन्धकार का।। (टेक)

बाह्य दीप तो प्रतीक केवल, आत्मिक ज्योति जलाने का।
प्रतीक कभी न यथार्थ होता, दीप चित्र प्रकाश न देता।। (1)

दीपावली है निर्वाण पर्व, महावीर का मोक्ष गमन।
दीपावली है केवली पर्व, गणधर को हुआ केवल ज्ञान।। (2)

तुम भी स्वयं का निर्माण कर, निर्वाण योग्य स्वयं को कर।
तुम भी स्वयं का निर्माण कर्त्ता, निर्वाण योग्य स्वयं का कर्त्ता।। (3)

यह ही परम ज्योति पर्व, इसके निमित्त व्यवहार पर्व।
इसके अतिरिक्त पर्व दीवालीया, जड लक्ष्मी पूजन अन्य क्रिया।। (4)

निर्वाण लाडू आत्म-सुख प्रतीक, गोलाकार पूर्णता का प्रतीक।
मोक्ष लक्ष्मी का हो पूजन, आत्म विद्या का हो प्रयोजन (भजन)।। (5)

फटाके फोडना जूआ खेलना, मद्यपान व फैशन व्यसन।
क्रय-विक्रय व सट्टबाज, अश्लील गाना व नृत्यसाज।। (6)

यह सब हिंसा प्रदूषणकारी, सामाजिक कुरीति अहितकारी।
धन जन साधन समयहारी, व्यक्ति व राष्ट्र अहितकारी।। (7)

पर्व मनाओ पावन हेतु, पर्व न मनाओ पतित हेतु।
'कनकनन्दी' की यह रचना, आत्म ज्योति हेतु हुई रचना/(सर्जना)।। (8)

दीपोत्सव पर्व

अच्छी कथा स्वीकारो-ओछी कथा नहीं!

राग :- (छोटी छोटी गैया...)

मानव भाई रे मानव भाई... अच्छी कथा मने रखो हे! तू ही।
अच्छी कथा सुनो बोल है तू ही... जिससे बनेगा महान् तू ही।। (स्थायी)...

ओछी कथा से दूर ही रहो... सुनो न बोलो मने न धरो।
बिना कारण तुच्छ न बनो... बातों बातों में दुःखी न बनो।।

निन्दा चुगली असत्य भाषा... कलहकारी कटु जो भाषा।
कूट कपट ईर्ष्या की भाषा... सर्वथा त्यागो सन्देह भाषा।।

समय शक्ति बुद्धि विनाश... कलह विद्वेष होता विशेष।
पाप बन्ध भी निश्चय होता... तुच्छतापन प्रगट होता।।

हित मित प्रिय वचन बोलो... सत्य भी बोल अति न बोलो।
कपटपूर्ण प्रिय न बोलो... विष मिश्रित मीठा न बोलो।।

सत्य सहित हित ही बोलो... हित रहित सत्य न बोलो।
धीवर को मत्स्य-स्थान न बोलो... अन्धे को अन्धा मत बोलो।।

सत्य को सुनो हित को सुनो... आत्म-परमात्मा कथा को सुनो।
स्व-पर-विश्व कल्याणी सुनो... ज्ञानामृतमय कथा को सुनो।।

कान द्वारा कुकथा विष न पीओ... मुख द्वारा कुकथा विष न घोलो।
विषपान से कर्त्ता की होती मृत्यु... विकथा विष से अनेक मृत्यु।।

पुनः पल्लवित होता है वृक्ष... अस्त्र से घात होने के बाद।
कुकथा अस्त्र से घात जो दिल... पल्लवित न होता सुदीर्घकाल।।

कोमल जीभ से कोमल बोलो... सब के भाव में शीतल घोलो।
'कनकनन्दी' के आह्वान सुनो... अमृत बोलो अमृत सुनो।।

पोषक प्रकृति का शोषण न करो

(तर्ज - 1. पावन है इस देश... 2. क्या मिलिये ऐसे लोगों से...)

प्रकृति से उपकृत हे! मानव, प्रकृति का तू सन्मान करो[2]
प्रकृति बिन जीवित न रहेगा, विकास करना तो है अतिदूर[2] ।।(टेक)
प्रकृति तुम्हारी माता समान, जो करती है देख-भाल।
खाना-पीना ओढ़ना-बिछौना, दवा श्वास द्वारा हर पल[2]
सूर्य तुम्हारा उपकार करता, प्रकाश ऊर्जा की देन से।
जिससे धरती में जीवन प्रवाह, चलता निर्बाध रूप से[2]।।... (1)

वृक्ष वनस्पति वन-उपवन से, खेत खलिहान सारे
जिसका तू भोग-उपभोग करके, जीवन तू बिताये रे[2]
जीवनदायिनी पानी से तेरी, सेवा करती पावन नदी।
कल-कल नाद से संगीत सुनाती, बहती रहती पवित्र नदी[2]।।... (2)

प्यारी रंग-रंगीली चिड़िया रानी, नृत्य गान से मनमोहती।
बिना प्रशिक्षण बिना पैसा ले, तेरे मनोरंजन करती[2]
विविध रंग-गंध पुष्पों से, लगा गुल्म तेरी सेवा करते।
गुन-गुन की मधुर ध्वनि से, भ्रमर तुझे गाना सुनाते[2]।।... (3)

तथापि मानव कृतघ्न बनकर, न करो तू उन्हें दूषण
उनके दूषण-शोषण द्वारा, तुम्हारा अधिक होता शोषण[2]
''कनकनन्दी'' की भावना सदा, शोषण बदले हो पोषण।
शोषण बदले शोषण मिले, पोषण बदले मिले पोषण[2]।।... (4)

(सन्दर्भ- मुम्बई हमला 26/11, 2008 की

तीसरी बरसी के उपलक्ष्य में)

अभी भारत को क्या हो गया?

(''परित्राणाय दुष्कृताम्'' ''विनाशाय च साधुनाम्''

मार्ग पर चल रहा है।)

राग :- (जब जीरो दिया मेरे भारत ने...)

क्या हुआ उस भारत को (भारत को मेरे भारत को)... जो कभी विश्व का गुरु रहा।
''सत्यमेव जयते'' का नारा दिया... अभी असत्य मार्ग में चल रहा ।।टेक।।

स्थापना धर्म की करने हेतु... ''परित्राणाय साधुनाम्'' प्रण किया।
न्याय की स्थापना करने हेतु... ''विनाशाय च दुष्कृताम्'' पक्ष लिया।।(1)

अभी तो सब उलट हो रहा... ''परित्राणाय दुष्कृताम्'' हो रहा।
''विनाशाय च साधुनाम्'' लक्ष्य वाले... भारत में प्रबल भी हो रहे।। (2)

हत्यारे आतंकवादी रक्षार्थे... पचास करोड़ खर्च हुआ (हो गया)।
उसकी सुरक्षा करने हेतु... पाँच करोड़ का सेल बना।। (3)

शताधिक जन को मारने वाला... कसाब आज हीरो हो गया।
उसका उपचार करने हेतु... चौबीस डॉक्टरों ने काम किया।। (4)

इलाज के हेतु सेल जो बना... बुलेटप्रूफ अभेद्य (वह) बना।
एक करोड़ लगा करके... जे जे अस्पताल पास में बना।। (5)

प्रतिदिन ही लाखों खर्च होता... भारत यह भार वहन करता।
किसान जो अन्नदाता भी होता... गरीबी से आत्महत्या करता।। (6)

जन्म से कर्ज सहित आता... जीवनभर कर्ज को चुकाता।
चतुर्थ श्रेणी के नौकर के सम... अन्नदाता का मान/(धन) भी न होता।।(7)

यदि विवशता से दोष हो जाता... अनेक कठोर दण्ड है मिलता।
चपरासी से सरकार तक... अन्नदाता का खून है पीते।। (8)

ऐसी ही सामान्य जनता की... दुर्दशा होती है भारत में।
हीरो हीरोईन नेता धनी लोग... नौकरशाह देश को लूटते।। (9)

ऐसा ही होता हर क्षेत्र में... सामाजिक हो या धर्म क्षेत्र में।
जिसकी लाठी उसकी भैंस... नीति वाक्य तो इसी से बने।। (10)

इसी से न्याय भी कम तो होता... भ्रष्टाचार भी बढ़ता जाता।
नैतिक विकास सही न होता... राष्ट्रीय विकास मन्द पड़ता।। (11)

अतः राष्ट्रीय विकास हेतु/(कारण)... सत्य-न्याय का करो पालन।
'कनकनन्दी' की यही पीड़ा/(भावना)... कविता रूप में हुई रचना।। (12)

हे विश्वगुरु भारतीय पिछड़ापन त्यागो

(राग - हे! वनगिरि... हे! लतागिरि... उड़िया-बंगला...)

हे! धर्मवीर हे! कर्मवीर हे! ज्ञानवीर, पिछड़ापन अभी छोड़ो...2
विश्वगुरु भारत क्यों बन गया छोटा, पिछड़ा से भी पीछे बनकर है खोटा
स्वास्थ्य शिक्षा आय व मानव विकास में, एक सौ चौंतीस पायदान में बैठा/(खड़ा)।।...
(स्थायी/टेक)...

श्रीलंका चीन व मालदीव से पीछे, इराक फिलीपींस पिछड़ा से भी पीछे
आजाद हुए अभी चौषठ वर्ष हुए, तीन पीढ़ी बीती तथापि पीछे रहे
इसी के मूल में है स्वयं ही जिम्मेदार, अनुशासनहीन प्रमाद भ्रष्टाचार।। (1)

स्व-संस्कृति को छोड़ा नकलची है बना, विवेक अनुभव सामान्य ज्ञान बिना
रटन्त पढ़ाई को सर्वस्व तू ही माना, धन को ही समस्त सुख का मूल है माना
आधुनिक होने का तुमने ढोंग रचा-किन्तु ज्ञान, विज्ञान तुमने नहीं जाना/(माना)।।(2)

भ्रष्टाचार के द्वारा विकास करते तुम, कर्त्तव्य उत्पादन श्रम से रहते दूर
प्रदूषण बढ़ाते स्वच्छता नहीं रखो, प्रेम सहयोग सदाचार से दूर
धर्म के नाम पर करो है ढोंगाचार, राजनीति न्याय में नहीं है सत्याचार।। (3)

मिलावट सर्वत्र औषधि भोजन में, अन्नदाता किसान होता है अनादर
नौकर होकर बनते शहनशाह, भद्र व शिष्ट व्यक्ति होता है अनादर
इत्यादि कमियों को त्याग महान् बनों, 'कनकनन्दी' का आह्वान तुम मानो।। (4)

भारतीयों की आत्महत्या संख्या बढ़ने के कारण एवं निवारण

(राग - जब जीरो दिया मेरे भारत ने...)

क्या हो गया उस भारत को... भारत को मेरे भारत को... जिसने अमृतपान किया था
विश्व को अमृत पाठ पढ़ाकर... विश्वगुरु भी कभी था... (टेक)...

अभी तो जीना भी नहीं आता है आत्महत्या पर तुला हुआ है।
बाल विद्यार्थी से प्रारम्भ होकर नेता तक यह कार्य होता है।।

डेढ़ लाख हर वर्ष में होती आत्महत्या भारत में होती।
पञ्चदश हर घण्टा मे होती तीन सौ एकत्तीस रोजाना होती।।

तीस वर्ष से कम उम्र के/(में) अड़तीस फीसदी इसी श्रेणी में।
वर्ष चवालीस उम्र तक के सत्तर फीसदी बढ़ी इसी में।।

सत्तर फीसदी विवाहित नर सतषट् होती है विवाहित नारी।
सात हजार से अधिक संख्या में विद्यार्थीजनों ने आत्महत्या की।।

भारत में बीस फीसदी होती धरती भर की आत्महत्या की।
कृषकों की संख्या हजारों होती कर्जों से आत्महत्या बढ़ती।।

अन्यान्य कारण और भी होते पढ़ाई तनाव विशेष होते।
गरीबी रोग व गृह कलह ईर्ष्या विद्धेष व प्रिय विरह।।

नैतिक संस्कृति आध्यात्मज्ञान दूर हो रहा है सादा जीवन।
भौतिकतापूर्ण भोगमय जीवन सेवा त्याग शून्य तुच्छ सपन।।

प्रतिस्पर्द्धामय अति आकांक्षा आदर्शविहीन संकीर्ण शिक्षा।
क्षुद्र उद्देश्य व कुण्ठित मन दूरदृष्टि हीन संकीर्ण ज्ञान।।

भारतीय संस्कृति तो त्याग दिये पाश्चात्य संस्कृति (को) न जान पाये।
पाश्चात्य अन्धानुकरण करके न अतो रहे न ततो रहे।।

आध्यात्म संस्कृति वाला भारत में धर्म में भी नहीं नैतिकता।
भौतिक संस्कृति वाला पाश्चात्य में व्यापार में भी है नैतिकता।।

जो मूल छेद करके वृक्ष से फल-फूल छाया प्राप्त करता।
वैसी ही दशा आज भारत में जिससे यह सब घटित होता।।

शिक्षित भी बनो आधुनिक बनो नैतिक आध्यात्म सहित बनो।
हर कार्य हर विकास क्षेत्र में इसी के द्वारा ही महान् बनो।।

दुर्बलतापूर्ण भावना त्यागो अमृत तुम हो स्वयं में जागो।
मानव जन्म को सार्थक करो 'कनक' का भाव स्वीकार करो।।

कालिकाल की अच्छाइयाँ एवं बुराइयाँ
(वर्तमान काल की उपलब्धियाँ एवं समस्याएँ)

(रागः- 1. रघुपति राघव... 2. जय हनुमान ज्ञान गुणसागर...)

कालिकाल है पंचमकाल... कल कारखाना युक्त काल।
उत्थान-पतन कलह-सुलह... विचित्रता युत यह काल।। (स्थायी)...

भौतिक शोध-बोध प्रगति... तीव्र संचार युत काल।
लोकतन्त्रमय शासन प्रणाली... वैश्विक कुटुम्ब वाला काल।
विद्युत चालित यंत्रों के कारण... काम होते अतिशीघ्रता से।
कृत्रिम प्रकाश यात्रा के साधन... चिकित्सा भी होती शीघ्रता से।।... (1)

आक्रमण तथा प्रति आक्रमण... दिग्विजय के युद्ध न होते।
अभी न होते हैं पूर्वकाल सम... दासों के क्रय व युद्ध न होते।
दास प्रथा अभी कानून से बन्द... सर्वमानव अधिकार सम।
पशु क्रूरता भी निवारण... सर्वधर्म का अधिकार सम।।... (2)

इत्यादि अच्छाइयाँ इसी काल में... कुछ समस्याएँ वृद्धि भी हुई।
नाना प्रदूषणों की हुई वृद्धि... मानसिक रोगों की हुई वृद्धि।
जिससे बढ़े है शारीरिक रोग... मोटापा मधुमेह ब्लड प्रेशर।

हृदय आघात व कैंसर रोग... जिससे जीवन बना है दूभर।।... (3)

पृथ्वी बन रही संयुक्त परिवार... परिवार में नहीं प्रेम-आदर।
मानव की भीड़ बहु बढ़ गई... मानव की दूरियाँ बहुत बढ़ गई।
भौतिक लालसा बहुत बढ़ गई... पढ़ाई-लिखाई की बाढ़ आ गई।
नैतिक आध्यात्मिक दुर्लभ हो रहा... जिससे सच्चा सुख दूर हो रहा।।... (4)

प्रदूषणों से ग्लोबल वार्मिंग वृद्धि... जिससे बाढ़ व सूखा बढ़ रहा।
जल खाद्याभाव अधिक बढ़ हरा... भौतिकता का कुफल मिल रहा।
इसमें भी मानव दोषी है अधिक... जिससे कुफल भी मिले अधिक।
अभी तो मानव दोष निवारो... सुख प्राप्ति के उपाय करो।।... (5)

कनकनन्दी का आह्वान सुनो... भौतिक छोड़कर नैतिक बनो।
नैतिकता से तू आत्मिक बनो... परम सुख के भोगी भी बनो।।... (6)

मानव पशु-पक्षी के कृतज्ञ बने न कि कृतघ्न
वनस्पति से लेकर पशु-पक्षी भी वैज्ञानिक एवं उपकारी
(वृक्ष से लेकर पशु-पक्षी से भी उपकृत है मानव)

(रागः- शायद मेरी...) **पर्यावरण परिस्थितिकी गीत**

पशु-पक्षी नहीं अज्ञानी-जड़... नहीं होते अपकारी
वे भी होते हैं ज्ञानी-विज्ञानी... होते बहु उपकारी... स्थायी...

मानव पूर्व भी अस्तित्व उनका... विज्ञान ऐसा है माना
मानव समान उनका अस्तित्व... अनादि से धर्म माना
पशु-पक्षी भी पञ्चेन्द्रिय होते... होते भी है मन सह
सम्यक्त्व सहित तीनों ज्ञान युक्त... होते अणुव्रत युक्त (1)

वनस्पति से कीट व पतंग... स्व-योग्य इन्द्रिय युक्त
मतिज्ञान व श्रुतज्ञान युक्त... भले न होता सम्यक्त्व

वनस्पति से प्राण वायु मिले... अनाज फूल व फल
औषधि लकड़ी छाया शीतलता... प्रदूषण दोष हर (2)

मधुमक्खी आदि कीट पतंग से... परागण आदि हुए
जिससे अनाज फल प्राप्त हुए... गीत-नृत्ये मन मोहे
गाय बकरी व ऊँटनी भेड़ से... दूध मिले गुणकारी
विहंगम हमें संगीत सुनाये... बहुविध नृत्य करी (3)

विविध आसन संगीत के स्वर... पशु-पक्षी से ही बने
वैज्ञानिक शोध-बोध के निमित्त... इनसे भी शिक्षा मिले
वैज्ञानिक शोध-बोध के पहले... करोड़ों वर्षों के पूर्व
इन्हीं जीवों ने आविष्कार किये... विज्ञान जन्म के पूर्व (4)

कागज का आविष्कार (तो) हुआ है... दो हजार वर्ष पूर्व
ततैया इसका निर्माण करता... करोड़ों वर्षों के पूर्व
सोनार यन्त्र का प्रयोग करती... डॉलफिन है विशेष
मानव निर्मित सोनार से पूर्व... हुआ है लाखों वर्ष (5)

न्यूटन का प्रति-क्रिया सिद्धान्त... स्कूइट करे विशेष/(निष्णात)
करोड़ों वर्षों से प्रयोग करता... जेट विमान सिद्धान्त
गन्ध से आग को जानने का यन्त्र/(अंग)... बिटल/(झिंगुर) करे प्रयोग
इसे तो मानव अब जान पाया... कृत्रिम यन्त्र से संग (6)

सुरक्षा के हेतु एयर बैग का... केनेड पक्षी जो करे
उसका निर्माण विज्ञान ने किया... कुछ ही दशक पहले
शब्द रहित उल्लू तो उड़ते... लाखों वर्ष पहले
निशब्द विमान निर्माण हुआ... अभी तो वर्षों पहले (7)

तैराकी पोषाक मानव बनाया... कुछ ही वर्षों पहले
मिको शार्क तो करोड़ों वर्षों से... करती आयी पहले/(शान से)

केको/(छिपकली) चढ़ती है काँच की दीवार... वैक्यूम सिद्धान्त द्वारा
अभी तो मानव सीख रहा है... केको की पद्धति द्वारा (8)

फ्रिजम के द्वारा बुलफ्रक/(मेंढक) तो... स्वयं की सुरक्षा करता
यह काम अभी विज्ञानी द्वारा भी... सरल में नहीं होता
लंगफिश तो चार साल तक... सूखे में जिन्दा रहती
महाप्रलय व बमविस्फोट से... कंकरोच नहीं मरती (9)

जन्म के बाद भी बच्चादानी में... कंगारू भ्रूण पालती
ध्रुवीय भालू की शीत निद्रा तो... महीनों जारी रहती
इत्यादि अनेक पशु-पक्षी में भी... होती है विचित्र क्षमता
दूरश्रवण व दूरदर्शन या... दूर घ्राण की क्षमता (10)

इसीलिए तो इनके द्वारा भी... होता भविष्य ज्ञान
भूकम्प वर्षा सुनामी आदि का... विज्ञानी से ज्यादा/(श्रेष्ठ) ज्ञान
वनस्पति स्वयं भोजन बनाता... प्राण वायु हमें देता/(की है देन)
इत्यादि का अभी वैज्ञानिक द्वारा... नहीं हो पाया है ज्ञान/(काम) (11)

अतः हे मानव! घमण्ड न करो... न करो उन्हें संहार
तुम्हें जीना है तो उन्हें जीने दो... 'कनकनन्दी' का विचार (12)

माता का दूध एवं मातृ-भाषा का महत्व

(रागः- चौपाई...)

माता का दूध व माता की भाषा जीवन में जानो अति विशेष।
तन मन भाषा की सम्वृद्धि हेतु दोनों का योगदान विशेष हेतु।। (1)

गर्भ से मातृभाषा हम सीखते जन्म से स्तनपान हम करते।
मूल सिंचन सम काम दोनों का विकास हेतु जानो दोनों का।। (2)

दूध है तन मन वृद्धि कारक इन्द्रिय शक्ति व तृप्ति कारक।
तथाहि मातृभाषा की जानो शक्ति बुद्धिवर्द्धक तृप्ति दात्री।। (3)

भौतिक दूध अमृत समान रोग प्रतिरोधक शक्ति सम्पन्न।
स्टेमसेल होती मातृ दूध में जिससे रोग न होते देह में।। (4)

अल्जाइमर तथा कैंसर रोग एनीमिया तथा हड्डी के रोग।
मिट्टी खाना व मन दुर्बल रोग न होते होता देहिक बल।। (5)

माता को न होता स्तन कैंसर स्तनपान से लाभ होता अपार।
प्रेम निकटता बढ़े विशेष दोनों को मिले अति सन्तोष।। (6)

ऐसा ही मातृभाषा से होता वैज्ञानिक शोध भी यह कहता।
अनुभव से सिद्ध भी होता मातृभाषा से ज्ञान है बढ़ता।। (7)

मस्तिष्क में होता भाषा के जोन मातृभाषा द्धारा बढ़े ये जोन।
जिससे बढ़े ज्ञान-विज्ञान निर्णय क्षमता व आत्मिक ज्ञान।। (8)

धार्मिक वृत्ति का विकास होता व्यक्तित्व निर्माण विशेष होता।
अन्य भाषा ज्ञान सरल होता अभिव्यक्ति में आनन्द आता।। (9)

हमारे पूर्वज अनेक हुए ज्ञान-विज्ञान में प्रसिद्ध हुए।
तीर्थंकर राम कृष्ण व बुद्ध अभिमन्यु आदि जग प्रसिद्ध।। (10)

राजा महाराजा चाणक्य आदि चन्द्रगुप्त मौर्य अशोक आदि।
अंग्रेजी बिना भी महान् हुए बिना बोतल का दूध भी पीये।। (11)

भारत में आज क्या हो गया सभी माताओं को भूल सा गया।
माता विहीन अनाथ हुआ मूल विहीन वृक्ष जो हुआ।। (12)

जन्मदात्री जन्मभूमि व भाषा विद्यादात्री माता तथा गो-माता।
इत्यादि माता को भूल-सा गया विदेशी धाई को अपना रहा।। (13)

इसी से विकास सही न होता पानी बिन यथा वृक्ष का होता।
अतः माताओं को करो स्वीकार 'कनकनन्दी' का यह विचार।। (14)

प्राचीन ग्राम्य-जीवन की एक सांस्कृतिक छटा

स्वास्थ्यप्रद सांस्कृतिक प्राकृतिक जीवनचर्या गान

(रागः- 1. कसमें वादे प्यार वफा... 2. छोटू मेरा नाम रे...)

कहाँ गया वह ग्राम्य जीवन-भोला-भाला सह जीवन।
प्राकृतिकमय सादा जीवन-टेन्शन/(तनाव) से शून्य जीवन।। (टेक)।।

चारों तरफ बाग-बगीचा-खेती-खलिहान जंगल थे
तोता मयूर कबूतर मैना-गिलहरी बुलबुल कौआ थे।।

आम अमरूद पपीता लीची-नारंगी के बगीचे थे।
जो मन भाया सो फल खाया-मौज मस्ती में नाचते थे।।

मैदान घाटी पहाड़ जंगल-उद्यानों/खेतों (बगीचों) में घूमते थे।
बुलबुल व गिलहरी सम-चहचहाते व फुदकते (थे)।।

नदी नाल व तालाब/(बावड़ी) पानी में-मछली के सम तैरते थे।
बन्दर समान पेड़ (पे) चढ़कर-फल पत्तियाँ खाते थे।।

घर गली मैदान आदि में- विविध खेल खेलते थे।
लुका-छिपी कबड्डी कुश्ती- गिल्ली-डंडा खेलते थे।।

हर जाति व धर्म के लोग-मेल-मिलाप से रहते थे।
सुख-दुःख व हानि-लाभ में-सहभागी सब होते थे।।

नया फल व शाग-सब्जी-मिठाई पापड़ बनते थे।
अन्य को पहले ही देकर-अपने काम में लेते थे।।

'कुकडुकू' या मन्दिर घण्टी से-प्रातःकाल हम जगते थे।
बिना घड़ी से दैनिक कार्य-सुचारू रूप से करते थे।।

दूर जंगल में शौच जाते-भ्रमण व्यायाम होता था।
प्रकृति से मित्रता होती-उनसे ज्ञान मिलता था।।

नीम बबूल करञ्ज आदि से-हम दातुन करते थे।
स्वास्थ्य लाभ के साथ-साथ भी-हिंसा रोग से बचते थे।।

स्नान करके शुचि वस्त्र से-मन्दिर हम जाते थे।
दर्शन पूजन भजन करके-शास्त्र अध्ययन करते थे।।

साधु-सन्त (जब) ग्राम में आते-भगवान् उन्हें मानते थे।
भक्ति भाव से आहार देकर-उनसे ज्ञान लेते थे।।

बच्चों को तो मजा आता-उनके पास ही रहते थे।
सेवा व्यवस्था आहार आदि में-अधिक लाभ लेते थे।।

अतिथि जब ग्राम में आते-सबके देव बनते थे।
आदर सत्कार नमोऽस्तु जुहार-खाना-पीना होते थे।।

ग्रामीण संगीत नृत्य नाटक-भजन सत्संग होते थे।
हर दिन ही उत्सव होता-होली दीपावली मनाते थे।।

सन्ध्याकाल में चौपाल-चौक में-मेल मिलाप होता था।
सुख-दुःख की चर्चा होती थी-अनुभव ज्ञान मिलता था।।

कोर्ट-कचहरी फैसला सब-मिल-जुलकर करते थे।
वैर विरोध सब भुलाकर-मित्रता पाठ पढ़ते थे।।

नदी नाल व जंगल वृक्ष की-हम सब रक्षा करते थे।
पशु-पक्षी को खाना खिलाकर-हम सब भोजन करते थे।।

ग्राम में न होते थे चोरी-धोका मिलावट दम्भाचार।
फैशन-व्यसन आडम्बर तथा-दुराचार व अत्याचार।।

आधुनिक शिक्षा के बिना-हम सब यह करते थे।
अभी साक्षर नगरवासी से-हमारे संस्कार श्रेष्ठ थे।।

चूल्हा से बना हुआ भोजन क्या-मानो अमृत होता था।

सब्जी चटनी मानो चौसठ-भोग परसा होता था।।

अमृत-सा गाय का दूध घी-रसायन ही होता था।
गुड़ खाण्ड मूँगफली तिल-नाश्ता क्या स्वाद था।।

इसीलिए तो इस युग में अधिक-महामानव हुए ग्राम में।
धर्म राजनीति कला संस्कृति-विज्ञान व्यापार क्षेत्र में।।

अतएव हे! मानव शान्तिमय/(सुखमय)-जीवन जीना यदि चाहते हो।
ग्राम्य जीवन तुम भी जीयो-स्वास्थ्य/(सुख) लाभ चाहते हो।।

सत्ता सम्पत्ति पढ़ाई ही नहीं-है जीवन की सफलता।
यदि न जीवन में शान्ति तो-सब सफलता ही विफलता।।

'कनकनन्दी' तो विज्ञान-अनुभव से-यह ग्राम्य गान गाया।
सत्य-तथ्य के ज्ञान हेतु-कविता रूप में रचा गया।।

कहाँ गया वह ग्राम्य जीवन-भोला-भाला सह जीवन।
प्राकृतिकमय सादा जीवन-टेन्शन/(तनाव) से शून्य जीवन।।

अभी लोगों की भीड़ बढ़ी, सामाजिकता घटी
(भीड़ की विभिन्न समस्याएँ)

(रागः- जब जीरो दिया मेरे भारत ने...)

क्या हो गया उस समाज को/(उस जनता को) समाज को मेरी जनता को...
जो प्रेम संगठन में रहता था।
दूसरों के सुख-दुःख में जो, हरदम सहभागी होता था।।

जो सहयोग-संगठन में रहे, नीति-नियम से चलता है।
उसे ही समाज कहा जाता है, अन्यथा दुष्टों का गिरोह हुए।। (1)

व्यक्ति समूह न होता समाज, भीड़ गैंगस्टर नहीं समाज।
भीड़ में न होता प्रेम-सहयोग, गिरोह में नहीं नीति संयोग।। (2)

चर्बी बढ़ी मोटा शरीर सम, भीड़ में संख्या की वृद्धि हुई।
मोटापा में यथा रोग घेरते, भीड़ में समस्या घिर गई।। (3)

भीड़ से शब्द वायु प्रदूषण, निवास समस्या भी बढ़ गई।
गन्दगी व यातायात समस्या, सुलसा के समान बढ़ती गई।। (4)

मच्छर चूहों की तादाद बढ़ी, प्लेग मलेरिया की समस्या बढ़ी।
जल प्रदूषण होने के कारण, पीलिया पेचिश की समस्या बढ़ी।। (5)

आवास-निवास समस्या कारण, फुटपाथ में सोना पड़ता है।
कुत्ता चूहा बिल्ली सूअर आदि से, अनेक कष्टों को भोगना होता है।। (6)

दया विहीन उद्दण्ड व्यक्ति की, गाड़ी भी कभी आकर चढ़ती।
घायल अपंग होने के साथ ही, मृत्यु भी कभी आ घेरती।। (7)

अड़ोस-पड़ोसी लाखों लोग होते, कोई किसी को नहीं जानते।
सहयोग वे तो नहीं करते, उल्टे विभिन्न यातना देते।। (8)

चोरी धोखाधड़ी बलात्कार या, अपहरण व हत्या करते।
चन्दा व हफ्ता वसूली हेतु, कष्ट सहित मृत्यु भी देते।। (9)

भीड़ तन्त्र व भेड़िया तन्त्र या, धनबल बाहुबल बोलता।
सरल-सहज-सामान्य व्यक्ति, हर जगह मारा-मारा फिरता।। (10)

बगुला के सम सभ्य साक्षर, स्वार्थ-सिद्धि में होते चतुर।
मिलावट व भ्रष्टाचार के द्वारा, भोले मानवों का करे शिकार।। (11)

फैशन-व्यसन प्रमाद बढ़ा, दिखावा व आडम्बर बढ़ा।
व्यवहार व नैतिकता बिना, अस्त-व्यस्तमय जीवन बढ़ा।। (12)

अतिथि सत्कार साधु सेवा तो, धीरे-धीरे लोप हो रहा।
खेती करना वृक्ष लगाना, गाय पालना भूल/(छूट) सा गया।। (13)

भीड़-भाड़ व चहल-पहल, शोर-शराबा बहुत बढ़ गया।

चमक-दमक बाजार बढ़ा, किन्तु मानवता कहाँ खो गया।। (14)

मधुरता शान्ति मेल-मिलाप, आदान-प्रदान प्रेम खो गया।
सादा जीवन उच्च विचार, खाना-खिलाना भूल-सा गया।। (15)

शान्ति समता समन्वय व, स्वास्थ्य सदाचार कम हो गया।
चमड़ी-दमड़ी पढ़ाई बड़ाई, इसके पीछे पागल हो गया।। (16)

इसी हेतु तुम्हें 'कनकनन्दी', आह्वान करे कविता द्वारा।
विकास न बने विनाश तेरा, जागृत रहो है जीवन सारा।। (17)

व्यक्ति- राष्ट्र एवं विश्व के उत्थान-पतन के कारक

(व्यक्तित्व पर आधारित है व्यक्ति राष्ट्र एवं विश्व के उत्थान-पतन)

(रागः- सुनो-सुनो ऐ दुनियाँ वालों...)

सुनो-सुनो हे! देशवासियों... राष्ट्र विकास/(उत्थान) की सच्ची कहानी।
जिसे सुनकर तुम रचोगे... देश निर्माण की नई कहानी। (टेक)

उत्थान-पतन भाव से होता, भावानुसार भाग्य/(भावी) बनता।
उच्च भाव से उत्थान होता, नीच भाव से पतन होता।।

बीजानुसार वृक्ष बनता, मृदादि बाह्य कारक होता।
वट बीज से विशाल वृक्ष, सरसों से छोटा वृक्ष बनता।।

भाव से कर्म आस्रव होता, कर्म से भाग्य निर्माण होता।
अच्छे भाव से सुभाग्य होता, खोटे भाव से दुभार्ग्य होता।।

सुभाग्य विकास कारक होता, दुर्भाग्य विनाश कारण होता।
कारण-कार्य जनक होता, सुफल-कुफल कर्त्ता भोगता।।

अच्छे नागरिक तुम बनोगे, राष्ट्र निर्माण स्वतः ही होगा।
खोटे नागरिक तुम बनोगे, राष्ट्र पतन स्वयं ही होगा।।

व्यक्तित्व तुम्हारा हो गया खोटा, जिससे लगा है देश को बट्टा।
नैतिक पतन तुम्हारा हुआ, बंटाधार देश का हुआ।।

तुम्हारा भाव तो खोटा-छोटा, पढ़ाई तुम्हारी तोता रट्टा।
अकल बिना करके नकल, नीली लोमड़ी सा चाल-ढाल।।

पाश्चात्य अन्धभक्त बने हो, ज्ञान-विज्ञान से रिक्त बने हो।
भ्रष्टाचार से विकास तेरा, परजीवी सम जीवन तेरा।।

अश्लील-तुच्छ नाच गान, जिससे बने हो बोल्ड तुम।
अटपटा चटपटा कार्यक्रम, जिससे बने हो सुपरमैन।।

झगड़ा गाली अश्लील वेष, जिससे बना बिग बॉस।
क्रिकेट तुम्हारी राष्ट्रीय चिन्ता, कृषक करे हैं आत्महत्या।।

हिट फ्लॉप तेरा सिनेमा करे, आचरण तेरा चरण तले।
व्यक्तित्व निर्माण करता दर्जी, व्यक्तित्व तुम्हारा होता फर्जी।।

टी.वी. तुम्हारा सच्चा गुरु, पाप कार्य के शिक्षा गुरु।
इसी से सीखों फैशन-व्यसन, हत्या-बलात्कार चोरी हरण।।

धन ही तेरा धर्म व कर्म, धन के लिए करो है धर्म।
आडम्बर व मनोरञ्जन, होता नहीं है मनमञ्जन।।

भाषा भी तेरी गुलामी भाषा, माता विहीन तुम्हारी भाषा।
संविधान व कानून तेरा, विदेशियों का जीर्ण पिटारा।।

विज्ञान तक बना विदेशी, तथाहि खान-पान विदेशी।
बहुरुपिया सम तुम्हारा रूप, अध्यात्म विहीन विकृत रूप।।

इसी से तुम्हारा विनाश होता, आत्मिक विकास कुन्द होता।
सर्वोदय तेरा न हो पाता, घुण लगा बीज वृक्ष न होता।।

आध्यात्मिक में होती अनन्त सीमा-भौतिक परे अनन्त सीमा/(गुण गरिमा)।
आत्मिक/(अनन्त) विकास जब है होता, भौतिक विकास सहज (ही) होता।।

आत्म विकास हेतु करो है यत्न, सत्य न्याय से करो प्रयत्न।
राग द्वेष मोह तृष्णा छोड़ों, चारों पुरुषार्थ सम्यक् पालो।।

इसी से बना देश महान्, विश्वगुरुत्व में हुआ सन्मान।
सर्वोदय से बना महान्, आध्यात्म सहित ज्ञान-विज्ञान।।

पूर्ण गौरव को जागृत करो, वर्तमान में यत्न तू करो।
आत्म विकास को प्राप्त करो तुम, 'कनक' की आशा पूर्ण करो तुम।।

विश्वमानव भी ऐसा ही करो, विश्व कल्याण की भावना धरो।
जिससे वैश्विक विकास होगा, विषमतामय कष्ट न होगा।।

विश्व कल्याण के लिए भौतिकता से श्रेष्ठ आध्यात्मिकता

(भौतिकता से कम विकास, अधिक विनाश तो आध्यात्मिकता से अनन्त विकास)

(रागः- चौपाई...)

भौतिक विकास सीमित होता, आत्मिक विकास अनन्त होता।
इहलोक तक भौतिक जानो, मोक्ष तक है आत्मिक मानो।। (टेक)

तन मन धन भौतिक होता, आत्मिक इससे परे होता।
जड़मय सर्व भौतिक होते, सच्चिदानन्द आत्मिक होता।।
अष्टकर्म भी भौतिक होते, संसार भ्रमण के कारण होते।
भौतिक प्रति जो ममत्व होता, उसी से कर्मों का बन्धन होता।।

अणु से विश्व/(ब्रह्माण्ड) तक होता भौतिक... मिट्टी से रत्न तक सर्व भौतिक।
धनधान्य आदि सर्व भौतिक, वैज्ञानिक यन्त्र आदि भौतिक।।
इसे जो अपना रूप मानता, उसी के लिए यत्न करता।
उसी के विकास विनाश द्वारा, अपना ही होता जो मानता।।

वह होता है भौतिकवादी, चार्वाक अनुयायी लौकिकवादी।
आत्मतत्त्व शून्य मिथ्यावादी, नास्तिक दृष्टि संकीर्णवादी।।
भौतिक अर्जन संरक्षण हेतु, न्याय-अन्याय भी कार्य करता।
व्यापार शोषण मिलावट तथा, भ्रष्टाचार चोरी आदि करता।।

विनिवेश तथा उपनिवेश, आक्रमण युद्ध लूट करता।
पशु से लेकर मनुष्य तक को, गुलाम बनाकर राज करता।।
इसी हेतु हुए लाखों भी युद्ध, प्राचीनकाल से अभी तक में।
भरत बाहुबली से लेकर, राजा महाराजा चक्री तक मे।।

महाभारत व सिकन्दर तथा, चँगेजखाँ से अकबर तक।
स्वार्थ युद्ध उपनिवेशवाद, सबके कारण भौतिकवाद।।
दो विश्वयुद्ध या बाजारवाद, सबके जनक है भौतिकवाद।
शिक्षा राजनीति कानून धर्म में, घुसपैठ किया है भौतिकवाद।।

इससे परे है आत्म विकास, आत्म केन्द्रित होता विकास।
भौतिक से भी अनन्त गुणा, आत्मिक विकास सर्वज्ञ जाना।।
अनन्त आत्म सुख के हेतु, लक्ष्य भी होता है तदनुकूल।
तदनुकूल भी पुरुषार्थ होता, भौतिकवाद दूर हो जाता।।

भौतिकवाद दूर होने से, उसके दोष हो जाते दूर।
इसीलिए तो आत्मपुरुष, भौतिकवाद से होते दूर।।
ये ही बनते तीर्थंकर बुद्ध, ऋषि मुनि साधु-सन्त प्रवर।
दिव्यज्ञान सुख प्राप्त कर, विश्व को देते ज्ञान भण्डार/(अमर)।।

ऐसे ही व्यक्ति होते पूजित, मानव जाति के पथ दर्शक।
भौतिकवादी नेता सेठ आदि, न होते पूज्य पथ दर्शक।।
आत्म विकास के कारक जानो, सत्य समता शान्ति को मानो।
अहिंसा अचौर्य ब्रह्मचर्य गुण, निर्मल भावना उदार गुण।।

सर्व जीव में मित्रता भाव-आत्मविश्वास व आत्मविज्ञान।
धैर्य सहिष्णुता आत्मचिन्तन, अनासक्ति भाव आत्म रमण।।
धर्म के नाम जो हुए युद्धादि, उसमें नहीं है आध्यात्मवाद।
वह तो है धर्म उन्माद, संकीर्ण स्वार्थ भौतिकवाद।।

विश्व इतिहास व वर्तमान में, जो कुछ पाया लिखा पद्य में।
स्व-पर-विश्व कल्याण भाव, 'कनकनन्दी' के भरे पद्य में/(दिल में)।।

सिद्ध भगवान् की स्तुति

(तर्जः- 1. आधा है चन्द्रमा... 2. मराठी राग...)

करता हूँ वन्दना... सिद्धेश्वरा...2
अष्टकर्म विनाशक मोक्षवरा।। (टेक)

अनन्त ज्ञान दर्शन सुखवरा,
अनन्त वीर्य सूक्ष्मत्व गुणधरा।

अव्याबाध अगुरुलघु रुचिवरा,
शुद्ध चेतनामय घन शरीरा।

लोकाग्रवासी हो अविकारा,
सत्य शिव सुन्दर अशरीरा।। (1)

सत्य सनातन अविनाशी प्रभु,
अस्तित्व वस्तुत्व के आप विभु।

दान लाभ भोग के आप स्वामी,
जन्म जरा मरण से मुक्त स्वामी।

अनन्त वैभव से युक्त स्वामी,
सच्चिदानन्दमय अभिरामी।। (2)

विपरीत ज्ञान से विपरीत मान्यता

राग :- (म्हारी माँ जिनवाणी...)

हे विपरीत ज्ञानी! विपरीत मान्यता तेरी ऽऽ ...
सत्य को असत्य, असत्य को सत्य, माने है कुबुद्धि तेरी ... 2
अमूल्य को मूल्य, मूल्य को अमूल्य, बहुमूल्य को माने कोरी ... 2
हे विपरीत ज्ञानी!...(टेक)

मृगमरीचिका सम असत्य में भी, मान्यता तुमरी भारी...2
कस्तूरी मृग सम स्वनाभि कस्तूरी, बाहर ढूंढ़ता कोरी...2 हे विपरीत...(1)

सोना चाँदी व मणि माणिक्य को, बहुमूल्य मान्यता तेरी...2
मिट्टी वायु व पानी के बिना, क्या काम आवे तेरे..2...हे विपरीत...(2)

सत्ता सम्पत्ति प्रसिद्धि बुद्धि को, बहुमूल्य मान्यता तेरी...2
सदाचार व शान्ति के बिना, ये क्या काम आवे तेरी...2 हे विपरीत...(3)

पढ़ाई डिग्री व नौकरी धन में, महत भाव है तेरा...2
संस्कार विवेक स्वास्थ्य कुटुम्ब बिना, इसका महत्त्व है कोरा ...2हे विपरीत...(4)

धन जन तन अभिमान में, स्वरूप भाव है तेरा...2
आत्मश्रद्धान आत्मज्ञान बिन, इनका महत्त्व है कोरा...2 हे विपरीत...(5)

धार्मिक पंथ ग्रन्थ पर्व में, आग्रह भाव है तेरा...2
शुचिता समता सत्यनिष्ठा बिन, महत्त्व शून्य है सारा...2 हे विपरीत... (6)

भोग-उपभोग वैभव को तू, सुख है मानता सारा...2
ज्ञानानन्द आत्म वैभव समक्ष, तुच्छ हैं ये सुख सारा...2 हे विपरीत...(7)

संसारवर्द्धक धन जन को तू, मानता सबसे प्यारा...2
आत्म संवर्धक गुरु ज्ञान तो, अनावश्यक सदा तेरा...2 हे विपरीत...(8)

प्रतिकूल त्यागो अनुकूल चलो, पाओगे सत्य व शान्ति...2
''कनकनन्दी'' तो भावना भाये, होवे है विश्व में शान्ति...2 हे विपरीत...(9)

विकृत मनोवैज्ञानिक अनुसन्धानात्मक कविता

(मानव नीयत से नियम बनाता है न कि सच्चाई के आधार पर)

मानव विकृति को छोड़कर संस्कृति अपनाओ!

(तर्जः- बस्ती बस्ती पर्वत पर्वत...)

मानव तू क्या न किया विकृत, धर्म व न्याय राजनीति...2
नीयत तेरा नियम बनाये, धर्मादि करे है विकृत।।...2 (टेक)

महापुरुष द्वारा शोध बोध व, प्रचार-प्रसार (जो) सत्य।
उसे (भी) निज विकृत मन द्वारा करता (है) सदा विकृत।।...2 (1)

धर्म है सत्य समता शान्ति, अहिंसा व अपरिग्रह।
क्षमा सहिष्णुता ब्रह्मचर्यमय, उदार वात्सल्य स्नेह।।...2 (2)

तुमने इससे विपरीत किया, कट्टरता व दुराग्रह।
संकीर्णता व ईर्ष्या द्वेषमय, भेदभाव हिंसामय।।...2 (3)

सत्ता सम्पत्ति प्रसिद्धि हेतु, धर्म का किया प्रयोग।
मन्यमाना से तुमने किया, धर्म का दुरुपयोग।
रुढ़िवादिता से धर्म पालकर, मान लिया है उपयोग।।...2 (4)

सामाजिक व्यवस्था निमित्त, न्याय नीति का प्रयोजन।
सत्य समता निःस्वार्थ भाव से, होता है दण्ड नियोजन।।...2 (5)

इसी निमित्त राजनीति का भी, होता है सब प्रयोजन।
तथापि मानव इन सब (में) का, करता है दुष्प्रयोजन।।...2 (6)

उदर (के) समान व्यापार नीति, शोषण नहीं है काम।
व्यापार नीति है उदर समान, सम वितरण उसका काम।
शुद्ध सच्चा वस्तु विनिमय, प्रमाणिक व उचित दाम।।...2 (7)

करता मानव इसे विपरीत, लोभ से करता वस्तु संचय।
मिलावट व शोषण द्वारा, पाप करता अधिक सारा।।...2 (8)

शिक्षा संस्कृति भाषा आदि, मानव से होती विकृति।
जिससे होती समस्या ज्ञात, जिससे मानव का होता घात।।...2 (9)

'कनकनन्दी' तो करे आह्वान, संस्कृति का करो सन्मान।
इसी से होगा तेरा विकास, विकृति होता सदा विनाश।।...2 (10)

धर्म एवं अनुशासन हीनता से भारत की धन-जन स्वास्थ्य हानि

(भारत में सडक दुर्घटना से हानियाँ)

(तर्जः- सुनो सुनो ऐ दुनियाँ वालों...)

सुनो सुनो हे देशवासियों! यातायात की सही पद्धति।
इसे जानकर इसे मानकर करो यातायात होगी प्रगति।।...

महान् लक्ष्य प्राप्ति हेतु ही, अनुशासन से पैदल चलो।
देख भालकर आगे ही चलो, जीव रक्षा की भावना धरो।।

शक्ति अनुसार सही गति से, प्रासुक स्वच्छ मार्ग में चलो।
जीवों की रक्षा करते चलो, आत्मरक्षा युत आगे ही बढो।।

इसी से स्वास्थ्य उत्तम होगा, प्रदूषण भी नहीं बनेगा।
स्व-पर रक्षा कर पाओगे, लक्ष्य प्राप्त कर सुखी बनोगे।।

इसे कहते हैं ईर्या समिति, जैनधर्म की आद्य समिति/(यातायात हेतु योग्य पद्धति)।
मनुस्मृति में इसे ही कहा, दृष्टिपूत युत चलना कहा।।

महात्मा बुद्ध भी ऐसा कहा, नारायण कृष्ण गीता में गाया।
आयुर्वेद में ऐसा लिखा, सम्यक्चर्या (का) सुगुण व्याख्या।।

तीर्थंकर बुद्ध पैदल चले, साधु सन्त भी वैसा ही चले।
सर्वोत्तम चर्या यह ही जानो, अन्य चर्या में शंकर जानो।।

यानवाहन से जो यात्रा करो, उससे अनेक पाप को करो/(भरो)।

प्रदूषण हिंसा दुर्घटना रोग, परिग्रह प्रमाद आलस्य भोग।।

यदि इत्यादि पाप सहित, करो है यात्रा वाहन युत।
इससे अधिक न होवे पाप, सतर्कता वर्तो सदा है आप।।

यह तुम्हारा नैतिक काम, बिना कानून/(नियम) धार्मिक काम।
तो भी कानून बनाया गया, कानून तक न पालन हुआ।।

हर वर्ष दो करोड़ लोग, कानून भंग में होते संलग्न।
इसीलिए भी जुर्माना देते, तथापि नियम नहीं पालते।।

जिससे अनेक क्षति भोगते, धन-जन हानि रोग भोगते।
इसी में भारत अव्वल रहा, पूरी पृथ्वी में आगे ही रहा।।

तीन सौ साठ हर रोज में, शिकार होते लोग देश में।
एक लाख चौतीस हजार, मारे जाते हैं हर साल में।।

एक लाख कोटि रुपये हानि, हर साल में होती सम्पत्ति।
रोग विकलांग पीड़ा त्रासदी, स्व जन दुःखी होती भी अति।।

दुनियाँ के एक प्रतिशत वाहन, भारत में अभी होते हैं सम्पूर्ण।
किन्तु दुर्घटना होती अधिक/(विशेष), दस प्रतिशत में भारत देश।।

भारत का यह कलंक रुप, भारतीयों द्वारा पाया स्वरूप।
अनुशासन व धर्म विहीन, चारित्र प्रगट होता निदान।।

तथाहि अन्य क्षेत्र निदान/(में जानो), कार्य जो हो अनुशासन हीन।
वहाँ भी विभिन्न अनर्थ होते, धन जन स्वास्थ्य नष्ट भी होते।।

जापान चीन व पाश्चात्य देश, भारत देश से अति आदर्श।
अनुशासन से वे काम करते, पैदल भी अधिक जन चलते।।

अभी भारतीय तुम तो जागो, धन जन धर्म व्यर्थ न त्यागो।
'कनकनन्दी' का सुनो आह्वान, अनुशासन का करो पालन।।

परावलम्बन की समस्यायें

(यंत्रों का गुलाम न बने मानव)

(तर्जः- 1. छोटी छोटी गैया... 2. यमुना किनारे... 3. अच्छा सिला... 4. बहुत प्यार करते)

परावलम्बन वृत्ति त्यागा भी करो,
स्वतन्त्रता वृत्ति से जीया भी करो।
हिंसा प्रदूषण को दूर भी करो,
परिग्रह पाप को किया न करो।
परावलम्बी से परिग्रह अधिक होता,
हिंसा व प्रदूषण भी अधिक होता।। (1)

स्वावलम्बन से पैदल चला भी करो,
वाहनों का आश्रित हुआ न करो।
हिंसा व प्रदूषण इसी से कम होगा,
परिग्रह पाप से बचना होगा।
शारीरिक मानसिक स्वास्थ्य बनेगा,
ग्लोबल वार्मिंग भी कम होयेगा।। (2)

एसा ही अन्य सब स्वावलम्बन,
यथा योग्य करणीय सर्व (सदा) प्रयत्न।
इसी से न प्रकृति का शोषण होगा,
शोषक-शोषित काम होयेगा।
धनी-गरीब भेद-भाव कम होगा,
सामाजिक साम्यवाद सही बनेगा।। (3)

तीर्थंकर बुद्ध साधु-सन्यासी आदि,
परिग्रह त्यागी बने आत्मावलम्बी।
राजा महाराजा चक्रीत्व पद त्यागा।

परावलम्बन भूत काम भी त्यागा।
गाँधीजी विनोबा ने (भी) ऐसा ही माना,
पर्यावरण रक्षक विज्ञानी भी माना।। (4)

विभिन्न रोगों के कारणभूत बनता,
यंत्र चालित मानव श्रेय न पाता।
तन-मन-इन्द्रियाँ निष्क्रिय/(दुर्बल) होते,
विवेक व अनुभव कम भी होते।
अति सर्वत्र वर्जयेत् सर्वत्र होता,
'कनकनन्दी' इसी हेतु यत्न करता।। (5)

घट रहा है सामान्य ज्ञान एवं नैतिकाचार

(तर्जः- 1. कभी प्यासे को पानी पिलाया... 2. जब जीरो दिया मेरे भारत...)

क्या हो गया उस भारत को जो कभी विश्वगुरु कहलाता था।
शिक्षा/(कला) सभ्यता संस्कार संस्कृति, नैतिकता से जो परिपूर्ण था ।।1।।

आज उस ही देश भारत में, नैतिकता भी लोप हो रही।
साक्षरता की तो बाढ़ आ रही, सदाचारिता लोप होती जा रही ।।2।।

क्रिया-काण्ड धर्म होता जा रहा, परोपकार तो कम होता जा रहा।
विशेष ज्ञान तो कुछ कर रहे, सामान्य ज्ञान से हीन होते जा रहे ।।3।।
स्वास्थ्य कर भोजन छोड़ रहे, जो सात्विक पौष्टिक ताजा है।
रेडिमेड खाना खाते जा रहे, जो महंगा व रोग का घर है ।।4।।

प्रातः जागरण प्रभु स्मरण, भ्रमण श्रम छोडते जा रहे।
देर रात तक टी.वी. सिनेमा मोबाइल, क्लब गप्प में समय बिता रहे ।।5।।

हाय हैलो टाटा तो कर रहे, नमोऽस्तु प्रणाम को भूल रहे।
मम्मी डेड आंटी अंकल बोल रहे, माता-पिता चाचा-चाची भूल रहे ।।6।।

कम्प्युटर इन्टरनेट गाडी चला रहे, जीवन जीने की यात्रा भूल रहे।
मोबाइल से निरन्तर बोल रहे, सत्य मृदु बोलना भूल रहे ।।7।।

फैशन व्यसन दिखावा खूब आता है, स्वास्थ्यकर ज्ञान बिल्कुल नहीं आता है।
आधुनिकता का ढोंग बहुत आता है, स्वच्छता ज्ञान भान नहीं आता है ।।8।।

घडी का फैशन तो बढ़ता जा रहा, समय का नहीं मूल्य व भान रहा।
वेशभूषा का फैशन बढ़ा जा रहा, अश्लील अंग प्रदर्शन फूला फला ।।9।।

विश्व ग्लोबल विलेइज होता जा रहा, पडोसी के दुःख दर्द का भान न रहा।
फेवरेट खिलाडी अभिनेता हुए, माता-पिता बन्धु जन पराए हुए ।।10।।

सहज सरल मृदुता नैतिकाचार, सर्व मानव का होता (है) मूलाचार।
मछली का यथा है जलसंचार, पक्षी का यथा है गगनाचार ।।11।।

नैतिकाचार बिना वह मानव, पशु से भी नीचा वह है दानव।
प्राकृतिक गुण पशु न त्याग करे, मनुष्य श्रेष्ठ क्या है जो त्याग करे ।।12।।

धार्मिक साधु साध्वी बन रहे, प्रवचन कार्यक्रम भी हो रहे हैं।
धन जन प्रदर्शन बढ़ रहे, ज्ञान वैराग्य आध्यात्म घट रहे ।।13।।

अन्तर्राष्ट्रीय चर्चा तो खूब होती, देशभक्ति की भावना घट रही।
पुस्तकीय ज्ञान तो कर रहे, व्यवहार/(सामान्य) ज्ञान से अज्ञ हो रहे ।।14।।

जड़ रहित वृक्ष की स्थिति सम, पंख रहित पक्षी की गति सम।
नैतिकाचार सामान्य ज्ञान बिना, मानव सुखी न होता सही सम ।।5।।

भोजन पानी वस्त्र से भी प्राणवायु, अधिक उपयोगी जैसे आयु।
तथाहि सदाचार सामान्य ज्ञान, अधिक उपयोगी यह है जान ।।6।।

इसीलिए प्रयत्न अधिक करो, इसकी उपेक्षा कभी भी न करो।
'कनकनन्दी' का भाव जानो मानो, सर्वोदय हेतु इसे स्वीकार करो ।।7।।

विज्ञान के अन्धकार पक्ष

(विज्ञान के दुरुपयोग से विनाश)

राग : (यमुना किनारे श्याम....)

विज्ञान का दुरुपयोग किया न करो, विनाश शृंखला आरम्भ किया न करो
सत्य-तथ्य को स्वीकार किया भी करो, यन्त्रों का सदुपयोग किया ही करो
दुरुपयोग अतियोग से हानि होती है, ''अति सर्वत्र वर्जयेत्'' नीति होती है... (टेक)

विज्ञान को अज्ञात है आत्म विज्ञान, परम विज्ञान तथा परिनिर्वाण
आत्म विकास का ज्ञान अभी तो नहीं; आत्मिक शान्ति का मार्ग जानता नहीं
परम सत्य व ब्रह्माण्ड में पहुँच नहीं है, स्वयं को भी सही जानता नहीं है... (1)

विनाशक गाथा नागासाकी भी कहता, हिरोशिमा विध्वंस की लीला बतलाता
विश्वयुद्ध सर्वयुद्ध अन्धकार बताते, विज्ञान की विनाशक शक्ति भी बताते
विज्ञान विशेषज्ञान नहीं बताता, विज्ञान विपरीत ज्ञान सिद्ध है करता... (2)

अस्त्र-शस्त्र मारणास्त्र अणुबमादि, जीव विनाशक प्रदूषक जो यन्त्रादि
विषाक्त गैस आदि जो विनाशकारी, पर्यावरण ध्वंसी कल कारखाना भारी
तथा ही यान-वाहन या उद्योग, हिंसा प्रदूषणकारी सर्वअयोग्य... (3)

जिससे जीवन चर्या होती कृत्रिम, निष्क्रिय आलस्यपूर्ण भोगवादी जीवन
तन-मन रोगकारी आत्म पतन, फैशन व्यसनमय है निम्न जीवन
ऐसा विज्ञान तथा वैज्ञानिक उपकरण, समस्त अहितकारी विशेषज्ञान... (4)

अतः विज्ञान को धर्ममय होना जरूरी, अहिंसा व आध्यात्ममय पर उपकारी
हिताहित विवेकयुक्त सत्य पुजारी, वैश्विक दृष्टि सम्पन्न विकासकारी
''कनकनन्दी'' भावना भाये हितकारी, आध्यात्म विज्ञान हो सर्वोपकारी/
(गुणकारी)...(5)

प्रगति अभी भी अति दूर

(मेरी आचार्य कनकनन्दी की दृष्टि से मानव की उच्चतम सही प्रगति)

(मेरी आचार्य कनकनन्दी की दृष्टि में भविष्य के मानव)

(तर्जः- 1. आओ झूलो मेरे चेतन...)

बढ़ो धीरे-धीरे मानव प्रगति पथ पर... प्रगति पथ पर मानव प्रगति पथ पर
बढ़ो धीरे-धीरे... (स्थायी)

अभी भी बहु भाग मार्ग शेष हैं, भौतिक आत्मिक लक्ष्य दूर है।
अभी तो तेरी यात्रा थोड़ी हुई है, प्रमादी होने का वक्त नहीं है ।।1।।
बढ़ो धीरे...

तन मन आत्मा अस्वस्थ अभी है, गरीबी भूखमरी अजय अभी है।
सर्व जीव अधिकार सम नहीं है, बलि बुचडखाना बन्द नहीं है ।।2।।
बढ़ो धीरे...

भ्रूण हत्या प्रदूषण शान्त नहीं है, भ्रष्टाचार आतंक नाश नहीं है।
जाति पंथ राष्ट्र भेद नष्ट नहीं है, शोषक-शोषित शून्य नहीं है ।।3।।
बढ़ो धीरे...

अन्याय अत्याचार दूर नहीं है, अश्लील बलात्कार कम नहीं है।
लिंग भेद विषमता शान्त नहीं है, काला-गोरा भेदभाव दूर नहीं है ।।4।।
बढ़ो धीरे...

हिंसा झूठ बेईमानी कम नहीं है, मिलावट जमाखोरी शून्य नहीं है।
क्रोध मान मायाचार शान्त नहीं है, ईर्ष्या तृष्णा परिग्रह दूर नहीं है ।।5।।
बढ़ो धीरे...

आक्रमण युद्ध हत्या नष्ट नहीं है, क्रूरता निकृष्टता दूर नहीं है।
फैशन-व्यसन शून्य नहीं है, अज्ञान मोहासक्त कम नहीं है ।।6।।
बढ़ो धीरे...

यातायात दुर्घटना कम नहीं है, प्राकृतिक प्रकोप शान्त नहीं है।
अतिवृष्टि अनावृष्टि कम नहीं है, भूकम्प सुनामी शान्त नहीं है ।।7।।
बढ़ो धीरे...

सर्वोदय अभी भी पूर्ण नहीं है, अनेक समस्यायें शान्त नहीं है।
तनमन आत्मा शान्त नहीं है, परम सत्य की प्राप्ति नहीं है ।।8।।
बढ़ो धीरे...

अभी तो अनन्त दूर बाकी है, स्वयं की प्राप्ति तो हुई नहीं है।
सत्य शिव सुन्दर होना बाकी है, 'कनकनन्दी' उस पथगामी/(यात्री) है ।।9।।
बढ़ो धीरे...

मानव क्यों करो अभिमान?!

(सुधारात्मक ताड़ना, सम्बोधन, आह्वान गीत)

रागः- (बंगला-उडिया... भारत देश महान्... जननी जननी जननी... सुनो वो है मेरी बेटी...)

मानव क्यों करो अभिमान (रे)!ऽऽऽ...2 तू नहीं अभी महान्ऽऽ...2/3
महामानवों के कारण तेरी, जाति बनी है महान्...2!/3
अन्यथा तेरी जाति सबसे, दुष्ट प्रजाति निदान...2!!/3 (स्थायी/धत्ता)...

तीर्थंकर बुद्ध साधु चिन्तक, समाज सेवक ज्ञानी...2/3
परोपकारी न्यायवन्त त्यागी जन से, गौरव तेरी जाति...2/3
अन्यथा रावण कंस हिटलर सम, अधिक होते मानव...2/3
इनके कारण मानव जाति तो, सबसे पापात्मा जीव...2/3 मानव क्यों...(1)

तेरी जाति ही स्वजाति हिंसक, अधिक सबसे जान...2/3
युद्ध से लेकर भ्रूणहत्या/(गर्भपात) में, करो स्वजाति हनन...2/3

मिथ्या कथन में तेरे सम नहीं, पृथ्वी में अन्य प्रजाति...2/3
भाषा दक्षता का अन्यथा प्रयोग, करे न पशु प्रजाति...2/3 मानव क्यों...(2)

काम प्रवृत्ति में पशु से भी नीच, निश्चित नहीं है दिन...2/3
पशु का निश्चित ऋतु में संसर्ग, असंसर्ग/(दूर रहे) अन्य दिन...2/3
चोरी करने में तू ही शिरोमणि, अन्य नहीं तेरे सम...2/3
इसी हेतु करो आक्रमण लूट, ठगी व महासंग्राम...2/3 मानव क्यों...(3)

परिग्रह हेतु शोषण तू करो, चोरी व घूसखोरी...2/3
पशु पक्षी कीट पेट तो भरते, पेटी तू भरता भारी...2/3
बहु आरम्भ व परिग्रह से, नरक जाता तू भारी...2
सप्तम नरक इसी हेतु जाता, दुःख सहो अति भारी...2..मानव क्यों..(4)

प्रकृति का तू करता शोषण, प्रदूषण करो है भारी...2
अन्य प्रजाति का करता संहार, दुःख देता उन्हें भारी...2
अन्य कोई जीव ऐसा न करता... न बनता अत्याचारी...2
तथापि स्वयं को महान् मानता, सबसे तू दम्भाचारी..2..मानव क्यों..(5)

ऐसा ही फैशन-व्यसन पापों को, करता है सबसे भारी...2
अन्याय अत्याचार मायाचार, कषाय सबसे भारी...2
अधिक प्रदूषण तुम ही फैलाओ, जिससे अनर्थ भारी...2
ग्लोबल वार्मिंग विषम वृष्टि रोग, होते अति भारी..2..मानव क्यों..(6)

भोजन/(अनाज) दूध औषधि फल फूल, वस्त्र फर्नीचर...2
प्राणवायु तक वृक्ष व पशु से, प्राप्त करो जीवनभर...2
जिससे तू जीवन है जीता, करता भोग-उपभोग...2
तथापि उनसे श्रेष्ठ तू मानकर, करता उनका संहार..2..मानव क्यों..(7)

अभी तो मानव महान् तू बनो, त्यागो है पापाचार...2

मनन पूर्वक महनीय बनो, पालो है सदाचार...2

मानव तू महामानव बनकर, करो है आत्मविचार...2/(जीयो और जीने दो)..2

'कनकनन्दी' का आह्वान सुनकर, करो है प्रयत्नाचार..2..मानव क्यों..(8)

मानव क्यों करो अभिमान (रे)!ऽऽऽ...2, तू नहीं (है) अभी महान्ऽऽ...2

महामानवों के कारण तेरी, जाति बनी है महान्...2!

अन्यथा तेरी जाति सबसे, दुष्ट प्रजाति निदान...2 !!...

त्यजनीय सर्व मानवकृत विकृतियाँ एवं कुरीतियाँ (सामाजिक राजनैतिक कानूनी धार्मिक शिक्षादि की विकृतियाँ एवं कुनीतियाँ)

(राग :- बंगला, सायोनारा... कल फिर...)

वरणीय ही करणीय, अन्य सर्व कार्य त्यजनीय

भक्ष्य भोजन ही भक्षणीय, विष भक्षण त्यजनीय... (1)

स्व-पर हित ही करणीय, स्व-पर अहित त्यजनीय

मानवीय नीति भी त्यजनीय, अहितकार यदि करणीय... (2)

स्वार्थपूर्ण विषम नीति, शोषणकारी जो भेद नीति

हिंसामय असत्य नीति, त्यजनीय सर्व अयोग्य नीति... (3)

धार्मिक सामाजिक राजनीति, कानूनी या व्यवहार नीति

प्राचीन आधुनिक नीति, देश-विदेश की सर्वनीति... (4)

लिखित अलिखित लोक नीति, शिक्षा से लेकर कूटनीति

सत्य-साम्य से रिक्तनीति, त्यजनीय है अशान्त नीति... (5)

(यथा) दासप्रथा बलिप्रथा, सतीदाह प्रथा द्यूतप्रथा/(सट्टाप्रथा)

आक्रमण युद्ध हिंसाचोरी, झूठ परिग्रह ठगनीति... (6)

वैश्यावृत्ति या बलात्कार, बाल-विवाह हो या शिकार
अश्लीलता या मद्यपान, नशा द्रव्य विक्रय उत्पाद... (7)

वधशाला मधुशाला कानून, उपनिवेशवाद कानून
क्रूर तानाशाही शासन, अग्राह्य विषम कानून (शासन)... (8)

पशु-पक्षी क्रय-विक्रय, वध-बन्ध संत्रासन
काम लेना या विनिमय, स्वतंत्र हरण आदि काम... (9)

बाल वृद्ध या नारी जाति, असहाय गरीब निम्न जाति।
दुर्बल विकलाङ्ग मन्दमति, इनसे न हो भेद नीति... (10)

शिक्षा में अग्राह्य क्रूर-नीति, शोषणकारी या भेद नीति।
कृषक अन्नदाता महान्, करणीय नहीं अपमान... (11)

शोषण उनका सदा होता, ग्राह्य नहीं यह क्रूर प्रथा।
अपना माल का करे दाम, अग्राह्य/(अन्याय) अन्य का मूल्याङ्कन...(12)

धर्म में अग्राह्य राजनीति, राजनीति में हो धर्मनीति/(धर्म में न हो क्रूरनीति)।
आध्यात्मिक हो धर्मनीति, अर्थ स्वार्थ परे नीति... (13)

सामाजिक कुरीति ग्राह्य नहीं, असहयोग भी श्रेय नहीं।
जाति कुल मद ग्राह्य नहीं, परस्पर उपग्रहो भाव सही... (14)

दहेज प्रथा व भ्रूण हत्या, मातृजाति की हीनदशा।
अनादर अपमान ग्राह्य नहीं, कलह विषमता प्रिय नहीं... (15)

धर्म साधना में बाधक जो, अच्छे कार्य में रोधक जो।
मोक्षमार्ग में बाधक जो, ग्राह्य नहीं सर्व रोधक जो... (16)

सत्ता सम्पत्ति बुद्धि वाले, स्वार्थपूर्ण जो काम करे।
(उनका) सहयोग हो सदा काले, साम्यभाव हो महीतले... (17)

कनकनन्दी यह भाव भावे, सर्वोदय हो सर्व जीवे।
सत्य शिव सुन्दर सदा होवे, विषम विष सदा दूर होवे... (18)

धार्मिक बनो किन्तु कट्टर नहीं

(राग - सबसों ऊँची प्रेम सदाई...)

(सबसे)/धार्मिक कट्टरता दुःखदाई
धार्मिक बने धर्म न करें... कुविचार उपजई
संकीर्णता भजे, उदारता त्यागे
क्रूरता भी उपजई... (टेक/स्थायी)...

बुद्धि न विकसे, विकृत हुए... सम्वेदना नष्ट हुई
अन्धविश्वास व अज्ञान जन्मे... विवेक... प्रज्ञा नश जाई... (1)

आध्यात्मिकता तो दूर ही रहे... मधुरता भी नश जाई
बगुला भगत सम आचरण करे... सहजता भी नश जाई... (2)

दिखावा व मायाचारी भी उपजे... भेद-भाव उपजई
अन्यधर्मी को शत्रु माने... वैर-भाव उपजई... (3)

उदारभावी व सज्जन धर्मी से/(सहज जन से)... अन्यथा भाव उपजई
स्व-समान कट्टर जन से... प्रेम एकता बढ़ाई... (4)

शान्ति-समता-प्रेम नशे है... कलह विषमता उपजई
बलि प्रथा व आतंक जन्मे... हत्या से युद्ध तक होई... (5)

धार्मिक बनो कट्टर न बनो... पावनता सदा सुखदाई
भाव पवित्रता यथार्थ धर्म... 'कनक' को सदा भाई... (6)

नैतिक-धार्मिक-आध्यात्मिक पुरुषों के भाव एवं व्यवहार

(नैतिक-धार्मिक-आध्यात्मिक)

(देश-विदेशों के धर्म-दर्शन-आध्यात्मिक एवं मेरे अनुभव-भावनानुसार)

(जब ये मानव नैतिक होगा)

(तर्जः- 1. झिलमिल सितारों... 2. छोटी-छोटी गैया... 3. यमुना किनारे श्याम...)

I - **नैतिक जनों के भाव एवं व्यवहार** -

जब ये मानव नैतिक होगा... अन्याय अत्याचार नहीं करेगा।
शोषण भ्रष्टाचार से दूर रहेगा... हिंसा झूठ चोरी नहीं करेगा।।

जूआ व शिकार नहीं खेलेगा... परस्त्री-वेश्यागामी नहीं बनेगा।
अनुशासित व विनम्र होगा... हितमितप्रिय बातें करेगा।।

नैतिकजनों का संग करेगा... व्यसनी दुष्टों से दूर रहेगा।
सज्जनों को वह अच्छा मानेगा... अन्य जनों को त्रास न देगा।।

II - **धार्मिक जनों के भाव एवं व्यवहार** -

जब ये मानव धार्मिक होगा... सत्य-तथ्य में रुचि/(का ज्ञान) करेगा।
स्व-पर विश्व का ज्ञान करेगा... आत्मकल्याण का झुकाव होगा।।

मर्यादा हीन काम नहीं करेगा... हिताहित ज्ञान सदा रखेगा।
फैशन-व्यसनों से दूर रहेगा... पापों की वृत्ति से दूर रहेगा।।

वैश्विक कुटुम्ब भाव रखेगा... सर्व जीव को आत्मवत् मानेगा।
क्रोध मान माया को क्षीण करेगा... लोभ मोह को वश करेगा।।

सन्तोष सदाचारी सदा रहेगा... उदार सहिष्णु भाव रखेगा।

परमात्मा का ध्यान करेगा... उनको आदर्श सदा मानेगा।।

साधु-संतों की भक्ति करेगा... आहार दान व सेवा करेगा।
संकट आने पर दूर करेगा... औषधि शास्त्र दान में देगा।।

भाव में आसक्ति कम करेगा... ईर्ष्या घृणा द्वेष नहीं करेगा।
सरल सहज भाव रखेगा... आत्म विश्लेषण सदा करेगा।।

III - आध्यात्मिक जनों के भाव एवं व्यवहार -

आध्यात्म पुरुष होते महान्... दोनों से अधिक आदर्शवान्।
अपना-पराया भेद विहीन... हानि-लाभ में एक समान।।

शत्रु-मित्र में समता भाव... ख्याति-पूजा से रहित भाव।
दीन-हीन से रहित भाव... मद मत्सर हीन पावन भाव।।

सांसारिक इच्छा रहित भाव... धन जन से निस्पृह भाव।
भोग आकांक्षा से सर्वथाशून्य... आत्मानुभव में जो परिपूर्ण।।

जाति पंथ राष्ट्र सीमा रहित... सच्चिदानन्द में सदा जो रत।
प्रतिस्पर्द्धा व ईर्ष्या रहित... आध्यात्म सुख में सदा जो रत।।

अन्तः प्रज्ञा अनुभव सहित... संकीर्ण भाव से पूर्ण रहित।
सत्य शिव सुन्दर भाव सहित... संकल्प विकल्प भाव रहित।।

जन्म जरा मृत्यु भय रहित... मानव कृत सीमा रहित।
संयम शील व ध्यान सहित... मौन चिन्तन व शान्त सहित।।

आत्मानुशासी परतन्त्रता हीन... विश्वास युक्त विवशता विहीन।
लौकिक जनों से परे स्वभाव... आध्यात्म पुरुष के विचित्र भाव।।

नैतिक से श्रेष्ठ धार्मिक जन... उनसे श्रेष्ठ आध्यात्म जन।
कनकनन्दी चाहे/(सदा) आध्यात्म भाव... नैतिक धार्मिक युत ये भाव।।

हे मानव! वन गिरि का कृतघ्न न बन!

पर्यावरण सुरक्षागीत

राग :- (बंगला-ओडिसी...)

हे वनगिरि! हे लतागिरि... तुम्हारा उपकार भारी
तुमसे मिले फल औषध उपकारी
विविध सुमन की सुगन्धी मनोहारी
प्राणवायु भी मिले... शीतल छाया भारी... (स्थायी)...

\+ तुमसे भी जीवित पशु व नर-नारी
कीट व पतंग समस्त वनचारी
पर्यावरण शुद्ध तुमसे अतिभारी
नीलकण्ठ के सम तुम हो विषहारी... हे वनगिरि... (1)

\+ तुम्हारी गोद में बसे हैं वनचारी
तुम्हारे कारण होती है वर्षा भारी
तुम्हारे कारण मृदा की रक्षा भारी
तुम्हारे कारण पृथ्वी हरी भरी... हे वनगिरि... (2)

\+ कृतघ्न मानव बना है अपकारी
तुम्हारा संहार करता अतिभारी
जिसके कारण आती आपदा अतिभारी
ग्लोबल वार्मिंग प्रदूषण भी भारी... हे वनगिरि... (3)

\+ स्वर्णअण्डा लोभी के सम व्यवहारी
दोहन से अधिक शोषण करे भारी
प्रतिक्रिया फल से मानव हाहाकारी
दूरदृष्टि हीन से आपदा महामारी... हे वनगिरि... (4)

अभी तो मानव कृतज्ञ तुम बनो
तीर्थंकर बुद्ध का सत् उपदेश मानो

वैज्ञानिक सत्य को तुम तो अभी मानो
जीना है जो तुम्हें वनों को जीने दो... हे वनगिरि... (5)

\+ ‘कनकनन्दी’ का आह्वान तुम सुनो
अहिंसा असंग्रह परोपकार करो
तृष्णा को त्यागकर आवश्यक से चलो
आवश्यक से चलकर आत्महित करो... हे वनगिरि... (6)

मातृशक्ति उद्धारक शक्ति बने न कि संहारक

(नारी की गरिमावस्था एवं पतितावस्था)

राग :- (हे वनगिरि! हे लतागिरि!...)

हे! मातृजाति हे! मातृशक्ति ......
सुनो गरिमा तेरी जाति/(नारी जाति) की... हे!... (स्थायी/टेक)...
तुझसे जन्म लेते, तीर्थंकर व बुद्ध... रामकृष्ण सहित, समस्त ही मानव।
तू ही ब्राह्मी सुन्दरी, चन्दना सीता गार्गी... प्राचीनकाल से ही, अनेक सती साध्वी।।

अनेक वीरांगनाएँ, तेरी जाति में जन्मी... दुर्गा लक्ष्मीबाई व, अहिल्याबाई जन्मीं।
देशहित के हेतु, संग्राम भी लड़ी... जीजाबाई के सम, किंगमेकर बनी।।

ऐनी बेसेन्ट तथा, सरोजिनी नायडू... माता कस्तूरबा व, माता स्वरूप रानी।
कमला मीराबेन, दुर्गा प्रेमवती... स्वतन्त्र संग्राम की, बनी है महानेत्री।।

विजयलक्ष्मी तथा, सुचेता कृपलानी... राजनीति क्षेत्र में, महान् नेत्री बनी।
महान् वैज्ञानिक, मैडम क्यूरी बनी... कल्पना चावला देखो, स्पेस-यात्री बनी।।

श्रीमती अमृता व, महाश्वेता देवी... अरुन्धतीराय व, सुभद्रा भी कुमारी।
राण्डा बर्न शक्ति गवेन, भक्ता मीराबाई... विदुषी लेखिकाएँ, महिलाएँ भी हुई।।

नाईटेंगल नर्स, मदर टेरेसा भी... सेवा के क्षेत्र में, देखो महनीया बनी।
अतएव माता को, गरिमामयी माना... स्वर्ग से भी महान्, माता को स्मृति माना।।

कुछ तो माताएँ भी, कलंकिनी है बनी... मर्यादा शालीनता, ममता सर्व छोड़ी।
कामुक ईर्ष्यालु व, मायाचारिणी बनी... बातूनी झगड़ालु, शृंगार प्रिय बनी।।

जिससे बच्चों को, संस्कार नहीं देती... नर्क समान देखो, परिवार बना देती।
सासु-ससुर बड़ों की, सेवा नहीं करती... गर्भपात के लिए, कारण भी बनती।।
बच्चों को दुग्धपान, माताएँ न कराती... जिससे बच्चों को, निमोनिया होती।
लाखों बच्चों की मृत्यु, प्रतिवर्ष होती... भारत की माताएँ, सब से दोषी होती।।
ऐसी माताओं को, स्तन कैन्सर होता... दूध न पिलाने का, कुफल भी मिलता।
शादी शुदा की आत्म-हत्या तो बढ़ रही... परिवार समाज, समस्या से घिरी।।
अतएव माताओं, स्वयं आदर्श बनो... 'कनकनन्दी' गुरु का, तुम सुनो।
शिक्षा के साथ तुम, संस्कारवान बनो... आधुनिकता के साथ, आध्यात्मिक भी बनो।।

एड्स से भी घातक हुआ निमोनिया

विश्व स्वास्थ्य संगठन की माने, तो दुनिया में निमोनिया से सबसे ज्यादा बच्चों की मौतें भारत में होती है। इन्टरनेशनल एसेस वैक्सीन सेन्टर एवं जॉन हॉपकिस ब्लूमबर्ग स्कूल ऑफ पब्लिक हैल्थ की निमोनिया प्रोग्रेस रिपोर्ट 2011 के अनुसार, वर्ष 2008 में भारत कें 3.71 लाख बच्चों की मौतें निमोनिया के कारण हुई। रिपोर्ट ये भी कहती है कि भारत में केवल 46 प्रतिशत ऐसे बच्चे हैं जिन्हें जन्म के छह महीने तक माँ का दूध नसीब होता है। यह आंकड़ा काफी कम है। अगर नवजात को छह महीने तक ही माँ का दूध मिल जाए, तो वह कई बीमारियों से लड़ सकता है।

3.71 भारत 0.84 पाकिस्तान

1.77 नाइजीरिया 0.80 अफगानिस्तान

1.12 कांगो 0.62 चीन

निमोनिया से हुई बच्चों की मौतें (लाखों में)

राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (एन सी आर बी) की रिपोर्ट के अनुसार वर्ष 2010 में देश में आत्महत्या करने वालों में से 69.2 फीसदी लोग शादी-शुदा थे। जबकि 22.8 फीसदी कुँआरों ने आत्महत्या की।

- राजस्थान पत्रिका

बड़े आदमी की अजीब कहानी

बड़े आदमी की समस्या-कारण एवं निवारण

सुनो सुनो हे दुनियाँ वालों... बड़े आदमी की अजीब कहानी।
सत्ता-सम्पत्ति-प्रसिद्धि डिग्री... युक्त वालों की गजब कहानी।। (टेक)।।
ऊपर से तो चमक-दमक... दूर से लगे भी मनमोहक।
यथा समुद्र पहाड़ नाग... इन्द्रधनुष व विद्युत् पात/(मेघ तड़ाग)।।
पापानुबन्धी पुण्य कर्म से... प्राप्त होती जब सत्ता सम्पत्ति।
किंपाक फल सम लगे मनोहर... स्वाद में मधुर विपाक जहर।।
सत्तादि प्राप्त करने हेतु... करते कर्म अति दुष्कर।
उनकी रक्षा व वर्धन हेतु... करते पुनः पाप आचार।।
प्राप्त होने से बढ़ता गर्व... फैशन-व्यसन भोगते सर्व।
जिससे रोग-तनाव बढ़े... परेशानी और संकट घेरे।।
अन्याय अत्याचार करते... ईर्ष्या द्वेष घृणा करते।
तृष्णा मोहवश पाप करते... युद्ध, हत्या, बलात्कार करते।।
शोषण भ्रष्टाचार करते... धोखाधड़ी बेईमानी करते।
नरकमय जीवन बिताते... आत्महत्या कर जीवन देते।।
निवृत्ति उपाय इसके सुनो... निर्मल भाव दया को जानो।
आत्मनियंत्रण सुध्यान-ज्ञान... सात्विक आहार-विचार मानो।।
संतोष क्षमा धैर्य संयम... विश्वमैत्री व विश्वकल्याण।
पर दुःख कातर दयार्द्र मन... जिससे न होते अयोग्य काम।।
ये ही उपाय यथार्थ जानो... पुलिस कानून आंशिक/(बाह्य) मानो।
डॉक्टर औषधि बाह्य कारण... हितोपदेशी गुरु सज्जन।।
शान्ति ही सबसे बड़ी सफलता... शान्ति हेतु ही बने सफलता।
इसी हेतु यह रचना हुई... 'कनकनन्दी' की भावना ये ही।।

(31 अक्टूबर 2011 को विश्व जनसंख्या
7 अरब होने की सम्भावना पर कविता)

जनसंख्या वृद्धि से उत्पन्न समस्याएँ एवं समाधान

राग :- (छोटी छोटी गैया...)

जनसंख्या वृद्धि से संत्रस्त (आज) धरती
विविध समस्या से घिरी है धरती
समय रहते इसका समाधान है करो
नहीं तो अनर्थ होता अति ही घोर... (स्थायी)...

अब्रह्मचर्य से हुई सात अरब
समाधान हेतु ब्रह्म पालो मानव
अणुव्रत महाव्रत है ब्रह्मचर्य
पालन से फल मिले महा आश्चर्य... (1)

तन मन आत्मा का होता विकास
परिवार से विश्व तक होता विकास
आध्यात्म पुरुषों द्वारा शोधित सूत्र
प्राचीन काल से प्रमाणित हैं सूत्र... (2)

अब्रह्म से हुई जनसंख्या की वृद्धि
प्रकृति शोषण पर्यावरण/(परिवेश) अशुद्धि
खाद्य-अभाव, आवास की होती समस्या
सामाजिक सौहार्द की होती समस्या... (3)

अठारह सौ वर्षों में (हुई) एक अरब संख्या
सवासौ वर्षों में दो अरब संख्या
तैंतीस वर्षों में तीन अरब संख्या
चौदह वर्षों में चार अरब संख्या... (4)

तेरह वर्षों में पाँच अरब संख्या
बारह वर्षों में छह अरब संख्या
तेरह वर्षों में सात अरब संख्या
पन्द्रह वर्षों में होगी आठ अरब संख्या... (5)

जनसंख्या वृद्धि से आवश्यकता वृद्धि
प्रकृति शोषण की होती है वृद्धि
जिससे जंगल की कटाई हुई
कृषि भूमि की कमी भी हूई... (6)

यातायात साधन आवास (हेतु) कारण
समस्या वृद्धि में बना अन्य कारण
सम आवंटन संसाधन का नहीं भी होना
समस्या वृद्धि में मुख्य कारण बना... (7)

समाधान हेतु ब्रह्म पालन करो
अपरिग्रह व्रत भी धारण करो
सामाजिक न्याय व दान भी करो
अहिंसा परोपकार हृदये धरो... (8)

कृत्रिम उपायों से समाधान भी नहीं
प्रकृति व संस्कृति का जोड़ भी सही
जब तक मानव आध्यात्मिक नहीं बनेगा
'कनक' मत में समाधान नहीं होगा... (9)

आत्मिक दृष्टि से रहित सर्व जीव निम्न श्रेणीय जीव हैं।

(भौतिक दृष्टि से पशु-पक्षी मनुष्य आदि सब समान)

तर्ज :- (छोटी छोटी गैया...)

आत्मिक-दृष्टि बिन जो जीव होते,
निम्न-श्रेणीय जीव वे सब होते।
उन्हें मिथ्यात्वी, वीर कहते,
नर सुर पशु आदि कोई भी होते।। (टेक)

आत्मिक-दृष्टि युत तब होता है जीव,
जब जानता है मैं अमूर्त जीव।
शरीर मन व इन्द्रियों से परे,
''सच्चिदानन्दमय'' भौतिक परे।। (1)

''सत्यं शिव सुन्दर'' मेरा स्वरूप,
राग द्वेष से उपरत रूप।
जन्म मरण व रोग विभाव,
कर्म संयोग से विकृत भाव।। (2)

धन जनमान रूप रंगादि,
सत्ता-सम्पत्ति प्रसिद्धि आदि।
शत्रु-मित्र व कुटुम्ब आदि,
कर्म बंध के आधि व व्याधि।। (3)

आकाश सम मैं अनन्त अमूर्त,
बादल सम मेरा देहादि रूप।
अभ्र नाश से न आकाश नाश,
देहादि नाश से न मेरा नाश।। (4)

देह में जन्मे यथा विविध रोग,
तथाहि रागादि आत्मिक रोग।
रोग नाश से होवे शरीर स्वस्थ्य,
रागादि नाश से आत्मिक स्वास्थ्य।। (5)

ऐसी दृष्टि युक्त जो जीव होता,

वह आत्मिक-दृष्टि सम्पन्न होता।
यहाँ से आत्मिक विकास होता,
अन्त में परम-आत्मा बनता।। (6)

इससे भिन्न जीव जो कोई होता,
पशु, नर, नारकी, देव भी होता।
साक्षरी या निरक्षरी जो कोई होता,
वह निम्नस्तरीय जीव ही होता।। (7)

जड़ शरीर से भले हो विभिन्न रूप,
आत्मिक-दृष्टि से निम्न स्वरूप।
परमज्ञान यह वीर ने दिया,
अनन्तज्ञान से यह सब पाया।। (8)

अल्पज्ञ न जाने यह सब ज्ञान,
श्रद्धा अनुभव से होता है ज्ञान।
'कनकनन्दी' उसे श्रद्धान करे,
उसी के निमित्त प्रयत्न करे।। (9)

मानव अनावश्यक पापकार्य अधिक करता!

(अनर्थदण्ड/अनुत्पादक कार्यों से हानि)

(सुजीवन प्रबन्धन के लिए त्यजनीय अकार्य)

(राग- बड़ा नटखट है ये...)

विचित्र प्रकार की है मानव वृत्ति...
अनर्थ काम में प्रवृत्ति...
तन मन धन का भी करता विनाश
समय व जीवों का नाश...होऽऽ...(स्थायी)

फैशन-व्यसनों या निन्दा चुगली में...

प्रमाद आलस्य वाद-विवादों में...
कलह-झगड़ा क्रोध मान में...
आतंक युद्ध व हिंसाध्वंस में... विचित्र... (1)

शरीर के मल नाखून बाल को...
सजाये संवारे/(धजाये) मृतअंग को...
निर्दोष जीवों के खून चर्बी से...
रंगाती नारियाँ/(मूर्खायें) अपनी त्वचा/(चर्म)को... विचित्र...(2)

तम्बाखू बीड़ी सिगरेट सेवन से...
रोगों को बुलाये मूर्ख धन खर्च से
मांस भक्षण सुरापान नशा से...
हिंसा प्रदूषण रोगों से नशे... विचित्र... (3)

निन्दा चुगली व गप्पबाजी से...
प्रमाद आलस्य वाद-विवादों से...
समय शक्ति व मित्रता नाशे...
वैर-विरोध हुए स्वास्थ्य नाशे... विचित्र... (4)

कलह झगड़ा क्रोध मान से...
शान्ति समता गौरव नशे...
मानसिक रोग तनाव/(टेन्शन) पाये...
केस भी चले, धन भी जाये/(नाशे)... विचित्र... (5)

आतंक युद्ध व हिंसा ध्वंस से...
धन जन व सभ्यता नशे...
ज्ञान विज्ञान व संस्कृति नशे...
मानव जाति राक्षस बने... विचित्र... (6)

इत्यादि मानव अनर्थ करता...
अप्रयोजन कार्य अधिक करता...

महामानव इसे कभी न करते...
अज्ञानी मानव उन्हें न मानता... विचित्र... (7)

अप्रयोजन कार्य जो त्याग करता...
उत्तम कार्य में प्रवृत्त होता...
अनर्थदण्ड को त्यागो सज्जनों...
'कनकनन्दी' का आह्वान सुनो... विचित्र... (8)

पतनकारी विरोधाभास त्यागो!

राग :- (1. पावन है इस देश... 2. कवि सम्मेलन का राग...)

विरोधाभासी कारणों से, हो रहा देश का पतन
अनेकता में एकता नहीं, विघटनों से पतन
भारत का है पतन... स्थायी...

ढुलमुल नियम पाले, श्रद्धा रहित विवश
अकल बिना नकल करे, निर्णय बिना विचार... (1)

संकीर्णता का भाव अन्दर, दिखाते प्रगतिशीलता
अन्धविश्वास अन्दर भरा, शिक्षित होने की दम्भता... (2)

अहंकार से भरे हुए हैं, ठगों के जैसी नम्रता
आत्मगौरव स्वावलम्बी बिन, कैसी प्रगतिशीलता... (3)

भावना में तो भेदभाव युत, दिखाते एकता भावना
जाति पंथ राजनीति धन से, करते विभेद सर्जना... (4)

कहते भारत आध्यात्मिक देश, करते नट-नटी की अर्चना
भ्रष्टाचार में शिरोमणि देश, नेता देते कुसान्त्वना... (5)

साक्षर बनकर राक्षस बनते, विवेक चारित्र हीन
फैशन-व्यसन गुण्डागर्दी से, करते है नंगा नर्तन... (6)

समय का अभाव बताते हैं, समय पे कार्य न करते हैं
आलस्य प्रमाद गप्पबाजी में, व्यर्थ में समय गँवाते हैं... (7)

आर्थिक विकास का दम्भ भरते, अन्नदाता का करे शोषण
आत्महत्या तक किसान करते, कहाँ है न्याय शासन... (8)

परोपदेश में कुशल होते, आचरण में शून्यता
देश संस्कृति का गर्व करते, अपसंस्कृति में लिप्तता... (9)

भाईचारा का नारा देते, गुरुगुणी जन से शत्रुता
धन मान हेतु भ्रष्टाचार करे, कैसे आवे है श्रेष्ठता... (10)

धर्म के नाम पर आडम्बर रचते, सत्य समता से रिक्तता
धन जन मान के तुला पर, तोलते धर्म की श्रेष्ठता... (11)

'कनकनन्दी' का आह्वान सुनो, त्यागो है विरोधाभास
आत्मविकास से राष्ट्र हित करो, यह मेरा शुभ आशीष... (12)

मैं हूँ अकाजकारी गृहणी
(गृहणी की आत्मकथा एवं आत्मव्यथा)

तर्ज :- (ओठों पे सच्चाई...)

मैं हूँ अकाजकारी गृहणी, घर के काम से फुरसत नहीं।
खाना बनाती, बच्चे पालती, तो भी कहें कुछ काम नहीं।।...2 (टेक)

मैं न जाती आफिस क्लब, मिटिंग व किटी पार्टी में,
सद्गृहणी के कर्त्तव्य पालने से, अवकाश नहीं दिनरात में।....2

ब्रह्ममुहूर्त में उठकर मैं, नित्यकर्म सदा ही करती हूँ,
प्रभुस्मरण, शौच, स्नान, पूजा-पाठ भी करती हूँ।।...2 मैं... (1)

शुद्धतापूर्वक आहार बनाके, आहारदान मैं करती हूँ
परिवारजन व सास ससुर को, भोजन कराकर खाती हूँ,...2

गृह-पालित गाय भैंस का, भरण पोषण भी करती हूँ,
दूध दुहना, दही जमाना, घी भी मैं बनाती हूँ।।... 2 मैं... (2)

घर की सफाई, रोगी की सेवा, अतिथि सत्कार मैं करती हूँ,
बाग-बगीचा खेती का काम, आटा भी पीसा करती हूँ...2

वस्त्र धोना, घर पोतना, बर्तन मांजना सदा काम है,
पानी लाना, सब्जी लाना, घर संभालना काम है।...2 मैं... (3)

मध्यान्ह बेला में मन्दिर जाकर, साधु से पढ़ना कर्त्तव्य है,
प्रवचन सुनना, समाधान करना, धर्म को जानना कर्त्तव्य है...2

सन्ध्या से पूर्व खाना बनाकर, खिलाना-पिलाना काम है,
बर्तन मांजकर घर सम्हारकर, मन्दिर जाना काम है।।....2 मैं... (4)

आरती, वन्दना, प्रार्थना, प्रवचन, प्रश्नमंच में भाग लेती हूँ,
आर्यिका आदि की वैयावृत्तकर, घर जा शयन करती हूँ...2

दिन-रात में सोलह घंटे भी, मैं हाड़तोड़ काम करती हूँ,
माता, प्रबन्धक, दासी तक, समस्त काम सदा मैं करती हूँ।।...2 मैं...(5)

तो भी मुझे वेतन में, एक भी पैसा नहीं मिलता है।
चतुर्थ श्रेणी के नौकर सम, मुझे न सन्मान मिलता है...2

भारत में तो वह ही महती जो, फर्जी भी डिग्री धारी होती,
फैशन करती, व्यसन करती, नौकरी पार्टी में जाती है।।...2 मैं... (6)

गोगल्स पहनती, लिपिस्टिक लगाती, हिंगिलिस भाषा बोलती है,
हाइहिल सेण्डेल पहनकर, फर्राटे में गाड़ी चलाती है...2

भले घर में खाना न बनाती, होटल में खाना खाती है,
धाई के द्धारा बच्चों को पालती, बोतल का दूध पिलाती है।।...2 मैं...(7)

सास-ससुर की आज्ञा न पालती, पति से स्वकाम कराती है,

क्लब पार्टी से देर रात आती, सिनेमा व घूमने जाती है...2
तीर्थंकर साधू-साध्वी के बदले, नट-नटी को आदर्श मानती है,
उन्हीं का गाना, पहनना उनका, उनका स्टाइल जो करती है।।...2 मैं...(8)

ब्राह्मी, सुन्दरी, गार्गी, सीता, आउट ऑफ डेट हो गई,
अश्लील, हुल्लड़, नृत्यगानवाली, हीरोइन अप टू डेट हो गई...2
इसलिये तो आज इंडिया देश में, पढ़े-लिखे अधिक भ्रष्ट हुये,
माता, मातृभूमि, मातृभाषा रहित, भारतीय संस्कृति से दूर हुये।।...2 मैं...(9)

जीजाबाई, तीर्थंकर माता, भक्तमीरा क्या कामकाजी थी,
तो भी क्या वे महती न हुई, मेरी अभी क्या कसर हुई...2
अभी हे! भारत नौकरवृत्ति छोड़ो, आत्मगौरव को स्मरण करो,
''कनकनन्दी' के माध्यम से अभी, मेरे महत्व को पहिचानो।।...2 मैं...(10)

पावन व पतिता नारी

(तर्ज- हे अम्बे जिनवाणी... 2. बंगला राग ...)

जननी जननी हे जननी, जय हो मानव की जननी। जय... (टेक)

तीर्थेश गणेश की तुम जननी, ऋषि मुनि की श्रेष्ठ जननी
सम्राट चक्री की तुम जननी, मनु आर्य की महति जननी।। (1) जननी...

ब्राह्मी सुन्दरी सीता चन्दना, गार्गी लीलावती तुम प्रसिद्धा,
जीजाबाई व मदरटेरेसा, लक्ष्मीबाई व मीरा माता।। (2) जननी...

जग प्रसिद्धा अनेक माता, कला ममता वात्सल्य दाता,
कोमल करुणा सेवा शुचिता, तुमारे गुण अनेक माता ।।(3) जननी...

गृहणी तुम हो गृहस्वामी की, माता तुम हो सब सन्तान की,
भगिनी तुम हो सब भाई की, पुत्री तुम हो मात-पिता की।। (4) जननी...

गृह प्रबन्धिनी पाक कलाज्ञी, संस्कार दात्री सेवा की धात्री,
पर्व उपवास वहनकर्त्री, त्रिवर्ग सहयोगिनी पात्री।। (5) जननी...

साधु संत की आहारदात्री, श्राविका ब्रह्मचारिणी पात्री
क्षुल्लिका आर्यिका गणनी पात्री, विदुषी लेखिका ज्ञानदात्री।। (6) जननी...

गर्भपात व फैशन व्यसन, अश्लीलता व कामुक भाव,
ईर्ष्या झगड़ालु निंदक भाव, बातूनी स्पर्द्धा कुनारी भाव।। (7) जननी...

आधुनिकता का मद तुम त्यागो, शील सुगन्धता तुम फैलाओ,
संस्कार पाओ संस्कार दो, शरीर मोह तुम न पालो।। (8) जननी...

कुभाव त्यागो सुभाव धारो, सम्यक्त्व युक्त व्रत भी पालो,
परम्परा से मोक्ष भी वरो, आध्यात्म सुख तुम भी पा लो।।(9) जननी...

अपने आत्मा की हत्या किया न करो

तर्ज :- (अच्छा सिला दिया...)

अपने आत्मा की हत्या किया न करो,
रागद्धेष मोह से जिया न करो।

रागद्धेष मोह से आत्म हत्या होती हैं,
अन्य की हत्या हो या न भी होती हो।

तंदुलमत्स्य धीवर चोर डाकू कषायी,
दूसरों की हत्या बिना होते निर्दयी।।(टेंक)

आत्मपरिणाम हिंसन से हिंसा है,
कषाय युक्त होने से परिणाम खोटा है।

खोटा छोटा परिणाम निश्चय से हिंसा है,
जिसके परिणाम से कर्म बन्धे खोटा है।

इसी कर्म से नरक-निगोद में वास है,
अनेक कष्ट सहन करे प्रतिश्वास है। (1) अपने...

हिंसा परिणाम से तनाव होता है,
तनाव से विभिन्न रोग भी होते हैं।
रोगों से तन मन धन हानि होती है,
धन हानि मान हानि अपमृत्यु होती है।
भाव हिंसा ही यथार्थ आत्महत्या होती है,
केवल देह हत्या तो द्रव्यहिंसा होती है। (2) अपने...

भाव हिंसा सहित द्रव्य हिंसा पाप कार्य है,
भावहिंसा सर्वथा त्याग अनिवार्य है।
आनुषंगिक रूप से जो द्रव्यहिंसा होती है,
वो आरंभी, उद्योगी, विरोधी हिंसा होती है।
भावहिंसा से संकल्पी हिंसा ही होती है,
द्रव्यहिंसा बिना महाहिंसा ही होती है। (3) अपने ...

गृहस्थाश्रमी संकल्पी हिंसा त्यागी होता है,
संकल्पी हिंसा त्याग से अल्प हिंसा होती है।
यति व्रती तो सम्पूर्ण हिंसा त्यागी होते हैं,
आरंभी उद्योगी विरोधी हिंसा से रिक्त हैं।
यत्नाचार पूर्वक जो हिंसा होती है,
पापबंध रहित सो द्रव्यहिंसा होती है। (4)

दोहा :- 'कनकनन्दी' की भावना, बने अहिंसक विश्व।
धर्मनीति कानून का, यही सत्य सर्वस्व।।

(भारतीय पर्वों का इतिहास)

भारतीय पर्वों के उद्देश्य-शिक्षा

तर्ज :- (आओ बच्चों तुम्हें दिखाएँ...)

आओ बच्चों तुम्हें बतायें/(सुनायें), भारत के महान पर्वों को।
जिससे तुम्हें ज्ञान मिलेगा, पर्वों के महान् लक्ष्य को।।
वन्दे महोत्सवम्-वन्दे आदर्शम्

पर्वों के विभिन्न कारण होते, पद्धति व शिक्षा ग्रहण।
उसे जानकर उसे मानकर, करो है सच्चा कल्याण।
विकृत करके उठाओ न हानि, तन मन धन जन की।
सभ्यता संस्कृति सत्य तथ्य की, कभी न करो विकृति।
मूल नाश से वृद्धि न होती, वृक्ष लता और गुल्म की।।
जिससे... वन्दे महोत्सवम् (1)

''**पर्युषण**'' है महान् पर्व, आत्मा के परिमार्जन का।
मार्जन करो दश धर्मों द्वारा, आत्मा के कल्मष भावों को।
व्रत उपवास ध्यान अध्ययन, पूजा-पाठ धर्म श्रवण।
उदार सहिष्णु क्षमादि द्वारा, करो है आत्म-मार्जन।
केवल दिखावा व रूढ़ि द्वारा, न करो इसे पालन।।
जिससे... वन्दे महोत्सवम् (2)

''**दीपावली**'' है प्रकाश पर्व, आत्मिक-ज्योति जलाने का।
मोह अज्ञान अन्धकार नशे, जैसे वीर गौतम का।
दीप जलाओ प्रतीक रूप में, ज्ञान-ज्योति प्रगटाने को।
निर्वाण लाडू प्रतीक मानो, पूर्णता अनन्त सुख का।
मोक्षलक्ष्मी व ज्ञान को पूजो, उसकी उपलब्धि के हेतु।।
जिससे... वन्दे महोत्सवम् (3)

फटाके फोड़ना जूआ खेलना, फैशन व्यसन करना।
दिवालियापना यह है, पर्व और धर्म का।
''**रक्षाबन्धन**'' है साधुओं की रक्षा, सेवा व्यवस्था के द्वारा।
हर जीव की रक्षा करना, यह संदेश है प्यारा।
विश्व-मैत्री व विश्व-शान्ति की, शिक्षा मिलती प्यारी।।
जिससे... वन्दे महोत्सवम् (4)

केवल भाई-बहिनों द्वारा, मनाना केवल रूढ़ि है।
खाना-पीना मौज करना, यह भी केवल रूढ़ि है।
''**स्वतन्त्रता का उत्सव**'' मनाना यह राष्ट्रीय पर्व है।
जीओ और जीने दो का पवित्र कर्त्तव्य पर्व है।
स्वावलम्बन व कर्त्तव्य निष्ठा राष्ट्र विकास का पर्व है।
जिससे... वन्दे महोत्सवम् (5)

केवल भाषणबाजी करना, झण्डारोहण का पर्व नहीं।
पी.टी. करना, डाँस करना, रूढ़ि पीटना पर्व नहीं।
''**गणतन्त्र दिवस**'' उत्सव मनाना, प्रजा ही प्रमुख राजा।
अधिकार सह कर्त्तव्य पालन, इसकी प्रमुख शिक्षा।
स्वच्छन्द बनना शोषण करना, यह तो विपरीत शिक्षा।।
जिससे... वन्दे महोत्सवम् (6)

ऐसा ही ''**होली**'', ''**जन्मदिन**'' मनाना, ''**जन्माष्टमी**'' या ''**दशहरा**''।
सबमें हो पवित्र भाव नहीं किसी में क्षुद्र भाव।
तन मन आत्मा पावन बनाना, व्यक्ति समाज व राष्ट्र को।
किसी प्रकार भी क्षति न पहुँचे, पर्यावरण व राष्ट्र को।
इसीलिए बच्चों ''कनकनन्दी'' की यह रचना तुम्हारे हेतु।
जिससे... वन्दे महोत्सवम् (7)

मोही-अज्ञानी जीव करता है विपरीत प्रवृत्तियाँ स्व स्वभाव मानकर

(सत्य-तथ्य से विपरीत भाव एवं व्यवहार करता है मोही अज्ञानी जीव)

सुनो सुनो हे! दुनियाँ वालों... मोही जीव की अधर्म-गाथा।
सत्य-तथ्य को बिना जानकर... करता अधर्म मानता सच्चा/(अच्छा)।।...(टेक)

सत्ता सम्पत्ति प्रसिद्धि देह को... स्व-स्वरूप मान करता भोग।
क्रोध मान माया लोभ काम को... अपना मानकर करे प्रयोग।।

सत्ता के लिए करता पाप... अन्याय से लेकर युद्ध संहार।
सत्ता प्राप्ति से बढ़ाये मान... शोषण क्रूरता अत्याचार।।

तथाहि सम्पत्ति हेतु भी जान... सत्ता भी सम्पत्ति प्राप्ति कारण।
दोनों अन्योन्याश्रित भी जान... जड़ को माने अपना प्राण।।

सत्ता सम्पत्ति प्रसिद्धि हेतु... तीनों भी अन्योन्याश्रित हेतु।
प्रसिद्धि भी जड़ात्मक जान... इनाम लिखित या वचन।।

देह तो रज वीर्य निर्मित... धातु उपधातु उसके तत्त्व।
हड्डी मांस चर्म जड़ स्वरूप... तथापि माने है अपना रूप।।

इसी हेतु राग मोह करता... शरीर निमित्त पाप भी करता।
जन्म जरा अन्त देह का होता... इसे भी मोही अपना मानता।।

क्रोध मान माया लोभ काम को... मोही तो अपना रूप मानता।
मेरा क्रोध मैं हूँ मानी... माया लोभ व काम मानता।।

धर्म है निज शुद्ध स्वभाव... क्रोध मान माया लोभ रहित।
तो भी मोही क्रोधादि करे... धर्म काम के भी निमित्त।।

मानादि निमित्त क्रोधादि करे... लोभादि से करे मान रे।

विकार के लिए विकार करके... सोचे मैं किया मेरा धर्म रे।।

इसी से भिन्न जो आत्म साधक... सोचता करता काम है/(रे)।
उसे तो निरा गंवार माने... स्वयं को माने महान् है/(रे)।।

मद्यपायी यथा सोचता करता... मोही उसी से अधिक है/(रे)।
मोह मद के नशा के कारण... न जाने सत्य-असत्य है/(रे)।।

धर्म करे या कर्म करे सब... होता अधर्ममय रे।
पाषाण से जो कुछ बने है... होता पाषाणमय रे।।

मोह राग-द्वेष रहित होकर... जो कुछ करता काम रे।
वह सब कुछ धर्म होता है... स्वर्ण अलंकार यथा स्वर्ण रे।।

आगम अनुभव व्यवहार से... 'कनकनन्दी' जो कुछ पाया रे।
स्व-पर हित हेतु सञ्चय किया... मधुप सञ्चय करे यथा मधु रे।।

केवल भौतिक विकास बनता है विनाश का कारण

(नैतिकता-आध्यात्मिकता बिना भौतिकता दुःखदायी)

भौतिक विकास जो नैतिक बिना है,
अन्त में विनाश होता निश्चय है।
नैतिक विकास से सहित विकास है,
अन्त में सुखप्रद होता निश्चय है।।

आत्मिक विकास से सहित विकास है,
अन्त में मोक्षप्रद होता निश्चय है।
आत्मिक विकास से समग्र विकास है,
नैतिक भौतिक छाया के समान है।।

समग्र वृक्ष में फूल भी फल हैं,
विकास होता जब सींचते मूल है।

मूल को काटने से यथा फल मिलता,
भौतिक विकास भी नीति बिन होता।।
बीज के बिना यथा वृक्ष नहीं बनता,
आत्मिक सुख बिन सब ही व्यर्थ होता।
इसी के हेतु राज्य त्यागे हैं तीर्थंकर,
बुद्ध व ऋषि मुनि आचार्य गणधर।।

जो भोगे राज्य भोग मृत्यु के अनन्तर,
नरक निगोद में सहते दुःख घोर।
बहुआरम्भ परिग्रह नरक हेतु कहा,
लोभ को पाप का बाप भी अतः कहा।।
भौतिक विकास से लंका का नाश हुआ,
माया सभ्यता व ओंकारबाट/(कम्बोडिया) हुआ।
ग्रीस सभ्यता व कंस का नाश हुआ,
विनाश कौरव हिटलर भी हुआ।।

जितने राजा महाराजा या तानाशाही,
आक्रान्ता लुटेरा भ्रष्टाचारी वा कोई।
मन्त्री मुख्यमन्त्री प्रधानमन्त्री कोई,
सब की दुर्दशा नीतिहीन से हुई।।
भौतिक विकास तो मोटापा सम होता,
डायबिटीज के सम नाना विनाश लाता।
डायबिटीज यथा अनेक रोग लाता,
भौतिक विकास भी बहु विनाश लाता।।

अनीति अत्याचार शोषण भ्रष्टाचार,
फैशन-व्यसन व आलस्य अहंकार।
प्रकृति हनन व विभिन्न प्रदूषण,
जिससे होते हैं विनाश भयंकर।।

ग्लोबल वार्मिंग अधिक-हीन वृष्टि,
बाढ़-अकाल सुनामी जिसका फल।
ग्लेशियर गलन, प्रजाति विलोपन,
विभिन्न रोगों का होता है आक्रमण।।

धनी व गरीब व शोषक-शोषित,
जिससे बनता है कृत्रिम अकाल।
जिससे उत्पन्न होता है संघर्ष,
युद्ध महायुद्ध तथा महाप्रलय।।

धर्म में जो लिखा विश्व में जो हुआ,
विज्ञान भी उसे सच मान रहा।
अनुभव द्वारा मैंने जो पाया,
उसे ही मैंने लेखन किया।।

मानव यदि तू विकास चाहो है,
अध्यात्म नैतिक सहित चलो है।
'कनकनन्दी' का आह्वान सुनो है!
भौतिक तृष्णा को शमन/(संयम) करो है।।

समस्या-रोग के कारण अन्ध-आधुनिकता निवारक है सरल जीवन आध्यात्मिकता।

आधुनिक युग भौतिक, वैज्ञानिक, बौद्धिक, संचार क्रान्ति, अन्तरिक्षयात्रा, ग्लोबलाइजेशन का होने के कारण आज मानव (अनेक मनुष्य) पहले से अधिक सुख-साधन सम्पन्न हैं परन्तु सुख-शान्ति से रहित है, साक्षर हैं, परन्तु राक्षस स्वरूप है। दूर-अतिदूर से जानकारी प्राप्त करता है परन्तु स्व-स्वजन-सज्जन-आस-पडौस से दूर -अतिदूर है, अन्तरिक्ष यात्रा कर रहा है किन्तु अन्तःकरण से अनभिज्ञ है, ग्लोबलाइजेशन के कारण पृथ्वी एक संयुक्त परिवार हो गयी है परन्तु परिवार खण्ड-विखण्डित हो रहा है। इन सब

कारणों से मानव शारीरिक-मानसिक-आध्यात्मिक दृष्टि से अनेक समस्या व रोगों से आक्रान्त है, संत्रस्त है। इसके निवारण के लिए मैंने (आचार्य कनकनन्दी) 1. धर्म एवं स्वास्थ्य विज्ञान 2. आदर्श विचार-विहार-आहार 3. शारीरिक-मानसिक-आध्यात्मिक-स्वास्थ्य के विविध आयाम 4. तत्त्वचिन्तन-सर्वधर्म समता से विश्वशान्ति आदि कृति की रचना की है। इस लघु शोध लेख में अन्ध-आधुनिकता के कारण अस्त-व्यस्त-संत्रस्त-अस्वस्थ-आपा-धापी-दौड़-धूप जीवन जीने के कारण समय का अभाव। रोना रोने वालों के लिए कुछ मार्गदर्शन कर रहा हूँ परन्तु यह वाचन-पाचन-अनुकरण करने वालों के लिए ही मार्गदर्शक बनेगा, अन्यथा नहीं।

अन्ध-आधुनिकता की समस्यायें एवं रोग

वैसे तो हर युग में कुछ न कुछ समस्यायें होती हैं परन्तु इस लेख में उनका सन्दर्भ नहीं है। आधुनिक भौतिक युग की भौतिक-अनावश्यकता के अनुसार भौतिक आविष्कार हो रहा है और इस आविष्कार के कारण भौतिक आवश्यकता बढ़ती जा रही है। इस आवश्यकता-आविष्कार के चक्रवृद्धि ब्याज दर के चक्कर में अनेक भँवर उत्पन्न होते जा रहे हैं जिस में फंसकर मानव दिग्-भ्रमित, पीड़ित, विक्षुब्ध है। इसके विभिन्न रूप हैं- भावप्रदूषण, वायुप्रदूषण, जलप्रदूषण, मृदाप्रदूषण, ग्लोबल वार्मिंग, अतिवृष्टि-अनावृष्टि, भूकम्प, सुनामी, बाढ़, अकाल तथा विभिन्न शारीरिक-मानसिक-आध्यात्मिक रोग-फैशन-व्यसन, दुर्घटना, मृत्यु, आत्महत्या, भ्रष्टाचार, आतंकवाद, युद्ध-विद्रोह, हत्या आदि।

समाधान-उपाय

समस्या है तो समाधान है और समाधान उस समस्या से ही आविष्कृत होता है। उन सब समस्याओं के सर्वश्रेष्ठ, सर्वज्येष्ठ, शाश्वतिक समाधान के उपाय हैं- असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय-मृत्योर्मा अमृतं गमय। ओम् शान्तिः शान्तिः शान्ति!! इसके अन्तर्गत या इसके अतिरिक्त अथवा कुछ आधुनिक उपायों का भी दिग्दर्शन निम्नोक्त है।

व्यापक समाधान-उपाय

माता के दुग्धपान के समान प्रकृति का दुग्धपान करना चाहिए, न कि रक्तशोषण। विश्वरूपी शरीर के अंग-उपांग स्वरूप प्रत्येक जीव-प्रजाति, जल, वायु, मृदा, वनस्पति आदि की सुरक्षा, समृद्धि, स्वस्थता से मनुष्य से लेकर जीव जगत् एवं प्रकृति की सुरक्षा, समृद्धि, स्वस्थता संभव है। शरीर के किसी भी अवयव के विकलता, अस्वस्थता, हानि से जिस प्रकार शरीर प्रभावित होता है, उसी प्रकार प्रकृति-ब्रह्माण्ड के बारे में जानना चाहिए। जैन धर्मानुसार मानव जब भोगभूमि में प्रकृति की गोद में प्राकृतिक संसाधन का समुचित प्रयोग करके सरल-सहज जीवन जीता था तब वह सुख-शान्तिमय नीरोग जीवन दीर्घकाल तक जीकर अन्त में सुख से मरता था। इसी प्रकार विज्ञान के अनुसार भी प्राचीन मानव आधुनिक-अन्ध-जीवन शैली वाले मानव से अधिक स्वस्थ जीवन जीते थे। भारतीय आध्यात्मिक संस्कृति के अनुसार जो सम्पूर्ण राग, द्वेष, मोह, ईर्ष्या, घृणा, आकर्षण-विकर्षण आदि से रहित होता है, वह सच्चिदानन्द, सत्यं-शिवं-मंगलम् होता है। इससे सिद्ध होता है कि जो जितना-जितना सहज-सरल, पवित्र, शान्त साम्य होता जायेगा वह उतना ही उतना स्वस्थ, सुखी होता जायेगा।

व्यक्तिगत समाधान-उपाय

जीव को जो कुछ सुख, दुःख, रोग आदि होते हैं उसके मूल कारण स्व-कर्म हैं तो बाह्य कारण असम्यक् विचार, आहार, व्यवहार, वातावरण आदि है। अतः जीव को सुखी होने के लिए सम्यक् विचार आदि करना चाहिए।

जदं चरे जदं चिट्ठे जदमासे जदं सये।
जदं भुंजेज्ज भासेज्ज एवं पावं ण बज्झइ ।।1015

यत्नपूर्वक गमन करें, यत्नपूर्वक खड़े हों, यत्नूपर्वक बैठें, यत्नपूर्वक सोवें, यत्नपूर्वक आहार करें और यत्नपूर्वक बोलें, इस तरह करने से पाप का बंध नहीं होगा।

जदं तु चरमाणस्स दयापेहुस्स भिक्खुणो।
णवं ण बज्झदे कम्मं पोराणं च विधूयदि ।।1016

यत्नपूर्वक चलते हुए, दया से जीवों को देखने वाले साधु के नूतन कर्म नहीं बँधते हैं और पुराने कर्म झड़ जाते हैं। साधारणतः जीव भोजन के कारण, असम्यक् प्रवृत्ति के कारण, अयत्नपूर्वक उठने, बैठने, बोलने के कारण पाप कर्म को बाँधता है परन्तु वही कार्य यदि सावधानीपूर्वक विवेकसहित जीवों की रक्षा करते हुए करता है तो पाप बंध कम होता है। नारायण कृष्ण ने भी गीता में कहा है-

युक्ताहारविहारस्य युक्ताचेष्टस्य कर्मसु।
युक्तस्वावबोधस्य योगो भवति दुःखहा।।

जो मनुष्य आहार-विहार में, दूसरे कार्यों में, सोने जागने में परिमित रहता है, उसका योग दुःख भंजन हो जाता है।

नात्यश्नतस्तु योगेऽस्ति न चैकान्तमनश्यतः।
न चाति स्वप्नशीलस्य जाग्रता नैव चार्जुन।।

हे अर्जुन! यह समत्वरूप योग न तो ठूंसकर खाने वाले को, न उपवासी को, वैसे ही वह बहुत सोने वाले या बहुत जागने वाले को भी प्राप्त नहीं होता।

नित्यं हिताहार विहार समीक्ष्यकारी विष्येष्वसक्तः।
दाता समः सत्य परः क्षमावानाप्तोपसेवी च भवत्यरोगः।।

जो सतत हितकर आहार, योग्य विहार करता है, विवेकपूर्वक परिणाम से विचार करके प्रत्येक कार्य करता है, पंचेन्द्रियजनित विषय में आसक्त नहीं होता है, यथा योग्य को यथायोग्य दान देता है, लाभ-अलाभ, शत्रु-मित्र में समता भाव धारण करता है, सत्यग्राही, क्षमावान्, देव-शास्त्र-गुरु, गुणीजन-वृद्धजनों की सेवा करता है, वह निरोग होता है।

कामशोकभयाद्वायुः क्रोधात्पित्तं त्रयो मलाः।
भूताभिषङ्गात् कुप्यान्ति भूतसामान्यलक्षणाः।। 30(च.चि.अ.3)

काम, शोक तथा भय से वायु का प्रकोप होता है, क्रोध से पित्त का प्रकोप होता है, भूताभिषंग से तीनों दोष प्रकुपित हो जाते हैं तथा तत्तद्भूत के लक्षण भी प्रकट होते हैं।

शान्तितुल्यतपो नास्ति न सन्तोषात्परमं सुखम्।
न तृष्णया परो व्याधिर्न च धर्मो दया परः ।। (13)

शान्ति के समान कोई तप नहीं है, तृष्णा से बड़ी कोई व्याधि नहीं है और दया से बड़ा कोई धर्म नहीं है।

क्रोधो वैवस्वतो राजा तृष्णा वैतरणी नदी।
विद्या कामदुधा धेनुः संतोषं नन्दनंवनम्।। 14

क्रोध यमराज है, तृष्णा वैतरणी नदी है, विद्या कामधेनु है और संतोष नन्दनवन है।

परोपकरणं येषां जागर्ति हृदये सताम्।
नष्यन्ति विपदस्तेषां सम्पदः स्युः पदे पदे।। 15

जिन लोगों के हृदय में परोपकार की भावना विद्यमान रहती है, उनकी सब विपत्तियाँ दूर हो जाती हैं और पद-पद में सम्पत्तियाँ मिलती रहती हैं।

सन्तोषामृतृप्तानां यत्सुखं शान्तिरेव च।
न च तद्धनलुब्धानामितश्चेतश्च धावताम्।। 3

संतोषरूप अमृततृप्त मनुष्यों को जो सुख और शान्ति प्राप्त होती है, वह धन के लोभ से इधर-उधर मारे-मारे फिरने वालों को कैसे प्राप्त होगी?

मनः शमं न गृह्णाति, न पीती सुखमश्नुते।
न निद्रा न धृतिं याति, द्वेष शल्ये हृदि स्थिते।। त्याज्य (द्वेष भाव) अवदान

जब द्वेषरूपी बाण हृदय में चुभ रहा है, तब तन मन अशान्त रहता है, पारस्परिक प्रेम के सुख का अनुभव नहीं होता और न मानव सो सकता है और न ही धैर्य धारण कर सकता है। अतः द्वेष भावना को हृदय में नहीं रखना चाहिए।

व्यक्ति स्वयं को आधुनिक प्रगतिशील, साक्षर, सम्पन्न दिखाने के लिए जो कुछ फैशन-व्यसन (कृत्रिम सौन्दर्य प्रसाधन सामग्रियों का प्रयोग आदि, तम्बाकू, शराब सेवन), प्रतिस्पर्द्धापूर्ण तेज रफ्तार वाला जीवन ढो रहा है उससे जो रोग होता है उसे लाइफ स्टाइल डिजीज या डिजीज ऑफ सिविलाइजेशन कहते हैं। इसके अनेक रूप हैं। यथा-तनाव कैंसर, डाइबिटीज,

हृदय रोग, सीरोसीस, ब्लड प्रेशर, दर्द, अल्सर, मोटापा, माइग्रेन, अनिद्रा, अस्वाभाविक थकावट, मानसिक असन्तुलन, मानसिक अस्थिरता आदि। यह सब रोग साइको-सोमेटि हैं अर्थात् रोग की जड़ में होती है किन्तु प्रभाव शरीर पर पड़ता है। इसका कारण है असंतुलित मानसिकता जीवन शैली से ऊर्जास्तर नीचे चला जाता है जिससे रोग प्रतिरोधकशक्ति क्षीण हो जाती है। इसके साथ-साथ विभिन्न ग्रन्थिओं से विषाक्त स्राव निकलता है जो उपर्युक्त रोगों के लिए सहायक बनता है। तनाव और स्ट्रेस में मांसपेशियाँ हमेशा अकड़े रहती हैं जिससे अत्यधिक मात्रा में लेक्टिक एसिड पैदा होता है, जो मांसपेशियों में दर्द और ब्लड सर्कुलेशन में मिलने पर थकान पैदा करता है। कांशियस माइंड से मानसिक तनाव का सम्बन्ध होने से इसके ऊपर प्रत्यक्ष नियंत्रण नहीं होता है जिससे व्यक्ति क्रोध करता है और अपराध तथा दुर्घटना कर लेता है।

एक सर्वेक्षण के अनुसार लोग पृथ्वी पर उपलब्ध संसाधनों की बडी मात्रा की खपत के बिना लंबा व खुशहाल जीवन जी सकते हैं। 178 राष्ट्र वाले हैप्पी प्लेनेट इंडेक्स ने पृथ्वी पर साउथ पैसिफिक आइलैंड ऑफ वनौअतु को सबसे प्रसन्न राष्ट्र घोषित किया है जबकि इंग्लैण्ड को 108वां स्थान मिला। यह सूची उत्पादन स्तर जीवन की महत्त्वाकांक्षा और प्रसन्नता पर आधारित है, बजाय राष्ट्रीय आर्थिक पूंजी-पैमानों के, जैसे जीडीपी घरेलू उत्पाद। लेटिन अमरीकी देशों ने सूची के पहले दस स्थानों पर अपना वर्चस्व बनाया जबकि अफ्रिकी और पूर्वी यूरोपीय देशों ने निचले दस स्थानों पर अपना नाम दर्ज किया। विश्व के सबसे बड़े आर्थिक संपन्न देशों में से जर्मनी ने 81वां, जापान ने 95वां, जबकि अमरीका ने 150वां स्थान प्राप्त किया। लंदन स्कूल ऑफ इकोनोमिक्स के सेंटर फॉर इकोनोमिक्स पराफारमेन्स के वेलबीइंग कार्यक्रम के निदेशक रिचर्ड लायर्ड बताते हैं कि पिछले 50 वर्षों में पश्चिम में जीवन स्तर में आश्चर्यजनक रूप से वृद्धि हुई है लेकिन हमें प्रसन्नता नहीं प्राप्त हुई, यह दर्शाता है कि हमें आर्थिक विकास के लिए मानवीय रिश्तों का बलिदान नहीं देना चाहिए जो कि प्रसन्नता का मुख्य स्रोत है।

सामान्य स्थिति में श्वेत रक्त कोशिकायें या इम्यून सेल बैक्टीरिया,

वायरस; प्रदूषण आदि बाहरी तत्त्व से लड़ते हैं। असामान्य या अत्यधिक तनाव में दिमाग इन श्वेत रक्त कोशिकाओं को नकारात्मक संदेश भेजता है जिसे वे कोशिकायें काम नहीं कर पाती हैं, इससे व्यक्ति रोगी हो जाता है। हाइपोथैलेमस के सकारात्मक क्रियाओं और संदेश के परिणाम स्वरूप व्यक्ति बीमार नहीं पड़ता है, यह पिट्यूटरी और ऐड्रीनल को व्यस्त करते हैं, कॉर्टिसोल उत्पन्न करते हैं जो श्वेत रक्त कोशिकाओं को अधिक से अधिक विकसित करता है, इससे रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ती है। जैन धर्म में वर्णित है कि तीर्थंकर के जन्मतः पूर्ण रक्त श्वेत होता है और वे जीवन भर पूर्ण स्वस्थ रहते हैं। वात्सल्य भाव आदि कारणों से संक्रामक रोगियों की सेवा करने वाले नाइटेंगिल, मदर टेरेसा, सुभाष चन्द्र बोस, महात्मा गाँधी, विनोबा भावे आदि निरोगी रहे।

कर्म सिद्धान्त, आयुर्वेद, प्राकृतिक चिकित्सा, मनोविज्ञान, आधुनिक विज्ञान, योगविज्ञान आदि के अनुसार स्वास्थ्य, सुख, शान्ति के लिए अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, क्षमा, मृदुता, सरल-सहज, पवित्रता, संतोष, धैर्य, संयम, सहिष्णुता-परोपकार, दान, सेवा, सादा सात्विक-पौष्टिक-शाकाहार-फलाहार-दुग्धाहार, भ्रमण, मित्रता, प्रार्थना, स्वच्छ-पवित्र-शान्त वातावरण, सज्जन-साधुसंगति, महापुरुषों की सेवा, बच्चों के प्रति स्नेह, बड़ों के प्रति सम्मान, अप्रतिशोध की भावना, महान् लक्ष्य दृढ़ इच्छा शक्ति, उचित विश्राम एवं निद्रा, सत्यसाहित्यों का स्वाध्याय, विधेयात्मक विचार, रुचि का विषय, अच्छे कार्य करना, अद्रोह, मंत्र-जाप, पूजा-पाठ, उपवास, हित-मित-प्रिय वचन स्वस्थ आहार-विहार-विचार-व्यवहार आदि स्वस्थ, शान्तमय, उन्नत जीवन के मुख्य घटक हैं।

भाव प्रदूषण से उत्पन्न विभिन्न रोग

ईर्ष्या-क्रोध से पित्त की वृद्धि, इन्द्रिय-शक्ति में कमी, पथरी, जलन, लीवर खराबी, अल्सर, विवेक की कमी, लड़ाई-झगड़ा, गाली, मार-पीट से हत्या तक संभव है।

अभिमान-दंभ से वात्-पित्त, कफ की वृद्धि होती है जिससे अनेक रोग होते हैं। इससे जीवन की सहजता-सरलता-मधुरता-नष्ट हो जाती है, सहयोग-

सम्मान नहीं मिलता है जिससे अहंग्रन्थी-हीनग्रन्थी पनपती है।

असत्य-छल-कपट से जीवन शक्ति नष्ट होती है, हृदय और मस्तिष्क के ज्ञान तंतुओं की हानि होती हैं, हृदय रोग, पागलपन, पथरी, लकवा रोग होते हैं, कोई उस पर विश्वास नहीं करते, लेन-देन-सहयोग-सहकार उससे कोई नहीं करते।

हिंसा से क्रोध, मान, माया, लोभ उत्पन्न होते हैं, हृदय कठोर हो जाता है, रक्त गरम हो जाता है, जिससे शरीर में वायु, पित्त, कफ के विकार उत्पन्न होते हैं जिससे अनेक रोग उत्पन्न होते हैं।

असंयम से समय, शक्ति, साधन, बुद्धि का दुरुपयोग होता है और विभिन्न समस्या, दुर्घटना, बीमारियों से लेकर मृत्यु तक होती हैं। यथा-**जिह्वा (मन) के असंयम** से मद्य, मांस, तम्बाकू के सेवन से कैंसर आदि रोग होते हैं, **अधिक भोजन** से अपच, पेट दर्द, मोटापा आदि होते हैं- जिससे डायबिटीज आदि रोग होते हैं, कठोर-असत्य वचन बोलने से मस्तिष्क के ज्ञान तन्तुओं को हानि पहुँचती है, जिससे जीभ कैंसर या लकवा रोग हो सकता है। कठोर-असत्य बोलने वालों पर कोई विश्वास नहीं करता है। इसी प्रकार घ्राण, चक्षु, कर्ण, स्पर्श, मन, धन, समय, साधन आदि के असंयम से भी विभिन्न हानियाँ, बीमारियाँ उत्पन्न होती हैं, दुर्घटना होती है तथा मृत्यु तक हो जाती है। यथा-स्पर्शन इन्द्रिय (कामुकता) के असंयम से परस्त्रीगमन, वेश्यागमन से जानलेवा-लाइलाज एड्सरोग हो जाता है, अधिक अयोग्य टी.वी. देखने से आँख खराब होती है, मोटापा बढ़ता है, समय बर्बाद होता है, अश्लीलता-फैशन-व्यसन-हिंसादि प्रवृत्ति बढ़ती है आदि। भारत में ही 50 लाख से अधिक एड्स रोगी हैं तथा हर वर्ष 10 लाख कन्या-भ्रूणों की हत्या होती है।

विभिन्न भौतिक प्रदूषण से उत्पन्न विभिन्न रोग

1. **वायु प्रदूषण-** से फेफडों के कैंसर, खाँसी, लकवा, हृदय रोग, छींक, थकान, दमा, श्वसनीय शोध, गले का दर्द, निमोनिया, त्वचा तथा आँखों में जलन, सिरदर्द, अनिद्रा, चिड़चिड़ापन इत्यादि होते हैं तथा मृत्यु तक संभव है।
2. **जल प्रदूषण-** से फ्लोरोसिस, हैजा, अमीबायसिस, संक्रामक पीलिया

अथवा हैपेटाइटिस, टाईफाइड विभिन्न प्रकार के चर्म रोग होते हैं तथा मृत्यु तक संभव है।

3. **मृदा प्रदूषण**– से डायरिया, टाइफाइड, टी.बी., मलेरिया, डेंगू, धूल एलर्जी, आँखों के रोग, पोलियो इत्यादि रोग होते हैं तथा मृत्यु भी संभव है।

4. **ध्वनि प्रदूषण**– से बहरापन, सिरदर्द, न्यूरोटिक, प्रेसबाइकुसिस, चिड़चिड़ापन, अनिद्रा, हृदयघात, उच्च रक्तचाप, मानसिक अस्थिरता, पागलपन, दुश्चिंता, उद्वेग, स्मरण शक्ति का हास, समय से पूर्व बुढ़ापा इत्यादि रोग होते हैं।

5. **रेडियो धर्मी प्रदूषण**– से विकलांगता/अपंगता, कैंसर, रक्त की कमी, बालों का झड़ना, गर्भाशय में शिशुओं की मृत्यु, असमय में बुढ़ापा, प्रजनन क्षमता का हास, विभिन्न त्वचारोग, हाथ-पैरों में जलन, थकान, दाँतों का गिरना, आँखों के लैंस को हानि इत्यादि रोग होते हैं।

विश्व में सर्वाधिक डायबिटीज से पीड़ित मरीज भारतीय हैं। 1995 तक इनकी संख्या 19.3 मिलियन थी जिसके 2025 तक 57.2 मिलियन तक होने की संभावना है। 2000 तक तनाव के रोगियों की संख्या 118.2 मिलियन थी, यह संख्या 2025 तक 213.5 मिलियन होने की संभावना है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन ने अनुमान लगाया है कि 2010 तक भारत में हृदय रोगियों की संख्या 100 मिलियन से ज्यादा होगी।

भारत में हर साल 30,000 व्यक्ति कैन्सर के कारण मर जाते हैं। प्रत्येक 12 में से 1 व्यक्ति को 64 वर्ष की उम्र तक कैन्सर के किसी न किसी प्रकार से ग्रसित होने की संभावना होती है। मैकिंग से आकलन के अनुसार पिछले दशक में हिन्दुस्तानियों ने संक्रमण और कुपोषण से होने वाली बीमारियों की तुलना में जीवनशैली के कारण होने वाले रोगों पर ज्यादा धन खर्च किया। स्तन कैंसर की तुलना में हृदय रोग और स्ट्रोक महिलाओं की मृत्यु के ज्यादा बड़े कारण हैं। मरने वाली प्रत्येक 2 महिलाओं में से 1 की मृत्यु हृदय घात के कारण होती है जबकि स्तन कैंसर में यह आंकडा प्रत्येक 28 में से 1 तक सीमित है। हृदय रोग स्त्रियों को मृत्यु देने के मामले में शीर्ष पर है। विश्व भर में 300 मिलियन लोग मोटापे से पीड़ित हैं। इस संख्या में लगातार इजाफा हो

रहा है दुनिया में हर साल 17 मिलियन लोग असाध्य रोगों के कारण अकाल मृत्यु के शिकार हो जाते हैं। इनमें से 80 प्रतिशत मौतें निम्न व मध्यम आय वर्ग के देशों में होती हैं। दक्षिण-पूर्व एशिया में 54 प्रतिशत मौतों का कारण ये असाध्य रोग ही हैं। इस क्षेत्र में अगले 10 सालों में 89 मिलियन मौतें इन्हीं असाध्य रोगों के कारण होंगी। इनमें से 60 मिलियन मौतें सिर्फ भारत में ही होंगी।

भारत को और देशों के मुकाबले हृदय रोगों के कारण ज्यादा नुकसान उठाना पड़ रहा है। हृदय रोगों के कारण भारत में वर्ष 2000 में 34-64 आयु वर्ग में 9.2 मिलियन मौतें हुई।

भारत में सिर्फ घरेलू प्रदूषण से प्रति वर्ष पांच लाख लोगों की मौत हो जाती हैं। इनमें बड़ी तादाद महिलाओं और बच्चों की होती है।

शहर दुश्मन है

हाल ही हुए एक अध्ययन के अनुसार शहरी महिलाएँ सबसे ज्यादा तनावग्रस्त रहती हैं। शहरी महिलाओं पर हुए एक सर्वे के अनुसार बड़े शहरों में करीब 77 प्रतिशत महिलाएँ अत्यधिक तनाव या सामान्य तनाव से ग्रसित रहती है। 28 प्रतिशत युवा महिलाएँ इस तनाव को कम करने के लिए शराब का सेवन करती हैं।

इस शोध में करीब 68 प्रतिशत महिलाओं ने कहा कि वे आराम के लिए बहुत कम समय निकाल पाती हैं। युवा महिलाओं का मानना हैं कि उन्हें इतना तनाव कभी नहीं रहा। 45 प्रतिशत महिलाओं ने कहा, तनाव को कम करने के लिए उन्होंने जिम जाना शुरु किया। 29 प्रतिशत महिलाओं ने कहा कि वे ऊर्जाहीन महसूस करती हैं वहीं 20 प्रतिशत महिलाएँ खुद को हमेशा बीमार पाती हैं। पांच में से सिर्फ एक महिला का कहना था कि तनाव से उसके परिवार और रिश्तों पर फर्क पड़ता है। युवतियों में पाचन शक्ति का कमजोर होना भी पाया गया। 35 प्रतिशत महिलाएँ रोजमर्रा की दिनचर्या को तनाव का मुख्य कारण बताती हैं। वहीं 48 प्रतिशत हर रोज के ट्रैफिक जाम में फँसने को इसका कारण मानती हैं।

अब्रह्मचर्य की प्रतिक्रिया है- प्रदूषण से लेकर महाप्रलय

(भविष्य की पृथ्वी एवं भारत का पूर्वानुमान)

भारतीय आध्यात्मिक महावैज्ञानिकों द्वारा ज्ञात, प्रचार-प्रसारित एवं स्थापित सत्य-तथ्य कालजयी, सार्वभौम, सत्यं-शिवं-सुन्दरम्, विश्वकल्याणकारी, नित्यनूतन-नित्य प्राचीन, आध्यात्मिक-वैज्ञानिक है- यह सोचते सोचते उनके ज्ञान-वैभव, सर्वजीव हितकारी वचन व्यवहार के प्रति मेरे तन-मन-वचन स्वतः विनम्रता से आकर्षित हो जाते हैं। जिस प्रकार कि ब्लेक होल से ग्रह-नक्षत्र-प्रकाश तक आकर्षित हो जाते हैं। इसके साथ-साथ आधुनिक ऋषि तुल्य (ऋषयः मंत्र द्रष्टारः) सनम्र सत्य शोधक वैज्ञानिकों के सत्योपासना, सतत पुरुषार्थरूपी तपस्या, विश्वकल्याणकारी ज्ञानरूपी महायज्ञ, वैज्ञानिक ज्ञानोपकरण तथा शोध बुद्धिरूपी ज्योति से जो प्राचीन भारतीय ज्ञान-विज्ञान पुनः जाग्रत, ऊर्जस्वित, क्रियाशील एवं प्रकाशित हो रहा है- इससे हमें प्रेरणा, प्रोत्साहन, मार्गदर्शन, सम्बल, उद्धरण आदि प्राप्त हो रहे हैं कि जब विदेशी वैज्ञानिक स्वपुरुषार्थ से भारतीय ज्ञान-विज्ञान के समीप शनैःशनैः आ रहे हैं तब हमें हमारे महान् पूर्वजों के ज्ञान-विज्ञान की धरोहर का परिज्ञान करके स्व-पर-विश्वकल्याण के लिए अनिवार्य रूप से पुरुषार्थ करना है। संदर्भानुसार अब्रह्मचर्य जो धार्मिक दृष्टि से विशेषतः आत्मकेन्द्रित है, उसे व्यापक दृष्टि से अर्थात् हिंसा, जनसंख्या वृद्धि, अस्वास्थ्य, सामाजिक अव्यवस्था, पर्यावरणीय समस्या आदि की दृष्टि से संक्षिप्त से निम्न प्रकाश डाल रहा हूँ। विशेष जिज्ञासु मेरी (आ. कनकनन्दी) त्रैलोक्य पूज्य ब्रह्मचर्य, अहिंसा के विश्वरूप आदि कृति में अध्ययन करें।

1. **अब्रह्म से भाव द्रव्य एवं हिंसा-** कामुक प्रवृत्ति से भाव में राग-द्वेष, आकर्षण-विकर्षण, चंचलता, तनाव, संक्लेश, आवेग, चिन्ता, डर, उत्तेजना, मोह, अविवेक आदि भाव होते हैं जो कि भाव-हिंसा स्वरूप है। इन सब भावों या इनमें से कुछ भावों की अधिकता के कारण पर हत्या के साथ-साथ आत्महत्या भी होती है।

मेहुण सण्णारूढो मारई णवलक्ख सुहूम जीवांई।
इय जिणवरेहिं, भणियं वज्झंतर णिग्गंथ रूवेहि।। भाव संग्रह, जैन ग्रन्थ

मैथुन संज्ञा से (काम चेतना से) उत्तेजित होकर जब मनुष्य भोग करता है, तब वह नौ लाख (900000) जीवों को मारता है, ऐसा अन्तरंग बहिरंग बन्धनों से रहित जिनेन्द्र देव ने कहा है। (कोई-कोई बताते हैं 9 लाख कोटि जीव मरते हैं) (900000,0000000 जीव)। मेडिकल शोध से सिद्ध हुआ है कि 25 बिन्दु वीर्य में 60 मिलियन (6 करोड़) से 110 मिलियन तक सूक्ष्म जीव रहते हैं। माता का रज एसिड (अम्ल) गुण युक्त होता है। पिता का वीर्य एल्केलाइन (क्षार) गुण युक्त होता है। संभोग में रज एवं वीर्य के संयोग होने पर एसिड एवं एल्केलाइन का रासायनिक मिश्रण होने के कारण जो रासायनिक प्रतिक्रिया होती है, उससे उन जीवों का संहार हो जाता है।

2. **अब्रह्मचर्य से स्वास्थ्य हानि-** अब्रह्मचर्य से निमित्त उत्पन्न राग-द्वेषादि के कारण अनेक शारीरिक मानसिक रोग के साथ-साथ अति मैथुन, वैश्यागमन आदि से ओजक्षय,/एड्सरोग, सुजाक, गर्मी रोग आदि होते हैं। एड्स रोग का उपचार बचाव है, इसकी औषधि का तो आविष्कार अभी तक नहीं हो पाया है।

3. **अब्रह्मचर्य से स्वास्थ्य हानि-** अब्रह्मचर्य से अर्थात् यौन-उत्श्रृंखलता के कारण अनैतिक, अमर्यादित व्यवहार होता है जिससे अनेक व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक आदि अव्यवस्था, समस्यायें उत्पन्न होती है। यथा-बलात्कार, यौन शोषण, अश्लीलता, उत्श्रृंखलता, फैशन, व्यसन, परस्त्रीगमन, वैश्यागमन, नाबालिक सम्बन्ध, अमेल सम्बन्ध, अनैतिक सम्बन्ध आदि। इससे गर्भपात से लेकर कलह, हत्या, मुकदमा आदि समस्यायें भी उत्पन्न होती हैं।

4. **अब्रह्मचर्य से जनसंख्या वृद्धि-** अब्रह्मचर्य से केवल भारत में ही 1 मिनट में 30 बच्चे, 1 घण्टे मे 1800, 1 दिन में 43200, 1 महीने में 1296000, 1 वर्ष में 16037000 बच्चे जन्म लेते हैं। अभी (6-6-07 रात 8:30 बजे भारत की जनसंख्या 1105267080 है), इस क्रम से जनसंख्या वृद्धि होने

पर 2050 तक भारत की जनसंख्या 1.62 अरब होगी और चीन की 1.46 अरब, यू एस की 39.76 करोड़ और पृथ्वी की 9.30 अरब होगी। अभी पृथ्वी की आबादी प्रायः 6.7 अरब है। इन जनसंख्या के कारण निम्नोक्त समस्यायें होती है और होगी।

*जनसंख्या के कारण पृथ्वी की समस्यायें-(अभी)

1. 25 करोड़ 30 लाख युवक अर्थात् 1/6 गरीब हैं।
2. सड़कों पर जीवन बिताने वाले बच्चों की संख्या प्रायः 12 से 25 करोड़।
3. विकासशील देशों में 15 से 24 वर्षों की आयु के 7 करोड 89 लाख युवक और 13 करोड़ 65 लाख युवतियाँ शिक्षा से पूर्ण वंचित है।
4. आधी जनसंख्या गन्दगी और कार्बन डाई ऑक्साइड उत्सर्जन से पीड़ित हैं।
5. सही इलाज के अभाव से प्रति वर्ष 5 लाख स्त्रियाँ प्रसूति के समय मरती हैं।
6. 9.4% कर्जदार बढ़े हैं और हजारों कर्जदार किसानों ने फसल के असफल होने के कारण आत्महत्या की है।
7. प्रायः डेढ़ अरब टेलीफोन है जबकि आधी आबादी को फोन करना नहीं आता है।

*2050 की पृथ्वी की समस्यायें

1. 82 अरब 50 करोड़ नए घरों की आवश्यकता होगी किन्तु इतनी जमीन नहीं बच पायेगी।
2. 1 अरब 17 कराड़ वाहनों की आवश्यकता होगी परन्तु उन्हें चलाने के लिए इतनी सड़क कहाँ से आयेगी?
3. प्रतिवर्ष 23 अरब 76 करोड़ लीटर पानी लगेगा परन्तु जनसंख्या एवं ग्लोबल वार्मिंग के कारण इस आवश्यकता की पूर्ति नहीं होगी।
4. 5028 अरब टन खाद्यान्न की आवश्यकता होगी किन्तु उस समय की परिस्थिति में यह संभव नहीं है।
5. 2 करोड़ 60 लाख लोग अलजाइमर रोग से ग्रसित होंगे। प्रत्येक 17 में से एक व्यक्ति की मृत्यु मस्तिष्क सम्बन्धी रोग से होगी।

6. 1.64 अरब मीटर कपड़े की आवश्यकता होगी किन्तु घटते कपास उत्पादन आदि से समस्या उत्पन्न होगी।
7. आर्थिक असमानताओं और गरीबी में वृद्धि आदि से प्रति वर्ष 33.71 करोड़ अपराध होंगे।
8. वर्तमान में जो 5 करोड़ 70 लाख एड्स रोगी है उनकी संख्या 50 करोड़ को पार कर जायेगी।

*2050 तक भारत की समस्यायें-

1. 24 करोड़ जनता को भूखे पेट सोना पडेगा क्योंकि तब 3.50 करोड टन प्रति वर्ष खाद्यान्न की आवश्यकता होगी जो कि उस समय असंभव होगा।
2. बेरोजगारी बड़ी समस्या होगी।
3. पानी, मकान, कपड़ा, यातायात आदि की भी बड़ी समस्या होगी।
4. नदियाँ प्रदूषित होगी, जंगल कटते जायेंगे, वर्षा की समस्या होगी। (यूनएन सहस्राब्दी रिपोर्ट)

भारत का भू भाग पृथ्वी के भू-भाग का 2.4% है तथापि वैश्विक जैव विविधता में भारत की भागीदारी 8% है। भारत में वनस्पतियों की 37 हजार से ज्यादा प्रजातियाँ, जन्तुओं की 89 हजार से अधिक प्रजातियों की पहचान की जा चुकी है। कृषि वनस्पतियाँ में 167 फसल प्रजाति 350 वन प्रजातियाँ, चावल (धान) की 30-50 हजार, ज्वार-बाजरे की 5 हजार, काली मिर्च की 5 सौ से ज्यादा प्रजातियाँ हैं। यहाँ के राष्ट्रीय वन उद्यान और वन अभयारण्य का क्षेत्रफल 112274 वर्ग किलोमीटर है। देश की 60-70% आबादी की जीविका कृषि है और सबका भरण-पोषण का आधार यही सब है। आबादी, रोड, फैक्ट्री आदि के कारण अब तक भारत में 40% से ज्यादा वन क्षेत्र नष्ट हो चुका है। आनुवांशिक छेड़-छाड़, हायब्रिड किस्मों का प्रयोग, कीटनाशक और रासायनिक उर्वरकों से जमीन उत्तरोत्तर बंजर होती जा रही है, प्राकृतिक जैव विविधता नष्ट हो रही है एवं अनाज-फल-सब्जी आदि की गुणवत्ता,

मधुरता, पौष्टिकता आदि कम होती जा रही है। आनुवांशिक विविधता से जीवों की वंश परम्परा सुरक्षित रहती है और इस कमी से वंश परम्परा की सुरक्षा में कमी आ जाती है।

पृथ्वी महाप्रलय की ओर वैज्ञानिकों, पर्यावरणविदों, जीवविज्ञानियों तथा धार्मिक ग्रन्थों के अनुसार पृथ्वी धीरे-धीरे महाप्रलय की ओर जा रहा है जिसके संकेत हैं, पूरी पृथ्वी में मौसम में उथल, पुथल, सुनामी, तूफान, सूखा, हिमपात आदि। विज्ञानानुसार अभी तक पृथ्वी पर 5 बार प्रलय आ चुके हैं। आगामी 6वें महाप्रलय के लिए वैज्ञानिक बढ़ती जनसंख्या और मनुष्यों के कार्यकलापों को दोषी मानते हैं। वृक्षों की कटाई, वातावरण में जहरीली गैसें छोड़ना, जल प्रदूषण, हिंसा, पर्यावरण शोषण आदि इस प्रकार महाप्रलयों को न्योता दे रहे हैं।

विज्ञानानुसार एक जीव प्रजाति के विनाश के कारण उसके आनुषांगिक और भी 32 जीव प्रजातियाँ नष्ट हो जाती हैं। वर्षावन की आधी जीव प्रजातियाँ नष्ट हो गयी हैं जो कि डायनासोर की विलुप्ति से भी खतरनाक है और मनुष्य कृत 6वें प्रलय का प्रारम्भ है। (1) बाढ़ (2) अकाल (अतिवृष्टि, अनावृष्टि) (3) भूकम्प (4) ज्वालामुखी विस्फोट (5) वनदाह (वनाग्निदाह) (6) बवण्डर (7) वज्रपात मुख्यतः 6वें महाप्रलय के लिए मुख्य कारण बनेंगे। प्रो. हॉकिंग के अनुसार परमाणु युद्ध, ग्लोबल वार्मिंग और जैव इंजीनियरिंग की तकनीक से तैयार वायरस के फैलने जैसी आपदाओं से जीवन के हमेशा के लिए समूल नष्ट होने का खतरा लगातार बढ़ता जा रहा है। इस के अलावा ऐसी विभीषिकाएँ भी आ सकती हैं, जिसकी हम कल्पना तक नहीं कर सकते हैं।

निवारण उपाय

1) ब्रह्मचर्य महाव्रत या अणुव्रत पालन करके जनसंख्या का नियंत्रण करना। फैशन-व्यसन-कामुकता तथा उसके कारणभूत सिनेमा, टी.वी. आदि कार्यक्रमों पर नियंत्रण।
2) अपरिग्रह महाव्रत या अणुव्रत के माध्यम से तृष्णा, लालसा को नियंत्रण करके प्राकृतिक शोषण, विनाश को कम करना। माता के दुग्धपान

और उसके स्नेह, सुरक्षा, संवर्द्धन के समान प्रकृति के साथ व्यवहार करना चाहिए न कि एक डाकू के समान।

3) ''**सादा जीवन उच्च विचार**'' ''**जीओ और जीने दो**'' प्राकृतिक-जीवन, अहिंसा से प्रकृति-जीव-जन्तुओं के संरक्षण, संवर्द्धन, अहिंसक प्राकृतिक कृषि, कुटीर उद्योग से प्रदूषणकारी हिंसक उद्योग-फैक्ट्री से मुक्त होना, स्वावलम्बन-शारीरिक श्रम से प्रदूषण तथा हिंसाकारक यान-वाहन से मुक्त होना।

4) ''**जीव जीवस्य भक्षणम्**'' के परिवर्तन में ''**जीव जीवस्य रक्षणम्**'' ''**परस्परोपग्रहो जीवानाम्**'' को अपनाना अनिवार्य है। भारतीय आध्यात्मिक संस्कृति तथा पाश्चात्य पर्यावरण सुरक्षा के उपाय संक्षिप्ततः उपर्युक्त समस्याओं के समाधान उपाय है।

महापुरुषों से मानव जाति महान् अन्यथा दानव

तर्ज :- (जय हनुमान ज्ञान...)

जय जय महापुरुष हो महान्, तुम्हीं ही हो सर्व गुणों की खान।
उदारता है पहचान तुम्हारी, नम्रता जगत में शान तुम्हारी।।

सत्यनिष्ठा है प्राण तुम्हारा, गुणग्राहकता मान तुम्हारा।
अपना पराया नहीं तुम्हारा, वसुधैव है कुटुम्ब तुम्हारा।।

मन वच काय से सरल तुम्हीं हो, कूट-कपट से रहित तुम्हीं हो।
क्षमा में तुम्हीं तो धरती समान, मृदुता में नवनीत समान।।

शुचिता में पंकज सम तुम हो, दुर्जन के मध्य में निर्लिप्त तुम हो।
संयम रूपी कवच के धारी, सर्व पापों से तुम अविकारी।।

तप त्याग में वृक्ष समान, कष्ट सहन और फल प्रदान।
आकिंचन्य में नभ समान, निर्लिप्त भाव से सबसे महान्।।

तुम से जन्में ज्ञान-विज्ञान, भाषा संस्कृति संस्कार महान्।
कला व साहित्य संगीत शिक्षा, तुमने पढ़ायी जीवों की रक्षा।।

सब ज्ञानों में महाविज्ञान, तुमसे जन्मा आध्यात्म ज्ञान।
तुम ही जग के सच्चे हितकर, तुम बिना ये जग है तमकर।।

बाहर में तुम मानव शरीरा, अन्तर में तुम दिव्य शरीरा।
तव मार्ग में जो मानव चले, सो ही सच्चा नर भूतले।।
अन्यथा सब है मानव दानव, शरीर मानव क्रिया में दानव।

अनावश्यकता से जीव पाप करे अधिक

(अनर्थदण्ड (अनुत्पादक कार्य) के दुष्परिणाम)

तर्ज :- (1. अच्छा सिला दिया तूने... 2. छोटी छोटी गैया...)

राग द्वेष मद मोह प्रमाद युत, जो भाव होता सो भाव अनर्थ।
आर्त्त रौद्र अशुभ परिणाम से युत, संकल्प विकल्प सो महाअनर्थ ।।टेक।।

अनावश्यक से जीव पाप करे सतत, मन वच काय कृत कारित अनुमत।
अनर्थदण्ड इसे कहे आगम, बहुविध पापकर्म कृत निमित्त ।। (1)

इस कारण से तन्दुल मत्स्य है पापी, महामत्स्य सम गया सप्तम नरक।
इस भाव से जो होते व्यर्थ काम, लाभ तो कुछ नहीं पाप महान् ।। (2)

पानी गिराना तथा भूमि खोदना, अग्नि जलाना या व्यर्थ बोलना।
आलस प्रमाद युत काल काटना, यद्वा तद्वा रूप से कार्य करना ।। (3)

दूसरों की निन्दा अपमान प्रवृत्ति, महत् अनर्थदण्ड पाप प्रवृत्ति।
वृथा साधन समय शक्ति धन व्यय, बुद्धि का दुरुपयोग तथा अपव्यय ।। (4)

इनसे होता है पापबन्ध प्रबल, आध्यात्मिक शक्ति भी होती दुर्बल।
विविध अनर्थ काम भी होते, बहुविध जीवों के घात भी होते ।। (5)

श्रीपाल को कुष्ठ रोग जो हुआ, पूर्व भव में मुनि को कोढ़ी कहा।
सात सौ मित्रों को हुआ जो कुष्ठ, अनुमोदना के फल से अनिष्ट ।। (6)

मुनिसंघ की निन्दा फल से, साठ हजार व्यक्ति अग्नि से जले।
निन्दा का जिसने परिहार किया था, वह कुटिया सह जिन्दा बचा था ।। (7)

आरम्भ उद्योग आत्मरक्षा निमित्ते, हिंसा होती वह अल्पमात्रा प्रमाण।
संकल्प हिंसा का कटुफल प्रचुर, कृषक व धीवर मध्ये अन्तर ।। (8)

शेर नारी और नर की गति /(स्थिति), पंचम षष्ट सप्तम नरक स्थिति।
अतएव खोटा भाव व्यवहार त्यज, 'कनकनन्दी' का है यह भाव ।। (9)

सब न होते महान् या दुर्जन

तर्ज :- (1. दुःख से घबराओ... (श्रीपाल चरित्र) 2. आत्मशक्ति से ओतप्रोत विद्या और ज्ञान से भर दो...)

सत्य शिव सुन्दर है सभी में, सबकी अपनी शान रे। सबकी...
अन्यथा सब हैं शव के समान, शव न शोभनहार रे।। शव... (टेक)

आलिशान महलों में रहने वाले, सब न होते महान् रे-2
पर्णकुटी में रहने वाले, सब न होते नादान रे-2 ।। (1) सत्य...

पुस्तक व ग्रंथ पढ़ने वाले, सब न होते सुज्ञानी रे-2
अंगूठा छाप लगाने वाले, सब न होते कुज्ञानी रे-2 ।। (2) सत्य...

महानगर में रहने वाले, सभी न होते सुसभ्य रे-2
ग्राम पल्ली में रहने वाले, सभी न होते असभ्य रे-2 ।। (3) सत्य...

धार्मिक-क्रिया करने वाले, सभी न होते सुधर्मी रे-2
बाह्य-क्रिया न करने वाले, सभी न होते अधर्मी रे-2 ।। (4) सत्य...

सत्ता-सम्पत्ति सहित वाले, सभी न होते सुखी रे-2
सत्ता-सम्पत्ति रहित वाले, सभी न होते दुःखी रे-2 ।। (5) सत्य...

शरीर से श्रम करने वाले, सभी न होते हीन रे-2
शरीर श्रम न करने वाले, होते क्या? सब श्रीमान् रे-2 ।। (6) सत्य...

दूसरों से सेवा कराने वाले, सभी न होते महान् रे-2

दूसरों की सेवा करने वाले, वे नहीं होते दास रे-2 ।। (7) सत्य...

प्रसिद्धि पूजा सहित वाले, सभी न होते सुगुणी रे-2
प्रसिद्धि पूजा रहित वाले, होते सभी न दुर्गुणी रे-2 ।। (8) सत्य...

परोपदेश करने वाले, सभी न होते पवित्र रे-2
उपदेश न करने वाले, सभी न होते पतित रे-2 ।। (9) सत्य...

सुन्दर देह सहित वाले, होते सभी क्या? सुमन रे-2
सुन्दर देह रहित वाले, होते सभी क्या? कुमन रे-2 ।। (10) सत्य...

दोहाः- ''कनकनन्दी'' ने अनुभव से, जो पाया सो कहा-2
विश्वकल्याण के निमित्त से, लिपि निबद्ध है किया-2 ।। (11)

दूर से सुन्दर लगे (दूर से ढोल सुहावने)

तर्ज :- (1. अच्छा सिला दिया तूने... 2. छोटी छोटी गैया...)

दूर से सुन्दर लगे जंगल समन्दर, दूर से ही मनोहर है महानगर
अनुभव होता है वहाँ जाने से, अनुभव होता है किम्पाक खाने से ऽऽ (टेक/स्थायी)
जादूविद्या दूर से भयावह लगती, प्रसिद्धि भी दूर से सुहानी लगती
युद्ध कथा सुनने में मनोहर लगती, आध्यात्मिक चर्चा नीरस ही लगती ... (1)

दूसरों की निन्दा अति मीठी लगती, स्व-सुधार कथा कटु नीम/(विष) लगती
बातें लड़ाने में शूरवीर होते हैं, स्व-कर्त्तव्य करने में हतभाग्य होते हैं ... (2)

बड़े बड़े लोग तो भेड़िया सम होते हैं, दूसरों के शोषण से बड़े जो होते हैं
छोटे छोटे लोग न खोटे ही होते हैं, छोटे छोटे बच्चें क्या दुष्ट ही होते हैं ?... (3)

जंगल तो दूर से सुन्दर लगते हैं, क्रूर पशु-पक्षी कीट पतंग भरे हैं
समन्दर में लवणाक्त पानी ही होता है, भूकम्प सुनामी हिंस्र प्राणी भरा है ... (4)

महानगरी की महामहिमा न्यारी है, जंगल समन्दर सम दूर से प्यारी है

भीड़ रहे लाखों की समाज से खाली है, भौतिक साधन युत शान्ति से खाली है ... (5)

हर प्रदूषण की जननी है नगरी, साक्षर तो होते हैं संस्कृति से खाली
शरीर श्रम विहीन तनाव से भरी, धन-जन से भरी संस्कार से कोरी ... (6)

क्रिकेट का नशा भारत मे भारी है, टी.वी. में क्रिकेट देखे जनता सारी है
धर्म कर्म पढ़ाई भी छोड़ती जनता, खाना पीना सोना छोड़ती है जनता ... (7)

इससे धन स्वास्थ्य पढ़ाई की हानि है, राग-द्वेष होने से धर्म की हानि है
गेंद के उछाल को देखती है जनता, गेंद ने गुलाम बनाया अरबों जनता ... (8)

मेला महोत्सव में भीड़ होती है अपार, दूर से देखने में लगती है मनोहर,
भीड़ में ही होते हैं अनेक अपराध, दुर्घटना रोग से मरे लोग अपार ... (9)

सत्ता-सम्पत्ति की मोह माया है भारी, मृगमरीचिका सम दूर से मनोहारी..
इसके पीछे भागने वाले दुखियारी, मिले या न मिले दोनो में दुःखभारी... (10)

कनकनन्दी ने जो पढ़ा सुना गुना है,
जनता के हित हेतु यहाँ लिखा है।

नशेड़ी को नशा तो सदा भाता है,
कमी वही जाने जो नशे से दूर है।। ... (11)

दुनियाँ की विचित्रता

तर्ज :- (दुनियाँ में रहना है तो काम करो प्यारे...)

दुनियाँ में रहते हुए साम्य रहो प्यारे,
शान्त रहो आगे बढ़ो काम करो प्यारे।
नहीं तो इस दुनियाँ में शान्ति न मिलेगी,
खाना पीना सोना में अशान्ति देगी।। टेक ।।

गिरगिट आक्टोपस के सम है दुनियाँ,

क्षण क्षण बदलने में सक्षम है दुनियाँ।
चित पट दोनों को माने ये दुनियाँ,
मरने जीने दोनों ही न देती ये दुनियाँ।। ... (1)

मच्छर सम गुन गुनाये (पैर पड़े) रोग भी देती है,
जिन्दा में कष्ट देती मरने पे रोती है।
विपत्ति में अपमान, सम्पत्ति में ईर्ष्या भी,
थन से दूध पीये जोंक सम दुनियाँ भी।। ... (2)

तीर्थेश बुद्ध ईसा को मारे भी पूजे भी,
अपनी ही सन्तान को गर्भ में मारे भी।
राम की पूजा करे रावण सम क्रिया भी,
'कनकनन्दी' निस्पृह रहे ऐसी दुनियाँ भी।। ... (3)

भ्रष्टाचार की महिमा

(व्यंगात्मक कविता रूपक अलंकार युक्त)

तर्ज :- (यदि भला किसी का ...)

धिक् हो भ्रष्टाचार भस्मासुर, तेरा आतंक अपरम्पार।
लोभ तेरा है राक्षस पिता, तृष्णा तेरी राक्षसी माता।।

बहिन तेरी सम्पत्ति आशा, पत्नी तेरी है सत्ता लालसा।
सन्तान तेरी शोषण वृत्ति, मायाचारी है दास व दासी।।

तेरा आतंक सर्वत्र व्याप्त, शिक्षा व्यापार कानूने व्याप्त।
राजनीति व उद्योग जगत्, सिनेमा संचार विभागे व्याप्त।।

नौकरशाह से चपरासी तक, तेरा आतंक से सब ग्रसित।
तुझे ही पूजे तुझे ही भजे, तेरे आतंक से संत्रस्त।।

इण्डिया तेरा प्रिय पूजा स्थल, पूजक भजक यहाँ प्रचुर।

तू रक्तबीज तू भस्मासुर, रावण सम बहुरूप धर।।

तेरी महिमा सब कोई गाये, तेरी माया से मोहित हुए।
तेरी कृपा की महिमा भारी, रंक से कुबेर भक्त हैं तेरे ।।

तेरी महिमा रूप दूसरा, भस्म भी होता भक्त सहित।
तू मीठा जहर सम राक्षस, सेवन मीठा अन्त सहित।।

पाप के विभिन्न रूप समझा करो

तर्ज :- (यमुना किनारे ...)

पाप के विभिन्न रूप समझा करो, एक को छोड़कर अन्य न करो।
एक को छोड़कर अन्य किया जब, पाप का बन्धन भी हुआ तब।।
एक छेद बन्द कर अन्य किया है, जहाज में पानी भी तब आया है।
कोई हिंसा छोड़कर क्रोध करे है, पाप का बन्धन हुआ करे है।।
कोई चोरी छोड़कर लोभ करे है, लोभ के कारण नरक वरे है।
कोई कुशील त्यागकर चुगली करे है, चुगली से भी पाप बन्ध करे है। पाप...
पंचपाप से कर्म बन्ध होता है, वह कर्म कषायों से बन्ध होता है।
बाह्य पंच पाप त्यागी जो होता है, कषायों से वही पापी होता है।।
आत्म हनन रूप से पाप फल सम है, उसके अनुरूप से कर्म बन्ध सम है।। पाप ...
कोई धर्म क्रियाकाण्ड रूढ़ि से करे, परिणाम शुद्धि बिना पाप भी करे।
परिणाम ऊपर ही पुण्य पाप निर्भर, परिणाम ऊपर ही बन्ध मोक्ष निर्भर।।
परिणाम शुद्धि हेतु क्रियाकाण्ड करो हे, तप, त्याग, ज्ञान, ध्यान, दान सेवा करो हे।।
बाह्य व्रत तप, ज्ञान, अग्नि पानी सम है, अंतरंग परिणाम तंदुलों के सम है।
भात रूप परिणाम इनसे होता है, चाँवल के बिना क्या भात होता है?
उपादान कारण तो अन्तरंग होता है, प्रमुख ही कार्य रूप परिणत होता है।।

बाह्य धर्म कर्म करे बहु जन रे, अन्तरंग शुद्धता में अधिकांश रे।
शुद्धता के बिना वे सुफल चाहे हैं, चाँवल के बिना वे भात चाहे हैं।।
''कनकनन्दी'' उन्हें दया से बताये, पवित्र भाव को हृदय में धारो रे।।

भ. महावीर यदि भारत में होते अभी समस्यायें होती भारी

(भारतीय अव्यवस्था एवं विकृति पर एक व्यंगात्मक रचना)

तर्ज :- (1. मन तड़पत हरिदर्शन ... 2. मेरा मन दर्पण ...)

होते महावीर यदि भारत में, अनेक समस्यायें होती उत्पन्न।
आत्मलक्ष्यहीन इण्डियन मेन, सन्मति को न देते सन्मान।। (टेक)

वर्द्धमान यदि वर्तमान होते, उन्हें माना जाता पिछड़ा जन।
फैशन व डिग्रीधारी बिना, माना जाता नहीं सुपरमैन।।
राजतंत्र अभी नहीं होने से, नहीं होते वे राजकुमार। (1) होते ...

सवर्ण होने से नहीं हो पाते, सरकार के एक वे नौकर।
रत्नवर्षा से वैभव होने से, अपहरण भी होता संभव।।
जंगली राज्य के हेतु से भी, पुनः प्राप्त भी नहीं संभव।। (2) होते ...

दीक्षादि समये कार्य आयोजने, बोली के लिये होती समस्या।
आय व्यय के हिसाब हेतु भी, समाज मे होती समस्या।।
मौनधर कर साधना रत से, लच्छेदार भाषण का अभाव।। (3) होते...

जिससे न होती प्रसिद्धि व्यवस्था, भीड़ के बिना कहाँ है संभव,
एकान्तवादी उन्हें मानते, द्रव्यलिंगी व ढोंगाचारी।
भौतिकवादी उन्हें बोलते, पलायनवादी मिथ्याचारी।। (4) होते ...

समस्या सहित जंगल रहित, यदि वे होते समाधिरत।

इसे आत्महत्या मानता कानून, ऑर्डर देता कि करो एरेस्ट।।
इसलिये हे महावीर आप ,चतुर्थ काल में हो गये मुक्त।। (5) होते ...

यथार्थ से आप सन्मति निकले, कनकनन्दी अतः तुम्हारा भक्त।
वर्तमान को वर्धमान नहीं, अभी चाहिये तेरा राज पाट।।
इसलिये तुम वैभव त्यागकर, निज आत्मा ले हो गये मुक्त।। (6) होते ...

बड़ी तृष्णाओं का अन्तिम फल असफलता

तर्ज :- (यमुना किनारे ...)

बड़ी-बड़ी तृष्णायें पाला न करो, विफलता का फल खाया न करो। /
(कटुक फल तुम खाया न करो)।।
तृष्णा तृषा कभी शान्त होती ही नहीं, भौतिकता सिन्धु को पीओ भी सही।
समुद्र का पानी जब पिया जाता है, तृषा की वृद्धि अति होती जाती है।। तृष्णा ...

तृष्णा रूपी गड्ढा का राज ही यही है, जितना भरो उतना होता है खाली।
जितना खाली करोगे भरेगा सही, सम्पूर्ण खाली से पूर्ण भरेगा सही।
इसी रहस्य को जाने आध्यात्मज्ञानी, इसी से परम सुखी आत्मिक ज्ञानी।। बड़ी...

तृष्णा अग्नि शान्त नहीं तृष्णा पूर्ति से, अग्नि न शान्त होती घृत पूर्ति से।
तृष्णा की अग्नि उसे जला देती है, ज्यों इसमें घृत डाला जाता है।।
मृग मरीचिका से प्यास बिना बुझाये, मृग की मृत्यु होती जो पीछे जाये।। बड़ी...

सीता की तृष्णा से मरा राजा रावण, राज्य की तृष्णा से मरे कौरव गण।
कृष्णवध की तृष्णा से मरा है कंस, प्रतिहिंसा से भी मरा जरासंध।
सिकन्दर मरा राज्य प्राप्ति तृष्णा से, हिटलर मरा विश्वयुद्ध तृष्णा से।। बड़ी...

जो तृष्णा का दास बना हुआ है नाश, जो तृष्णा को दास बना, बना संतोष।
संतोषी सदा सुखी होता है, तृष्णा का दास सदा दुःखी होता है।
तीर्थंकर बुद्ध साधु संन्यासी जन, तृष्णा त्याग से बने आनन्दघन।। बड़ी...

तृष्णा से अतृप्ति उत्पन्न सदा होती, असंतोष वृत्ति भी उससे होती।
इससे है दाहकता उत्पन्न होती, जिससे भौतिक प्यास उद्दीप्त होती।।
इसकी शान्ति हेतु होती अनीति, जिससे जीव की दुर्गति होती।। बड़ी...

आत्मिक तृप्ति से होती तृष्णा शान्ति, जिससे जीव को मिले आत्मिक शान्ति।
आत्मिक शान्ति से होती सर्व निवृत्ति, अन्याय-अत्याचार शोषण वृत्ति।
''कनकनन्दी'' चाहे आत्मिक शान्ति, प्रत्येक जीव को मिले आत्मिक शान्ति।। बड़ी...

मानव की विचित्र वधशालायें बन्द हों!

तर्ज :- (चाँदी की दीवार न तोड़ी ...)

मानव ने वधशाला बनाया, भाव व धार्मिक क्षेत्रों में।
उद्योग व्यापार संसद न्यायालये, विवाह महोत्सव खेल में।। (1)
भाव में कषाय प्रगट होने से, वह बन जाता है कषायी।
भाव-कषायी बनकर वह तो, बनता बहुविध कषायी।। (2)
भेद-भाव करे धर्म क्षेत्र में, अपना-पराया द्वेष भी।
आतंकवाद से पशुबलि तक, करता बहुविध पाप भी।। (3)
गृह में गृहयुद्ध करता बहुविध, भ्रूणहत्या आत्महत्या भी।
उद्योग जगत् प्रदूषण द्वारा, जल वायु मृदा हत्या भी।। (4)
शब्द प्रदूषण रेडिएशन द्वारा, बहुविधि मारे जीव भी।
बूचड़खाना में निर्दोष पशु की, हत्या करोड़ों संख्या की।। (5)
श्रमिक के शोषण द्वारा भी, हत्यारा उद्योगपति भी।
व्यापार क्षेत्रे मिलावट शोषण, जमाखोरी दगाबाज भी।। (6)
नकली वस्तु विक्रय द्वारा, कर चोरी, वस्तु चोरी भी।
संसद द्वारा विधि बनाकर, प्रजा की करते हत्या भी।। (7)
शोषण प्रताड़न भेद-भाव द्वारा, युद्ध कलह विखण्डन भी।

न्यायालय तो अन्यायालय है, अन्धा कानून द्वारा भी।। (8)
अर्थ लोभ से करे भेदभाव, हत्या करे न्याय लोक की।
बाल व अयोग्य विवाह द्वारा, धन धर्म की हत्या भी।। (9)
पर्व महोत्सवे आडम्बर द्वारा, धन जन समय की हत्या रे।
आतिशबाजी फैशन व्यसने, पर्यावरण की हत्या रे।। (10)
प्रतिस्पर्द्धात्मक खेल के द्वारा, विविध करे अपव्यय रे।
धन जन श्रम समय बर्बादी, सर्व व्यसनों के अड्डे रे।। (11)
सट्टा शेयर हिंसा ईर्ष्या, प्रतिद्वन्द्व खेल के नाम रे।
सम्भ्रान्त वर्ग के मनोरंजन में, ग्लेडिएटर मरे लाखों रे।। (12)
पशु के साथ क्रूरता बहुविध, सर्कस, सिनेमा खेल में।
सिनेमा में हत्या होती संस्कृति, बहुविध पापाचार रे।। (13)
दानव प्रवृत्ति को मानव त्यागो, त्याग रे हिंसा की प्रवृत्ति।
'कनकनन्दी' की भावना यह है, मानव की बने शुद्ध वृत्ति।। (14)

परम्पराओं की संस्कृति तथा विकृति

रागः- (चौपाई...)

गंगोत्री से गंगा पैदा हुई प्रवाहित हुई समुद्रे मिली।
विस्तारित हुई गन्दगी मिली लवण समुद्रे विलय/(खारा) (भी) हुई।।
तथाहि परम्परा में होती विस्तारित विकृत भी होती।
जनसिन्धु में विलय होती मूलस्रोत से दूर भी होती।।
सत्य-तथ्य व शिक्षा रहित रूढ़ि परम्परा निभाते लोग।
सत्य-तथ्य का ज्ञान होने से यथार्थ से लाभान्वित भी होंगे।।

I. **पर्व सम्बन्धी :**

(1) दीपावली की परम्परा एवं विकृति :

यथा दीपावली मनाते लोग भौतिक लक्ष्मी को पूजते लोग।
फटाके फोड़ते शराब पीते जूआ भी खेलते मजा करते।।
क्रय-विक्रय भी खूब करते शोषण व मिलावट करते।
सज-धजकर घूमने जाते क्लब पार्टी में धूम मचाते।।
परम्परा है यह सब चलती पवित्र भाव से सम्बन्ध नास्ति।

(2) दीपावली की संस्कृति एवं शिक्षाः

दीपावली है ज्योति का पर्व आत्मिक ज्योति का जागृत पर्व।
महावीर का मोक्ष का पर्व गौतम स्वामी का ज्ञान का पर्व।।
'**वन्दे तद्‌गुण लब्धये**' हेतु दीपावली का प्रमुख हेतु।
दीपक ज्ञान का होता प्रतीक निर्वाण लाडू मोक्ष प्रतीक।।
मोक्ष लक्ष्मी का करो पूजन जिनवाणी का करो अर्चन।

(3) हर पर्वों की सामान्य संस्कृति एवं शिक्षाः

ऐसा ही हर पर्वों में होता शिक्षा सहित नियम होता।
पर्व के उद्देश्य महान् होते सत्य-तथ्य इतिहास होते।।
प्रेम संगठन आदर्श होते स्वार्थ त्याग तप त्याग होते।
पर्यावरण स्वास्थ्य रक्षण होते ऋतु अनुसार भोजन होते।।
शैक्षणिक संगीत नृत्य होते सांस्कृतिक नैतिक कार्य होते।
उत्साहवर्द्धक कार्य होते दयादान सेवा कार्य होते।।
पर्वों में अधिक विकृति आई संस्कृति शिक्षा दूर सी हुई।
फैशन-व्यसन आडम्बर आये पर्यावरण व स्वास्थ्य बिगाड़े।।

II. **सौन्दर्य प्रसाधन सम्बन्धी :**

प्राकृतिक प्रसाधन हल्दी तेल स्वास्थ्य रक्षा हेतु हुआ प्रचार।
कृत्रिम साधन प्रयोग करते पाप सहित रोग अभी भोगते।।

III. भोजन सम्बन्धी संस्कृति एवं विकृति :

पहले घर में भोजन बनता शुचिता से चौका में बनता।
ताजा प्रासुक अनाज आटा दूध घी फल मसाला होता।।
दाल सब्जी में हल्दी धनिया लौंग जावत्री तेजपान जीरा।
गाय का घी प्रयोग होता सुगन्ध-स्वाद स्वास्थ्यप्रद होता।।
अभी तो खाते रेडीमेड फूड रसायन युक्त बासी फूड।
घर में बनाते यदि भोजन डालडा मिर्ची मिला हुआ भोजन।।
बाजार से लाते पिसा मसाला अशुद्ध बासी रसायन वाला।
दूध घी तेल सब्जी या फल कृत्रिम रसायन होते रोगकर।।

IV. विवाह की संस्कृति एवं विकृति :

धर्म अर्थ काम पुरुषार्थ युक्त ब्रह्मचर्य अणुव्रत सहित।
विवाह से चलता गृहस्थाश्रम अन्य आश्रमों के लिए कारण।।
शक्ति अनुसार होता आयोजन धर्म अनुसार होता प्रयोजन।
सामाजिक मान्यता प्राप्ति हेतु प्रीतिभोज का होता नियोजन।।
पत्नी होती धर्म सहयोगी गृहलक्ष्मी व संस्कारदात्री।
विवाह में अभी होता प्रदर्शन धर्म आदर्श का नहीं प्रयोजन।।
भोग भौतिकता होती प्रधानता नेह सहयोग का नहीं है वास्ता।
इसलिए कलह विसंवाद होता परिवार में तनाव भी रहता।।
तलाक दहेज हत्या होती आत्महत्या भी अधिक होती।
बच्चे भी होते संस्कारहीन परित्यक्त व दीन-हीन।।
परस्त्री व वैश्यागमन विवाह बिना सम्बन्ध स्थापन। (लिव इन रिलेशनशिप)
बलात्कार कौमार्य खण्डन अंग प्रदर्शन अश्लील गान/(नृत्य)।।

V. मृत्यु संस्कार एवं विकृति :

शव संस्कार का होता प्रयोजन सम्मानपूर्वक विसर्जन।
प्रदूषण व रोग न फैले इसी हेतु शव संस्कार नियोजन।।
इसी हेतु सहयोगी अनेक बनते उपदेश युक्त सान्त्वना देते।

अतिथि सत्कार करने हेतु शक्ति अनुसार भोजन देते।।
किन्तु परम्परा यह चल पड़ी अन्धश्रद्धा भी साथ में जुड़ी।
मिथ्या आडम्बर अनेक करते व्यर्थ खर्च से गरीब भी होते।।

VI. महोत्सव-समारोह की संस्कृति एवं विकृति :

मानव एक सामाजिक प्राणी समाज से भी बनता ज्ञानी।
इसीलिए समारोह उत्सव होते उत्साह सहित शिक्षा लेते।।
स्वास्थ्य मनोरंजन कार्य होते प्रेम संगठन पाठ पढ़ाते।
राष्ट्रहित हेतु विचार करते विश्वशान्ति हेतु प्रयास करते।।
आत्महित के उपदेश होते धार्मिक गीत-नृत्य होते।
अनुशासन से भाग लेते समता शान्ति का पाठ पढ़ते।।
विकृतियाँ इसी में आई अनेक भीड़ प्रदर्शन दूषण अनेक।
अनुशासनहीन काम भी होते जिससे अकाल मरण होते।।
चोरी बलात्कार गुण्डागर्दी प्रदूषणों से भी होते रोगी।
संस्कार सदाचार विकृत होता धन व समय का अपव्यय होता।।

VII. शिक्षा की संस्कृति एवं विकृति :

''सा विद्या या विमुक्तये'' होती आत्मिक शक्ति को जागृत करती।
विनय सदाचार की जननी होती ज्ञान विज्ञान सर्वोदय दात्री।।
अभी भी शिक्षा विकृत हो गई रटन्त विद्या डिग्री हो गई।
विनय सदाचार रहित हो गई फैशन व्यसनों की जननी हो गई।।
लौकिक पढ़ाई शिक्षा हो गई आध्यात्मिकता गायब हो गई।
नैतिकता बिन नौकरी हो गई स्टेटस सिम्बल की जननी हो गई।।

VIII. धर्म की संस्कृति एवं विकृति :

धर्म है वस्तु स्वभाव होता समस्त सुखों का कारण होता।
सत्य अहिंसा व सदाचरण समता शान्ति व आर्जव गुण।।
उदार भाव व सहिष्णु गुण क्षमा सरलता मृदुता गुण।

तप त्याग व पावन गुण शौच संयम आत्मरमण।।
धर्म में बहुत विकृति आ गई रूढ़िवादिता सर्वत्र छा गई।
संकीर्ण पंथ मत छा गये धर्म से/(में) भेद-भाव बढ़ गये।।
धन जन मान भाव बढ़ गये नैतिक-आत्मिक गुण घट गये।
इसलिए धर्म का भाव घट गया धार्मिकजनों का ज्ञान घट गया।।
विकृतियों को त्याग करके संस्कृतियों को पाले लोग।
'कनकनन्दी' की भावना यह मानव करे सर्वोदय।।

विज्ञान से भी महान् धर्म की उपयोगिता क्यों कम हो रही है?!

(रागः- हूँ स्वतन्त्र निश्चल निष्काम...)

विज्ञान से है भौतिक ज्ञान... धर्म से भौतिक आत्मिक ज्ञान।
विज्ञान से है भौतिक सुख... धर्म से भौतिक आत्मिक सुख।
विज्ञान से ऐहिक सुख... धर्म से ऐहिक परलोक सुख।
विज्ञान से है सीमित ज्ञान... धर्म से अनन्त अक्षय ज्ञान।
विज्ञान से है मूर्तिक ज्ञान... धर्म से मूर्तिक अमूर्तिक ज्ञान।
विज्ञान है मानवकृत भौतिकरूप... धर्म है प्राकृतिक वस्तु स्वरूप।
विज्ञान होता है सादि 'व' सान्त... धर्म होता है अनादि अनन्त।
विज्ञान से होता भौतिक विकास... धर्म से होता सर्व विकास।
विज्ञान ग्राह्य तो बन रहा है... धर्म का प्रभाव घट रहा है।
इसी में कारण अनेक होते... अन्तरंग तथा बाह्य भी होते।
भाव उद्देश्य कर्म संस्कार... अन्तरंग कारण होते प्रवर।
बाह्य में साधन सुख सुविधा... उपयोगिता व प्रयोगधर्मिता।
भौतिकवादी मानव अधिक हो गया... उसके लिए विज्ञान साधन बन गया।

विज्ञान की उपयोगिता बढ़ गई... प्रयोगधर्मिता विज्ञान की बढ़ गई।
धर्म में आड़म्बर दिखावा बढ़ गया... पवित्र भाव तो गायब हो गया।
अध्यात्म तो धर्म में न रहा... धन जन मान का प्रभाव बढ़ गया।
भेद-भाव कलह प्रवेश कर गया... कट्टर संकीर्ण स्वार्थ आ गया।
धर्म की उपयोगिता खतम हो गई... प्रयोगधर्मिता गायब हो गई।
श्रद्धायुक्त तर्क न रहा अभी... आपाधापी का जीवन हो गया अभी।
समीक्षा-समन्वय धर्म में नहीं रहा... मनोरञ्जन का साधन बन गया।
भौतिक क्रिया-काण्ड धर्म हो गया... आत्म परिमार्जन गौण हो गया।
उपदेश का व्यापार चल रहा... धन जन मान का क्रय भी हो रहा।
धर्म में राजनीति-व्यापार पैठ गया... निष्पृह साधक का मूल्य भी घट गया।
भौतिक सुख का साधन बन गया... आत्मिक सुख का लक्ष्य भी न रहा।
धर्म का प्रभाव इसी से घट रहा... धर्मी के बिना प्रभाव कहाँ रहा?
दीपक जले बिना प्रकाश नहीं देता... धर्मी के बिना धर्म का भी तथा होता।
धर्म तो धारण करने योग्य होता... ढोंग व पाखण्ड से धर्म का नहीं नाता।
धर्म की धारणा में 'कनक' सदा रत... विश्व में धर्म फैले इसी के लिए रत।

रोग एवं हिंसाकारक है- टूथपेस्ट प्रयोग

(वैज्ञानिक शोध एवं धार्मिक दृष्टि से)

रागः- (यमुना किनारे...)

टूथपेस्ट का प्रयोग किया न करो, ... भैया किया न करो
पैसा देकर रोगों को क्रय न करो।

फैशन-व्यसन से प्रयोग किया न करो, ... बहिनों किया न करो
निकोटिन, फ्लोराइड खाया न करो।

यूजीनॉल टार भी इसमें मिले होते हैं,
जिससे विभिन्न रोग तुम पाते हो।। (टेक)

नौ सिगरेट सम (तुम) पाते निकोटिन,
टूथपेस्ट एक के प्रयोग से ज्ञान।
इन सब विषों से होते विभिन्न रोग,
कैंसर, दन्तक्षय व हृदयाघात।
पेट रोग, भूख कम, धमनी रोग,
स्टेट्स सिम्बल आदि मन के रोग।।... (1)

कुछ में होते भी हड्डी चर्बी मिश्रण,
पशु-पक्षी-हिंसा (हत्या) के पाप मिश्रण।
इससे भी पापबन्ध, रोग होते हैं,
पशु की हड्डी-चर्बी तुम खाते हो।
मुख शुद्धि नहीं होता मसाण घाट,
चलते-फिरते कब्रगाह तुम हो धीवर/केवट... (2)

भारतीय अहिंसक उपाय करो रे,
धन-धर्म-स्वास्थ्य की रक्षा भी करो रे।
भ्रमात्मक विज्ञापन बेड़ी को काटो रे,
अकल बिना नकल वृत्ति को छोड़ो रे।।
दयाद्र हृदय से 'कनकनन्दी' ये कहे,
धर्मज्ञान विज्ञान, शोध से कहे।।... (3)

विज्ञान के असत्य-मत तथा उससे हानियाँ

रागः- (यमुना किनारे...)

नित्य विज्ञान में होता अनुसन्धान, नये-नये मतों का होता निर्माण/(वर्णन)।
पुराने मतों का कुछ होता शोधन, कुछ नेष्ट-श्रेष्ठ कुछ होता जनम।। (1)

अज्ञ पथिक यथा आगे-आगे बढ़ता, कुछ आता-जाता कुछ मार्ग भूलता।
तथाहि विज्ञान यथा आगे-आगे बढ़ता, कुछ आता-जाता कुछ सत्य भूलता।। (2)

यथा अणु विखण्डन होता जा रहा, अणु के पूर्वमत क्षीण/(नष्ट, नेष्ट) हो रहा।
परमाणु प्रतिअणु बनता जा रहा, नया-नया मत भी बनता जा रहा।। (3)

तथा ही जीव विज्ञान विश्व ज्ञान, प्रकाश की गति व जिनोम ज्ञान।
मनोविज्ञान तथा स्वास्थ्य-विज्ञान, विज्ञानों में होता शुद्धिकरण।। (4)

विज्ञान भी नहीं है परम ज्ञान, अपरिवर्तनीय तथा सिद्धान्त ज्ञान।
विज्ञान तो अभी भी मार्ग पे चला, परम सत्य रूपी लक्ष्य न मिला/(पाया)।। (5)

प्रकाश की गति को परम माना, आइन्स्टीन ने इस मत को माना।
अभी तो विज्ञान इसे नकार रहा, न्यूट्रीनों की गति अधिक पाया।। (6)

इसी से भी अधिक गति होती अणु की, जैन धर्म में वर्णित परम/(शुद्ध) अणु की।
यह अणु विज्ञान को नहीं है ज्ञात, सर्वज्ञ ज्ञात है, नहीं विज्ञान को ज्ञात।। (7)

विग्रह गति तथा सिद्धजीव की गति, न्यूट्रीनों से भी अति तीव्र गति।
विज्ञान को यह सब ज्ञात नहीं है, सर्वज्ञ ज्ञान गम्य परम गति है।। (8)

विज्ञान को अनुमान चल ही रहा, विश्व सृष्टि बारे में सोच ही रहा।
काल्पनिक जगत् में विचर रहा, शून्य से सृष्टि को ही ढूँढ़ रहा।। (9)

समय व आकाश का अभाव माना, हठात् सिंगुलरटी जन्म को माना।
शुरू में आकर शून्य चीजों को माना, वजन भी उसमें नहीं है माना।। (10)

बिग बैंग जब हुआ उस काल में, बोसोन हिग्स जन्मा क्षण मात्र में।
जिससे चीजों में वजन आया, आपस में तत्त्वों का सम्बन्ध हुआ।। (11)

जिससे सूर्यादि का जन्म भी हुआ, बोसोन विनाश क्षण में हुआ।
ब्रह्माण्ड का विस्तार हो ही रहा, चौदह अरब वर्ष प्रायः हो रहा।। (12)

असत्य से सत्य जन्म नहीं लेता है, शाश्वतिक यह सत्य भूला बैठा है।

मूल में ही विज्ञान की यह भूल है, वस्तु स्वरूप से यह प्रतिकूल है।। (13)

विश्व अनादि अनन्त तथा ही अणु, वजन से रहित है परम अणु।
स्कन्ध रूप में जब अणु बनता, चीजों/(स्कन्धों) में वजन तब प्रगट होता।। (14)

आकाश व कालाणु होते शाश्वत्, दोनों ही अमूर्तिक भार रहित।
आकाश का विस्तार अनन्तानन्त, आकाश/(उसके) मध्य में ब्रह्माण्ड स्थित।।(15)

व्यवहार समय तो भौतिक कृत, अन्तरिक्ष व्यवहार दूर सापेक्ष।
यह तो व्यवहार में होता सम्भव, आकाश काल की सृष्टि नहीं सम्भव।। (16)

जड़ तत्त्व से जीवों की सृष्टि मानना, यह भी विज्ञान का अज्ञानपना।
जिनोम तक जड़ तत्त्व ही जानो, जीव तत्त्व को चैतन्य ही मानो।। (17)

इत्यादि विज्ञान के मतानुसार, समस्त ब्रह्माण्ड है शून्य विस्तार।
विश्व में नहीं सत्य शिव सुन्दर, सच्चिदानन्दमय आत्म विचार।। (18)

भारतीयों में सत्य को मानने का सत्-साहस नहीं

राग :- (छोटी छोटी गैया...)

भारतीयों में सत् साहस नहीं... सत्य को मानने की क्षमता नहीं।
रूढ़ि परम्परा या विदेशी नकल/(करण)... देखादेखी बहाव में बहते सही।
पूर्वकृत कुकृत तथा दीर्घ गुलामी... सच्ची शिक्षा विहीन संस्कार नहीं।। (1)

इसी के कुछ उदाहरण प्रस्तुत करूँ... विस्तार से ग्रन्थों में वर्णन करूँ।
विदेशों से आर्यों का यथा आगम... पूर्व में देश में थे अनार्य जन।
पाँच हजार वर्ष की आर्य संस्कृति... पूर्व में थी भारत में म्लेच्छ संस्कृति।।(2)

आर्य (देश) भारत म्लेच्छखण्ड हो गया... भारतीय आर्यों का लोप हो गया।
अधिसंख्य तीर्थंकर म्लेच्छ हो गये... श्रीराम कृष्ण आदि लोप हो गये।
विश्वगुरु भारत नीच हो गया... ज्ञान-विज्ञान सब मिथ्या हो गया।। (3)

हमारी संस्कृति है अति महान्... स्व-पर-विश्व कल्याणी अमृतपम्।
तन-मन-आत्मा को सुख/(शान्ति) दायिनी... सत्यं शिवं सुन्दरं सर्व कल्याणी।
तथापि भौतिकता को अपना रहे... विभिन्न कष्टों को भोग भी रहे।। (4)

संस्कृत हमारी संस्कृति भाषा... भारतीय भाषाओं की जननी भाषा।
ज्ञान प्रबोधिनी प्राञ्जल भाषा... सर्वज्ञानदायिनी प्राचीन भाषा।
मातृभाषा का अनादर कर रहे हैं... गुलामी भाषा को ढो रहे हैं।। (5)

हमारे महापुरुष आदर्श होते... महान् गुणों से सहित होते।
हमारे अनुकरणीय उनके गुण... आदर्श बनने हेतु प्रथम गुण।
अभी तो हीरो-हीरोईन हुए आदर्श... फैशन-व्यसन हेतु सही आदर्श।। (6)

हमारा भोजन होता सात्त्विक शुद्ध... शाकाहार फलाहार प्रासुक दूध।
तो भी तामसिक अशुद्ध खाना खाते... बाजारू व मिलावटी खाद्य खाते।
मांस अण्डा मछली भी खाना खाते... धन स्वास्थ्य धर्मशान्ति हराते।। (7)

धर्म अर्थ काम भी मोक्ष युक्त... चक्रवर्ती भी त्यागता संसार सुख।
अभी तो केवल संसार सुख ही रहा... चारों पुरुषार्थ अर्थमय हो गया।
जिससे भ्रष्टाचार बहुविध हो रहा... बहुविध समस्याओं को भोग रहा।।(8)

संयम सदाचार आत्मानुशासन... धैर्य क्षमा सहिष्णुता आत्म-विज्ञान।
आर्य संस्कृति के ये मुख्य लक्षण... विश्व गुरुत्व की मुख्य पहिचान।
अभी तो इससे विपरीत हो रहा... सर्वत्र देश का अपमान हो रहा।। (9)

चारों आश्रमों से युक्त जीवनचर्या... जीवन-मरण व मोक्ष की कला।
व्यवस्थित क्रमबद्ध विकास यात्रा... आत्मा से परमात्मा विकास यात्रा।
अभी तो अस्त-व्यस्त घर रह गया... समाज भी संत्रस्त भीड़ रह गया।। (10)

वैश्विक कुटुम्ब हमारा लक्ष्य भी रहा... वैश्विक शान्ति हेतु प्रयास रहा।
अभी तो पेट व पेटी लक्ष्य हो गया... परिवार भी पराया जन हो गया।
संकीर्ण स्वार्थ हेतु मरा जा रहा... दूसरों को मारकर खाता जा रहा।। (11)

मोक्ष की यात्रा अभी लोप हो गई... अन्धी दौड़ में अपमृत्यु हो रही।
सिद्धि नहीं प्रसिद्धि मुख्य हो गई... साधना भी धन-जन हेतु हो गई।
आध्यात्मिक साधना लोप हो रही... सांसारिक साधना की बाढ़ आ गई।। (12)

भौतिकवादी ज्ञानी सत्यग्राही हो रहा... धार्मिक जन रूढ़िवादी हो रहा।
हमारी संस्कृति पाश्चात्य मान रहा... कुसंस्कृति भारत जन मान रहा।
विश्वगुरु भारत बन रहा है दास... स्वतन्त्र भारत बना बौद्धिक दास।। (13)

तो भी अभी हर क्षेत्र में... होते हैं महान् जन।
संख्या में भले कम होते... तो भी होते वे महान्।।

उनके कारण आज बचा है... भारतीय ज्ञान-विज्ञान।
दीपस्तम्भ सम अन्धकार में... बने हैं प्रकाशवान्।।

उनसे शिक्षा ग्रहण कर बने... भारत पुनः महान्।
इसी हेतु भी 'कनकनन्दी'... कर रहा यत्न महान्।।... प्रभुजी...।। (14)

क्षीण होता जा रहा है भारत ज्ञान-त्याग-शील से

रागः- (कौन परदेशी मेरा दिल ले गया...)

आज महान् भारत को क्या हो गया... ज्ञान-त्याग-शील में क्षीण हो गया।
रटन्त ज्ञान अनुभव विहीन... अव्यवस्थित तथा सार विहीन।।

जीवन उपयोगी नहीं है ज्ञान... नहीं होता है सही प्रारम्भ ज्ञान।
ज्ञान का साधन होता शब्द विज्ञान... शब्द ज्ञान बिन कहाँ परम ज्ञान।।

ज्ञान-विज्ञान हेतु गणित ज्ञान... लौकिक गणित तक नहीं है ज्ञान।
अलौकिक गणित तो महान् ज्ञान... उससे अपरिचित अधिक जन।।

जिज्ञासु गुण भी कम होता जा रहा... डिग्री मनोरंजन तक ज्ञान रह गया।
संकीर्ण पंथ मत स्वार्थ हो गया... उदार व्यापक ज्ञान क्षीण हो गया।।

चुटकुला-सास-बहू कथा ही भाती... निन्दा हास्य परिहास कथा सुहाती।
जीवन निर्माण कथा में नहीं रुचि... नैतिक शिक्षा बिना गप्प में रुचि।।

आध्यात्मिक ज्ञान रूढ़िवादी हो गया... आत्मसाधना बिन पंथवादी हो गया।
अहं धूर्त पाखण्ड का पाठ हो गया... धनजन भोग ही साध्य हो गया।।

प्राचीन आधुनिक ज्ञान भी नहीं... सामान्य सदाचार का भान भी नहीं।
आत्मा-परमात्मा को जानते नहीं... आधुनिक महाज्ञानी मानते सही।।

ज्ञान का मूल्यांकन धन से होता... भीड़ के अनुसार ज्ञान चलता/(बँटता)।
मान प्रदर्शन हेतु ज्ञान हो गया... जानकारी ही ज्ञान का मान हो गया।।

गाना-नाचना ही धर्म हो गया... भीड़ से धर्म का मान हो गया।
आध्यात्मिक भाव लोप हो रहा... प्रतिस्पर्द्धा का भाव बढ़ ही रहा।।

त्याग करना तो अति दूर ही रहा... भ्रष्टाचार संग्रह में मस्त हो रहा।
हर क्षेत्र में तो स्वार्थ हो रहा... धन या मान का स्वार्थ हो रहा।।

निःस्वार्थ भाव तो लोप हो रहा... समय श्रमदान ना हो रहा।
त्याग तप में भी स्वार्थ हो रहा... धन जन मान हेतु त्याग हो रहा।।

शील-सदाचार का तो लोप हो रहा... फैशन-व्यसनों में डूब-सा गया।
दिखावा व आडम्बर खूब हो रहा... सत्य-न्याय का पथ भूल-सा गया।।

सहज-सरल भाव वक्र हो रहा... बगुला के समान शुभ्र हो रहा।
सूट-बूट-टाई व्यक्तित्व हो गया... दर्जी से व्यक्तित्व निर्माण हो रहा।।

उद्दण्ड व अश्लील से बोल्ड हो रहा... भ्रष्टाचार के धन से विकास कर रहा।
विकास का पैमाना भौतिक हो रहा... आत्मपतन का भान न रहा।।

कमियों के शोध-बोध, त्याग के हेतु... कविता ये रची गई विकास हेतु।
'कनकनन्दी' की यह शुभ भावना... समग्र विकास हो ये ही कामना।।

महान् हिंसक, रोगकारक, ज्वालामुखी कारक रसोई गैस

राग :- (जमुना किनारे...)

गैस से बना भोजन किया न करो, हिंसा के भागीदार बना न करो
गैस से बना भोजन जो करे हैं, हिंसा, रोग, दूषण के भागी बने हैं
गैस कुआँ खोदने से हिंसा प्रारम्भ होती, ज्वालामुखी विस्फोट तक जो चलती...
गैस से बना भोजन ....(टेक/स्थायी)

तीन कि.मी. तक कुआँ खोदा जाता है, जिससे असंख्य जीव मारे जाते हैं
गैस पैकिंग ट्रान्सपोर्ट आदि के कारण, असंख्य जीव मरे त्रस स्थावर
गैस की उच्च तापीय दहन क्रिया से, विभिन्न विषाक्त गैस होती निर्माण...(1)

इसी दहन से जो जो भोजन बने, वह वह भोजन भी विषाक्त बने
भोजन के स्पर्श रस गन्ध गुण में, विकृति भी आती है भोजन पानी में
उससे विभिन्न रोग उत्पन्न होते, वातावरण तथा भोज्य पानी से ....(2)

फूडपाइजन बने पानी भोजन, विषाक्त बने है वातावरण
श्वाँस से हर समय विष पीते हैं, शरीर भी हरदम विषैले होते हैं
बर्तन, आसन, निवास विषाक्त होते, वेश-भूषा उपकरण विषाक्त होते ...(3)

नाइट्रोजन डाई ऑक्साइड गैस के कारण, वातावरण भोजन विषाक्त बने
श्वास तथा भोजन से जो ग्रहण करे, अस्थमा, एलर्जी, श्वास रोग से घिरे
फेफड़ो के रोग, खाँसी, श्वास फूलना, रक्ताल्पता, घुटन तथा छींक भी आना...(4)

स्मृति लोप चक्कर बेहोशी आना, मूर्च्छित होना, पित्त, वायु बढ़ना
वमन अरुचि आदि रोग घेरना, आलस्य, प्रमाद विकृत भाव भी होना
वायु प्रदूषण से असंख्य जीव हैं मरते, विस्फोट से घर जले मानव मरते...(5)

इण्डोनेशिया का ज्वालामुखी विस्फोट, पाँच वर्षों से करे महाविध्वंस
गैस कुँआ खुदाई से हुआ अनर्थ, तीन कि.मी. खुदाई से चट्टान ध्वंस
जिससे गरम कीचड़ निकल रहा है, गैस के मिश्रण में घातक बना है...(6)

विस्थापित हुए जन चालीस हजार, बारह ग्रामों का जो हुआ संहार
तीस फैक्ट्रीयों का हो गया विनाश, अनेक दुकानों का हो गया नाश
जल वायु प्रदूषण फैल रहा है, धन-जन-स्वास्थ्य नष्ट हो रहा है...(7)

दश हजार क्यू. मीटर उगल रहा है, हर रोज कीचड़ निकल रहा है
पच्चीस वर्ष तक यह होता रहेगा, फसल, घरों को भी नष्ट करेगा
ज्वालामुखी का विस्तार होता रहेगा, गैस का दुष्परिणाम गाता रहेगा...(8)

गैस व पैट्रोल नहीं शुद्ध भौतिक तत्त्व, एकेन्द्रिय स्थावरों का नहीं है सत्व
यह तो त्रस जीवों का होता है सत्व, करोड़ों अरबों जीवों का होता है रस
भूस्खलन आदि के बार-बार होने से, करोड़ों प्राणी मरते पृथ्वी के मध्ये...(9)

चाप व ताप कारणों से लाखों है वर्ष, पशु-पक्षी, मछलियों से बने ये तत्त्व
इसलिये रेगिस्तान व समुद्र मध्ये, प्रचुरता से उपलब्ध पृथ्वी के मध्ये
वनस्पति के कारण बने है कोल तारकोल, कोलमाइन में न होता गैस पैट्रोल...(10)

इसलिये गैस प्रयोग हिंसाकारक, हिंसा का सहभागी होता अवश्य
नवकोटि से पाप होता निदान, प्रत्यक्ष या परोक्ष से होता सुजान
यथा मांस खाओ या खिलाओ बेचो, अनुमोदना करो सर्वथा पाप....(11)

हो अहिंसक! इसका न करो प्रयोग, साधुव्रती तो सर्वथा करो ही त्याग
पर्यावरण प्रेमी तथा स्वास्थ्य इच्छुक, इसके प्रयोग से रहो हे! विमुख
''कनकनन्दी'' करे नवकोटि से त्याग, सर्वजन त्याग करें मेरा प्रयास...(12)

(1 जुलाई डॉक्टर्स डे के उपलक्ष में)

डॉक्टर (वैद्य) की आत्मकथा (18)

(ईश्वरीय डॉक्टर एवं डाकू सम डॉक्टर)

तर्ज :- (नगरी नगरी...)

मैं हूँ डॉक्टर पृथ्वी का ईश्वर, ऐसा लोग मुझे कहते हैं।
रोग को हरना आरोग्य देना, ऐसा महान् काम है।। (टेक)

रोग न आवे आरोग्य पावे, ऐसा होता मेरा काम है।
रोग के कारण शोध कर मैं, करूँ उसका निवारण है।।
रोगी की सेवा तथा पुण्य कमाना, धन यश का भी लाभ है।
आदर पाना ज्ञान प्राप्त करना, यह सब मेरा लाभ है।।...(1) मैं...

भेद-भाव रहित सेवा सहित, रोगी की करता सेवा मैं।
शोषण रहित दया भाव सहित, निष्पक्ष करता हूँ सेवा मैं।।
सेवा धर्म सेवा कर्म, सेवा व्रत नियम है।
गरीब रोगी की सेवा भी करूँ, धन लाभ बिन शुभ कर्म है।।...(2) मैं...

स्व कर्म हेतु मैं ज्ञानार्जन करूँ, आयुर्वेद तन विज्ञान है।
कर्म सिद्धान्त व जीवविज्ञान, भोजन प्रकृति विज्ञान है।
स्वप्न शकुन न मनोविज्ञान, द्रव्यगुण स्वभाव विज्ञान है।
नवीन-नवीन अविष्कारों द्धारा, प्राप्त जो अद्यतन ज्ञान है।।...(3) मैं...

अतएव मम ज्ञान होता विस्तृत, सूक्ष्म से स्थूल पर्यन्त है।
इहलोक से परलोक सहित, त्रिकाल सम्बन्धी ज्ञान है।।
मेरे समूह में हुए बड़े-बड़े वैद्य, चरक सुश्रुत धन्वन्तरी है।
पूज्यपादाचार्य बागभट्ट माधव, उग्रादित्याचार्य आदि है।।...(4) मैं...

प्राकृतिक चिकित्सा शल्यचिकित्सा, प्राचीन काल से भारत में।

मनोविज्ञान मंत्रचिकित्सा, आयुर्वेद में हैं सारे।।

विदेशों में भी अनेक सुवैद्य, हुए हैं प्राचीन से आद्यतन।
हिपोक्रिटिश से पाश्चर तक, लुकुमान समान भी वैद्य है।।...(5) मैं...

आधुनिक पाश्चात्य चिकित्सा पद्धति में, मुझे कहते हैं डॉक्टर।
होमियपैथी व एलोपैथी, पाश्चात्य चिकित्सा के प्रकार।।

हाय! अभी क्या हुआ भारत में, डॉक्टर भी हो गये हैं क्रूर।
दया सेवा व ज्ञान से रहित, करते भ्रष्टाचार हैं।।...(6) मैं...

शोषण करते नकली दवा देते, करते भी यौनाचार हैं।
किडनी चुराते कैंची छोड़ते, समूह करते हड़ताल हैं।।

रोगी दुःखी होते परिवार रोते, इलाज बिना मृत्यु भारी।
डॉक्टर का डाकू सम क्रूराचार, गरीब रोगी है लाचार।।...(7) मैं...

वैद्यराज नमोस्तुभ्यं यमराज सहोदर, यमराज से भी भयंकर प्राण व धन हरण कर।
यमराज प्राण हर तू प्राणधन हर, जीवन्त तू है यमपुर।।

अतएव तुम्हें शीघ्र जगाने हेतु, ''कनकनन्दी'' गुन्थे गान है।
अपनी महानता समझकर शीघ्र कर तू ईश्वरीय काम है।।...(8) मैं...

सत्य-समता-शान्ति के बिना शिक्षा, धर्म आदि अहितकर

(नैतिकता बिना धर्म शिक्षा आदि का दुष्परिणाम या कुफल)

तर्ज :- (जिस गली में तेरा घर न हो...)

पुस्तकों की पढ़ाई करने वाले,
स्वयं की पढ़ाई भी तुम करो।

बाह्य को देखने वाली आँखें,

स्वयं का स्वरूप स्वयं तुम देखो/लखो।। (टेक)

विद्यालयों में पढ़ाई करते, व्यवहार नैतिक ज्ञान नहीं,
डिग्री प्राप्त करते तो कागजी-2, भाव ड्राई हुआ यह भान नहीं।।... (1)

फैशन-व्यसन स्वार्थनिष्ठा में, शिक्षा का स्वरूप तुमने देखा,
आदर्श-संस्कार परोपकार में-2, तुमने पिछड़ापन ही तो देखा।।... (2)

इसलिए तो साक्षर बनकर, राक्षस बनना तुम्हें भाया,
इसलिए तेरे जीवन की सुरभि-2, कागज कुसुम सम ही रही।।... (3)

टेन्शन दुश्चिन्ता डिप्रेशन से, तेरा जीवन दूभर हुआ,
जिससे कलह से आत्महत्या तक-2, तुम्हारे जीवन में प्रवेश किया।।... (4)

धर्म भी पढ़ा धार्मिक बना, ढोंग-पाखण्ड का धर्म भी किया।
समता पवित्रता शान्ति त्याग-2, राग-द्वेष को तुमने अपनाया।।... (5)

भेद-भाव व अहंकार में, तुमने धर्म को सही माना।
जिससे तुमने शान्ति के बदले-2, अशान्तिमय जीवन ही जीया।।... (6)

इसी से कलह वाद-विवाद व, हिंसा प्रतिहिंसा का जन्म हुआ।
आतंकवाद व युद्ध महायुद्ध-2, धर्म के नाम पर तुमने किया।।... (7)

राजनीति व्यापार आदि में, ऐसा ही दुरुपयोग किया।
सत्य समता शान्ति के बिना-2, सभी प्रयासों ने कुफल ही दिया।।... (8)

अभी तो चेतो सत्य को जानो, स्व-पर विश्व का कल्याण करो।
''कनकनन्दी'' का आह्वान सुनकर-2, सत्य-तथ्य का भान स्वयं ही करो।।... (9)

अनुशासन की आत्मकथा
(अनुशासन के विविध रूप, पालन से लाभ तथा भंग से हानि)

राग :- (1. सुनो2 ऐ दुनियाँ वालों... 2. पूजा पाठ रचाऊँ...)

सुनो सुनो हे! दुनियाँ वाले, मेरा नाम है अनुशासन
मेरे सहयोग बिना न कोई, हो सुकार्य जग में जानो... (टेक)

मैं हूँ व्याप्त हर काम में, आध्यात्मिक से लौकिक तक
मेरे सहयोग बिना हर काम, होता असफल निश्चित जान
आत्मानुशासन, मनानुशासन, इन्द्रियशासन, शरीरशासन
समयानुशासन, धनानुशासन, साधनानुशासन विविध नाम (1)

सर्वानुशासन में आत्मानुशासन, सर्वश्रेष्ठ-ज्येष्ठ-क्लिष्ट भी जानो
इसी शासन से सर्वानुशासन, शासित होते निश्चय मानो
यथा ही विद्युत् चालित यंत्र में, विद्युत् होता है प्रमुख जानो
तथावत् ही आत्मानुशासन, हर शासन में प्रधान मानो... (2)

आत्मशासन से साधा जाता, विश्वश्रेष्ठ कार्य मोक्ष निदान
मनानुशासन द्वितीय प्रमुख, जिससे शासित अन्य शासन
इसलिए ही कहा जाता है **''मनएव मनुष्याणां बन्ध मोक्षयो''**
मन वश से इन्द्रियाँ वश, जिससे शरीर भी होता वश (3)

इन्हीं शासनों से समयानुशासन, होता शासित निश्चय जानो
हर समय होता सदुपयोग, जिससे होता है कार्य महान्
''पमायेण एक समय ण मुक्कउ'' ऐसा आदेश वीर प्रभु का
''संयम जीवन असंयम मरण'' ऐसा भी शासन अतिवीर का (4)

धनानुशासन से न्यायोपार्जन, अपरिग्रह भी इससे जानो
सदुपयोग भी इस से होता अन्यथा शोषण-परिग्रह मानो
साधन के अनुशासन से साधनों का होता सदुपयोग
साधना के अनुशासन से साध्य की सिद्धि होती निदान (5)

मेरा आदर जो नहीं करता, मेरा कोप का होता भाजन
उसका कार्य करता नाश, धन जन का भी करूँ विनाश
मेरा शासन अति कठोर, पालनकर्त्ता को करूँ निहाल
भंग जो करे मेरा शासन, कठोर दण्ड से करूँ कंगाल (6)

दुर्घटना से अपमृत्यु तक, विभिन्न दण्ड से करूँ प्रहार
मेरा दण्ड यदि नहीं चाहते, मेरे शासन का करो आदर
'कनकनन्दी' की लेखनी द्वारा, मेरे स्वरूप का हुआ वर्णन
कार्य सम्पादन सुख शान्ति हेतु, मेरी आज्ञा का करो पालन।। (7)

अर्थ (धन) की आत्मकथा

(अर्थ अनर्थ एवं अर्थ भी है)

तर्जः- (1.छोटू मेरा नाम रे... 2.जीना यहाँ... 3.शांति के सागर अरु...)

अर्थ मेरा नाम है, अनर्थ भी काम है,
तो भी मानव मेरे निमित्त, करे अनर्थ काम है।। (टेक)

मेरा विश्व में अनेक नाम, धन, सम्पत्ति, पैसा भी,
डालर, रूपये, अशर्फी, दीनार, भूमि, चाँदी, सोना भी।
दास, दासी, पशु-पक्षी, यान-वाहन घर भी।
टी.वी., कम्प्यूटर, फ्रिज, वस्त्र, गृहोपकरण घर भी।। अर्थ...

जीवन निर्वाह, परिवार, पोषण, दान, धर्म सेवा में,
न्याय से उपार्जित मेरा प्रयोग, उचित कहा है ज्ञानी ने।
इससे भिन्न अधिक संग्रह, अन्याय अर्जित धन है।
परिग्रह रूपी महापाप, कहते आचार्य जन हैं।। अर्थ...

फैशन व्यसन दुरुपयोग में, जो खर्च होता अर्थ है।
वह भी अर्थ-अनर्थ जनक, कहे धार्मिक ग्रंथ है।
भ्रष्टाचार, शोषण, मिलावट, चोरी अन्याय मार्ग से

जो भी मुझे प्राप्त करे, गिरे पतन के मार्ग में।। अर्थ...

लोभी न कभी सन्तुष्ट होता, प्रचुर मेरी प्राप्ति से।
यथा अग्नि न शान्त होती, अधिक पेट्रोल प्राप्ति से।।

धनी व गरीब दोनों ही, तृष्णावान् जो होय।
सुखी न होता तृष्णावान कभी, कुबेर सम भी होय।। अर्थ...

पुत्र भी मारे मात-पिता को, मेरे निमित्त जान से।
शोषक-शोषित, धनी-गरीब, मेरे कारण बने हैं।।

चोरी, डकैती शोषण, मिलावट, आक्रमण व युद्ध है,
भ्रष्टाचार आतंकवाद, विश्वयुद्ध तक होय है।। अर्थ...

मेरे कारण पढ़ाई नौकरी, कृषि व वाणिज्य होते हैं।
मेरे कारण सेवा शिल्प, उद्योग धन्धे चलते हैं।।

लोभी बापड़ा सब कुछ माने, परमेश्वर तक माने है।
सर्वगुण कांचनमाश्रयंते, ऐसा वह श्रद्धाने है।। अर्थ...

मेरे अभाव उपार्जन, संग्रह, सुरक्षा आदि में दुःखी लालची।
व्यय, दान, धर्म, परोपकार में भी, दुःखी होता है लालची।। अर्थ...

मेरा दास सदा दुःखी होता, मेरे हाथ उसके प्राण,
मैं उस मालिक के आधीन, जो दान पुण्य करे महान्।।

अच्छे भावों से मेरा उपयोग करे, जो दान पुण्य परोपकार में।
मैं उसे मिलता अधिक से अधिक, उसके पुण्य प्रभाव से।। अर्थ...

मेरा दास होता पुण्यहीन, उसे सदा मैं दुःख ही देता।
धनी, गरीब सदा दुःखी जैसे, मलत्याग बिन सुख कहाँ।। अर्थ...

सातिशय पुण्य से तीर्थंकर, राजा महाराजा होते।
अर्थ से अनर्थ न करते, अर्थ त्याग साधु होते।।

जिससे आत्मिक अर्थ पाते, अन्त मोक्ष धाम पाते।

उनसे सीखो हे मानव जो मुझे, त्यागे वो अमृत पाते।। अर्थ...

अर्थ को सर्व अर्थ जो माने, उसका अनर्थ होता निदान।
आय, व्यय जो न्याय से करे वह पुण्यवान् होता महान्।।
इसलिए मानव मेरे निमित्त, अन्याय कभी न करो निदान।
''कनकनन्दी'' के माध्यम से मैं, करूँ अपना आत्म आख्यान।। अर्थ...

तम्बाकू की आत्मकथा (व्यंगात्मक पद्धति से)

(विश्व तम्बाकू निषेध दिवस 31 मई के उपलक्ष में)

राग :- (1. जय हनुमान... 2. छोटू मेरा नाम है...)

मैं हूँ तम्बाकू...3 सबसे निराली..., सबसे निराली मेरी शान
मैं हूँ सबसे अधिक प्रिय, मानव जाति की मैं हूँ जान.... मैं हूँ...(टेक)...
मेरी चाहत से मानव जाति... प्राण गँवाये पर मुझे चाहती...
इण्डियन के लोग मेरे दीवाने... मेरे लिए धन-जान/(स्वास्थ्य) गँवाये..

तथापि मुझे त्याग न करे... जान देकर मुझे सम्भारे...
प्रतिदिन तीन हजार मौतें... वर्ष में दश लाख भी मौतें...
मेरे प्रेम से मरण वरते... तो भी मेरा नेह निभाते...
इसलिए इण्डिया हुआ प्रसिद्ध... त्याग बलिदान में जग प्रसिद्ध...

सर्वाधिक मेरा आशीष पाते... कैन्सर, मरण वर में पाते...
तीस लाख मेरे आशीष पाते... विश्व में हर वर्ष मृत्यु पाते...
ऐसे हैं मेरे मानव पुजारी... जो हैं मुझ पर अति बलिहारी...
गधा/(पशु) क्या जाने मेरी महिमा... मेरे सेवन की गुणमय गरिमा...

इसलिए मेरे पास न आवे... रोग मृत्यु आशीष न पावे...
गधा समान जो मानव होता... मेरे भजन से वञ्चित होता...
उसे न मिलता मेरा आशीष... रोग मृत्यु से होता वञ्चित...
शिक्षित इण्डियन अधिक भक्त... मेरी भक्ति में बिताय वक्त...

पाश्चात्य शिक्षित कोरा गँवार... मेरी भक्ति से हो जाय दूर...
मेरे भक्त का जो संगत करे... उसे भी मेरा आशीष मिले...

सौ प्रतिशत भक्त को मिले... तीस प्रतिशत साथी को मिले...
एक सिगरेट जो सेवन करे... छह मिनट मृत्यु का आशीष मिले...

पूर्ण जीवन में पाये आशीष... बुढ़ापा कभी न आवे समीप...
मेरी विभिन्न मूर्ति बनाने वाले, बीड़ी आदि रूप देने वाले...

उन्हें भी मेरा मिले आशीष... दमा खाँसी आदि अनेक रूप...
मेरी पत्ती की रक्षा निमित्त... विष छिड़काय किसान लोग...

हजारों कीटों का होता संहार... मृदा जल वायु दूषण अपार...
उससे थल जल प्राणी भी मरे... खेत में सर्प पशु नहीं सञ्चरे...

मेरी क्रूरता से अभी संत्रस्त... मानव के बिन कोई न भक्त...
मेरा यदि तुम्हें आशीष पाना... 'कनकनन्दी' से दूर ही रहना...
मेरा वह कट्टर शत्रु जान... मेरी महिमा का न करे सन्मान... मैं हूँ...

(वर्तमान के बच्चों की आत्मकथा एवं आत्मव्यथा)
स्व माता-पिता से बच्चों की करुण प्रार्थना
(स्व माता-पिता के अत्याचार से स्व-रक्षा के लिए बच्चों की उनसे ही प्रार्थना)

राग :- (बाबुल की दुआएँ लेती जा...)

हे मेरे मात-पिता मुझे, सुख शान्ति से जीने देना।
बनूँ या न बनूँ मैं धन्ना सेठ, मुझे अच्छा तो बनने देना।... स्थायी...

मेरे पूर्व के कर्मानुसार, तुम्हारे घर में मैं आया।
संयोग बना आपका मुझसे, अब सत् विकास करने देना।

माता तो ममतामयी होती, पिता जो करे पावन जीवन।
सुख दुःख में जो साथ देते, वे ही कहलाते कुटुम्बी जन।

उभयकुल दीपिका सुपुत्री, बनकर जब मैं गर्भ में आई।
गर्भ में ही मुझे तुम क्यों मारो, ऐसी मेरी क्या गलती हुई।

दैवात् यदि जन्म भी मेरा, हुआ पुत्र या पुत्री के रूप में।
अबोध शिशु वय में ही क्यों, दबाव डालते हो मुझमें।

शिरीष कुसुम सम अति कोमल, मेरा है यह छोटा तन।
मक्खन से भी अति कोमल है, मेरा यह नन्हा भोला मन।

दो वरष की वय में ही मुझे, क्यों भेजते हो पाठशाला।
तुम्हारे सानिध्य बिना वह, लगे है जैसे हो बन्दीशाला।

पानी के बिना यथा मत्स्य, तड़प-तड़प कर मरता है।
तुम्हारे बिना मैं भी स्कूल में, जीते जी ही मरता हूँ।

मास्टर की है डाँट पड़ती, रसविहीन भी पढ़ूँ है पाठ।
गृहकार्य की घानी में सदा, पिसता रहूँ दिन व रात।

आपकी स्वार्थाकांक्षा के बन्दीगृह में सदा मैं कैद हूँ।
पिञ्जराबद्ध पक्षी के सम, मुक्त भाव से रहित हूँ।

वह है बन्दीगृह आपका, मैं बनूँ सबसे टॉपर।
परीक्षा में भी अव्वल रहूँ, प्रतियोगिता में रहूँ सुपर।

नाच व गाना में रहूँ टॉपर, वाद-विवाद व मॉडल में।
हीरो-हीरोईन सम बनूँ मैं सदा, आगे ही रहूँ सब में।

इसी बन्दीशाला के अति योग्य, जब मैं न बन पाता हूँ।
प्रताड़ना, निन्दा, उपेक्षा द्वारा, विभिन्न दण्ड सहता हूँ।

जिससे मैं भारी डिप्रेशन, व टेन्शन सदा भोगता हूँ।
असहनीय होने पर मैं, आत्महत्या कर छूटता हूँ।

गत दशक में बारह प्रतिशत (12%) तक मेरी आत्महत्या बढ़ी।
विकसित पूर्व किशोर कली की आत्महत्या है बढी।

दशलाख किशोरों में हाय!, नौ आत्महत्या करते हैं।
तीन वर्ष में सोलह हजार, छात्र आत्महत्या करते हैं।

अहिंसक देश भारत के आज, विद्यार्थी ये कृत्य करते हैं।
जिस देश के बच्चे भी देखो!, आध्यात्मिक ऊँचाई पाते थे।

मैं हूँ विशाल वृक्ष के अंकुर, स्वेच्छा से विकसित होने दो।
स्वार्थ के संकीर्ण गमला के मध्ये, मुझे नहीं रोपने दो।

मैं हूँ कोमल सुवास कली, मुझे ही स्वयं खिलने दो।
खिलने से पहले मसलकर, निर्दयता से मरने न दो।

'कनकनन्दी' के लेखन द्वारा, प्रकटा यह मेरा निवेदन।
मेरे माता-पिता कृपा करके, स्वीकार करो मेरा आवेदन।

नेता की आत्मकथा

(विविध प्रकार के नेता का स्वरूप)

तर्ज :- (1. नाम तिहारा... 2. भोली मेरी माँ... 3. जीना यहाँ... 4. नगरी-नगरी...)

नेता मेरा नाम है, नेतृत्व मेरा काम है।
स्व-पर के हित साधने, होता मेरा काम है।... (टेक)

कर्मभूमि के प्रारंभ में ''**कुलंकर**'' मेरा नाम है।
मानवों के हित करने से '**मनु**' मेरा नाम है।।
आदि महानेता ऋषभ हुए, ''**आदिनाथ**'' शुभ नाम है।
शिक्षा संस्कृति राजनीति के, आद्य प्रवर्तन काम है।।...(1) नेता मेरा...

उनके पुत्र भरत हुए, प्रथम चक्री अभिराम है।
जिनके नाम पर आर्यावर्त का, भारत हुआ नाम है।।

और भी तेईस तीर्थंकर जो, धर्म साम्राज्य के नेता हैं।
और भी ग्यारह चक्रवर्ती, राज्यशासन के नेता हैं।।...(2) नेता मेरा...

और भी अनेक अद्धचर्की हुए, राजा व महाराजा हैं।
राज्यशासन के नेता हुए, पाले अपनी प्रजा है।।

प्राचीनकाल में भारत में हुए, लोकतंत्रात्मक नेता हैं।
लिच्छवी आदि गणतंत्र के प्रजापालक नेता हैं।।...(3) नेता मेरा...

नेतृत्व द्वारा मानव जाति को, आगे बढ़ावे सो नेता है।
सामाजिक से आध्यात्म तक, होते विभिन्न नेता हैं।।

धर्म, अर्थ, काममय राज्य होता राज्य शासन में।
धर्म मोक्षमूलक शासन होता है, आत्मिक शासन में।।...(4) नेता मेरा...

भारत में जब राजतंत्र में, न रहा सही नेतृत्व।
दीर्घकाल तक गुलाम रहा, भारत जैसा प्रभुत्व।।

राणा प्रताप शिवाजी तथा, लक्ष्मीबाई के नेतृत्व।
मंगलपाण्डे खुदीराम बोस, सुभाष चन्द्र प्रभुत्व।।...(5) नेता मेरा...

विवेकानन्द अरविन्द, दयानन्द प्रभुत्व।
लाल-बाल पाल गाँधी, सावरकर के नेतृत्व।।

भारत पुनः आजाद हुआ, तोड़ पराधीन बन्धन।
ऐसा है मेरा काम काटे, जो सबका बन्धन।।...(6) नेता मेरा...

मेरा भी जन्म विदेशों में, होता विविध रंग रूप में।
कन्फूसियस, कार्लमॉर्क्स, वाशिंगटन आदि रूप में।।

लिंकन, आब्राहिम, लूथरकिंग, मंडेला आंग सानसू हैं।
लोकतंत्र व समाजवाद, इनकी महान् देन है।।...(7) नेता मेरा...

मेरे नाम पे आज कलंक, लगाये इण्डियन नेता हैं।
लोकसेवक बनके आज, बने तानाशाही नेता हैं।।

भ्रष्टाचार व स्वार्थसिद्धि के, आज पुरोधा नेता हैं।
देश बेचकर आज बने हैं, राष्ट्र के सर्वोच्च नेता हैं।।...(8) नेता मेरा...

''कनकनन्दी'' तो काव्य द्वारा, जगाये भारतीय आत्मा को।
भारत जगकर विश्वगुरु बने, दे नेतृत्व विश्व को।।...(9) नेता मेरा...

शिक्षक की आत्मकथा

(प्राचीन आध्यात्मिक शिक्षक से वर्तमान के लौकिक शिक्षक तक)

तर्ज :- (1. भक्ति बेकरार है... 2. भोली मेरी माँ... 3. पूछ मेरा गाँव रे...)

शिक्षक मेरा नाम है, शिक्षा प्रदान काम है,
इसलिये तो गुरु रूप में, सर्वोच्च स्थान है।। (टेक)

ब्रह्मा विष्णु महेश रूप में, मुझे देते सन्मान हैं...2
साक्षात्परमब्रह्मरूप में, सर्वोच्च मेरा मान है...2
शिष्यों का मैं निर्माण कर्त्ता, इसलिये मैं ब्रह्मा हूँ...2
ज्ञानामृत से पोषण करूँ, इसलिये मैं विष्णु हूँ...2 शिक्षक... (1)

अज्ञान नाशक होने से, मुझको कहते महेश हैं...2
निश्चय से मैं शुद्धात्मा, परमब्रह्म स्वरूप हूँ...2
लौकिक से आध्यात्मिक तक, मेरे अनेक रूप हैं...2
तीर्थंकर से मास्टर तक, मेरे विभिन्न रूप हैं...2 शिक्षक... (2)

तीर्थंकर हैं परम गुरु जो, विश्वविज्ञान के ज्ञाता हैं...2
इसके अनन्तर गणधर स्वामी, चार ज्ञान के ज्ञाता हैं...2
आचार्य उपाध्याय ऋषिवर, आध्यातम के ज्ञाता है...2
स्व-पर विश्व कल्याण के लिये, सम्यक् ज्ञान प्रदाता हैं...2 शिक्षक...(3)

पाठशाला से गुरुकुल व , विश्वविद्यालय के गुरु हैं...2
नालन्दा तक्षशिला से लेकर, ऑक्सफोर्ड के गुरु हैं...2

मात-पिता व गुणी गणजन, जो भी देते हैं शिक्षण...2
वे भी मेरे विभिन्न रूप, प्रकृति के भी हरकण...2 शिक्षक... (4)

जिससे शिक्षा मिले प्राणी को, वे भी हैं शिक्षक...2
शिक्षा लेने की योग्यता जिसमें, उसके लिये हैं सब शिक्षक...2

दया, वात्सल्य, परोपकार से, मैं देता हूँ ज्ञानदान...2
ज्ञानदान के कारण से मुझे, माना जाता सबसे महान्...2 शिक्षक... (5)

आहार, औषधि अभय का दाता, भी नहीं होता महान् गुरु...2
धन सम्पत्ति वसतिका दाता, भी नहीं होता समान गुरु...2

अन्नदानादि भी महानदाता, जिससे होता है पुण्य महान्...2
ज्ञानदान तो निरवद्यदान, जिससे मिलता केवलज्ञान...2 शिक्षक... (6)

इसलिये तो पंचगुरु में, अरिहंतो को प्रथम नमन...2
दिव्यध्वनि द्वारा ज्ञानप्रदाता, अतएव वे गुरु महान्...2

विकृत हुआ अभी मेरा रूप, लौकिक से धार्मिक तक...2
स्वार्थपरता संकीर्णता, भौतिकवादी हुये शिक्षक तक...2 शिक्षक... (7)

''ज्ञान बाँटो धन लूटो'', अभी का है सूत्र महान्...2
ज्ञानदान न अभी होता है, जो करता वह पिछड़ा जान...2

धन के लिये धन के द्वारा, धन से ही ज्ञान होता महान्...2
इसलिये ज्ञानदाता गुरुजन, उपेक्षित आज राष्ट्र में जान...2 शिक्षक...(8)

लौकिक शिक्षा शिक्षक शिक्षार्थी, भौतिकता में डूबे आचूल...2
धार्मिकता में भी यह प्रवृत्ति, हो रही है अनेक स्थल...2

अतएव आज विश्वगुरु देश, बन गया भ्रष्टों का देश...2
आध्यात्मिकता से तो हुये दूर, नैतिकता में भी पिछड़ा देश..2 शिक्षक..(9)

शिक्षा क्षेत्र में भी आज भ्रष्टाचार, फैशन व्यसन में है मशहूर...2
जिसके कारण भारत में है, आज शिक्षा का क्षेत्र कमजोर...2

इसलिये आज ''कनकनन्दी'' के, माध्यम से मैं करूँ आह्वान...2
अपनी गरिमा को जागृत करके, करो देश को पुनः महान्...2 शिक्षक...(10)

भारतीयों की स्टेटस् सिम्बल-अपटूडेट की विकृत मानसिकता

(भारतीयों की अभिजात्य प्रवृत्ति एवं आधुनिकता)

(वॉरेन बफेट व बिल गेट्स से आधुनिकता सीखें भारतीय)

राग :- (1. सुनो सुनो ऐ दुनियाँ वालों... 2. है यही समय की पुकार...)

सुनो सुनो हे! दुनियाँ वालों, हम इण्डियन की थोथली वृत्ति/(प्रवृत्ति)
वर्षा पानी बिन यथा बादल, गर्जन तर्जन बाह्य प्रवृत्ति... सुनो सुनो... (टेक)

यथा मयूर के पंख विशाल, देखने से लगे अति सुन्दर
दूर गगन में उड़ने योग्य न, कदापि यदि आ जावे संकट
बकरे के गले के थन समान, दूध न झरे करे सारसंभार
मृग मरीचिका सम दूर से रम्य, प्यास न बुझे भ्रमात्मक रम्य... सुनो... (1)

अभिजात्य वृत्ति या आधुनिकता, हम इण्डियन की खोखली वृत्ति
बर्थ डे सेरेमोनी से प्रारम्भ होती, डैथ डे सेरेमोनी तक होती वृत्ति
बच्चों की पढ़ाई अंग्रेजी स्कूल, अधिक फीस अधिक ट्यूशन
बस्तों के तले कराह रहा है, कोमल शरीर व अबोध मन... सुनो... (2)

नम्बर लाना प्रोग्राम देना, डाँस स्पर्धा में भाग भी लेना
डिग्री भी लेना जॉब करना, महानगरों या क्लब में जाना
शराब पीना मांस भी खाना, तम्बाकू सिगरेट नशा भी करना
बाजारू खाना कोका भी पीना, बफे सिस्टम में खड़े खड़े खाना... सुनो... (3)

खड़े खड़े ही पेशाब जाना, सूटबूट सह शौच भी जाना
उसी ड्रेस से काम करना, भोजन गृह या मन्दिर जाना

गॉगल्स टॉई सूट पहनना, गरमी में भी सूटेड होना
मद्य पीकर गाड़ी चलाना, यातायात के नियम तोड़ना... सुनो... (4)

चमचमाती गाड़ी भी होना, अनावश्यक गाड़ी चलाना
कोई मरे या अपंग होय, अपना शौक पूरा करना
नटनटी को शिर चढ़ाना, उनका गाना उनका खाना
नाम रखना स्टाइल करना, गुण भी गाना पूजा करना... सुनो... (5)

ऐसा ही नेता खेल खिलाड़ी के, अन्धे होकर नकल करना
पाश्चात्य देशों की अपसंस्कृति को, अकल बिना ही ओढ़े रहना
नेल पॉलिश लिपिस्टिक के बिन, फैशन का मजा न आना
अनावश्यक हिंगलिश बोलना, मातृभाषा भी सही न आना... सुनो... (6)

घड़ी पहनकर गप्पे मारना, समय पे कोई काम न होना
अश्लील गाना सिनेमा हेतु, मोबाइल टी.वी. कैसेट होना
गृह सज्जा हेतु शौकीन वस्तु, हिंसात्मक बहुमूल्य चलेगा
जिससे आधुनिकता फैशन झलकती, धर्म-अधर्म सभी चलेगा... सुनो... (7)

मन्दिर पर्व तीर्थयात्रा भी, इसी निमित्त प्रयुक्त होते
विवाह उत्सव मृत्यु संस्कार, स्टेटस सिम्बल कारण होते
इसी हेतु हे दुनियाँ वालो!, हम इण्डियन रहे इडियट (कंगाल, अनाड़ी, पिछड़े)
पेट तो खाली मूँछ में घी, इसलिए हम बने अनाड़ी... सुनो... (8)

इसलिए तो हमें जगाने, वॉरेन बफेट आये भारत
बिल गेट्स भी साथ में आये, इण्डियन को दानी बनाने
हाय रे इण्डिया! ये क्या हुआ, विश्वगुरु बना पाश्चात्य चेला
गुरु तो बना गँवार आज, शिष्य बन गये श्री गुरुराज... सुनो... (9)

इसीलिये तो 'कनकनन्दी' तुम्हें, ललकारे उठो हे आर्य!
हुत गौरव गत गौरव पुनः, प्राप्त कर बनो आत्मा के राज... सुनो... (10)

(भारतीयों की कमी सम्बन्धी व्यंगात्मक चित्रण)

हाय रे! दयालु भारत

तर्ज :- (1. बस्ती-2 पर्वत-2... 2. तीरथ करने... 3. जैन धर्म के... 4. जीवन में कुछ... 5. दुःख से घबराओ...)

हाय रे! दयालु भारत तेरी, दया माया तो अपरम्पार। हाय...
आतंकी कसाब सुरक्षा हेतु, खर्च किया धन बेशुमार।। हाय... (टेक)

अन्नदाता किसान मरे हजार, आत्महत्या से हर साल,
उसकी सुरक्षा करने हेतु, भारत न खर्चे एक दीनार।। हाय रे... (1)

आम जनता की सुरक्षा सुविधा हेतु नहीं है देशी सरकार,
आतंकवादी भ्रष्टाचारी हेतु, सुविधा सुरक्षा है दमदार।। हाय रे... (2)

बाघ की सुरक्षा करने हेतु, करते हो धन खर्च अपार,
धन के लिये तुम मारो, हो उपकारी माता गौ हजार।। हाय रे... (3)

बोरवेल में गिरे बच्चों को, निकालने में धन जन अपार,
किंतु न मुँह बोरवेल का बंद करे, ऐसी निकम्मी दया निधान।। हाय रे... (4)

अहिंसा परमो धर्म वाला, देश कहा जाता सदा ही काल,
शिक्षित सभ्य सम्पन्न ही अधिक, बनते हैं कन्याओं के काल।। हाय रे... (5)

शराब पिलाकर मांस खिलाकर, कोकाकोला से करो बीमार,
तम्बाकू खिलाकर, बीड़ी पिलाकर, देते हो तन्दुरुस्ती स्फूर्ति अपार।। हाय रे... (6)

वृक्षारोपण स्वास्थ्य सफाई हेतु, विदेशों से आये धन अपार,
भ्रष्टाचार फैशन व्यसनों में, उससे अधिक खर्चे धन अपार।। हाय रे... (7)

मत्स्यपालन मुर्गी पालन को, कृषि कहकर करते हो प्रचार,
उन्हें पालकर बड़ा होने पर, उन्हें मारकर करो आहार।। हाय रे... (8)

आक्रान्ता लुटेरे शासक जनों को, महान् कहकर करो आदर,
भारत के महान् पुत्रों को, नहीं देते हो सही आदर।। हाय रे... (9)

हीरो-हीरोईन खेल-खिलाड़ी, दुष्ट नेता का करते आदर
देश उपकारी सज्जन किसान, श्रमिक सन्तों का नहीं सम्मान।। हाय... (10)

और भी तेरी अनेक दया, माया के कारण होता बेकार,
इसलिये सत्य बताने हेतु, ''कनकनन्दी'' की यह दरकार।। हाय... (11)

क्यों करो हैं ढोंगाचार?

तर्ज :- (1. बस्ती-बस्ती पर्वत-पर्वत... 2. जैन धर्म के हीरे मोती...)

यदि करना है विपरीत काम, क्यों करो है ढोंगाचार ... 2
घडियाली आँसू बहाये नयने, करनी तुम्हारी क्रूराचार ... (टेक/स्थायी)

ग्रन्थ भी पढ़ो भाव न धरो, न करो तुम सदाचार
धर्म भी करो पावन न बनो, नहीं है तुममें पवित्राचार ...(1)

मन्दिर जाओ गप्पे लगाओ, फैशन करते दुष्टाचार/(पापाचार)
दर्शन कम प्रदर्शन भारी, करते हो तुम मायाचार... (2)

पूज्य गुण प्राप्ति हेतु न पूजा, पन्थ मत (का)बाह्य आडम्बर
निन्दा चुगली ईर्ष्या-द्वेष भाव, मोक्ष मार्ग से बाह्य आचार ... (3)

तीर्थयात्रा का बहाना बनाकर, करते हो तुम मनोरञ्जन
फैशन-व्यसन पिकनिक करते, किन्तु न करते मनमञ्जन ... (4)

धर्म कार्य के अध्यक्ष बनो, बनो तुम है पदाधिकारी
दया दान सेवा कुछ न करो, बनते हो तुम शासनकारी ... (5)

पर्व उपवास रूढ़ि पालते, पालो नहीं है नैतिकाचार
सहज सरल भाव न रखते, न ही पालते समताचार ... (6)

पढ़ाई करो आधुनिक बनो, नहीं हैं तुममें आधुनिक ज्ञान
बगुला समान सफेद पोष, अन्तरंग में है कुटिलाचार/(धूर्ताचार) ... (7)

नेता भी बनो भाषण करो, नहीं है तुममें सदाचार
रक्षक बनकर भक्षक बनो, राष्ट्र द्रोहात्मक भ्रष्टाचार ... (8)

डिग्री प्राप्त कर नौकर बनो, चाकर बनकर नौकरशाह
काम न करो शोषण करो, भ्रष्टाचार में शाहनशाह ... (9)

धार्मिक बनो दिल न कोमल, गुरु गुणी जने नहीं आदर
सर्व जीव में आत्मा भी मानो, तो भी उनसे क्रूराचार ... (10)

सभ्य भी बनो शिक्षित बनो, सेवा न करो है बुजुर्गजन
माता पिता के भी आदर न करो, सभ्य आचरण से हो अञ्जान ... (11)

''कनकनन्दी'' का आह्वान सुनो, त्याग करो है ढोंगाचार
सरल सहज पावन बनो, जिससे पाओगे शान्ति अपार ... (12)

इण्डियनों के पिछड़ापन के कारण एवं निवारण

(भारत के पतन एवं उत्थान के कारण)

राग :- (सुनो सुनो ऐ दुनियाँ वालो...)

सुनो इण्डियन सुनो हिंग्लिस्थानी, पिछड़ापन की सच्ची कहानी
जिसे सुनकर जिसे गुनकर, तुम रचाओ प्रगति कहानी .... (स्थायी)...

पिछड़ापन के प्रधान हेतु, अव्यस्थित कार्य पद्धति
अनुशासनहीन तेरी प्रवृत्ति, कार्य करने में आलस्य वृत्ति
कर्त्तव्यनिष्ठा तुम में नहीं है, दक्षता प्राप्त करते नहीं है
अकल बिना नकल प्रवृत्ति, सत्य-तथ्य बिना तेरी कृति ...(1)

शोध-बोध बिना तुम्हारी शिक्षा, साक्षर होना ही तुम्हारी इच्छा
डिग्री प्राप्त करो नौकरी हेतु, नौकरी करना शोषण हेतु
भ्रष्टाचार हेतु तेरी राजनीति, रक्षक बनकर भक्षक नीति
जाति पंथ क्षेत्र भाषा आधारित, राजनीति तेरी फूट की नीति ...(2)

न्यायालय तेरा अन्याय हेतु, प्रभावशाली व्यक्ति रक्षा हेतु
अतिदेरी से फैसला करो, साक्षी आधारित निर्णय करे
आतंकवादी व दोषी नेता हेतु, करोड़ों का खर्च रक्षण हेतु
छोटे दोषी हेतु कठोर नीति, सही में कानून अन्ध ही नीति ...(3)

गुलामी कानून अभी भी चले, बेचारी जनता अभी भी मरे
मद्य विक्रय अभी भी चले, पशु हत्या अभी भी चले
तुम्हारी पुलिस सब से भ्रष्ट, रक्षक रूप में महाराक्षस
नौकर रूप मे साक्षात् यम, धन जान मान करे हरण ...(4)

व्यापार उद्योग में सच्चाई कहाँ, झूठ मिलावट शोषण वहाँ
जमाखोरी नकली वस्तु विक्रय, करचोरी धोखाधड़ी प्रचुर
गन्दगी फैलाओ प्रदूषण करो, वृक्ष पशु की हत्या भी करो
फैशन-व्यसन दिखावा करो, आधुनिकता का ढोंग भी करो ...(5)

धर्म में नहीं है आध्यात्म लक्ष्य, पवित्र भावना महान् लक्ष्य
सत्य अहिंसा व परोपकार, प्रामाणिकता व नैतिकाचार
धर्म में भी चले राजनीति व्यापार, बाह्य में प्रचार ढोंगाचार
धन जन मान का प्रदर्शन होता, आत्मप्रदर्शन का नहीं है पता ...(6)

मातृभाषा का नहीं सही ज्ञान, अंग्रेजी भाषा का करो है मान
इसलिए स्वसंस्कृति ज्ञान से, अनजान होकर बने हीयमान
इसका प्रतिफल मिल रहा है अभी, विभिन्न रोगों के बन गये हो रोगी
तनाव एड्स डायबिटीज रोगी, हृदयाघात से क्षय के भोगी ...(7)

दुर्घटना से आत्महत्या पर्यन्त, तलाक, विघटन, हड़ताल तक
आतंकवाद से नस्लवाद पर्यन्त, ये प्रतिफल तुम्हारे कृत्य
दोषों को जानकर कर निवारण, जिससे होगा तेरा कल्याण
'कनकनन्दी' की यही भावना, इसी हेतु हुई यह रचना...(8)

आधुनिक इंडियन की एक ही भाषा

(व्यंगात्मक उद्बोधनपरक कविता)

तर्ज :- (1.सुनो सुनो ए दुनियाँ... 2. नगरी-नगरी...)

मै हूँ आधुनिक इंडियन मुझे आती है एक ही भाषा।
हिन्दी अंग्रेजी व मातृभाषा मेरी केवल है सहायक भाषा।। ...

मूल भाषा मेरी एक ही होती है, वह है धन की भाषा।
परिवार, शिक्षा, व्यापार, समाज, न्याय, राजनीति, धर्म की भाषा।।

धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष में मुझे, आवे अर्थ पुरुषार्थ की भाषा।
अर्थ बिना मुझे सब अनर्थ लगे, न आवे मुझे दूसरी भाषा।। मै हूँ...(1)

अर्थ की आवश्यकता को मैंने, बना लिया है सर्वेसर्वा।
साधन को मैंने साध्य बनाकर, आत्मा का कर दिया खातमा।।

भौतिकवादी पाश्चात्य देश, आज समझ रहे नैतिक भाषा।
आध्यात्मवादी मैं इंडियन, भूल गया हूँ नैतिक भाषा।। मै हूँ...(2)

परिवार

धन ही मेरा होता सर्वस्व, मै धनमय धन ही मैं हूँ।
धन ही मेरा माता-पिता भाई-बहिन व धन में मैं हूँ।।
परिवार में होता आदर जब मेरे पास होता है धन।
धन के बिना मेरे सुगुण हो जाते हैं रफुचक्कर।। मैं हूँ...(3)

शिक्षा

शिक्षा का लक्ष्य, माध्यम, उत्तीर्ण डिग्री उपयोग होता है अर्थ।
अर्थ बिना शिक्षा का सर्वस्व हो जाता है पूर्ण अनर्थ।।

व्यापार

व्यापार में कहना ही क्या इसकी भाषा तो सदा प्रसिद्ध।
व्यापार का सर्वस्व ही धन, इसके बिना न कहीं प्रसिद्ध।। मै हूँ...(4)

समाज

समाज में भी प्रतिष्ठा मिले, जिसके पास हो धन की भाषा।
इस भाषा बिन समाज न चलता अभी तो है इसी का सिक्का।।

न्याय

न्याय में भी चले धन की भाषा जिसका धन उसका न्याय।
धन की भाषा बिना बेचारा, निर्दोषी भी दण्ड़ पाय।। मैं हूँ...(5)

राजनीति

राजनीति में तो सदा ही चले, धन की भाषा अति प्रचुर।
राजनीति तो धन आधारित, लोकतंत्र से समाजवाद।।

धर्म

धर्म सीमा से परे धन की भाषा अभी चल रही धर्म क्षेत्र में।
धन ही धर्म धन ही मर्म धन ही स्वर्ग मोक्ष क्षेत्र में। मैं हूँ...(6)

गर्भ से लेकर मरण तक मेरा वास्ता पड़े धन भाषा से।
इसलिये मुझे इसी भाषा का प्रयोग आता है हर क्षेत्र में।।

जागरण व सुप्त अवस्था अथवा सुषुप्त या स्वप्न अवस्था।
हर अवस्था में इसी भाषा का प्रयोग करना मेरी निष्ठा।। मै हूँ...(7)

इसलिये मेरी भाषा बिना कहीं भी न होता कोई काम।
अन्य भाषा को समझने योग्य नहीं है क्षमता मेरे पास।।

इसी भाषा का अन्य नाम है मुद्राराक्षस या अर्थ अनर्थ।
कनक, कांचन, वैभव, सम्पत्ति, परिग्रह या संग्रह अर्थ।। मै हूँ...(8)

इसलिये तो प्रसिद्ध हुआ सब रस राम रूपैया भैया।
बाप बड़े न भैया जग में सबसे बड़ा रूपैया।।

गोल्ड इज गॉड गॉड इज गोल्ड भी कहलाये भैया।
मनी मनी मनी स्वीटर देन हनी तुम हो प्यारे भैया।। मै हूँ...(9)

इसी भाषा की उपभाषा भ्रष्टाचार, मिलावट नकली माल।

शोषण, कालाधन, धोखाघड़ी, अन्याय जमाखोर अत्याचार।।

भ्रूण हत्या व दहेज हत्या, चोरी, डकैती, आतंकवाद।
अपहरण, अहंकार व भेद-विभेद अथवा होवे नस्लवाद।। मै हूँ...(10)

इसलिये मुझे समझ न आती, धर्म की भाषा या गुरु की भाषा।
नैतिक भाषा या कानूनी भाषा देशी भाषा या विदेशी भाषा।।

इसलिये तो तीर्थंकर बुद्ध साधु मेरी भाषा से विरक्त।
अर्थ को अनर्थ का मूल जानकर स्वार्थ लाभ में होते हैं रक्त।। मैं हूँ...(11)

इससे मझे आभास होता अर्थ त्याग से हो स्वार्थ लाभ।
इसलिये गुरु ''कनकनन्दी'' ने कविता से किया हमारा लाभ।।

मैं हूँ आधुनिक इंडियन मुझे आती है एक ही भाषा।
हिन्दी अंग्रेजी व मातृभाषा मेरी केवल है सहायक भाषा।। मै हूँ...(12)

भारतीय नारी की गरिमावस्था एवं पतितावस्था

तर्ज :- (1. है यही समय की पुकार... 2. सुनो सुनो...)

सुनो सुनो हो भारतीय नारी, सुनो हे तेरी गौरव गाथा।
तुम हो आर्या सुपुत्री तुम, उभय कुल की दीपिका सुता...2 (टेक)

अनेक रूप तेरे जग में, कन्या, माता (भार्या), आर्या, बहिन...2
विदुषी, सती, संस्कार दात्री, लेखिका, धात्री, पोषणकर्त्ती...2

तुम से जन्में तीर्थंकर बुद्ध, ऋषि, मुनि, ज्ञानी, सती सावित्री,
तत्त्ववेत्ता व दार्शनिक, वीर, राजा, महाराजा, सकल चक्री...2 (1)

अनेक तेरा प्रसिद्ध नाम, ब्राह्मी, सुन्दरी, सीता, सावित्री...2
गार्गी, लीलावती, चन्दनामती, चेलना, मैनासुन्दरी सती...2

मैडमक्यूरी, मदर टेरेसा, नाइटेंगेल, जीजाबाई
निवेदिता व कस्तुरीबाई, सरोजिनी नायडू, लक्ष्मीबाई...2 (2)

तेरे से अनेक रूपक बने, लक्ष्मी, सरस्वती, सती दुर्गा...2
तेरा विशेषण पहले आवे, मात-पिता, भगिनी-भैया...2

जन्मस्थान को मातृभूमि कहे, स्वभाषा है मातृभाषा।
''**जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरियसी**'' कहती देव भाषा...2 (3)

''**यत्र नार्यस्तु पूज्यते रमन्ते तत्र देवता**'' आर्य भाषा...2
गृह लक्ष्मी, धन लक्ष्मी, सरस्वती, रणचण्डी कहे संस्कृत भाषा...2

इसलिये तो भारत रहा कभी, विश्वगुरु व समृद्ध देश।
चार आश्रम से युक्त भारत, सामाजिक रचना से महान् देश।।...(4)

दीर्घ परतंत्रता के कारण, उपरोक्त गरिमा विकृत हुई...2
शिक्षा दीक्षा संस्कार विहीन, भारतीय महिला विकृत हुई...2

स्वतंत्र भारत में तो और भी विकृतियाँ विकसित हुई।
पाश्चात्य अन्धानुकरण के कारण, फैशन-व्यसन में वृद्धि हुई...2 (5)

पढ़ाई, नौकरी, किट्टी पार्टी व टी.वी. सिरियल ने जहर घोला...2
टेन्शन, फोबिया, चिड़चिड़ापना, अश्लील हरकतों को बल मिला...2

इन कारणों से सबसे अधिक, टेन्शनयुक्त भारतीय नारी
भ्रूणहत्या से आत्महत्या तक, फल भोग रही आधुनिक नारी...2 (6)

जो वृक्ष स्वमूल से कट जाये, उसकी सुरक्षा वृद्धि न होती...2
वैसा ही जो स्व-संस्कृति से, कट जाये उसकी उन्नति कभी न होती...2

परिवार सेवा गुरु सेवा, शील सदाचार से जो होती दूर
उसका पतन वैसा होता, जैसे वृक्ष के मूल से दूर...2 (7)

साक्षर के साथ संस्कार पालो, आधुनिकता के साथ शील...2
प्रगति के साथ विनम्र बनो, दृढ़ता से रहो पापों से दूर...2

कुरीति त्यागो नैतिक बनो, मान-मर्यादा का करो पालन
गरिमामय जीवन जीओ, ''कनकनन्दी'' का है आह्वान...2 (8)

आधुनिक पढी-लिखी रानी

(आधुनिकता से नारी के लिए सुविधा एवं समस्यायें)

तर्ज :- (1. हे गुरुवर धन्य हो तुम... 2. होठों पे सच्चाई...)

आधुनिक पढ़ी-लिखी रानी है, कौन भरेगी (अब) पानी (है)
नदी भी आ गई किचन में, डिनर खाते हैं होटल में 2 (टेक)...

आटा मसाला न पीसती है, पैकेट में रेडीमेड लाती है
सड़े गले मिलावट मिलते, चमक दमक पैकिंग भाती है 2 (1)...

पानी छानना नहीं आता है, बिसलेरी वाटर (जो) पीती है।
दश रूपयों में मिले एक लीटर जिससे लगे स्टेटस सिम्बल।। (2)...

बाइक से वाकिंग जाती है, मन्दिर पैदल न जाती है।
किटी पार्टी क्लब (में) जाती, आहार दान न करती है।। (3)...

टीवी सिरियल देखती, स्वाध्याय प्रवचन न जाती है।
फैशन से शरीर सजाती है, मन का मंजन न करती है।। (4)...

ब्यूटी पार्लर जाती है, बडों की सेवा न करती है।
गप्प में समय बिताती है, बच्चों को संस्कार न देती है।। (5)...

लिपिस्टिक ओंठ में लगाती (है), खाना बनाना न जानती है।
नेलपालिश नखों में लगाती है, घर की सफाई न आती है।। (6)...

अप टू डेट मैडम बनती है, ज्ञान-विज्ञान न जानती है।
हाईहिल सेण्डल पहनती है, स्वास्थ्य रक्षा न जानती है।। (7)...

प्रेमी के साथ घूमने जाती, अनैतिक पूर्ण काम करती।
इससे उसे शर्म न आती, अच्छे कामों में शर्माती है।। (8)...

इन कारणों से होती निष्क्रिय, आलस्य प्रमाद छा जाता है।
व्यवहार ज्ञान सदाचार बिना, बुद्धि का विकास न होता है।। (9)...

हिताहितज्ञान पुण्यपापबिना, महान् विचार न होता है।
इसके बिना सुख-शान्तिमय, जीवन कभी न बनता है।। (10)...

तनाव रहता प्रेम न मिलता, सहयोग भी न मिलता है।
एकली होती उदास रहती, खोटा (छोटा) विचार आता है।। (11)...

मोटापा आता शुगर लाता, दिल भी कमजोर होता है।
हड्डी भी होती कमजोर भंगुर, शरीर होता रोग का घर।। (12)...

इत्यादि से वह दुःखी भी होती, झगड़ा संक्लेश निन्दा होती।
तलाक देती या घर से जाती, आत्महत्या से जीवन देती।। (13)...

इसलिए बहिनों संभल जाओ, शिक्षित बनो, आदर्श बनो
मूल को सींचो विकास करो, 'कनकनन्दी' का आह्वान सुनो।। (14)...

सुखी एवं दुःखी होने के कारण

(दुःखी की विकृत भावना)

हे दुःखी देश इंडिया सुखी बनने का उपाय करो
(खुशी के पैमाने पर भारत का स्थान 90वें स्थान पर पृथ्वी में)
(एक अन्तर्राष्ट्रीय विदेशी रिपोर्ट पर आधारित)

तर्ज :- (1. है यही समय की पुकार... 2. सुनो सुनो ऐ दुनियाँ वालों...)

सुनो इंडियन! सुनो दुःखी देश, तुम्हारे दुःखों के सच्चे कारण।
इसे सुनकर निवारण कर दुःखों के कारण हर प्रकार।।...

तुम हो आध्यात्म देश भारत, विश्व गुरु भी कहलाते थे।...2
अक्षय अनन्त निर्वाण सुख तुम्हारे पूर्वज पाते थे।।...2
इस सुख हेतु चक्रवर्ती का भी भोग-वैभव त्यागते थे।
आत्मा के शोध-बोध-प्राप्ति से परम सुख को पाते थे।। (1) सुनो इंडियन...

तुम तो तुम्हारे पूज्य पुरुषों से विपरीत काम करते हो।...2
इसलिए तो खुशीस्तर पर 90 वें स्थान को पाते हो।।...2

लक्ष्य तुम्हारा भौतिक हुआ खाना-पीना मजा करना।
इसी लक्ष्य से चमड़ी, दमड़ी, पढ़ाई, बढ़ाई में मस्त रहना।। (2) सुनो इंडियन...

इसलिए न्याय-अन्याय व करणीय-अकरणीय न मानते।...2
भ्रष्टाचार व मिलावट तथा धोखाधड़ी पाप करते।।...2

अकल बिना नकल करते स्वयं को सुपर मानते हो।
फैशन-व्यसन बाह्य दिखावा में शक्ति सम्पत्ति गंवाते हो।। (3) सुनो इंडियन...

आलस्य, प्रमाद, कामचोरी में समय व बुद्धि गँवाते हो।...2
जिसके कारण स्वास्थ्य हानि व आत्मिक पतन करते हो।।...2

फेइम-नेइम मनी गेइन हेतु हर काम तुम करते हो।
शिक्षा, व्यापार, राजनीति, सेवा धर्म भी करते हो।। (4) सुनो इंडियन...

दूसरों के गुण विकास से भी ईर्ष्या-द्वेष-घृणा करते हो।...2
दुःखी रोगी दीन, गरीब का घृणा से सहयोग न करते हो।।...2

गुण-ग्रहण का भाव न रखते, निन्दक गुण द्वेषी बनते हो।
गुण हीन व सदोषी होते भी स्वयं को महान् जताते हो।। (5) सुनो इंडियन...

सादा जीवन उच्च विचार हीन कृत्रिम जीवन ढोते हो।...2
सात्विक पौष्टिक ताजा भोज्य छोड़ तामस भोजन करते हो।।...2

माता-पिता की सेवा न करते संयुक्त परिवार न भाता है।
संकीर्ण-स्वार्थ व स्वच्छन्द जीवन तुमको अधिक सुहाता है।। (6) सुनो इंडियन..

प्रदूषण व गन्दगी फैलाना तेरा जन्म सिद्ध अधिकार।...2
जाति धर्म भाषा क्षेत्र हेतु भेद भाव तुझे प्रियकर।।...2

मन के कुछ, वचन में कुछ और काया में कुछ करते हो।
धर्म शिक्षा व कानून, कार्य में एक रूप न लाते हो।। (7) सुनो इंडियन...

अति लालसा तृष्णा हेतु अन्याय से भी धन कमाते।...2
जन्म-मृत्यु-विवाह-पार्टी में फिजूल खर्च भी करते।।...2
इसके हेतु ऋण भी लेते, ब्याज से धन हानि करते हो।
खेल-खिलाड़ी, नट-नटी हेतु फिजूल खर्च भी करते हो।। (8) सुनो इंडियन...

अन्नदाता किसान हेतु सरकार न धन खर्च करती।...2
मांस, मद्य व खेलादि हेतु प्रचुर धन भी खर्च करती।।...2
कानून तुम्हारा अति खर्चीला शीघ्र भी न्याय न मिलता है।
राजतंत्र अतिभ्रष्टतंत्र जंगली राज भी चलता है।। (9) सुनो इंडियन...

इत्यादि कारण तनाव, अशान्ति रोग से पीड़ित होते हो।...2
डिप्रेशन फोबिया आदि से आत्महत्या तक करते हो।।...2
इन कारणों से तुम्हारी खुशी का स्तर भी घट जाता।
खुशी ही नहीं तो आत्मिक शान्ति का आनंद तू कहाँ पाता।। (10) सुनो इंडियन...

सुख यदि चाहो कुप्रवृत्ति त्यागो करो हे! सत् प्रवृत्ति।...2
''कनकनन्दी'' की पवित्र भावना पाओ हे आत्मसंतुष्टी।।...2
सुनो इंडियन! सुनो दुःखी देश, तुम्हारे दुःखों के सच्चे कारण।
इसे सुनकर निवारण कर दुःखों के कारण हर प्रकार।। (11) सुनो इंडियन...

भारतीयों के भ्रष्टाचार एवं पापाचार के कारणों का अनुसन्धान

तर्ज :- (1. पावन है इस देश... 2. मन की मुरलिया...)

भारतीयों के भ्रष्टाचारों का मैं कर रहा हूँ अनुसन्धान।
सनम्र सत्यग्राही दृष्टि से, दया भाव से परिशोधन।। ... (टेक)

अन्तरंग में पूर्वार्जित कर्म वर्तमान हैं बाह्य कारण।
समग्रदृष्टिकोण समन्वित, मनोविज्ञान से वातावरण।।...2

सैकड़ों वर्ष गुलाम होने से, मौलिकता का हुआ क्षरण।
गुलाम मानसिकता से लेकर अकल बिना नकल कारण।। (1) भारतीयों...

स्व आध्यात्मिक संस्कृति भूला, भौतिकता का किया वरण।
स्वतंत्रता के परिवर्तन में, स्वच्छन्दता का दीवानापन।।...2

शासक विदेशी आक्रान्ताओं को, मान बैठा है अतिमहान्।
इसलिए तो स्वतंत्र भारत में, उनका होता अन्धानुकरण।। (2) भारतीयों...

उनके समान खान-पान व वेश-भूषा औ चाल चलन।
उनकी शिक्षा व भाषा, कानून, सिनेमा, गान संविधान।।...2

उनके आर्थिक विकास ज्ञान से हो रहा है सम्मोहित
आध्यात्मिकता विवेक त्याग कर मुद्राराक्षस से हुआ पतित।। (3) भारतीयों...

अनन्तकाल की अतृप्त इच्छा, कलयुग (कलियुग) में करे दमन।
निर्जीव यंत्रों का दास बनकर, त्याग किया है स्वावलम्बन।।...2

भोग विलासिता तृष्णा के कारण, धन आपूर्ति का बढ़ा प्रमाण।
इसलिए हर भ्रष्टाचार, बढ़ रहा दिनों-दिन.. जान।। (4) भारतीयों...

इसी हेतु पढ़ाई भी करे जिससे न आता गुण महान्।
फैशनी-व्यसनी-आलसी होकर कर रहा है आत्म पतन।।...2

ऐसा ही नौकरी, व्यापार, कला व राजनीति में बन बेईमान।
कानून, उद्योग, धर्म आदि में, बेईमानी से भी करे वर्तन।। (5) भारतीयों...

परिवार से संसद तक व देवालय से न्यायालय काम।
हर काम व हर स्थिति में, सच्चाई अच्छाई है बेकाम।।...2

इनसे होता पाप का बन्ध व आचार-विचार होता विलोम।
विवेक, विनय कार्यपद्धत्ति का, भारत में हो रहा है लोप।। (6) भारतीयों...

अनुभव हीन पद्धति विहीन, अनुशासन न होता पालन।
गुण-गुणियों का नहीं सम्मान इसलिए हो रहा पतन।।...2
हीरो-हीरोईन, अश्लील-उद्दण्ड बाहुबल का होता सम्मान।
इसलिए वे मालिक बनकर, संस्कृति को करे हीयमान।। (7) भारतीयों...

धर्म में भी नहीं नैतिकता, आडम्बर है सर्वत्र जान।
आध्यात्मिकता के परिवर्तन में भौतिकता का है सम्मान।।...2
इनका कुफल भारतीय जन, भोग रहे हैं प्रतिदिन।
जनसंख्या वृद्धि भ्रष्टाचार रोग गन्दगी में हो रहा अग्रिम।। (8) भारतीयों...

ईमानदारी में सत्त्यासी स्थान, खुशी में नब्बेवें स्थान।
वैश्विक दृष्टि से आज इंडिया का नहीं रहा है कुछ सम्मान।।...2
संयुक्त राष्ट्र संघ तक में, नहीं मिल रहा है योग्य स्थान।
सर्वोच्च विश्वविद्यालयों में भी भारत का नहीं उच्चस्थान।। (9) भारतीयों...

न्यायालयों में नहीं शीघ्र निर्णय न्यायोचित सत्य प्रमाण।
संसद तो सबका दादा काला अंग्रेज व बेईमान।।...2
पृथ्वीभर में तीन-चार देश इंडिया से निम्न स्थान।
विश्वगुरु भारत प्रतिस्पर्द्धारत, प्राप्त करने को निम्नस्थान।। (10) भारतीयों...

इन कुकृत्यों को जानकर त्यागो, तब होगा भारत महान्।
''कनकनन्दी'' तो इसी प्रयास में कर रहा है तुम्हें आह्वान।।...2
भारतीयों के भ्रष्टाचारों का मैं कर रहा हूँ अनुसन्धान।
सनम्र सत्याग्राही दृष्टि, दयाभाव से परिशोधन मान।। (11) भारतीयों...

सुधारपरक व्यंगात्मक कविता

विश्वगुरु भारत बन गया बेईमानों का देश

(ईमानदारी में भारत का स्थान 87वें पायदान पर)

आधुनिक इण्डिया की सच्ची तस्वीर

राग :- (1. कहाँ गये चक्री... 2. सुनो सुनो ऐ दुनियाँ... 3. तन में तम्बूरे में... 4. पूजा-पाठ...)

कहाँ गयी वह ईमानदारी जिससे भारत महान् था
प्राण जाये पर वचन न जाये ऐसा जिनका शपथ था

प्रामणिकता के हेतु ही भीष्म ब्रह्मचर्य का नियम लिया/(व्रत को धारा)
पिता के वचन पालन हेतु श्रीराम वनवास स्वीकारा

हरिश्चन्द्र भी प्रतिज्ञा हेतु श्मशान में शवदाह भी किया
प्रामाणिकता की सिद्धि हेतु सीता ने अग्नि में प्रवेश किया... (1)

''सत्यमेव जयते'' जिस भारत का महान् भी मन्त्र रहा
वही भारत आज ईमानदारी में, सत्यासीवें (87) स्थान में रहा
यह तो आज चिन्ता, चिन्तन व शर्मनाक परिस्थिति ही मानो
इससे श्रेष्ठ प्रामाणिक हेतु मरण वरना उचित जानो... (2)

यत्र तत्र सर्वत्र आज इण्डिया में बेईमानी छाई
मन वचन व कार्य से आज ईमानदारी गायब हुई

स्कूल में देखो शिक्षक न पढ़ाते ट्यूशन पढ़ाते धन लोभ से
छात्र भी देखो नकल करके डिग्री पाकर नौकरी करते... (3)

नौकर बन के काम न करते भ्रष्टाचार से धन कमाते
व्यापार उद्योगे मिलावट तथा शोषण करके धन जोड़ते
लोकसभा व विधानसभा में जनसेवक बने तानाशाह
काम न करके हंगामा करते भ्रष्टाचार के शाहनशाह... (4)

पुलिस देखो रक्षा हेतु नौकर बन के राक्षस बनते
हर पाप में इनका हाथ चोरी भी करते लाठी भांजते
डॉक्टर आज डाकू बने हैं धन सहित जान भी लेते
हड़ताल करके रोगी को मारते फर्जीवाड़ा से धन कमाते... (5)

न्यायालय बना यम का आलय समय धन के शोषण द्वारा
कर्मचारी से वकील तथा जज भी कमाते अन्याय द्वारा
धर्म में देखो बाह्य दिखावा पवित्र कर्त्तव्य नहीं करते
नौकर द्वारा धर्म करते गुरु की सेवा नहीं करते... (6)

परिवार व समाज में देखो, स्व-स्व कर्त्तव्य नहीं करते
माता-पिता व वृद्ध रोगी के समुचित सेवा नहीं करते
स्व-स्व के परिसर की सफाई-काम भी नहीं करते
यत्र तत्र भी गन्दगी करके पर्यावरण को नष्ट करते... (7)

अनुशासन व आचार न पालते अश्लील उद्दण्ड काम करते
तथापि स्वयं को सभ्य मानते आधुनिकता का ढोंग रचाते
''**कर्मण्येव अधिकारस्तु**'' यह सन्देश श्रीकृष्ण ने दिया
''**मा फलेषु कदाचन**'' ऐसी निस्पृहता गीता में कहा... (8)

महावीर ने '**वीतरागता**' को सबसे महान् धर्म भी कहा
'**तृष्णा त्याग**' को बुद्धदेव ने दुःख निवृत्ति का उपाय कहा
''**साँच बराबर तप नहीं है**'' झूठ बराबर होता पाप
जाके हिरदे साँच बैठा है वाके हिरदे बैठा है आप... (9)

''**जिनको मानते उनकी न मानते**'' कर रहे हैं विपरीत काम
'**मुँह में राम बगल में छुरी**' ऐसे चल रहा देश का काम
बाहर में भगवान् की जय हो, अन्दर में बेईमान की
गोमुख व्याघ्र' समान क्रिया चल रही इण्डिया महान् की... (10)

इण्डियन बने बड़े इडियेट काम न करते गाल बजाते
सफेदपोश दिन के चोर कर्त्तव्य चोरी प्रायः करते
इसी कारण आज संत्रस्त भारत में हो रहा है हाहाकार
इसे दूर करने का उपाय, ईमानदारी को करो स्वीकार... (11)

इसी हेतु यह रचना हुई, 'कनकनन्दी' की यही पुकार
मिथ्या को त्यागो सत्य को भजो जिससे होगा बेड़ा पार...

पापी पेट से अधिक पाप मन से मानव करता पापाचार

तर्ज :- (नगरी नगरी...)

सुनो सुनो हे! मानव जाति, सुनो तुम्हारी नीच प्रवृत्ति।
इसे सुनकर इसे मानकर, धारो हे सच्ची प्रवृत्ति।।

तुम तो स्वयं को श्रेष्ठ मानकर, करते हो अभिमान।
अभिमान के कारण तुम, करते हो नीच काम।।
कुछ ही महापुरुष हेतु, मानव जाति महान् हुई।
अधिकांश मानव जीव की होती अधम प्रवृत्ति।। (1) सुनो सुनो...

तुम्हारा जीवन तथा वैभव, निम्न जीवों के आश्रित हैं।
उनके दोहन शोषण द्वारा, करते एशो आराम हैं।।
भोजन से प्राणवायु तक, दूध घी व मक्खन है।
औषधि, वस्त्र, फर्नीचर भी, तिर्यंचों के अवदान है।। (2) सुनो सुनो...

तुम्हारे बिना तिर्यंच जीव, अधिक होते खुशहाल हैं।
उनके बिना तुम्हारा जीना, नहीं होता सरल है।।
तथापि तुम स्वयं को देते, उनसे अति गौरव।
समस्त पाप, फैशन, व्यसन, तुम ही करते हो सेवन।। (3) सुनो सुनो...

छोटा युद्ध से महायुद्ध तक, तुम ही करते हो सर्जन।
स्वजाति से पशु-पक्षी तक, तुम ही करते हो मर्दन।।

आवश्यक या अनावश्यक, तुम तो करते हो संहार।
प्रायः सिंहादि भोजन हेतु, करते हैं शिकार।। (4) सुनो सुनो...

अथवा आत्मरक्षा के हेतु, अन्यथा नहीं शिकार।
तुम तो खाली पेट से अधिक, भरा पेट करो शिकार।

पेट से अधिक पेटी के लिए, करते हो अत्याचार।
भ्रष्टाचार व शोषण युद्ध, पापमन से करो आचार।। (5) सुनो सुनो...

वृक्ष से लेकर स्वजाति तक, तुम से होते हैं संत्रस्त।
पर्यावरण के नाशक तुम, अन्य से होते हैं रक्षित।।

जो होता है मननशील, वह होता है मानव।
अतएव तुम मनन करके, त्यागो हे! दुष्ट स्वभाव।। (6) सुनो सुनो...

इसी हेतु ही ''कनकनन्दी'' करते हैं तुम्हें आह्वान।
दानवता छोड़ मानवता करो, करो हे विश्व कल्याण।। (7) सुनो सुनो...

क्या मानव यथार्थ से सर्वोदयी बना है?!
"कम सृजनशील क्यों है नयी पीढ़ी"

(माता-पिता-गुरु की सेवा में धनी लोग होते हैं गरीब)
(मेरा दीर्घ अनुभव तथा वैज्ञानिक नया शोध)

राग :- (1. ये मेरा प्रेम पत्र पढ़कर... 2. चले जाना जरा कह दो...
3. क्या मिलिए ऐसे लोगों से...)

ये मेरा प्रश्न स्वयं मुझसे, तथा ही पूछूँ दुनियाँ/(मानवों) से
क्या मानव विकास किया है, प्रत्येक क्षेत्र-भावों में? ... स्थायी ...

विकास हो क्षेत्र भौतिक में, किया हो भौतिक ज्ञान से
किया हो स्वार्थ संकीर्ण, किया हो तनाव धन से

किया हो प्रकृति शोषण, प्रदूषण वृद्धि क्षेत्र में...3
... ये मेरा प्रश्न स्वयं मुझसे... (1)

आतंकवाद व भ्रष्टाचार, युद्ध महायुद्ध क्षेत्र में
सदी इक्कीस प्रवेश किया, मानव अति गर्व भावों से
तो भी मानव पिछड़ रहा, सृजनशीलता के भाव में...3
... ये मेरा प्रश्न स्वयं मुझसे... (2)

विज्ञान के नव शोधों से भी, ज्ञात मेरा दीर्घ शोध है
आगम पुराण ग्रन्थों में, उल्लेख विज्ञान शोध हैं
इसके कारण कर्म सिद्धान्त, मनोविज्ञान तथ्य है...3
... ये मेरा प्रश्न स्वयं मुझसे... (3)

संकीर्ण वृत्ति कुशिक्षा टी.वी, भौतिक आसक्त चित्त है
इसके कारण सृजनशीलता, न असामान्य विचार है
नयी पीढ़ी में न उत्पन्न, यह विज्ञान विचार है...3
... ये मेरा प्रश्न स्वयं मुझसे... (4)

मेरा अनुभव दीर्घकालीन, यथा विज्ञान विचार है
प्राचीनकाल के अनेक व्यक्ति, होते थे सृजनहार रे
आत्मा से विश्वात्मा तक, होते थे उच्च विचार रे...3
... ये मेरा प्रश्न स्वयं मुझसे... (5)

इसी कारण आचार-विचार, उनके होते थे श्रेष्ठ रे
सभ्यता संस्कृति व विज्ञान, आध्यात्म होते थे ज्येष्ठ रे
महाज्ञानी हुए इससे, दिव्यध्वनि ज्ञान बोध रे...3
... ये मेरा प्रश्न स्वयं मुझसे... (6)

राजा महाराजा चक्री हुए, सर्वत्यागी सन्त भी हुए
ध्यान अध्ययन आत्मा के, शोध से ऋद्धिधारी हुए

सूरी उपाध्याय गणधर, सर्वज्ञ शुद्धात्मा हुए...3
... ये मेरा प्रश्न स्वयं मुझसे... (7)

अभी तो संकीर्ण सोच से, भौतिक दृष्टि के धारी हैं
छात्र से वैज्ञानिक तक, तथा धार्मिक जन भी हैं

अतएव महान् लक्ष्य का, होता जा रहा लोप है...3
... ये मेरा प्रश्न स्वयं मुझसे... (8)

भोजन पेय शिक्षा संस्कृति, संस्कार व सदाचार
समन्वय व परोपकार, क्षीण आत्म विचार है

इसके कारण सृजनशीलता, अद्वितीय भाव लोप है...3
... ये मेरा प्रश्न स्वयं मुझसे... (9)

धनी व्यक्ति भी न करते, सेवा माता-पिता-गुरु की
धन वृद्धि से लोभ बढ़े, गरीब होता है भाव से

तन-मन-आत्मा विकास हो, सबके हो ऐसा भाव में...3
... ये मेरा प्रश्न स्वयं मुझसे... (10)

सृजनशीलता भाव में सदा, 'कनकनन्दी' प्रवृत्त है
विश्वमानव भी करें काम, ऐसा पवित्र चित्त है

जिससे हो वैश्विक प्रगति, ऐसा हो भाव चित्त में...3
... ये मेरा प्रश्न स्वयं मुझसे... (11)

-कम सृजनशील हैं आज के युवा- (Provoking thought)

कुछ वयस्कों को यह बात शिकायत जैसी लग सकती है लेकिन वैज्ञानिकों ने दावा किया है कि आज के युवा पुराने जमाने के युवाओं की तुलना में कम सृजनशील और कल्पनाशील हो गये हैं। वर्ष 1970 के दशक में करीब तीन लाख सृजनशीलता परीक्षणों के अध्ययन के बाद अमेरिका के विलियम एण्ड

मैरी कॉलेज के शोधकर्त्ताओं ने पाया है कि हाल के वर्षों में बच्चों के बीच सृजनशीलता में कमी आयी है। इस अध्ययन का नेतृत्व करने वाली क्यूंग ही किम ने कहा कि वर्ष 1990 से बच्चों की अद्धितीय और असामान्य विचार लाने की क्षमता कम हो गई है। उन्होंने कहा कि वे अब कम विनोदप्रिय कम कल्पनाशील हो गये हैं और नये नये विचार सामने रखने की उनकी क्षमता भी घटी है। (राजस्थान पत्रिका)

-बच्चों में कम होती रचनात्मकता-

उनमें नई चीजों के प्रति कल्पनाशीलता कम होने लगी है। वे अपने विचारों को ठीक से प्रदर्शित करने में भी असफल हो रहे हैं। किम ने बताया कि स्कूलों में एक ऐसी नीति की जरूरत है जिसमें साल में एक बार इस तरह का टेस्ट हो जिसमें बच्चों की रचनात्मकता का पता लगाया जा सके और इसके परिणाम के आधार पर राज्यों के शिक्षा का मानक तय किया जाना चाहिए। किम ने बताया कि बच्चों में रचनात्मकता के कम होने का सबसे बड़ा कारण टी.वी. है। यह एक अप्रत्यक्ष गतिविधि है, जो कि बच्चों का दूसरे से सम्पर्क नहीं होने देता। (प्रातःकाल)

-अमीर लोग नहीं करते माता-पिता का ख्याल-

अमीर लोग अपने बुजुर्ग माता-पिता का ख्याल कम रखते हैं। यह बात एक अध्ययन में साबित हुई है। अमेरिका में लगभग 2790 लोगों पर अध्ययन में पाया गया है कि सैलरी बढ़ते ही लोग अपने माता-पिता को लेकर लापरवाही बरतने लगते हैं और वे अपने माता-पिता के काम में मदद करना लगभग बन्द कर देते हैं। इसके साथ ही रोज का काम और घर की साफ-सफाई के

लिए भी कम वक्त देते हैं। शोध के अनुसार प्रति साल 10 प्रतिशत सैलरी बढ़ने के साथ ही अमेरिकी महिलाएँ बुजुर्ग का ख्याल 36 प्रतिशत तक कम कर देती हैं, वहीं अपने काम में पुरुष 18 फीसदी तक कम कर देते हैं। अध्ययन में यह भी पाया गया कि सगे भाई-बहन या किसी और को मदद के काम में लगाना स्थिति को और भी जटिल कर देता है। कीव इकोनोमिक इन्स्टीट्यूट के प्रमुख शोधकर्त्ता ओलीना नीजालोवा ने बताया कि इस अध्ययन से यह बात सामने आई है कि देखभाल के लिए बनाई गई वर्तमान वैश्विक नीतियाँ एक-दूसरे से मेल नहीं खाती हैं। उन्होंने कहा कि बुजुर्गों के लिए देखभाल करना ज्यादा कठिन समस्या बनती जा रही है, क्योंकि जन्म दर घट रही है और लोग ज्यादा दिनों तक जीवित रहने लगे हैं। रिकॉर्ड संख्या में लोग रिटायर हो रहे हैं। अर्थशास्त्रियों ने सलाह दी है कि इस बोझ से निपटने के लिए ज्यादा संख्या में महिलाओं की नौकरी को प्रोत्साहित करना चाहिए और रिटायरमेन्ट की उम्र को भी बढ़ा देना चाहिए। इसके साथ परिवार और दोस्तों से यह कहा जाना चाहिए कि बुजुर्गों का ख्याल करें। हालांकि अध्ययन में पाया गया कि बुजुर्गों की देखभाल के प्रति ताजा रुझान अच्छा नहीं है।

(प्रातःकाल से साभार)

हे कृतघ्नी मानव! कृतज्ञी बन!

(वृक्षादि के मानव के प्रति उपकार)

(तर्ज - धरती बाँटी, अम्बर बाँटा, बाँट दिया इन्सान को...)

युगों-युगों से उपकृत है मानव, पशु-पक्षी वृक्ष कीटों से।
किन्तु कृतघ्न बना है मानव, पशु-पक्षी वृक्ष कीटों से।। (1)

उनसे खाया उनका खाया, उन्हें मारकर शव को खाया।
उनसे पीया उनका पीया, उन्हें मारकर खून भी पीया।। (2)

वसन भूषण घर बनाया, यान-वाहन व रथ बनाया।
उनसे रक्षण पोषण पाया, औषधि सुगन्धी उनसे पाया।। (3)

जीवन में हर काम भी लिया, कृषि वाणिज्य शिल्प भी किया।
युद्ध क्षेत्र में काम भी लिया, संगीत नृत्य आसन पाया।। (4)

पतंगों से धान्य फल पाया, कृमि केंचुआ से भूमि उर्वरा।
पशु-पक्षी से वन विस्तारा, दुधारू मादा से जो दूध पीया।। (5)

तोता-मैना से संगीत सुना, कबूतर मोर नृत्य दिखाया।
कोयल मधुर राग सुनाया, तितली ने मन मुग्ध किया।। (6)

उनसे शकुन ज्ञान भी पाया, जिससे आत्मरक्षण किया।
वैज्ञानिक ज्ञान यन्त्र भी सीखा, सुख-सुविधा के साधन पाया।। (7)

उनसे जो सुख मानव पाया, उसके बदले दुःख ही दिया।
मानव समान महा कृतघ्न, दुनियाँ में नहीं अन्य कृतघ्न।। (8)

वृक्षों को काटा जीवों को मारा, खून भी पीया शव को खाया।
चर्म को ओढ़ा चर्वी लगाया, • वेम्पायर सम क्रूरता किया।। (9)

• वेम्पायर= मानव रक्त पीने वाला मानव

मानव समान दानव नहीं, मनुष्य समान राक्षस नहीं।
नर सम कोई न भस्मासुर, उपकारी का करे संहार।। (10)

हे मानव तुम अभी तो जागो, पशु से नीच तुम न बनो।
तुम्हारा पाप तुम्हें खायेगा, छद्म प्रलय तुम्हें नाशेगा।। (11)

ग्लोबल वार्मिंग तापमान वृद्धि, ओजोन परते छेद जो वृद्धि।
असामान्य वृष्टि, भूकम्प वृद्धि, सुनामी रूप से प्राप्त कुबुद्धि।। (12)

तुम्हें न मान्य आत्मिक ज्ञान, विज्ञान के भी शोध-बोध-ज्ञान।
कंस दुर्योधन रावण समान, विध्वंसक है सब तेरा ज्ञान।। (13)

शेर भी नहीं है तुम सम क्रूर, हिटलर रूपे करोड़ों संहार।
स्वजाति भक्षक हे नर राक्षस, सर्प से अधिक तेरा दंश।। (14)

गिद्ध पक्षी से अति तू भक्षक, जीवन्त जन्तु के अति भक्षक।
लोमड़ी से भी अति चालाक, उपकारी के भी तुम हो भक्षक।। (15)

तीर्थंकर बुद्ध वैज्ञानिक जन, तेरे हित हेतु करे ज्ञान दान।
उनकी देशना को तू मान, स्व-पर हितार्थे कृतघ्न न बन।। (16)

'कनकनन्दी' की भावना जान, विश्वहितकारी भावना मान।
सोने के अण्डों की प्राप्ति समान, कृतघ्नता से करो विराम।। (17)

पशु-पक्षी से शिक्षा प्राप्त कर, परोपकार के सुकृत्य तू कर।
भक्ष्य भक्षण के संघर्षवाद को, त्याग कर मानो सहयोगवाद।। (18)

कन्या भ्रूण हत्या की आत्मकथा

तर्ज :- (चन्दा मामा दूर के...)

मैं ही बड़ी दुःखियारी हूँ, गर्भ मे शंकिता वाली हूँ
गर्भ में ही मेरे स्वजन द्धारा, बलि मैं चढ़ने वाली हूँ

गर्भ में मेरा प्रवेश हुआ, जब कल्लोल के रूप में
कुछ सप्ताह में तीव्रगति से, विकास हुआ भ्रूण रूप में

कुछ महीनों में हाथ पैर शिर का विकास हुआ भ्रूण रूप में
नाक कान आँख तंत्रिका तंत्र भी विकास हुआ मुझ में

देखने सुनने अनुभव की, क्षमता बढ़ी है तीव्र में
सुख दुःख की चेतना शक्ति, बढ़ती गई है मुझ में

लिंग निर्धारण अवयव का विकास जब हुआ मुझ में
मेरे ही स्वजन सोनोग्राफी से परीक्षण किया जब मुझ में

तब ज्ञात हुआ मैं तो कन्या हूँ वज्रपात हुआ उनमें
मेरी हत्या हेतु षड़यंत्र का सूत्रपात हुआ उनमें

दयावन्त समझाया कि क्या अपराध इस कन्या में
स्वजन ने समझाया कि कुलविनाशिनी यह कन्या है

इसके कारण हमारे कुल को लज्जित होना पड़ेगा
दहेज के लिए अकूत धन भी, इसे तो देना पड़ेगा

वृद्ध अवस्था में यह क्या, हमारे काम में आयेगी
केवल पालन पोषण के लिए यह हमारी बोझ बन जायेगी

यौन शोषण घर से भाग जाने या विधवा होने का डर है
इसीलिए इसे गर्भ में ही मारने का उपाय करो है

मुझे मारने के लिए यमरूपी डॉक्टर आया पास जब मेरे
करुणा से पुकारा मेरी रक्षा तुम करो है स्वजन मेरे

मेरी रक्षा हेतु कोई न आया माता पिता भाई बन्धुजन रे
माता हत्यारिनी पिता हत्यारा बन्धु स्वजन भी सब हत्यारे

किसी के हृदय में प्यार न देखा सबके दिल पत्थर सारे
जब स्वजन ही हत्यारे बने रक्षक कहाँ से आवे रे

मानव शरीरधारी डॉक्टर को कहते हैं धरती का भगवान्
वह भी जब बना बर्बर डाकू कौन रक्षा करेगा मेरी जान

मानव के वरदान के लिए जिस विज्ञान का विकास हुआ
उस विज्ञान को मानव ने अभिशाप रूप में प्रयोग किया

कहते हैं मानव प्रकृति का सबसे महान् प्राणी है
परन्तु मेरी नन्हीं जान ने जाना सबसे निकृष्ट प्राणी है

पशु-पक्षी भी स्व-सन्तान हेतु अपनी बलि चढ़ा देते है
मानव पशु से भी नीच बनकर स्व-सन्तान की बलि चढ़ा देते हैं

कातिल डॉक्टर के अस्त्र जब, मुझे मारने आते हैं
डर के मारे मैं सिकुड़कर आत्म रक्षा हेतु सरकती हूँ

जब माता पिता भी मेरे दर्द न समझे निर्जीव अस्त्र क्या समझेगा
जब प्राण रक्षक डॉक्टर बना भक्षक तब जड़ अस्त्र क्या रक्षक होगा

मानो पूर्वजन्म का पाप अस्त्र रूप में मेरे पास आया
मैं भागूँ कहाँ मेरी माता का ही गर्भ जब मेरा जेल बना

जल्लाद बनकर जब स्वजन व डॉक्टर मेरा काल बने
क्रूर अस्त्र के प्रहार से मेरे शरीर के अवयव अलग बने

क्रिया की प्रतिक्रिया होती प्रकृति में मेरे हत्यारों की होगी क्या गति
यह सोचकर क्षमा देकर अगले जन्म के लिए कर ली गति

मेरी व्यथा-कथा सुनकर मानव यदि बदलेगा अपनी मति
अन्य कन्या की हत्या न होगी तब सुधरेगी मानव जाति

जाते जाते विश्व मानव को मैं सुना रही हूँ अपनी बात
जिस नारी से जन्म तू लेता उसी माता को करे तू घात

कन्या नहीं वधू चाहिए कन्या बिन कहाँ से वधू लाओगे
न चाहिये बीज वृक्ष चाहिए बीज बिना कहाँ से वृक्ष पाओगे

कुलदीपक यदि सुपुत्र होता है तो उभयकुल दीपिका सुपुत्री होती
दोनों कुल के संसस्कार द्धारा जो सन्तान को संस्कार देती

सम्पन्न साक्षर प्रदेश नगरे मेरे हत्यारे होते अधिक
बाह्य धर्माचार पालक जन मेरे हत्यारे होते अधिक

द्धापर युग में था एक कंस जो शिशुओं का था हत्यारा
कलियुग में लाखों है कंस स्व शिशुओं का बने हत्यारा

अभी तो मातायें बनी पूतना स्व-सन्तान की करती हत्या
घर घर में बनी वधशाला जिसमें होती स्वकन्या हत्या

कषायी हत्या करें पशु की स्वजन करें कन्या की हत्या
कषायी से भी बड़ा हत्यारा जो करते हैं स्वभ्रूण की हत्या

भले सन्तान हो कुसन्तान माता न होती कभी कुमाता
यह कथन सत्य नहीं है माता भी कभी होती कुमाता

पाती रक्षति सन्तान की जो उसे कहते हैं यथार्थ पिता
मेरे पिता सन्तान भक्षक राक्षस सम नहीं है पिता

जननी जन्मभूमि स्वर्ग से महान् है की गाथा होती
कन्या की पूजा तो पर्व में होती गर्भस्थ की हत्या होती

इन्हीं कारणों से लिंगानुपात की विषमता भारत में बढ़ रही
वधू न मिलने की समस्या तो दिनोंदिन ही बढ़ रही

झुककर अभी वरपक्ष को दहेज देना भी पड़ रहा
अज्ञात कुल शील जाति धर्म की कन्या भी लाना पड़ रहा

पाप कभी न किसे भी छोड़ा हो कितना ही होशियार
कर्म के सामने सभी पापी तो होते जैसे हो सियार

अभी मेरी मानो पाप को छोड़ो, निर्दोषी का कर न संहार
'कनकनन्दी' गुरुवर द्वारा मेरा निवेदन तुम करो स्वीकार।।

गो माता की व्यथा गाथा
(गो माता की आत्मकथा)

तर्ज :- (1. सुनो सुनो ऐ दुनियाँ वालों... 2. आओ बच्चों...)

सुनो सुनो हे दुनियाँ वालों! मेरी अति करुण कहानी
मैं अबला भोली भाली घास खाने वाली की कहानी/(जुबानी) ऽऽऽ
सुनो सुनो हे दुनियाँ... (टेक)

खाती हूँ मैं घास फूस किन्तु देती अमृत सम दूध रे
अपने बच्चों को थोड़ा पिलाऊँ मानव जाति को ज्यादा दूँ रे
इसीलिए तो माँ पुकारे मुझे भारतीय जाति
मेरे दूध से बने विविध मिष्ठान्न विविध प्रकार जाति
दही पनीर मट्ठा मक्खन घृत मावा मलाई गोरस जाति
पञ्चगव्य से विविध रोग से मुक्त मानव जाति ऽऽऽ
सुनो सुनो हे दुनियाँ वालों... (1)

मेरे बच्चे गाड़ी हल में विविध काम खेतों में करते
तो भी मानव कृतघ्न बनकर हमारी हत्या निशिदिन करते

जिस देश में मुझे पूजते गोमाता भी कहकर
उस देश में मेरा मांस भी बेचा जाता है मारकर
तैंतीस करोड़ देवता भी हैं मेरे देह में मानकर
उस देश में रक्षण मिले बाघ को भी राष्ट्र पशु मानकर
जहाँ पूजा जाता है पत्थर को भगवान् भी मानकर
अहिंसा प्रधान देश भारत में मुझे मारते हैं जानकर

सुनो सुनो हे दुनियाँ वालों... (2)

ऐसा कोई देश है जो जिसको पूजे उसको मारे
राष्ट्रीय चिह्न में मेरा सन्मान जीवन्त में मुझे ही मारे
चिह्न को जो अपमान करे उसे तो दण्ड मिले कठोर
मुझे जो मारे सरकार है उसका क्या दण्ड भोगे पामर
लोकानुगतिक लोक ये न लोक है पारमार्थिक
चिह्न में तो मुझे पूजे हैं जीवन्त में मेरा संहार
सत्यमेव जयते जिस देश में होता है राष्ट्रीय वाक्य
उस देश के न्यायालय भी किन्तु नहीं है मेरा सहायक...

सुनो सुनो हे दुनियाँ वालों... (3)

जिस देश में हलधर गोपाल पूजे जाते हैं मन्दिर मन्दिर
उस देश में उनकी गाय को मारा जाता है हजारों हर दिन
इसलिए तो इस देश के लोकतन्त्र में है भ्रष्टाचार
स्वसंस्कृति सभ्यता नाशक यह है भारत सरकार

राजनीति के दल सभी है चोर चोर मौसेरे भाई
जिसको जब सत्ता मिले है करते हैं सब खूब कमाई
राष्ट्र धर्म व संस्कृति सबका निचोड़ कर करे कमाई
अभी तक भी भारत माता गुलामी में जकड़ी है भाई

सुनो सुनो हे दुनियाँ वालों... (4)

अभी तो तुम आओ गोपाल आओ तुम हो हलधर
हिंसा भ्रष्टाचार स्वरूप कंस जरासन्ध का कर संहार
अभी तो मेरा उद्धार करो मैं करुणा से करूँ पुकार
आओ महावीर आओ बुद्ध है हिंसा का तो करो संहार
आओ नानक अर्जुनसिंह गुरु वधशालाओं का करो संहार
आओ तिलक महात्मा गाँधी मुझको बन्धन से मुक्त करो
मेरी ही जल्लाद सन्तानों से मेरा अब उद्धार करो
तीर्थंकर बुद्ध कृष्ण अल्ला के भक्तों का तुम उद्धार करो

सुनो सुनो हे दुनियाँ वालों... (5)

शिक्षा की गाथा-व्यथा-आत्मकथा

(तर्ज- 1. मेरे मन की अंध तमस्... 2. है यही समय की पुकार...)

सुनो हो बच्चों! सुनो सुनो हो बच्चों...2

मैं गाता हूँ शिक्षा की गाथा, मैं गाता हूँ शिक्षा की व्यथा।
मैं गाता हूँ शिक्षा की वृथा, मैं गाता हूँ शिक्षा की आत्मा।। सुनो...

अक्षर कला अंक विज्ञान केवल रटना नहीं है शिक्षा,
अक्षर कला अंक विज्ञान केवल उत्तीर्ण नहीं है शिक्षा,

अक्षर कला अंक विज्ञान केवल लिखना नहीं है शिक्षा,
अक्षर कला अंक विज्ञान केवल पढ़ाना नहीं है शिक्षा।। सुनो...

धार्मिक ग्रंथ पूजा-पाठ भी केवल रटना नहीं है शिक्षा,
धार्मिक ग्रंथ पूजा-पाठ भी केवल उत्तीर्ण नहीं है शिक्षा,
धार्मिक ग्रंथ पूजा-पाठ भी केवल लिखना नहीं है शिक्षा,
धार्मिक ग्रंथ पूजा-पाठ भी केवल पढ़ाना नहीं है शिक्षा।। सुनो...

इनकी उपयोगिता में सुशिक्षा की रहती है आत्मा,
सुशिक्षा के प्रचार में शिक्षा की है बोलती गाथा,
शिक्षा के अनुपयोग में शिक्षा की है चलती व्यथा
शिक्षा के दुरुपयोग से समस्त शिक्षा होती वृथा।। सुनो...

संस्कार संस्कृति सदाचार है सभी शिक्षा की होती आत्मा,
इनके बिना सभी शिक्षा है देह की स्थिति बिना आत्मा।। सुनो...

इनके बिना रावण कंस स्व-पर नाशक साक्षर राक्षस
इनसे युक्त तीर्थेश बुद्ध प्रहलाद कबीर पवित्र अन्तस्।। सुनो...

तुम भी बच्चों पढ़ो भी गुनो आचरण करो सदा सदाचार,
तुम भी बच्चों पढ़ो भी गुनो कभी न करो भ्रष्टाचार,
तुम भी बच्चों पढ़ो भी गुनो कभी न करो मिथ्याचार,
तुम भी बच्चों पढ़ो भी गुनो, सदा ही करो शिष्टाचार।। सुनो...

तुम भी बनो सभ्य शिक्षित, तुम भी बनो देश रक्षक,
तुम भी बनो सभ्य शिक्षित, तुम भी बनो धर्म रक्षक,
तुम भी बनो सभ्य शिक्षित, तुम भी बनो आत्म रक्षक,
तुम भी बनो सभ्य शिक्षित, 'कनकनंदी' के प्रिय बालक।। सुनो..

तन-मन के स्वास्थ्य कारक पैदल भ्रमण

(अहिंसा पालन एवं पर्यावरण-सुरक्षा हेतु भी)

(मेरा दीर्घ अनुभव-धर्म-आयुर्वेद एवं आधुनिक वैज्ञानिक अनुसन्धान के आधार पर...)

राग :- (1. यमुना किनारे श्याम जाया न करो... 2. छुप छुप खड़े हो...)

सुबह शाम पैदल भ्रमण करो... तन मन को स्वस्थ्य किया भी करो
विभिन्न रोगों को भगाया करो... स्मरण-शक्ति को बढ़ाया करो
टेंशन फ्री हुआ भी करो... फ्रेश फील एक्टिव रहा भी करो... स्थायी...

प्रदूषणों से रहित वन उपवनों में... नंगे पैर शीघ्रता से सीधा-तन चलो रे
पाँच-छह कि.मी. हर रोज चलो हे! ... प्राणवायु पर्याप्त नाक द्वारा पाओ हे!
कोमल सूरज की रश्मि से नहाओ... प्रकृति से विटामिन डी भी पाओ... (1)

पैंतीस प्रकार की सुगन्धी होती है... वन-उपवनों में प्राणवायु होती है
प्राकृतिक संगीत-सुन्दरता होती है... विहंगमों की मीठी ध्वनि भी होती है
भौतिक मूल्य बिना यह प्राप्त होती है... संगीत-सुन्दरता स्वयं ही मिलती है... (2)

इसी से पॉजिटिव इफेक्ट्स होते हैं... बॉडी व माइण्ड एक्टिव होते हैं
जिससे हैल्थ भी डेवलपमेन्ट होते हैं... सुगर कैंसर दूर भी होते हैं
हृदय रोग व कब्ज दूर हो जाते हैं... माइकोकॉण्ड्रिया संख्या में बढ़ जाते हैं... (3)

इसी से मानसिक बीमारी दूर होती... मेमोरी पॉवर क्रम से वृद्धि होती
बॉडी भी कूल होती हड्डी भी दृढ़ होती... तन की गन्दगी दूर भी होती जी
तन-मन में चुस्ती-स्फूर्ति भी आती... दिन में स्फूर्ति रात को नींद आती... (4)

पाचन तन्त्र भी स्वस्थ रहता... वात पित्त कफ भी सम रहता
शारीरिक अकड़न दूर भी होता... बुढ़ापा भी शरीर में शीघ्र न आता
साइड इफेक्ट भी नहीं होता... प्राकृतिक चिकित्सा है पैदल-यात्रा... (5)

जुखाम शिरदर्द दूर भी होता... प्रकृति-पर्यावरण का ज्ञान भी होता
प्रकृति से आत्मीयता का भान होता... इसी से विभिन्न अनुभव होता
वैद्य-वैज्ञानिक शोध जो करते... विश्व हित हेतु काम भी करते... (6)

इसी के कारण साधु पैदल भी चलें... स्वयं को स्वस्थ रखें अहिंसा पालें
चरैवेति चरैवेति श्रमण जो चलें... प्रदूषणों से रहित कर्त्तव्य पालें
इसी नियम को जो पालन करे... जीवन सुखमय उसका चले... (7)

'कनकनन्दी' भी इन व्रतों को पाले... बाल्यकाल से नित्य भ्रमण करे
अनुभव आगम व शोध ज्ञान से... यह सब लिखा गया हित भाव से
अहिंसा पालन स्वास्थ्य रक्षा यत्न/(प्रयत्न/हेतु/निमित्त)
मानव सतत करे सच्चा प्रयत्न... (8)

सर्वोदय भजनीय - परतन्त्रता त्यजनीय

(बहुभाषीय - बहुरागीय सर्वोदयी गीत)

सतत स्वात्मा स्मरणीय... नित्य सत्कर्म करणीय...
सतत गुण वरणीय... दुर्गुण सदा त्यजनीय...
वैभाविक गुण त्यजनीय... आत्म स्वरूपे रमणीय...
उदार भाव करणीय... वैश्विक कुटुम्ब भावनीय...
अन्धश्रद्धा त्यजनीय... सत्य श्रद्धान/(विश्वास) भजनीय...
मिथ्याज्ञान त्यजनीय... सम्यक् ज्ञान ग्रहणीय...

मिथ्या चारित्र त्यजनीय... सदाचरण पालनीय...

क्षमा धर्म धारणीय... क्रोध भाव त्यजनीय...

मृदु भाव वरणीय... अहंभाव/(अहंकार) त्यजनीय...

आर्जव धर्म पालनीय... कुटिल भाव त्यजनीय...

सत्य सदा धारणीय... असत्य सदा वर्जनीय...

शुचि भाव वरणीय... लोभ भाव त्यजनीय...

संयम धर्म पालनीय... प्रमाद भाव वर्जनीय...

इच्छा निरोध करणीय... तप धर्म पालनीय...

परिग्रह त्यजनीय... त्याग धर्म पालनीय...

मैथुन भाव त्यजनीय... ब्रह्मस्वरूपे रमणीय...

संकीर्णता त्यजनीय... वैश्विक भाव भजनीय...

परतन्त्रता त्यजनीय... सर्वोदय सेवनीय...

सच्चिदानन्दे रमणीय... सर्व विभाव त्यजनीय...

''कनक'' द्वारा भावनीय... स्वात्मोपलब्धि करणीय...

करणीय भाव

(मोटीवेशन, सम्बोधन, आत्मचिन्तन, प्रेरणात्मक कविता)

तर्ज :- (1. दुनियां में रहना है तो... 2. मेरे नैना सावन... 3.सायोनारा... 4. इक प्यार का नगमा... 5. ऐ वतन ऐ वतन... 6. दिल है छोटा सा)

कौन कहता है भाव न होता... भाव (के) बिना कुछ न होता।

भाव के बिना अभाव होता... अभाव सर्वथा मिथ्या/(असत्य) होता।।

भावमय है समस्त द्रव्य... जीव अजीव भौतिक द्रव्य।
अनादि भावमय है जीव... अनन्त तक रहेगा भाव/(स्वभाव)।।

जय स्वभाव, आत्मभाव
निज भाव, शुद्ध भाव।

जीव में भाव अनेक/(अनन्त) होते... गुण पर्यायमय भी होते।
अशुभ शुभ शुद्ध भी होते... विभाव अथवा/(या) स्वभाव होते।।

एक समय होता एक ही भाव... शुभाशुभ या शुद्ध/(का) भाव।
अशुभ में शुभ शुद्ध न होता... शुद्ध में अशुभ शुभ न होता।।

शुद्ध हेतु शुभ आचरणीय... अशुभ भाव होता त्यजनीय।
अंशा अंशी में होती प्रवृत्ति... अनुपूरक परिपूरक वृत्ति।।

अभी न होता शुद्ध का भाव... अशुभ शुभ होना संभव।
यदि न करो शुभ का भाव... निश्चय होगा अशुभ भाव।।

प्रकाश से होता तम विनाश... प्रकाश मात्रा में तम का नाश।
तथा ही शुभ भावना द्वारा... अशुभ भाव का होता निस्तारा।।

शुभ हेतु मिथ्या कषाय त्यागो... दृढ़ विश्वास से स्वयं में जागो।
विधेय परक विचार करो/(जोड़ो)... निषेध परक विचार छोड़ो/(त्यागो)।।

संयम धैर्य से ध्यान भी करो... आत्म विश्लेषण स्वयं में करो।
संक्लेश भाव को दूर भी करो... सहज-सरल भाव को धरो।।

ईर्ष्या-द्वेष-घृणा भावों का त्याग... धन जन आकर्षण से विराग।

समता शान्ति से विचार करो... उत्तम भाव का स्वागत करो।।

इसी से शक्ति प्रगट होगी... कार्य क्षमता भी खूब बढेगी।

रोग-शोक-भय-क्लान्त न होंगे... वैर-विरोध विघ्न न होंगे।।

बौद्धिक क्षमता खूब बढेगी... विश्लेषण-शक्ति तीक्ष्ण भी होगी।

गहरी मीठी निन्दिया आयेगी... ताजगी-स्फूर्ति अधिक होगी।।

मित्रता-प्रशंसा अधिक होगी... उत्साह शक्ति उछाल लेगी।

आनन्द उल्लास प्रगट होंगे... ज्ञान वैराग्य विशेष होंगे।।

जीवन सुखमय ही बनेगा... सातिशय पुण्य कर्म बन्धेगा।

समाधिपूर्वक मरण होगा... देव बनकर सुखी बनेगा।।

स्वर्ग से मानव जन्म मिलेगा... साधु बनकर सिद्ध बनेगा।

'कनकनन्दी' इसी हेतु प्रयास... सर्व जीव करे योग्य प्रयास।।

अनेकान्त-स्याद्वाद का स्वरूप

सर्वोदयी-विश्वशान्तिकर अनेकान्त एवं स्याद्वाद

रागः- (1. रघुपति राघव... 2. यमुना किनारे... 3. सायोनारा..)

अनेकान्त सिखाता है व्यापक बनो...

(हर) गुण-पर्यायों की सूक्ष्मता जानो

स्याद्वाद सिखाता है सत्यवादी बनो...

हित-मित-प्रिय सत्य बखानो

हर द्रव्य में होते अनन्त गुण... अतएव हर द्रव्य अनेकान्त पूर्ण।
तथा ही हर कार्य अनेकान्तमय... अनेक कारणों से होता कार्यमय/(तन्मय)

(हर) प्रदेश आकाश के होती अनेक दिशा... चार या दश भी होती है दिशा।
तथा ही अणु की (भी) होती दश दिशा... अविभागी अणु की होती दशा दिशा/(यह दशा)

अनन्त आकाश की (भी होती) दशदिशा... विश्वगुरु अनेकान्त देता यह शिक्षा।
एक जीव में होते अनन्त गुण... अतएव एक जीव अनन्त भिन्न।।

अनन्त सिद्ध एक समान होते... समान अपेक्षा एक भी होते।
अपेक्षा से बारह भेद भी होते... क्षेत्र काल गति लिंगादि से होते।।

संसारी-मुक्त भी नहीं है भिन्न... शुद्धनय द्रव्य अपेक्षा प्रमाण।
कर्म अपेक्षा अनन्त है भिन्न... मार्गणा गुणस्थान अपेक्षा विभिन्न।।

ऐसा ही हर द्रव्य-गुणों में मानो... संकीर्ण दुराग्रह भाव को हनो।
ताना-बाना मय यथा होता है वस्त्र... तथा ही हर कार्य द्रव्य अशेष।।

अनेकान्त से होता व्यापक ज्ञान... उदार सहिष्णु निष्पक्ष ज्ञान।
जिससे भाव भी होता तन्मय... आचरण भी होता तथा तन्मय।।

अनेकान्त की अभिव्यक्ति स्याद्वाद... सप्तभंगमय होता स्याद्वाद/(विभेद)।
अस्ति-नास्ति आदि सापेक्ष कथन.. शेष धर्मों का न करे हनन।।

जीव स्वापेक्षा है अस्तित्ववान्... अजीव अपेक्षा होता नास्तित्वान्।
दोनों कथन में नहीं विरोध... एकान्तवाद में होता विरोध।।

दशा दिशायें न विरोध करती... एक/(हर) स्थान में दशों ही होती।
द्रव्य में अनन्त गुण रहते... विरोधी गुण भी साथ रहते।।

अनन्त गुणों के कथन निमित्त... स्याद्वाद बनता है अनन्त।
अनेकान्त है वैश्विक रूप... भाव-अहिंसामय वस्तु स्वरूप।।

दिव्य सन्देश यह तीर्थंकरों का... विश्वकल्याण व सर्वोदय का।
विनाशक यह सर्व द्वन्दों का... अमोघ उपाय प्रेम-शान्ति का।।

इसके बिना न सम्यक् होता... व्यवहार या न निश्चय होता।
न होता ज्ञान-आचरण सम्यक्... दृष्टिकोण न होता सम्यक्।।

आइन्स्टीन का हुआ योगदान... सापेक्ष-सिद्धान्त माना विज्ञान।
जिससे विज्ञान का हुआ विकास... वैश्विक मान्यता मिली विशेष।।

सदा सर्वदा सर्व स्मरणीय... सदा सर्वदा सर्व आचरणीय।
कथनीय लेखनीय वन्दनीय... 'कनक' द्वारा सदा सेवनीय।।

आत्म उद्धार से जग-उद्धार

(मेरा ज्ञान-अनुभव एवं काम)

तर्जः- (छोटी छोटी गैया...)

हर विषयों का परिज्ञान मैं करूँ... हर विषयों का अनुभव मैं करूँ।
योग्यतम का ही मैं चयन करूँ... उसको करूँ किन्तु कम ही बोलूँ।।

विधि-निषेध परक ज्ञान मैं करूँ... विधि को गहूँ मैं निषेध त्यागूँ।
सबसे अनुभव सदा ही लहूँ... हर अनुभव को सदा न कहूँ।।

परस्पर ज्ञान का सम्बन्ध करूँ... तुलनात्मक भी ज्ञान मैं करूँ।
अन्धश्रद्धा से मैं कुछ न मानूँ... सत्य-तथ्य को तत्काल ही मानूँ।।

मानें कोई न माने मने न धरूँ... मनमानी काम कभी न करूँ।
जानकारी से ही काम न करूँ... अनुभव से मैं निर्णय करूँ।।

विवेक को अधिक मैं महत्व देता... दूसरों की देखा देखी नहीं करता।
उद्दण्डतापूर्ण कार्य न करूँ... दूसरों के दबाव से कुछ न करूँ।।

विश्वास सहित धर्म मैं करूँ... विवशता से धर्म न करूँ।
आडम्बरपूर्ण काम न करूँ... सहज-सरल भाव मैं धरूँ।।

प्रतिस्पर्द्धा से काम न करूँ... प्रगति हेतु ही काम मैं करूँ।
प्रशंसा हेतु मैं काम न करूँ... प्रशंसनीय ही काम मैं करूँ।।

स्वगुणों की प्रशंसा से गुण बढाऊँ... प्रशंसा से अहंकार नहीं बढाऊँ।
ख्याति पूजा लाभ हेतु काम न करूँ... स्व-पर विश्व हेतु काम मैं करूँ।।

संकीर्ण स्वार्थ हेतु काम न करूँ... आध्यात्मिक स्वार्थ हेतु काम मैं करूँ।
परोपदेश पाण्डित्य कभी न बनूँ... आत्म सम्बोधन हेतु पण्डित बनूँ।।

दूसरों के दोषों से शिक्षा मैं लहूँ... दूसरों के गुणों से प्रेरणा लहूँ।
दूसरों के दोषों को अच्छा न मानूँ... दूसरों के गुणों की प्रशंसा करूँ।।

देखकर सुनकर कुछ न मानूँ... सत्य परिज्ञान से शीघ्र ही मानूँ।
रटन्त विद्या का मान न करूँ... अनुभव ज्ञान का सन्मान करूँ।।

सनम्र सत्यग्राही सदा मैं बनूँ... हठग्राही जन से दूर मैं रहूँ।
अहंकारी ज्ञानी को तुच्छ मैं मानूँ... विनम्र अल्पज्ञ को भी महान् मानूँ।।

नैतिक सामान्य ज्ञान मुझे तो प्रिय... आध्यात्मिक ज्ञान ही मेरा है श्रेय।
सत्य समता शान्ति मेरा सर्वस्व... इसी से रिक्त मुझे नहीं विश्वास।।

प्राचीन ज्ञान से शिक्षा मैं लहूँ... आधुनिक ज्ञान को प्राप्त मैं करूँ।
भविष्यत् की मैं कल्पना करूँ... भावना के अनुसार काम मैं करूँ।।

सांसारिक लाभ में सन्तोष धरूँ... आत्मिक लाभ का विकास करूँ।
धन जन मान का भान न करूँ... सत्य-तथ्य का मैं शोध ही करूँ।।

अधिक बोलना मुझे कभी न प्रिय... मौन अध्ययन अधिक प्रिय।
अयोग्य सुनना मुझे अच्छा न लगे... गहन कथन मुझे मधुर लगे।।

उपेक्षित योग्य काम मुझे तो भाता... महान् कार्य में मुझे सन्तोष होता।
भेडिया व भीडचाल मुझे न आता... एकला चलना का भाव ही भाता।।

प्रभावित नहीं होता धनी मानी से... सत्ता प्रसिद्धि युक्त बुद्धिजीवी से।
इसी से युक्त यदि होता सज्जन... उनका मैं यथायोग्य करूँ सन्मान।।

सरल सहज जो विनम्र जन... उनका मैं यथायोग्य करूँ सन्मान।
धनी गरीब या ज्ञानी/(अल्पज्ञ)... ग्रामीण शहरी बाल सब समान।।

मेरा भाव अनुभव अन्य से भिन्न... अतएव मुझे समझे अल्प ही जन।
मुझे तो ज्ञानी मानते अधिक जन... अनुभव से लाभ ले कम ही जन।।

अनुभव हीन ज्ञानी अधिक होते... रटन्त ज्ञान से युक्त वे सब होते।
मेरे अनुभव से लाभ न लेते... अनेक रोग दुःखों को वे भोगते।।

मेरा भाव होता सब बने हैं सुखी... दूसरों के दुःख से मैं बनता दुःखी।
दुःख न हो अतः अनुभव मैं देता... अनुभव न लेने से मैं दुःखी होता।।

तथापि मैं समता से अनुभव बढ़ाता... कर्म विचित्रता का चिन्तन होता।
भावना से ही विश्व का सुख चाहता... मैत्री कारुण्य माध्यस्थ भावना भाता।।

मेरा मैं कर्त्ता हर्त्ता संहार कर्त्ता... अन्य का तो केवल ज्ञाता व द्रष्टा।
अतएव ''कनक'' तू स्व का करो उद्धार... आत्म उद्धार से हो जग उद्धार।।

मेरी भावना

(मेरी भावनायें जो कुछ पूर्ण हुई, हो रही है और होने वाली)

तर्जः- (छोटी छोटी गैया...)

भावनापूर्ण मैं जीवन जीता... माने कोई न माने करूँ न चिन्ता।...2
इच्छा तृष्णा ईर्ष्या भाव नहीं करता... ख्याति पूजा/(लाभ) प्रसिद्धि नहीं चाहता।
मेरी भावना कुछ मूर्त/(पूर्त) (सम्पूर्ण) हुई है... मेरी भावना कुछ शेष रही है।
कुछ भावना मूर्त हो भी रही है... कुछ की उत्पत्ति हो भी रही है।।

बाल्यकाल से मेरी भावना रही... महान् लक्ष्य की योजना बनी।
मानव सेवा हेतु बनूँगा नेता... आदर्श चारित्रमय वैश्विक/(महान्) नेता।।

दूसरी भावना रही बनूँगा ज्ञानी... पूर्ण सत्य जानने को महाविज्ञानी।
तृतीय भावना रही बनूँगा सन्त... निस्पृह ज्ञानवान् आध्यात्म सन्त।।

जीवन भर रहूँगा बाल विद्यार्थी... सरल सहज व सत्य शोधार्थी।
विवाह बन्धन में नहीं पडूँगा... संकीर्ण स्वार्थ हेतु नहीं जीऊँगा।।

पढाई में मैं सदा श्रेष्ठ ही रहा... नकल ट्यूशन कभी न किया।
नौकरी व धन का लक्ष्य न रहा... सत्य-तथ्य जानने का लक्ष्य ही रहा।।

राजनीति में नहीं श्रेष्ठ आचार... विज्ञान में नहीं सत्य अपार।
इसलिए साधुत्व को प्राप्त मैं किया... साधुत्व में सभी कार्य सध भी रहा।।

सत्य समता शान्ति मेरा सर्वस्व... इसी के अतिरिक्त नहीं विश्वास।
सत्य में समस्त विश्व निहित... द्रव्य गुण पर्याय सर्व निहित।
समता में सर्व धर्म निहित... समस्त प्राप्य शान्ति में निहित।।

सत्य समता व शान्ति का राज्य... समस्त/(सर्व) क्षेत्र में हो साम्राज्य।
धर्म शिक्षा व राजनीति में... कानून विज्ञान राष्ट्र विश्व में।।

धर्ममय होवे सर्व विज्ञान... विज्ञानमय होवे/(हो) समस्त धर्म।
आध्यात्ममय हो समस्त धर्म... विज्ञान भी होवे आध्यात्म धर्म।।

भावना मेरी यह उत्पन्न हुई... साहित्य द्वारा विकास हुई।
कक्षा संगोष्ठी शिविर द्वारा... फल-फूल रही है शिष्यों के द्वारा।।

विद्वान् शिष्यों से फैल रही है.. देश-विदेशों में फल रही है।
वेबसाइट व शोधकार्यों से... फल में पक्वता आ रही है।।

सर्वोच्च भावना है आत्मविशुद्धि... समतापूर्ण निस्पृह वृत्ति।
ख्याति पूजा लाभ स्वार्थ रहित... ध्यान अध्ययन/(एकान्त वृत्ति) मौन सहित।।

यह भावना भी सध रही है... उत्तरोत्तर भी बढ़ रही है।
इसी से शान्ति भी मिल रही है... अन्य भावना भी फल रही है।।

भारत भी पाये विश्वगुरुत्व... आध्यात्म शक्ति से पाये गुरुत्व।

विश्व को बताये आदर्श पाठ... यह भावना है अभी कनिष्ठ।।

परम भावना है मुझे मैं पाऊँ... आध्यात्म वैभव मैं सर्व पाऊँ।
यह भावना भी अपूर्ण अभी... इसी हेतु ही करूँ भावना सभी।।

नवीन भावना उत्पन्न हुई... अच्छी भावना को लिखूँगा सही।
माने कोई या न माने कोई... निज हेतु यह प्रारम्भ हुई।।

सर्व जीव पाये समानाधिकार... मनुष्य पक्षी या सर्व जानवर।
किसी की हत्या कोई न करे... किसी भी हेतु से कोई न करे।।

फैशन-व्यसन कोई न करे... अनुशासन भंग कोई न करे।
पर्यावरण की रक्षा भी करे... सत्य समता शान्ति को वरे।।
मेरी भावना को मैंने ही लिखा... मेरे हिसाब हेतु मैंने लिखा।
'कनकनन्दी' तो है भाव प्रधान... जडमय है तन व मन।।

वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनन्दी जी गुरुदेव साहित्य-कक्ष स्थापना-नागपुर (महा.) में

महान् उपलब्धियों के सूत्रधार, आत्म-विज्ञान विश्लेषक, अंतःप्रज्ञाधारी, विश्व-गुरु, तपोनिधि श्रीवर आचार्य कनकनन्दी जी गुरुदेव के साहित्य-कक्ष की स्थापना, दि.18-3-12 को श्री पार्श्वनाथ दि. जैन खंडेलवाल ट्रस्ट जुनी शुक्रवारी नागपुर के तत्वाधान में ''स्वाध्याय-भवन'' में समाज के ज्येष्ठ-श्रेष्ठ महानुभवों की उपस्थिति में गौरव-पूर्ण समारोह में की गई।

ज्ञातव्य रहे कि श्री गुरुदेव के साहित्य पर जैन-दर्शन संबंधित शोधकार्य (Ph.D.) देश व विदेश स्तर पर जारी है, जिसमें शोधार्थियों को यू.जी.सी.

द्वारा विशेष योग्यता सम्पन्नों को योगदान स्वरूप 10,000/-रु. प्रतिमाह एवं तृतीय वर्ष से 15,000/-रु. प्रतिमाह सहयोग प्राप्त होता है।

इस अवसर पर प्रमुख अतिथि के रूप में डॉ. नरेन्द्रजी चौधरी, श्री रतनलाल जी गंगवाल, श्री चन्द्रकुमार जी रांवका, श्रीमति विजया ठोल्या, समाजश्रेष्ठी श्री सुनिल जी पेंढारी आदि महानुभावों ने अपने विचार व्यक्त करते हुए गुरुदेव की विशेषताओं और उपलब्धियों का सर्वसामान्य हेतु लाभ मिले ऐसा प्रयत्न सदैव करते रहने हेतु उत्साह दर्शाया। इस शोधकार्य पर विशेष जानकारी विभिन्न वेबसाइट्स पर उपलब्ध है। अधिक जानकारी हेतु 8421236029, 9766423179 मो. नंबर पर पूछताछ की जा सकती है। कार्यक्रम संचालन अजय जैन ने किया, इसकी प्रस्तावना श्री किशोर बाकलीवाल ने की। कार्यक्रम में श्री निरंजन जी बोहरा, श्रीमति विद्युत्प्रभा चौधरी, शांता देवीजी बोहरा, बदामीबाई बाकलीवाल, संगीता गंगणे व शरद जी शहाकार, अभय शहाकार, गौरवजी शहाकार समेत अनेक महानुभावों की उपस्थिति से कार्यक्रम सरस एवं गरिमामय रूप से संपन्न हुआ। विदर्भ जैन न्यूज के संपादक श्री अनिश जैन ने इन उपलब्धियों को प्रोजेक्टर एवं एनीमेशन के साथ प्रचार पर जोर दिया। 57 विश्वविद्यालयों (एवं विदेशों में विश्वविद्यालयों) में यह सुविधा शोधकार्य हेतु उपलब्ध है। सभी बुद्धिजीवी इसका लाभ यथाशीघ्र प्राप्त करें उत्तरोत्तर गुरुदेव की अन्य विशेषताओं एवं उपलब्धियों को शीघ्र प्रकाशित किया जायेगा।

शुभकामनाओं सहित

डॉ. अजय जैन
शहीद चौक, इतवारी, नागपुर
मो. 8421236029

आचार्य श्री कनकनन्दी जी गुरुदेव के शिष्य
डॉ. कच्छारा द्वारा अमेरिका के युनिवर्सिटी में
ऑनलाइन पाठ्यक्रम का शुभारम्भ दि. 19.3.12

मैं (आर्यिका सुविधेयमती) आर्यिका श्री सुनीतिमती माताजी के साथ महाराष्ट्र से राजस्थान प्रान्त के ओगणा नामक ग्राम में 19 मार्च 2012 को पहुँची। हमारी यह यात्रा 8 जनवरी 2012 को प्रारम्भ हुयी था। ओगणा ग्राम छोटा होते हुए भी विशिष्ट बन गया है, क्योंकि यहाँ परम पूज्य वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनन्दी जी गुरुदेव ससंघ लगभग डेढ़ माह से विराजमान हैं।

जिस दिन हमें लम्बी यात्रा के पश्चात् श्रीसंघ के दर्शन हुए, वह स्मृतिपटल पर अंकित करने योग्य बन गया है। वैज्ञानिक जगत् के सम्राट के ससंघ दर्शन गुरुभाई एवं गुरुबहनों से मिलन का क्षण अपूर्व उत्साह एवं आनन्द की वृद्धि करने वाला सिद्ध हुआ।

साधर्मियों से चर्चा के उपरान्त गुरुदेव के अनुभवों तथा उपलब्धियों की जानकारी प्राप्त हुई। गुरुदेव के व्यापक सिद्धान्त एवं अनुभव न केवल प्रशंसनीय, अपितु शत प्रतिशत अनुकरणीय भी हैं। गुरुदेव की बहुमुखी प्रतिभा विलक्षण है। वे किसी एक क्षेत्र में ही नहीं, बल्कि प्रत्येक विधा में प्रतिभा-सम्पन्न हैं। मात्र डेढ साल की अल्पावधि में उन्होंने अपनी काव्य कला को गगनचुम्बी बना दिया है। लगभग 600 काव्यों का सृजन वे अब तक कर चुके हैं। अद्यावधि उनकी लेखनी प्रगतिशील है। अत्यन्त सहज एवं सरल शब्दों का प्रयोग, विभिन्न विषयों का समायोजन उनकी कविताओं की विशेषतायें हैं। लोकविश्रुत बात है कि ''जहाँ न पहुँचे रवि, वहाँ पहुँचे कवि।'' किन्तु यह वाक्य

अपूर्ण है- ऐसा गुरुदेव के सान्निध्य से ज्ञात हुआ। **गुरुदेव कहते हैं- ''जहाँ न पहुँचे रवि, वहाँ पहुँचे कवि और जहाँ न पहुँचे कवि, वहाँ पहुँचे अनुभवी।''**

सारे जहान से निराले गुरुदेव के अनुभव भी उतने ही निराले हैं। विभिन्न विषयों के काव्यों में गुरुदेव ने घास जैसी उपेक्षित वस्तु को भी महिमान्वित किया है। उनकी दृष्टि में सम्पूर्ण विश्व के लिये साम्यता का व्यवहार है। गुरुदेव भूल से भी किसी को तुच्छ नहीं मानते।

गुरुदेव के अनोखे व्यक्तित्व के उपासक देश में ही नहीं, अपितु विदेशों में भी है। गुरुदेव के अनुभवामृत का प्राशन करने वाले डॉ. नारायणलाल जी कच्छारा ने उनके द्वारा सद्यःप्रसूत कार्य की जानकारी देने वाला एक पत्र गुरुदेव को प्रेषित किया, जिसका विषय-विवरण निम्न प्रकार से है-

परम पूज्य गुरुदेव,

नमोऽस्तु!

''फ्लोरिडा इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी'' अमेरिका में ''जैनीज्म इन मॉडर्न वर्ल्ड'' विषय पर एक ऑनलाइन पाठ्यक्रम प्रारम्भ किया गया है। इस पाठ्यक्रम में ''जैनीज्म और साइंस'' एक विषय है। इस विषय के अध्यापन हेतु मैंने लेक्चर तैयार किये हैं। ये लेक्चर तथा इसकी पाठ्य-सामग्री C.D (सी.डी.) पर दी गई है। इसे कम्प्युटर पर देखा जा सकता है।

यह सी.डी. अमेरिका में विश्वविद्यालय को भेज दी गयी है। इसकी कॉपी सभी पढ़ने वाले विद्यार्थियों को दी जायेगी।

संघस्थ सभी मुनिवृन्द को नमोऽस्तु!

माताजी को वन्दना!

आपका शिष्य

डॉ. नारायणलाल कच्छारा

आप सभी उपर्युक्त विषय में रुचि लेकर गुरुदेव की अनुभवों की छाया प्राप्त करके लाभान्वित होइये।

भविष्यत्काल में दिगम्बरत्व धारण करने की भावना भाने वाले डॉ. अजय जी जैन की प्रेरणा से तथा नागपुर में स्थित भक्त शिष्यों द्वारा दिनांक 18.3.2012 को श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन खण्डेलवाल ट्रस्ट, जुनी शुक्रवारी में गुरुदेव के साहित्य कक्ष की स्थापना की गई। कार्यक्रम की नियोजना समारोह के रूप में की गई। समारोह में भाग लेने वालों में डॉ. नरेन्द्र जी चौधरी, श्री रतनलाल जी गंगवाल, श्री चन्द्रकुमार जी रांवका, श्रीमती विजया ठोल्या, सुनील जी पेंढारी जी ने अपने विचारों से उपस्थित जनसमूह को अवगत कराया।

इस अवसर पर श्री निरंजन जी बोहरा, श्रीमती विद्युत्प्रभा चौधरी, श्रीमती शान्तादेवी जी बोहरा, श्रीमती संगीता गंगणे, श्री गौरव जी शहाकार आदि महानुभावों की उपस्थिति रही। कार्यक्रम की प्रस्तावना श्री किशोर बाकलीवाल ने की तथा संचालन का कार्य डॉ. अजय जी जैन द्वारा सम्पन्न हुआ। मुनि श्री स्वात्मानन्दी जी महाराज ने भी इस कार्य की परम अनुमोदना करके उत्साह दर्शाया।

दिनांक 20.3.2012 को नागपुर से डॉ. अजय जैन के साथ डॉ. नरेन्द्र जी चौधरी अपनी धर्मपत्नी श्रीमती डॉ. विद्युत्प्रभा चौधरी सहित गुरुदेव से

आशीर्वाद एवं मार्गदर्शन प्राप्ति हेतु पधारे। वे लगभग 5 दिनों तक गुरुदेव की छत्रछाया में रहे। चर्चा के दौरान उन्होंने वैदिक गणित को जैन गणित के साथ समन्वय के लिये गुरुदेव के मार्गदर्शन की इच्छा व्यक्त की। उनकी जीवनसंगिनी भी मनोविज्ञान की प्रोफेसर रह चुकी है। उन्हें भी गुरुदेव के आशीष की तीव्र अभिलाषा थी। गुरुदेव ने अपनी अनुभवी वाणी से दोनों दम्पतियों को योग्य मार्गदर्शन दिया।

अन्त में, हमें भी गुरुदेव के अनुभवों का लाभ हो इसी आशा से श्री चरणों में त्रि-भक्ति युक्त वन्दन...

नमोऽस्तु गुरुदेव!

आर्यिका सुविधेयमती
(संघस्थ :- आचार्य श्री कनकनन्दी जी)
ओगणा, 25.3.2012